जून, 2020
दूसरा संस्करण

मेरा गाँव अल्लिका

जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी

लेखक: बदन सिंह चौहान

मोबाइल नम्बर: 9465124228

महा प्रबंधक (सेवानिवृत) - मध्य प्रदेश राज्य पर्यटन विकास निगम

वर्तमान निवास - मोहल्ला - मूसाका, ग्राम - अल्लिका, तहसील/ब्लॉक/जिला - पलवल, (हरियाणा) -पिन कोड: 121102

जून, 2020
दूसरा संस्करण

बदन सिंह चौहान

लेखक: बदन सिंह चौहान
सम्पादक: बदन सिंह चौहान
मोबाइल नम्बर: 9465124228
महा प्रबंधक (सेवानिवृत) - मध्य प्रदेश राज्य पर्यटन विकास निगम
वर्तमान निवास - मोहल्ला - मूसाका, ग्राम - अल्लीका , तहसील/ब्लॉक/जिला - पलवल, (हरियाणा)
पिन कोड: 121102

प्रिंट आउट - जून, 2020

लेखक बदन सिंह द्वारा अपने निजी स्वयं के प्रिंटर से
प्रिंट आउट किया गया |

बिक्रम सम्वत 1532, सन 1475 (1532 – 57) में गाँव बसा

मेरे गाँव अल्लीका वासियों को
एवं
आने वाली पीढ़ी को समर्पित

मेरा गाँव अल्लीका

लेखक: बदन सिंह चौहान

मेरा गाँव अल्लीका

लेखक: बदन सिंह चौहान

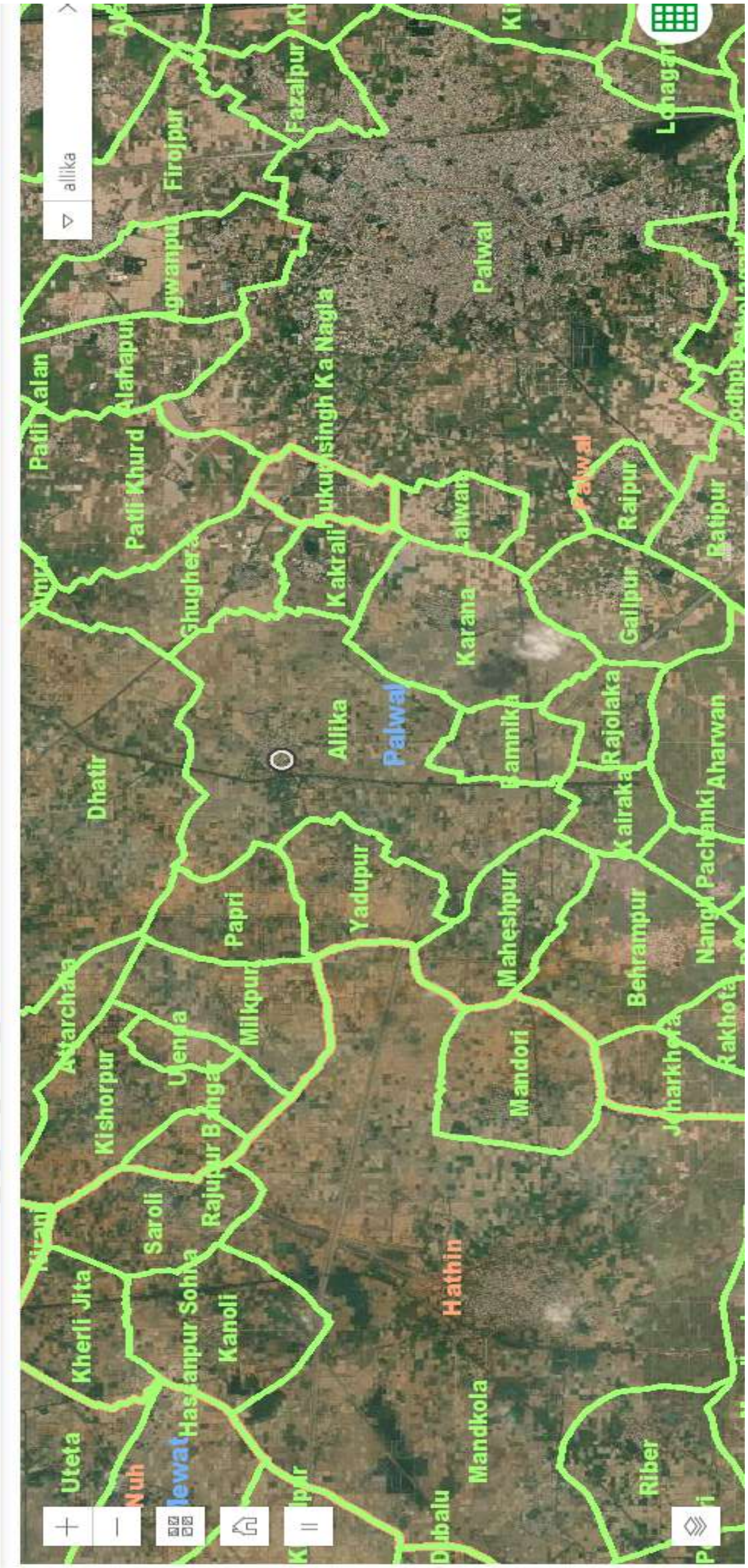
Allika
Palwal
Dhatir
Karana
Yadupur
Papri
Milkpur
Maheshpur
Mandori
Behrampur
Rajolaka
Kakrali
Ghughera
Patli Khurd
Patli Kalan
Alahapur
Firojpur
Fazalpur
Raipur
Ratipur
Gailpur
Aharwan
Attarchata
Kishorpur
Saroli
Kanoli
Kherli Jita
Uteta
Hathin
Mandkola
Riber
Nuh
Jharkhera
Rakhota
allika

जनगणना के अनुसार 2011 में जनसंख्या - अल्लीका गॉव	
कुल जनसंख्या	4106
कुल घरों की संख्या	699
पुरुष जनसंख्या	2205 (53.7%)
महिला जनसंख्या	1901 (46.3%)

विषय सूची

विषय	पृष्ठ नंबर
प्रस्तावना	iv
लेखक का परिचय	vii
लेखक की और से (अप्रैल, 2020 में प्रथम संस्करण में	ix
लेखक की और से (जून, 2020 में दूसरे संस्करण में	xi
एक नज़र में गाँव की उत्पत्ति	xiii
अध्याय – 1	1
मेरा गाँव अल्लीका - एक परिचय	2
1958 में बाढ़ आई:	3
हिन्दू-मुसलमान की लड़ाई	4
गाँव की संस्कृति	4
गाँव में औरतों का पहनावा	8
गांव के रीति रिवाज	8
गाँव में होली का मौसम,	8
हुक्का का चलन,	10
हमारे मदद गार विशेष वर्ग,	10
जाने कहां गए वो दिन	11
(पोखर खौटा ,नई की पोखर, बरगद का पेड़, पोखरों का विनाश, रख्या - वनी (अर्थात छोटा वन), स्कूल के दिन, शाक भाजी व बनस्पति, शादी का वह नजारा, भाभियों के साथ देवरों का होली खेलना)	
अध्याय – 2	21
गाँव की बसावट व वंशावली	22
अल्लीका गाँव की बसावट के बारे में जानकारी	22
(मैं स्वयं - बदन सिंह) की वंशावली)	29
मूसा का मोहला	31
दानी का मोहल्ला	42
कछारिया मोहल्ला	49
चौक पट्टी	52
साद मोहल्ला	55
भण्डिया मोहल्ला	62
अल्लीका मंदिर के बारे में	66
गाँव में अन्य जातियों के बारे में	72
पंडितों का परिवार	72
नाईयों का परिवार	76
खातियों का परिवार	77

बदन सिंह चौहान

धोबी का परिवार 78
बल्हार का परिवार 78
कुम्हार का परिवार 78
कोली समाज का परिवार 79
बाल्मीकि समाज 81
लुहार परिवार 81

हमारे नगरा 83

1. कैराका 83
2. ककराली 93
3. राजौला 97
4. यादु पुर (आदुपुर) 103

अध्याय 3

गाँव के साहित्यकार और अन्य प्रमुख व्यक्ति 109
चौधरी रघुबीर सिंह मुकदम 110
चौधरी चन्दन सिंह मुकदम 116
चेत राम सूबेदार 118
डॉक्टर धर्म चंद विद्यालंकार 120
श्री दयाली राम बैरागी 122
रामचंद्र 123
रजौला के कवि चौधरी शिवलाल 125
राजौला के कवि जिले सिंह 126
गाँव के प्रमुख व्यक्ति .... –
कवि एवं साहित्य कार की सूचि, सरपंच एवं मुकदम,
पुराने फौजीयों की सूचि 128
गाँव के एक्स सर्विसमैन एसोसिएशन की सूचि 129
जज, गाँव के वकील, धार्मिक समर्पण व्यक्ति,
आर्य समाजी व्यक्ति, शिक्षा के क्षेत्र में, राजनीति में,
पहलवान, पटवारी, खेल के क्षेत्र में, बैंक में, अन्य सेवाओं में,
मेडिकल डॉक्टर एवं अन्य व्यक्ति, गांव में प्रथम 134
हमारे गॉव के फौजी - हमारी शान 136
अमीलाल– महाशय जी 137
उम्मेद सिंह – गाँव का गौरव 140
कर्नल तारा चंद 143
कर्नल रवि चौहान 144
करण सिंह चौहान 145
सरूप मुकदम, चंदी मुकदम, राधे मुकदम, चन्दन सिंह मुकदम, 145
राजनीति क्षेत्र में, व्यवसाय में

बदन सिंह चौहान

भगत सिंह का बॉक्सिंग चैंपियन 149
माम चंद मेहरा मेहरा – जज 151
लालचंद 155
श्यामी भगत, , 157
सुखदेव महाशय जी 158
ग्राम पंचायत, लंबरदार, चौकीदार 159

अध्याय 4 161
जनसंख्या 161
जनसंख्या – अल्लीका 162
जनसँख्या जिला पलवल के गाँव व उनकी जनसंख्या 162
देश की जनसंख्या एक नज़र 170

अध्याय 5 174
नापने की इकाई 174
जमीन और राजस्व संबंधी जानकारी 175
(जमीन सम्बन्धि नाम - पटवारी के यहां)
भूमि रिकॉर्ड दस्तावेज 181

अध्याय 6 185
स्कूल एवं अस्पताल... 185

अध्याय 7 189
मेरी कुछ लेख – टिप्पणियाँ 189
ग्राम पंचायत – कृपया ध्यान देवें 190
Visit of Deputy Commissioner Palwal 193
प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र अल्लीका में नेत्र जाँच की
ओपीडी सेवा बहाल करने के बारे में | 195
Painful status of Govt Hr. Sec. School Allika 196
Bhandara by Bharat 197
लोगों से काम कराना बहुत कठिन होता है 198
सफलता 201
स्वच्छ भारत अभियान 202
हमारी सोच और उसको तय करने वाले कारण 203
अनुसूचित जाति (कोली व बाल्मीकि समाज) 204
होली का त्यौहार 206
गाँव में अपराध, हिंसा, लोभ लालच और गुट बाजी 211
Article of Advocate Satish Mishra 216
(Legal Education in India)
देवी सिंह चौहान – का लेख 218
(मेरा गाँव – मेरी दास्तान)
भारत अल्लीका का लेख 225

बदन सिंह चौहान

डॉक्टर धर्म चंद विद्यालंकार की कविताएं (मेरे गाँव की परिक्रमा, बुरा ना मानो होली है)	228
डॉक्टर धर्म चंद विद्यालंकार की कविताएं (शिष्ट साहित्य में अल्लीका गाँव का वर्णन)	240
सुखदेव आर्य - मनुर्भवः ओम	241
लाल चन्द कुंडु - जीवन को सफल उन्नत कैसे बनायें	242
नरेंद्र – रजौला - मार्मिक - समाज एवं संस्कृति का बदलता स्वरूप	245
मधु सिंह चौहान का लेख- भारत में शिक्षा का विकास	249
कुलदीप सिंह चौहान – "मेरी माँ – मेरा आदर्श"	259
अमन सिंह चौहान - 21st –Technological Century	262
Anvi Singh Chauhan – A student (School life, Discipline)	264
परिशिस्ट –	266
मुख्य व्यक्तियों के फोटो	267
गाँव के स्कूलों के चित्र	273
गाँव के अस्पताल	279
गाँव में दंगल	282
गाँव की पोखर एवं मंदिर	283
गाँव की चौपाल	288
गाँव के देवी-देवताएँ	292
कुछ पुराने घरों के दरवाजे	293
पुराने भवनों के खंडर	294
गाँव का एक पुराना नक्सा	304
जाटों में कुंडू गोत्र के गाँव	309
पहले संस्करण लोगों की टिप्पणियां	311
कर्नल रवि चौहान का लेख	315

बदन सिंह चौहान

प्रस्तावना

कई बार एक गाँव और व्यक्ति का भी अपना इतिहास होता है। भले ही वह देश और समाज के सम्पूर्ण इतिहास कि भांति महत्वपूर्ण नहीं होता हो, तथापि एक एक इकाई से हो तो जाती अथवा समाज बनता है। यथा पिण्डे तथा ब्रह्माण्डे के अनुसार जो कुछ पिंड (एक इकाई) में घटित होता है , वही समस्त संसार में भी प्रतिफलित होता है। अर्थात जो कुछ एक व्यक्ति का सत्य हो सकता है वही पूर्ण समाज का सत्य संभव है। जैसे कि थाली पुलाव न्याय के आधार पर गृहणियां सब्जियों के एक दाने को देख कर ही पूरी पतीली के पके या अधपके होने का अनुमान लगा लेती है।

एक एक गाँव पर ही पूरे के पूरे उपन्यास रचे गए हैं। जैसा कि मणीश्वरनाथ रेणु का 'मैला- आँचल' उपन्यास अकेले गाँव मैरी गेज के ऊपर ही आधारित है। इसी प्रकार से श्रीलाल शुक्ल का 'राग दरवारी' नामक कथात्मक उपन्यास एक ही गाँव कि राम कहानी है। आजकल वैसे भी बजाय मैक्रो (व्यापक विषय) के माइक्रो या सूक्ष्म के विषय के ही अध्ययन का ही प्रचलन है। जिसके आधार पर किसी विषय का कुछ विशिष्ट भाग का कुछ विशिष्ट ही अध्ययन का आधार बनता है।

अतएव श्री बदन सिंह चौहान ने 'मेरा गाँव अल्लीका' पुस्तक में ऐसा ही बड़ा कार्य किया है। जिसमें उन्होंने अपने गाँव का संक्षिप्त इतिहास और उसकी आरंभिक वंशावली भी भाट की पोथी के आधार पर दी है। इसी बहाने अपने पूज्य पूर्वजों का स्मरण भी संभव हो सका है। लेकिन एक मोहल्ले विशेष को किसी दूसरे गोत्र का दिखाना विधिसम्मत नहीं है। कारण क्योंकि यदि कोई घर और थोक अपने नाना के देहरे पर आया भी है तो वह भी अब यहां पर अब कुंडू ग्राम-गोत्र का ही माना जाना चाहिए। क्योंकि धर्म और विधिसहिंताएँ भी गोद को ही गोत्र मानती हैं। आखिरकार दोहता भी तो नाना का ही वंश चलाता है।

इस पुस्तक के लेखक श्री बदन सिंह मेरे प्रिय पाठक एवं परम मित्र और प्रशंसक भी हैं। वे समय -समय पर मेरे से इस विषय में सकारात्मक सुझाव भी लेते रहे हैं। मैंने ही विषयों के वर्गीकरण अथवा अनुक्रम को ही बनाने में थोड़ी सहायता उनकी की है। जैसेकि सर्व प्रथम इस ग्रन्थ में कुंडू गोत्र के पूज्य पूर्वजों की पुण्य भूमि अथवा प्रवास स्थल और समय भी कालक्रम से बताया गया है। पुराण - साहित्य और इतिहासग्रंथों में यही अंतर होता है कि पुराण के पाठ केवल श्रद्धा और विश्वास पर आधारित किदवन्तियाँ यही होती हैं। तो इतिहासग्रन्थ काल-क्रम से घटनाओं का प्रमाणीक परिचय भी देते हैं।

हालांकि आजकल इतिहास-लेखन की जो नई प्रणाली प्रचलित हो रही है, उसके अनुसार मौखिक अथवा लोक साहित्य भी जन साहित्य का अभिन्न अंग मान लिया गया है। इसलिए विशेष कर ग्रामीण इतिहास के लेखन में लोक कथाओं और किदवंतियों तथा देव कथाओं का भी सहारा लिया जा सकता है। ऐसा इस इतिहास में भी संभव है।

श्री बदन सिंह ने इस गाँव (अल्लीका) की संस्कृति एवं सभ्यता का भी संक्षिप्त परिचय इस पुस्तक में दिया है। यहां के तीज-त्यौहार, मेले, ठेले और उत्सव तथा पर्वों का भी परिचय इस लेखक ने यहां पर दिया ही है। जिसमे होली अथवा फाग का त्यौहार विशिष्ट हैं। जिस अवसर पर पहले गाँव में चौपाईयाँ हुआ करती थी, जिसमें हमारे गाँव के किसान मिल कर नाचते और गाते थे। आज कल सामूहिक गायन वाली चौपाइयां तो लगभग ख़त्म हो गई हैं। हाँ, युवा पुरुष अपनी भाभियों के साथ फाग गीत गाते हैं। उसी को अब ब्रज में होली या होरी माना जा रहा है। जिससे भी

एक सरस और उल्लासमय वातावरण बनता ही है। इसलिए इस पुस्तक के लेखक ने अल्लीका गाँव में उत्पन्न होने वाले लोक कवियों का भी संक्षिप्त परिचय दिया है। यदि उनकी कुछ रचनाओं की भी बानगी यहां पर होती तो और भी उत्तम होता। लोक कवियों में चौधरी रघुबीर सिंह का नाम मेरुमणि के तुल्य सर्वोपरि है। तो ना जाने क्यों उनके की ही पद शिष्य श्री राम चाँद चौहान जैसे लोकप्रिय कवि का नाम कैसे प्रथम संस्करण में उल्लेख से छूट गया, जिन्होंने श्रेष्ठ श्रृंगारिक रसिया और ब्रज गीत तथा रागनियां रची हैं जो कि सम्पूर्ण क्षेत्र में आज तक भी गए और सुनाई भी जाती हैं।

इसी प्रकार भगवाना जाट की लोक प्रसिद्द कथा पर बारहमासी रचने वाले लोक कवि महाशय श्याम लाल का परिचय भी इस पुस्तक में देने अत्यंत आवश्यकता हमें अनुभव हो रही है। क्योंकि एक-एक रचना की प्रसिद्धि के आधार पर भी लोक प्रसिद्धि मिली है। अतएव कम रचनाएँ परन्तु प्रसद्धि प्राप्त लेखन भी उपेक्षा का पात्र नहीं होना चाहिए।

शिष्ट साहित्यक रचनाओं में इन पंक्तियों के लेखक का ही नाम ले दे कर इस गाँव में ही नहीं अपितु पूरे हरियाणा के साहित्यकारों में भी उनका नाम आदर पूर्वक लिया जाता है। यह मेरे लिए और मेरी जन्म भूमि अल्लीका गाँव के लिए भी गर्व का ही विषय है।

इसके अतिरिक्त अपने गाँव के उच्च अधिकारियों का परिचय भी श्री बदन सिंह जी ने दिया है जो कि उचित ही है। इस गाँव के आजाद हिन्द फ़ौज के अमर स्वतंत्र सेनानी श्री उम्मेद सिंह के भी नाम का उल्लेख उन्होने किया है, जिन्होंने निरंतर नौ दश वर्षों तक नेताजी के अंग रक्षक का ही महान कार्य किया है।

इसी श्रृंखला में श्री ओम प्रकाश शास्त्री जो कि गाँव के सबसे वयोवृद्ध व्यक्ति हैं और सेवा विमुक्त शिक्षक है। वे भी अपने बाल्य काल में क्रांति - कर्म में सलंग्न रहे थे। वे एक बहुत अच्छे अध्यापक और कर्म कांडी प्रकांड पंडित भी हैं। उनका कंठ कोकिल सा मधुर और लिखाई मोती के दानों सी सुन्दर है। उनको भी इस श्रृंखला में जीते जी सम्मलित करके श्रद्धांजलि दी जा रही है। उनके जेष्ठ सुपुत्र श्री कृष्ण कुमार शास्त्री भी उन्ही के चरण-चिन्हों पर चल कर अपनी पैतृक परम्परा का पालन कर रहे हैं। इस गाँव के अन्य अध्यापकों का भी परिचय इस पुस्तक में होना ही चाहिए। इसी प्रकार सभी पहलवानों का और खिलाडियों का परिचय देना यहाँ संभव है। विशेष कर पहलवान सूरज मल आदुपुर का परिचय अवश्य ही इस पुस्तक में होना चाहिए था। क्योंकि उन्ही को सर्वाधिक यश कुश्ती के क्षेत्र में मिला था। उन्होंने अपने समय के सभी पहलवानों को (समकालीन) को धूल चटा कर सर्व सर्श्रेष्ठता पूरे ही ब्रज- क्षेत्र में कायम की थी। इसी प्रकार से अन्य क्षेत्रों में भी उच्च पदों पर प्रतिष्ठित लोगों का परिचय भी उपर्युक्त ग्रन्थ में होना चाहिए।

केवल एक दो मोहल्ले अथवा स्व जातियों लोगों ही इसमें नहीं होने चाहिए। अपितु जैसा कि अल्लीका गाँव के दलितों में से माम चंद मेहरा ने न्यायधीश बन कर इस बस्ती का गौरव बढ़ाया है। अतएव इनका भी पूर्ण परिचय दिया जा सका है। संभवत: कुछ दिया भी गया है। जो कि उचित ही है। इसी प्रकार से आर्य समाज को जो समाज सुधार कार्यकम चला था और इस संस्था द्वारा जो-जो भी जन आंदोलन जैसे हिंदी सत्याग्रह और गौरक्षा - आंदोलन एवं शराब बंदी के आंदोलन में इस गाँव के आर्य समाजियों की जो सक्रियता पूर्ण सहभागिता रही है, उसका भी विवरण इस पुस्तक में लेखक दे सकते हैं। उपरोक्त तमाम कमियों के बाबजूद भी यह लेखक इस कार्य के लिए मेरी हार्दिक बधाई के ही पात्र हैं। मुझे उनसे पूरी पूरी आशा है कि वे इस इतिहास-ग्रन्थ को और भी अधिक जानकारियों से भरपूर करके और अन्य दंतकथाओं को दे कर इसको और भी अधिक प्रामाणिक और रोचक बनाएंगे तथा अनावश्यक विस्तृत विवरणों की भर्ती नहीं करेंगे। आशा है कि ग्रामवासी भी इस पुस्तक को हाथों हाथ लेंगे।

हमारी प्रथम पीढ़ी ने कम साधनों में भी अपनी सोच साधना के बल पर काफी कुछ किया है। उसने दौलत सौहरत और इज्जत भी कमाई है। कुछ लोग तो राष्ट्रीय और प्रांतीय स्तर पर अपने अपने कार्यक्षेत्र में सराहे गए हैं। अतएव आजकल की हमारी सुख सुविधा सम्पन्न नई पीढ़ी को तो उन्नति करने के और भी अधिक अवसर उपलब्ध हैं। जबकि हम यह देख कर दुखी और दंग हैं कि अधिक से अधिक सुख-सुविधाएं पा कर भी वही पीढ़ी और भी अधिक आलसी और प्रमादी हो कर पिछड़ती चली जा रही है।

हमने अपने पूर्व पूर्वजों से यही सीखा है कि कभी खाली मत बैठो और सभी काम सीखने की कोशिश करो। बेसक बाद में उसे छोड़ दो और कुछ विशेष विषयों में ही विशेषज्ञता हासिल करो। दूसरे कुसंगति से बचिए। तीसरे अमीरों की बजाय गरीबों से मित्रता करो ताकि दुनिया को समझने का पूरा मौका मिले। स्वामी दयानंद जैसे साधु-संतों से हमने यही सीखा है कि दुष्ट व्यक्तियों का वाणी से भी सत्कार नहीं करना चाहिए और निर्धन सज्जनों का कभी तिरस्कार नहीं करना चाहिए। और असत्य और अन्याय के विरुद्ध सदैव संघर्ष करना चाहिए। अन्याय करने वाले व्यक्ती के समान ही उसको सहन करने वाला भी अपराधी है। हमें केवल व्यक्तिगत उन्नति से ही सर्वदा संतुष्ट नहीं रहना चाहिए अपितु सामाजिक समुन्नति के लिए भी सदैव प्रयास करना चाहिए। अंत में इतना ही कहना है कि कुछ लोग हैं कि अपने ही गमों के गीत गाते हैं, होली हो या दीवाली हरदम मातम मनाते हैं। उन्ही की रागनी पर झूमती है दुनिया जो जलती चिता पै बैठ कर वीणा मनाते हैं।

विनीत, प्रस्तावक

कवि भूमि अल्लीका डॉक्टर धर्म चंद विद्यालंकार
7 मई, 2020 (पीएचडी, डीलिट)
(बुद्धजयंति) वैसाख, शुक्ल पूर्णिमा 2077) सेवानृवित असिस्टेंट प्रोफेसर
वरिष्ठ साहित्यकार एवं इतिहासकार

बदन सिंह चौहान

लेखक का परिचय

मेरा नाम बदन सिंह है। उपनाम के रूप में चौहान लगता हूँ। पूरा नाम बदन सिंह चौहान है। मैं एक किसान परिवार में इस गाँव अल्लीका में पैदा हुआ हूँ। मैंने अपनी प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा (8 वीं कक्षा तक) गवर्नमेंट मिडिल स्कूल अल्लीका से प्राप्त की। तब मैंने हायर सेकेंडरी [(10 + 1)] उत्तीर्ण किया, उस समय उच्चतर माध्यमिक 10 + 2 नहीं था। मैंने एस.डी. कॉलेज पलवल (पंजाब विश्वविद्यालय चंडिगढ़ से स्नातक की उपाधि प्राप्त की। उस समय पंजाब विश्वविद्यालय द्वारा 10 वीं और 11 वीं (उच्चतर माध्यमिक) परीक्षा आयोजित की जाती थी। (उस समय कोई स्कूल शिक्षा बोर्ड स्थापित नहीं था)। अर्थशास्त्र में स्नातक स्तर की पढ़ाई मैंने आगरा विश्वविद्यालय (आर.बी एस. कॉलेज आगरा) से की है)। हॉस्पिटैलिटी मैनेजमेंट इंस्टीट्यूट पानीपत (हरियाणा सरकार) से पर्यटन और आतिथ्य प्रबंधन में पेशेवर अध्ययन किया। पर्यटन के क्षेत्र में अपनी सेवाएं दी हैं | हरियाणा पर्यटन में रहा कुछ समय और उत्तर प्रदेश में भी मैंने सेवा की है। और अंत में अधिकांश समय रिटायर होने तक मध्य प्रदेश पर्यटन में मैंने सेवा की है | एक उच्च अधिकारी के रूप में महा प्रबंधक के पद से रिटायर हुआ, वर्ष फरवरी 2010 में। रिटायरमेंट के बाद चार वर्ष अपने बेटे के पास गुरुग्राम में रहा। वर्ष 2014 से मैं अपने गाँव अल्लीका में रह रहा हूँ।

मेरा जन्म अभिलेखों में (10 वीं की मार्क्स शीट के अनुसार) 2 फरवरी, 1950 लिखा हुआ है | परन्तु वास्तव में मेरा जन्म 11 फरवरी 1948 को हुआ था। पिता का नाम शिब्बन पहलवान और माता का नाम मामकौर है। मैं सात भाइयों और तीन बहनों में तीसरे नंबर पर हूँ। गाँव के मूसाका मोहला में मेरा निवास है। यह पुश्तैनी निवास है मेरा ।

गाँव स्कूल अल्लीका में जाने का वह समय बार बार याद आता रहता है। एक कपडा में पुस्तकों को लपेट कर बस्ता बना लिया जाता था। बस्ता वह होता है जिसमें पुस्तकें रखी जाती हैं। फिर एक तकती हुआ करती थी, लकड़ी की। उसको मुल्तानी मिट्टी से पुताई करते थे और सूखने के लिए धूप में रखते थे। सूखने के बाद तकती का रंग बहुत सुंदर लगता था। पेन्सिल से तकती पर लाइने खींचते थे। और उसके बाद उस पर लिखते थे सरकंडे की कलम से और काली स्याई से। स्याई के लिए पहले पहले तो मिट्टी की कुल्हो की दवात बना लेते थे और फिर कांच की और टिन की दवात आने लगी। मुझे याद है प्राइमरी स्कूल में बृजी (बृजलाल) चौकीदार सभी बच्चों की कलम बनाया करता था। उसके पास एक चाक़ू रहता था। वह सब दृश्य मुझे अभी तक अच्छी तरह याद है।

वर्ष 1963 में आठवीं कक्षा उत्तीर्ण करने पश्चात नवीं कक्षा में गवर्नमेंट हायर सेकेंडरी पलवल में प्रवेश लिया। पलवल का या स्कूल गाँव से 9 किलो मीटर दूर है। साइकिल से जाते थे सभी बच्चे। गाँव से घुघेरा तक कच्चा रास्ता था और बरसात के दिनों में चलना बहुत कठिन हो जाता था। घुघेरा में सड़क मिलती थी। बहुत अच्छा लगता था जब सड़क पर चलते थे। यह साइकिल से जाना आना स्कूल से कॉलेज जाने तक किया 1963 से 1970 तक किया। परीक्षाओं के दिनों में पलवल शहर में कुछ महीनो के लिए कमरा किराए पर लिया करते थे। मैं समय समय पर हायर सेकंडरी स्कूल के हॉस्टल में भी रहा हूँ।

आजकल गाँव में रह कर अपना समय स्वयं अध्ययन में व्यतीत कर रहा हूँ। अध्ययन में मेरी रूचि इतिहास में है। अर्थशास्त्र मेरा अपना विषय का भी पुनर्ध्ययन करता रहता हूँ।

पूरा नौकरी का जीवन शहरों में, पर्यटन केन्द्रो में अधितम सुविधाओं के साथ व्यतीत किया है। अब, जब मैं गाँव में रह रहा हूँ तो इसका आनंद अलग ही है, जो सीधा मन को छूता है। कोई बनावट नहीं होती है गाँव में। शांत वातावरण रहता है और शहर की भाग दौड़ से दूर गाँव में रहना अच्छा लगता है। और मैं गाँव का तो रहने वाला हूँ तो

गाँव में रह कर अपने गाँव वालों में मिल गया हूँ, जो नौकरी के समय दूर रह कर गाँव लोगों को भूल सा गया था। ये लोग मेरे अपने हैं और मैं अपनों में रह रहा हूँ।

मेरा नाम बदन सिंह है। उपनाम के रूप में चौहान लगता हूँ। पूरा नाम बदन सिंह चौहान है।

बहुत से लोग प्राय: मुझसे पूछते हैं कि मेरा गोत्र कुंडू है तो मैं चौहान क्यों लगाता हूँ अपने नाम के आगे उपनाम के रूप में। मैं स्पस्ट करना चाहूंगा कि मेरे अल्लीका गाँव के जाटों का गोत्र कुंडू है। मैं भी कुंडू ही गोत्र का हूँ और मैं कुंडू ही हूँ। गोत्र वंशावली के बारे में अभिलेख व वंश - गोत्रों का इतिहास हमारे भाटों के पास होता है। ये भाट गाँव गाँव जाते हैं और गाँव व परिवार की वंशावली पढ़ कर सुनाते है। इन भाटों के कथन पर बहुत सीमा तक विश्वास किया जा सकता है। हमारे गाँव के भाट प्रारम्भ से ही जो आते रहे हैं वह इस प्रकार बताते आ रहे हैं। चौहान एक कुल है - अर्थात एक शाखा है जाटों की। और इस चौहान शाखा में गोत्र हमारा कुंडू है। चौहान कुल में अनेको गोत्र हो सकते है। जैसे हमारे गाँव में गोत्र कुंडू है और हम चौहान कुल के हैं। परन्तु मित्रोल, औरंगाबाद, अटोहाँ गाँव में चौहान है परन्तु इनका गोत्र राय बिड़ार है। इन गाँव के लोग कोई भी उपनाम राय बिडार नहीं लिखते है और यहां सभी लोग चौहान ही लिखते है। 1960 के दशक से पहले तो अपने नाम के आगे उप नाम लगाते ही नहीं थे। लोग शिक्षित नहीं थे इस लिए उप नाम नहीं लगाते थे। गाँव में शिक्षा का विस्तार हुआ, लोग पढ़े लिखे होने लगे तो उपनाम लगाने का चलन प्रारम्भ हुआ। भाट ने बताया कि हम चौहान कुल में हमारा गोत्र कुंडू है। पढ़े लिखे लोगों ने अपने नाम के आगे चौहान उपनाम लगाना एक गौरव की बात मानी। और कुंडू लिखना प्रारम्भ नहीं किया। कुंडू तो अब बाद में जा कर 1980 के दशक के बाद में लोगों ने लिखना प्रारम्भ किया है। उन लोगों ने जब यह देखा की पश्चिमी हरियाणा में कुंडू गोत्र के लोग बड़ी शान से उपनाम कुंडू लिख रहे हैं और अच्छे सम्मानित पदों पर हैं, राजनीति में भी कुंडू लोग हैं। अपनी कुंडू पहचान को और आगे बढ़ाने के उद्देश्य से हम लोगों ने अपने नाम के आगे कुंडू लिखना प्रारम्भ कर दिया। इससे यह लाभ हुआ कि पश्चिम हरियाणा के कुंडू लोग हम अल्लीका गाँव के पांच गाँवों को जानने लगे हैं। भाई चारा बढ़ा है इससे।

लेखक का परिवार: - दाएँ से बड़ी पौत्री अनवी सिंह , पुत्र कुलदीप सिंह, छोटी पौत्री ईरा सिंह और पुत्र वधु रुचि सिंह

तो हम अल्लीका गाँव के लोग चौहान ही है और गोत्र हमारा कुंडू है। चाहे हम चौहान लिखे या कुंडू लिखें, ये दोनो सही हैं।

चौहान यदि हमारा मूलभूत वंश है तो कुंडू हमारा गोत्र या कुलनाम है, ऐसी मान्यता इस विषय में प्रसिद्ध इतिहासकार एवं साहित्य कार डॉक्टर धर्मचंद विद्यालंकार की है।

लेखक की कलम से (अप्रैल, 2020 में प्रथम संस्करण में)

यह पुस्तक मेरा पहला लेखन है जो मेरे अपने गाँव अल्लीका के बारे में लिखा गया है। पिछले कई वर्षों से मैं सोच रहा था कि मुझे अपने गाँव की पृष्ठभूमि, उसकी संस्कृति और उसकी उत्पत्ति के पर कुछ प्रकाश डालना चाहिए। मेरे कई अन्य शुभचिंतको ने भी मुझे उत्साहित किया कि कुछ लिखा जाए अपने गाँव के बारे में। जैसे सेवानिवृत्त प्रोफेसर डॉक्टर धर्म चंद विद्यालंकार **(PHD, D. LIT)**, सेवानिवृत्त शिक्षक मास्टर ईश्वर सिंह, सेवानिवृत्त अतिरिक्त जिला न्यायाधीश माम चंद मेहरा मेहरा, मास्टर बीर पाल सिंह और मेरे गाँव के कई अन्य लोगों ने भी मुझसे कहा और मुझे प्रेरित व प्रोत्साहित किया की नौकरी के बाद कुछ लेखन का कार्य किया जावे। और विशेष रूप से इन लोगो ने मुझसे कहा कि मेरे गाँव के बारे में, इसका इतिहास कैसा है, कब बसा यह गाँव, कैसी रही पूर्व में इसकी संस्कृति, आर्थिक स्थिति और लोगो की सामजिक व धार्मिक दशा कैसी थी आदि के बारे में कुछ लिखा जाए। मुझे मेरे मित्रों का यह सुझाव बहुत ही अच्छा लगा और मैंने लिखना भी प्रारम्भ कर दिया। और सम्बंधित जानकारी एकत्रित करने का प्रयास किया है।

एक बहुत ही बड़ा योगदान डॉक्टर धर्म चंद विद्यालंकार का है। वह एक लेखक हैं। आपके द्वारा अभी तक **50** से अधिक पुस्तकें लिखी जा चुकी हैं और अभी भी निरंतर लिख रहे हैं। अनेकों पत्रिकाओं में आपके लेख छपते रहते हैं। पिछले **4 - 5** वर्षो से, प्राय: हम दोनों की सप्ताह - दस दिन में मुलाक़ात हो जाती है और दो दो - तीन घंटे विचार विमर्श चलता रहता है। आपने तो मुझे इतना निरंतर प्रोत्साहित करके आगे बढ़ा दिया कि मुझे एक लेखक बना दिया। आपकी बहुत सी पुस्तके मैंने पढ़ीं हैं।

मैंने प्रयन्त किया है कि जो भी जानकारी जुटा कर यहाँ प्रस्तुत करूँ वह सही हो और बिना पक्षपात के हो। फिर भी मैं मानता हूँ कि मेरे लेखन में त्रुटिया भी सम्भव हैं। मैं सविनय पाठकों से विनम्रता पूर्वक निवेदन करना चाहूंगा कि मेरी उन त्रुटियों मेरे को को अवश्यमेव अवगत करावें ताकि उनका सुधार किया जा सके।

मैं बहुत आभारी हूँ मेरे गाँव के निवासी स्वर्गीय श्री धरम पुत्र लीतर (रामदयाल) मूसाका मोहल्ला का। सबसे पहले उसने मुझे गाँव के बसने के, व पुरानी वंशावली बाबत कुछ प्रारंभिक प्रयाप्त जानकारीयां दी। उसके पास थी कुछ जानकारी जो उसने रख रखी थी। इसमें मुझे बहुत शोध करने में बहुत सहायता मिली। आगे चल कर जब मेरी इस गाँव के भाट श्रीकृष्ण कुमार से भेंट हुई और उसने गाँव की वंशावली को पढ़ कर सुनाया तो मेरा शोध आगे बढ़ा। यह भाट और इससे पहले इनके पूर्वज पुस्तों से गाँव की वंशावली लिख रहें हैं। भाटों पर विश्वास किया जा सकता है। इस भाट की वंशावली की पुस्तक को मैंने देखा है और फोटो भी लिए हैं जो इस मेरी पुस्तक दिया है। ये भाट सोनीपत में रहते हैं। भाट श्रीकृष्ण कुमार ने बताया कि उनसे पहले उनके नाना जी भाटगीरी (अर्थात वंशावली पढ़ने सुनाने का काम) किया करते थे। क्योकि उसके नाना जी का कोई पुत्र नहीं था तो उसकी पुत्री के बेटे हैं श्रीकृष्ण कुमार, तो अब इसके द्वारा यह कार्य किया जा रहा है। गाँव की वंशावली भी जितना मैं एकत्रित कर पाया, मैंने यहां प्रस्तुत किया है। सितम्बर **2015** में गाँव का भाट मेरे गाँव में आया था। उसने मुझे गाँव के बसावट के बारे में और वंशावली के बारे में पढ़ कर सुनाया, उसी के आधार पर मैंने जानकारी इकट्ठी कर यहाँ इस पुस्तक में लिखी हैं।

दो दिन **27** और **28** सितम्बर **2015** को भाट श्रीकृष्ण मेरे पास आया था। वंशावली पढ़ने के वह नगद धन या अनाज या कोई आभूषण आदि लेता है। यह उसका व्यवसाय है वंशावली पढ़ना और बदले में धन लेना। इस समय के आगवन पर गाँव से लगभग **3** लाख रुपए इकट्ठा कर के ले गया था। मैंने उसको पांच सो रुपए दिए थे और एक समय का भोजन कराया था। गाँव का पुरोहित हुआ करता है भाट सबसे पहले खचेरू साधपट्टी के घर ठहरता है और पहला भोजन वहीँ करता है। मूसाका मोहल्ला में सबसे पहले हमारे घर पर भोजन करता है, क्योंकि मोहल्ले में

बड़ा घर हमारा ही है। दादा मूसा सभी भाइयों में बड़ा था जिसके नाम पर मोहल्ले का नाम मूसा पड़ा और दादा मूसा के बड़े बेटे का खानदान हमारा घर चला आ रहा है। इस लिए जो भी भाट मोहल्ले में भोजन करता है वह सबसे पहले हमारे यहाँ करता है (हम शिब्बन (मेरे पिता जी) के परिवार के हैं। मैं आभारी हूँ सेवानिवृत कृषि वैज्ञानिक डॉक्टर देवरतन सिंह का जो मेरे चाचा श्री अमीलाल के पुत्र हैं। उनके पास भी बहुत जानकारी है जिससे मैंने इस पुस्तक लेखन में बहुत लाभ है। वह गाँव की वंशावली के बारे में बहुत रूचि रखते हैं।

मैंने प्रयत्न किया है कि अपने गाँव के बारे में जितना संभव हो सके परिचय दे सकूँ। वंशावली में जानने का प्रयत्न किया है जो मैंने अपने गाँव के भाट से प्राप्त की।

हमारे जाट क्षेत्र ब्रज भूमि में होडल में जन्मी महारानी किशोरी जिनका भरतपुर के महाराजा सूरजमल से विवाह हुआ था। आज उसके महल व कचहरी भवन खंडर हो चुके हैं। यहां इस प्रथम संस्करण में इसका विवरण दिया है। राजस्व सम्बन्धि कुछ जानकारी भी दी गई हैं, जिनका दिन प्रतिदिन हम किसानों से सीधा सम्बन्ध है। जमीन सम्बन्धी विषयों के बारे में जानकारी बहुत ही उपयोगी हैं हम किसान वर्ग के लिए। है। जानकारियों के अभाव में मुझे बहुत कुछ चाहिए था वह सब मैं नहीं दे सका हूँ। मेरा प्रयास रहेगा कि आगे इस काम पर और शोध जाए।

हमारा गाँव जाटों का गाँव है। उचित समझा गया कि जाटों के गोत्रों कि एक सूची तैयार कर यहां रखी जाए। इंटरनेट से जाटलैंड की वेबसाइट से मुझे यह सूची मिल गई जो इस पुस्तक में मैंने दी है। पाठकों को उपयोगी हो सकता है। संशोधित संस्करण में वह विस्तारमय से निकाल दी गई है।

और कृषि भूमि सम्बन्धी जानकारी इस पुस्तक में मैंने दी हैं और उनके शब्द नाम क्या आते हैं - किसको क्या कहते हैं यह दिया है। हम किसानों के लिए दिन प्रतिदिन काम आने वाली जानकारी हैं ये - ये अनावश्यक नहीं हो सकती।

वंशावली का काम तो निरंतर खोज का विषय है। और गाँव के प्रतिष्ठित लोगों के बारे में जानकारी प्राप्त करना एक असीमित प्रक्रिया है जो कभी पूर्ण हो हो ही नहीं सकती।

पुस्तक में अवश्य ही अनेको त्रुटियाँ भी रह गई होंगी। मेरा निवेदन है कि पाठक मेरी उन त्रुटियों को मुझे अवश्य ही अवगत करा कर मुझे अनुगृहीत करेंगे।

विनीत:

लेखक: बदन सिंह चौहान

दूरभाष: 9468124228

पुस्तक में मुख्य परिवारों के बारे में दिया गया है। उनके बुजुर्गों के बारे में जानने की कोशिश की गई है। जिन्होने विशेष कार्य किए हैं उनका विवरण देने का प्रयत्न किया गया है। कुछ लोगों का शिकायत के रूप में भी कहना है कि अमुक परिवारों को अधिक महत्व दिया गया है। मैं सविनय स्पस्ट रूप से कहना चाहूँगा कि यह पुस्तक किसी विशेष वर्ग व व्यक्तियों को प्रसन्न करने के लिए नहीं लिखी गई है। यह गाँव का एक परिचय है। और जहाँ तक वंशावली का प्रश्न है यह तो भाट का काम है। यह काम मेरे लिए संभव नहीं है और ना ही मेरे करी क्षेत्र में आता है। अत: पूरे गाँव की वंशावली मे मुख्य बुजुर्गों को लेने का एक प्रयास है। वर्तमान पीढ़ी के बच्चों का नाम लिखना मेरे लिए संभव नहीं हो पाएगा। इसके लिए मैं क्षमा चाहूँगा।

बदन सिंह चौहान

लेखक की कलम से (जून, 2020 में द्वितीय संस्करण में)

मेरी पहली – पहला संस्करण, यह पुस्तक **15** अप्रैल **2020** को पूरी हुई । और मैंने उसको लोगो को ऑनलाइन व्हाट्सप्प पर भेजा, फेसबुक पर भेजा और ऑनलाइन पब्लिश भी किया । मेरी यह पुस्तक को लोगों ने बहुत ही सराहा, बहुत से लोगो के फ़ोन आए, और बहुत से लोगों ने अच्छे सुझाव दिए । भगत सिंह मेरा भतीजा है (मेरे बड़े भाई का सबसे बड़ा पुत्र है), उसने मुझे बताया कि इस पुस्तक में खेलों के (स्पोर्ट्स) में जो अग्रणी रहे हैं हमारे गाँव से, उसके बारे में कुछ लिखा ही नहीं है । वह एक स्पोर्ट्स का आदमी रहा है, वह अपने वजन ग्रुप में राज्य स्तर हरियाणा में बॉक्सिंग प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त कर चुके है । नई दिल्ली नगर निगम की यंत्री शाखा में अपनी सेवाएं दे रहे हैं । बहुत मेहनती हैं भगत सिंह, स्कूल के दिनों से आज भी सुबह पांच बजे दौड़ने जाते हैं पांच छह किलो मीटर प्रीतिदिन । और आज भी अपने खेल बॉक्सिंग से जुड़े हुए हैं । एक जूनून हैं बॉक्सिंग उसका और जब मैं अपनी पुस्तक में खेलों के बारे में ना लिखूं , यह अन्याय तो हुआ है । इसके लिए सविनय खेद प्रकट करता हूँ। स्पोर्ट्स के बारे में इस संस्करण में देने का प्रयत्न किया गया है । बॉक्सिंग में 1982, 1983, 1984 और 1985 में भगत सिंह हरियाणा स्टेट का बॉक्सिंग चैंपियन रहा है और दो साल जूनियर का रहा, एक साल सीनियर व एक साल सीनियर का रहा । नेशनल में एक बार कांस्य पदक प्राप्त किया । वाई. एम. सी. ए .में एक बार कांस्य पदक प्राप्त किया । उसके बाद बिजवासन दिल्ली में बॉक्सिंग क्लब में बॉक्सिंग क्लब खोल रखा है , उसके सचिव हैं भगत सिंह ।

शिवेंद्र मेरे चाचा अमीलाल के सबसे छोटे पुत्र हैं, उसने मुझे वंशावली के बारे में एक बहुत ही सुन्दर चार्ट बना भेजा है । यह चार्ट हमारे मूसा कुनबा के बारे में, इस चार्ट से मुझे बहुत मदद मिली । वैसे यह वंशावली पहले से ही लिख हूँ । आजकल शिवेंद्र हरियाणा बिजली बोर्ड में SDO (उप मंडल अधिकारी) के पद पर कार्यरत हैं । आभार है आपका दिल से, प्रिय शिवेंद्र । शिवेंद्र द्वारा सुझाव भी दिया गया कि कुछ निजी बातें इसमें नहीं लिखें जिससे कोई अमुक व्यक्ति नाराज हो जाए । मैंने कुछ निजी विषय को इस से इस दूसरे संस्करण में नहीं रखा है ।

मैं आभारी हूँ डाक्टर धर्म चंद विद्यालंकार जी का, जिन्होंने मेरी इस पुस्तक के प्रथम संस्करण में प्रस्तावना लेख प्रस्तुत किया है । आपके द्वारा दिए गए अमूल्य सुझावों का इस संस्करण में पूर्ण रूपेण ध्यान देने का प्रयास किया गया है । गाँव के प्रमुख व्यक्तियों कि जैसे जैसे जानकारी प्राप्त हुई इस पुस्तक में जोड़ता चला गया हूँ । गाँव के सभी मोहल्ले की वंशावली की जानकारी उपलब्ध कराने का प्रयत्न किया जा रहा है । जहां तक डाक्टर विद्याअलंकार ने लिखा है कि जब दोहता अपने नाना के यहां रहने लगता है और नाना को कोई पुत्र नहीं होता है, तो उसकी पुत्री का पुत्र (दोहता / धेवता) नाना की संपत्ति का वारिस हो जाता है और उसी नाना के गाँव में रहने लगता है । ऐसी स्थिति में नाना का गोत्र भी दोहते (धेवते) को अपनाना अनुचित नहीं है । जैसे मेरे गाँव में बहुत से लोग हैं जो अपने नाना के वारिस के रूप में रह रहे हैं और इन लोगों ने नाना का गोत्र भी अपना लिया है अर्थात कुंडू गोत्र अपना लिया है । मेरा इस बिंदु पर अपना कोई अभिमत नहीं है । यह एक संवेदन शील विषय हैं और बहुत लोगों को नाराज कर सकता है ।

दिनांक 26 अप्रैल 2020 को मेरे मित्र श्री देवी सिंह का भी मेरे पास फ़ोन आया । और बताया कि उसने यह पुस्तक प्रथम संस्करण पढ़ी हैं । मेरे इस प्रयास को सराहनीय बताया । आपने बहुत से अमूल्य सुझाव दिए । डॉक्टर विद्यालंकार की तरह आपने भी यही कहा कि इस पुस्तक में ऐसी सामग्री भी है जो पुस्तक के उद्देश्य से मेल नहीं खाती हैं - जैसे महारानी किशोरी का इतिहास का इस पुस्तक से कोई सम्बन्ध ही नहीं है । यह पुस्तक मेरे गाँव अल्लीका के बारे में है और उसी के बारे में ही होना चाहिए । जाटों के गोत्रों के बारे में जो पुस्तक में लिखा है, इस सामग्री ने 125 से अधिक पृष्ठ तो गोत्रों की सूची ने ही ले लिए हैं । इसका यहां इस पुस्तक के मूल लेखन स्थान में अधिक औचित्य नहीं

बनता है। अत: मैंने इसको (गोत्रों की सूची को) भी अपनी दूसरे संस्करण में स्थान नहीं दिया है। जाटों की गोत्रों की सूची की पृथक से एक पुस्तिका बना दी गई है।

यह भी सुझाव मिले पुस्तक लेखक की आत्मकथा नहीं लगे - वैसे मैंने प्रयत्न किया है कि यह पुस्तक मेरे और मेरे परिवार के इर्द गिर्द केंद्रित नहीं रहे और अभी भी ऐसा ही है। अपितु गाँव स्तर जो बिंदु मेरे परिवार से संबधित हैं उसका उल्लेख तो औचित्यपूर्ण है। मुझे सुझाव मिले कि ऐसा कुछ ना लिखा जाए जिससे किसी अमुक व्यक्ति को पीड़ा हो। इस बिंदु पर मेरे द्वारा ध्यान दिया गया है। लेखन तो कभी पूर्ण नहीं होता है। फिर भी प्रथम संस्करण में महत्व पूर्ण व्यक्तियों का विवरण सभी का देना पूर्ण नहीं हो सका था, यहां इस कमी को पूर्ण करने का प्रयत्न किया गया है।

मैंने यहां कुछ फोटो भी दिए हैं, वे ही फोटो दिए है जिनको आवश्यक समझा गया और ध्यान रखा गया कि यह पुस्तक एक फोटो-संग्रह (Albumb) नहीं प्रतीत होवे।

विशेष कर इस बार हमारे गॉव के गौरव आजाद हिन्द फ़ौज के सिपाई गनर हवलदार उमेद सिंह, जिसने दूसरे विषयुद्ध के समय विदेशों लड़ाई लड़ी और यातनाएं सही, के बारे में दिया गया है।

इस पुस्तक में चारों नगरा (नगला) – यादुपुर (आदुपुर), कैराका, रजौला और ककराली के बारे में भी जानकारी जुटा कर इस बार लिखी गई हैं। यादुरपुर से मेरे साथी भरती (भरत सिंह ठेकेदार), कैराका से जय सिंह और सुभाष, रजौला से तुलसी राम और ककराली से तारा सिंह एनआर मुझे बहुत ही सहयोग दिया। इन्होने लोगों से मिलवाया और जानकारी दिलवाई। पुराने भवन दिखाए, जिनके फोटो मैंने यहाँ दिए है। यादुपुर में ठेकेदार परिवार की पुरानी हवेलियां देखी जो आज खंडहर अवस्था में हैं। इसी प्रकार ककराली में साध पट्टी की पुरानी हवेलियों के भी मैंने देखी – इनको बोंगर ज़ोर की हवेलिया कहते हैं – बाहरी बोंगर ज़ोर भीतरी बोंगर ज़ोर। इन भवनों के खंडहर हमें बताते है कि इमारत कभी बहुत ही बुलंद थी।

मेरे गाँव के - जज साहिब माम चंद मेहरा, डॉक्टर देव रत्न, शिवेंद्र सिंह, शक्ति सिंह, देवी सिंह, ककराली से करण सिंह, भगत सिंह, भारत, एसडीओ गंगालाल (पुत्र राधे), कर्नल रवि, लालचंद, अध्यापक बीरपाल, अध्यापक ईश्वर और गाँव के जिन लोगों के पास भी मैं गया, सभी ने मुझे भरपूर सहयोग दिया। सभी ने कहा कि गाँव पर कोई पुस्तक लिख रहा है यह पहली हो रहा है। यह पुस्तक एक उपयोगी दस्तावेज़ के रूप में लाभप्रद होगी।

जज माम चंद मेहरा द्वारा सुझाव दिया गया कि यह पुस्तक 'मेरा गाँव अल्लीका' गाँव के बारे में है और इसमें सभी ग्राम निवासियों के बारे दिया जाना चाहिए। जैसे अनुसूचित जातियों के बारे में भी बताया जाए। मैंने उनके बारे भी यथा संभव बताया है। और उन्होने कहा कि हरिजन शब्द का प्रयोग करने के स्थान पर कोली समाज का प्रयोग किया जावे। तदानुसार मैंने अब ऐसा ही किया है।

डॉक्टर धर्मचंद विद्यालंकार के द्वारा लिखी गई कविता में 'मेरे गाँव की परिक्रमा' में पुराने लोगों के बारे में उनकी विशेषताओं का वर्णन कर दिया गया है, पूरे गाँव का भ्रमण करा दिया है। और दूसरी कविता में 'बुरा ना मानो होली है' मे एक अनूठे ढंग से लोगों के बारे में बताया गया है और किसी को बुरा ना लगे।

लाल चंद जी व सुख देव के लेख हमें आध्यात्मिक की ओर ले जाते हैं। और दूसरी तरफ मधु सिंह चौहान (लेखक की पुत्री) का 'भारत देश में शिक्षा का विकास' लेख हमें देश में शिक्षा का कैसे विकास हुआ, एक महत्वपूर्ण जानकारी देता है। इतना ही नहीं, छोटे हाथो से लेखनी की प्रस्तुति, अन्वी सिंह चौहान (जो सातवीं कक्षा की छात्रा है) जो लेखक की पौत्री है, ने 'स्कूल का जीवन व अनुशासन' पर अपना लेख दे कर मन को छू लिया।

पुराने लोगों के फोटो दे कर उनको याद करने का प्रयत्न किया गया है। पुराने भवनों के खंडहर मुझे बार बार उनकी भव्यता की परिकल्पना में ले जाते हैं। बड़ा खेद है कि बुजुर्गों की बनाई गई हवेलयों को, उनकी आने वाली पीढ़ियाँ संभाल भी नहीं पाए हैं। सालिग राम की हवेली के खंडहर देख कर आज तरस आता है और उसकी कचहरी की ईमारत तो कई दशकों पहले ही ढाह दी गई थी, उसका तो नामोनिशान भी नहीं है आज। सरूप (स्वरूप) की हवेली का तो आज निशान भी नहीं है।

डॉक्टर धर्मचंद विद्यालंकार ने मुझसे कहा कि बिना साहित्यकारों का विवरण दिए यह पुस्तक एक अधूरा सा ग्रंथ होगा। इस लिए गाँव में जीतने भी कवि साहित्यकार हुए है उनके बारे यथा संभव जानकारी जुटा कर यहा दी गई हैं। उनकी रचनाओं के कुछ अंश भी दिए गए हैं।

गाँव की प्राय सभी: पोखर, सभी मंदिरों, स्कूलों, अस्पताल, तीज मेले समय परंपरागत दंगल और कुछ पुराने लोगों के भी फोटो यहाँ इस पुटक में दिए गए हैं।

गाँव के लोगों की रिस्तेदारियां, पलवल के आस पास के गांवों में ही हैं अधिकांशत:। मुझे ऐसा लगा कि पलवल जिले के सभी गावों के नाम दे दिए जाएँ। और जिले के तीनों उपखंडों (पलवल, होडल और हथीन) के गांवों के नाम (जनसंख्या सहित) यहाँ दिये हैं। लोगों को इससे जानकारी मिल सकती है कौन सा गाँव है और कितना बड़ा है और कितना छोटा है।

भाट की वंशावली की पोथी से प्राप्त गाँव की उत्पत्ति की जानकारी बहुत ही महत्वपूर्ण है। इससे पता चलता है कि गाँव की उत्पत्ति कब हुई, कहाँ से आए हम लोग, कौन था पहला व्यक्ति जिसने गाँव बसाया। प्रथम व्यक्ति जिसका नाम था श्री साला (साला राम)। उसकी निशानी के रूप में उसका या उसके अगली पीढ़ी के द्वारा बनाया गया कुआ आज भी उपलब्ध है। इस कुए को साला का कुआ कहते हैं। यह धतीर गाँव में है। इसका फोटो यहाँ दे कर मुझे बहुत खुशी हुई है।

पाठकों से नम्र निवेदन है कि मेरी त्रुटियों को अवश्य अवगत कराएं, ताकि आगे सुधार किया जा सके। और यह भी निवेदन है कोई नई जानकारी, मेरे गाँव के बारे में हो, तो बताएं कृपया।

अंत में पुन:-पुन: सभी का आभार प्रकट करते हुए, मैं सादर धन्यवाद करता हूँ।

पाठकों को मेरा प्रणाम।

विनीत
लेखक: बदन सिंह चौहान

---xx---

पुस्तक में अवश्य ही अनेकों त्रुटियाँ संभव है। कृपया उनको अवगत करावें ताकि उनका सुधार किया जा सके। अनेकों जानकारी भी छूट गई होंगी, उनको अवगत करा कर मुझे कृतज्ञ करेंगे ताकि उनको यहाँ जोड़ दिया जावे। मेरा प्रयत्न रहेगा कि अधिक से अधिक जानकारी एकत्र कर पुस्तक में लिखी जावें।
यह जाटों का इतिहास नहीं है, यह मेरे गाँव का इतिहास है, गाँव अन्य जातियों के लोग भी रहते हैं। इसीलिए सभी जातियों का विवरण देने का प्रयास किया गया है।

बदन सिंह चौहान

एक नज़र में गाँव की उत्पत्ति

हमारे गांव के भाट ने बताया कि बिक्रम सम्वत 1122 (अग्रंजी वर्ष 1065) में ग्रव अल्लीका बसा। माह असाड पचंमी, कृष्ण पक्ष, सोमवार। चौहान कुल – गोत्र कून्डू। – अग्नि वशं। अनलकुन्ड से निकलने के कारण कून्डू कहलाए।

अल्लीका गॉव के बसने के समय के बारे में निम्न बातें ध्यान देने की है।

- भाट यह भी कहता है कि **बिक्रम समंवत 1605 में** खानीचन्द ने उस समय के भाट को दान में चॉदी के टोडर ''आभूषण '' दिए। और खानीचन्द साला राम का पोता है।
- बिक्रम समंवत 1605 में खानीचन्द की आयु 30 साल की भी मान लेते हैं तो उसका जन्म 1575 बिक्रम समंवत में बनता है।
- खानीचन्द सज्जन का तीसरे नम्बर का बेटा है। अतः खानीचन्द के जन्म के समय सज्जन की उम्र कम से कम 28 साल तो होगी।
- अतः सज्जन का जन्म 1547 बिक्रम समंवत का हुआ।
- और सज्जन साला राम का पॉचवे नम्बर का बेटा है। अतः सज्जन के जन्म के समय साला राम की उम्र कम से कम 35 साल तो होगी।
- अतः साला राम का जन्म 1512 बिक्रम समंवत का हुआ।
- अतः हो सकता है कि साला राम ने जब अल्लीका बसाया उस समय 10 की उम हो 1522 बिक्रम समंवत में अल्लीका को बसाया हो।
- अतः हो सकता है कि भाट की पुस्तक में 1522 बिक्रम समंवत की जगह गलती से 1122 बिक्रम समंवत लिख गया हो।
- बिक्रम समंवत 1605 में साला राम का पोता खानीचन्द जिन्दा था, उम्र कम से कम 30 साल होगी, तो साला राम 1122 बिक्रम समंवत में कैसे जीवित हो सकता है ..... यह असम्भव है। साला राम और खानीचन्द '' दादा व पौत्र में 63 साला का अन्तर है। अतः साला का जन्म 1512 बिक्रम समंवत (1575-63=1512) में हुआ।

बिक्रम सम्वत 1532 - 57 = सन 1475 में गाँव बसा।

- हसनपुर से साला और गोला का परिवार धतीर आए। बाला इनका ''साला और गोला का'' मामा का पुत्र था। साला और गोला ने छोड दिया। और अल्लीका के स्थान पर एक जोहड–पोखर के किनारे बस गया जिससे अल्लीका ग्रव बसा। इस गांव को गारेका भी कहते हैं क्योंकि साला के मवेशी–पशओं में से एक पशु झोटा पोखर के किनारे कीचड में लेट गया था, वह्री पर सालाराम ने अपना पहला निवास बनाया। उस समय हिन्दु और मुसलमानो की लडाई के कारण हसनपुर छोडना पडा। साला और गोला का पिता मोहन लाल धतीर गावॅ में ब्याहा था।

खानी चंद का जन्म वर्ष - 1605 -30 = **1575** बिक्रम सम्वत

सज्जन का जन्म वर्ष - 1575 - 28 = **1545** बिक्रम सम्वत

साला का जन्म वर्ष - 1547 - 35 = **1512** बिक्रम सम्वत

यदि साला 20 की आयु में धतीर छोड़ा बह होगा, तो 1512 +20 = **1532** बिक्रम सम्वत में गाँव बसाया गया।

अर्थात बिक्रम सम्वत **1532 - 57 = सन 1475 में गाँव बसा।**

बदन सिंह चौहान

हमारे 5 गाँव हैं - अल्लीका गाँव के। अल्लीका से ही निकले हैं ये गाँव - इनको हम अल्लीका वाले नगरा बोलते हैं।

आदूपुर - भण्डिया मोहल्ले से निकला है।

ककराली - साधमोहल्ले से निकला हैं। - एक घर कबीर का मूसाका मोहल्ले से है।

रजोलाका - साधमोहल्ले से निकला है।

कैराका - दानीका मोहाली से और चौक मोहल्ले से निकला है।

Allika Village Land detail in year 2018-2019 is as under -

Hadbast No. 36 Total Khewat 938 Total Khatoni 1052 Total Khasra 4271

गाँव आबादी की आबादी देह की भूमि कुल 246-2 [कनाल (4922 मरले अर्थात 30 एकड़, 122मरले)] गै.मु. है (अर्थात कृषि के अयोग्य है) | खेवट नंबर 929 और खतौनी नंबर 1044 है। खसरा नंबर 133/2 है।

अध्याय - 1

मेरा गाँव अल्लीका - एक परिचय

गोवर्धन - (दिवाली के एक दिन बाद)

मेरी धर्म पत्नी अंगाकरी / अंगा (बाटी) बनाते हुए

नारायण बनाते हुए

मेरा गाँव अल्लीका - एक परिचय

मेरे गांव का नाम अल्लीका है। जिला पलवल से पश्चिम में 10 किलो मीटर की दूरी पर स्थित है। यहां लगभग 700 घर हैं और कुल आबादी लगभग 5000 है। जाट जाति की बहुलता है मेरे गाँव में। कोली, बाल्मीकि, नाई, कुम्हार, बल्हार, ब्राह्मण भी रहते हैं, एक घर धोबियों के भी हैं। मेरा गाँव लगभग 550 वर्ष पहले यह गांव बसा। बसावट से अब तक 20 वीं और 21 वीं पीढ़ी भी चल रही है।

वर्ष, 2020 में, आज हमारे इस गांव में शिक्षा का स्तर बहुत ही अच्छा चल रहा है। हर एक व्यक्ति चाहता है कि उसके बच्चे स्कूल जाए, पढ़े लिखे, भविष्य में अपना विकास करें और देश की सेवा करें और समाज की सेवा करें। यह एक बहुत अच्छी बात है। लोगों में जागरूकता फैली है अब सोचने लगे हैं कि पढ़ाई के बिना कुछ नहीं है। पहले जमाने में यहां हमारे देश में शिक्षा के इतने साधन नहीं थे और इसी कारण लोग बच्चों को स्कूल नहीं भेज सकते थे।

अभी पिछले दिनों सर्वे हुआ था , वर्ष 2019 में, उसके अनुसार 0 से 14 वर्ष के बच्चों का पढ़ाई के आंकड़े इकट्ठे किये गये, जिसके अनुसार पाया गया कि कुल 887 बच्चों में से जो भी स्कूल जाने योग्य है वे बच्चे सभी स्कूल जा रहे हैं। यह जान कर बहुत अच्छा लगता है। गांव में दो सरकारी स्कूल हैं, एक हायर सेकेंडरी 12वीं तक और दूसरा प्राइमरी स्कूल है, पांचवीं तक। अब तो अन्य 3 प्राइवेट स्कूल भी हैं गॉव में। जब हमारा देश आजाद हुआ था, सन 1947 में, तब एक स्कूल था प्राइमरी, फिर मिडिल बना। और बाद में हाई स्कूल और फिर हायर सेकेंडरी स्कूल बना। और प्राइमरी शाखा अलग कर दी गई। पहले, आजादी से पहले यहाँ प्री प्राइमरी 1 से 3 तक का स्कूल था। बच्चे लोग आगे पढ़ने के लिए गांव धतीर जाते थे, जहां 4थी एवं 5वीं की कक्षाएं लगती थी। उसके बाद गांव पृथला के स्कूल में दाखिला लेना पड़ता था। धतीर 4 किलो मीटर और पृथला 9 किलो मीटर पड़ता है। बहुत कम ही बच्चे पढ़ने के लिए जाते थे। उनके मां बाप अपने बच्चों को बहुत ही कम भेजते थे।

जाटों के बहुल इस गांव में कृषि मुख्य व्यवसाय है। पिछड़ी जाति के लोगों के पास कृषि भूमि नहीं है। इस लिए वे लोग मजदूरी करते आ रहे हैं। आज के समय में जैसे जैसे समय आगे बढ़ता गया, पढ़ाई आगे बढ़ती गई और लोग, चाहे वे उच्च वर्ग के हों या पिछड़ी जाति के, शहर में जा कर योग्यता अनुसार नौकरी करने लगे हैं। आज हमारे गांव के लोगों में से जज भी हुएं हैं, सरकारी बड़े अधिकारी हुएं हैं, प्रोफेसर, डॉक्टर और अंतरराष्ट्रीय कंपनियों में देश विदेशों में नौकरी करने के लिए ऐ हुए हैं। ये सब हमारे लोगों की पढ़ाई के बारे में आगे बढ़ने की प्रवृति का ही फल है। गर्व होता है ये सब देख कर और सुन कर।

जहां एक तरफ पढ़ाई की ओर इतना अग्रसर है मेरा यह गांव, दूसरी तरफ दिल को चोट पहुचाने वाली दुःखद बाते भी हैं। लोगों में शराब की, दूसरे प्रकार के नशे की आदत भी बहुत पाई जाती है। शराब के कारण बीमारियों से ग्रस्त हो रहे हैं और मर रहे हैं। नए नए लड़के मर रहे हैं। और हमेशा इन लोगों के घरों में झगड़ा होता है। इसका कारण मां बाप को भी जाता है क्योंकि वे भी इसी लत से घिरे हुए थे। माँ-बाप से ही देख कर उनके बच्चों ने भी आदत में ले लिया और आत्म हत्या, हत्या भी तो हो रहीं हैं।

राजनीति के स्तर की गिरावट के कारण गांव में गुटबाजी बन गई। एक दूसरे को खत्म करने पर तुले हो जाते हैं। कोशिश करते हैं कि विरोधी को पुलिस में दे दिया जाए, फसा दिया जाए और यहां तक उसकी हत्या कर दी जाए।

परिवार बढ़ने से जमीन कम हो गई है अपने अपने हिस्से की। संयुक्त परिवार नहीँ रहे। पारिवारिक जिम्मेदारियां उठाने के लिए आज की पीढ़ी उठाने के लिए तैयार नहीं है। चाहे बेटा हो या बहु आए घर में, घर की व मां बाप की जिम्मेदारी कोई नही उठाना चाहता। ऐसा अधिकांश हो रहा है।

1958 में बाढ़ आई:

एक समय मैंने ऐसा भी देखा है जब बाढ़ आ गई थी मेरे गांव में सन 1958 में। मैं तीसरी या चौथी कक्षा में पढ़ता था। बहुत बड़ी बाढ़ आई थी, पूरा इलाका डूब गया था, मेरा गांव पूरा डूब गया था। गांव में ऊंची वाली जगह ही थी अन्यथा आसपास का पूरा पूरा इलाका पानी से भरा हुआ था। यह हालत थी कि जो लोग ऊपर वाले घरों में रह रहे थे उनको बाहर जाने के लिए उनको सौच जाने के लिए भी जगह नहीं। उस समय का नजारा मुझे आज ही याद आ रहा है। ऐसी हालत थी उसको देख कर आज भी हम घबरा जाते हैं। लोग मेरे गांव के लोग अपने मवेशियों को लेकर अपने-अपने रिश्तेदारियों में चले गए थे और वही 3, 4 महीने रहे और तब तक नहीं आए जब तक बाढ़ का पानी नीचे नहीं उतर गया हो। हम लोग और चाचा अमीलाल के पिताजी सब मवेशियों को लेकर पृथला गाँव चले गए थे। मेरे बड़े भाई भीम सिंह की पृथलेमें शादी हुई थी। उस समय हम दोनों रिश्तेदारियों में बहुत बड़ा प्यार था। उन्होंने कहा था आप मुसीबत के समय हमारे गांव आइए और हमारे घर पर ही रहिए और हम वहां चले गए लगभग 3, 4 महीने वहां पर रहे। मुझे याद आ रहा है वह बचपन का समय कि हम वहां रहते थे।मैंने देखा है वह दृश्य जब गांव सूना हो गया था। 90% लोगों ने गाँव खाली कर दिया था। किसानों की फसल नष्ट हो गई थी। एक भी पालतू पशु , भैंस, गाय, बैल आदि इस गॉव में नहीं रह गया था। लोगों के रिश्तेदारों ने भी बहुत साथ दिया इस संकट की घडी में। सभी रिश्तेदारों ने जो ऊँचे स्थानों के गाँव में बस्ते थे, अपने अपने रिस्तेदारो से कहा कि संकट की घडी में वे उनके साथ हैं और उनको अपने साथ ले गए , उनके मवेशियों मो भी ले गए। यह एक मानवता की मिशाल है।

और जब बाढ़ उतर गई दो तीन महीने के बाद घर वापसी हुई अपने गाँव में।

बाढ़ की इस मार ने, इस एक बहुत आपदा ने हमारे इस क्षेत्र के लोगों की आर्थिक स्थिति की कमर ही तोड़ दी।

इस बाढ़ के बाद भी निरंतर कई वर्षो तक, चार पांच वर्षों तक बाढ़ आती रही। परन्तु ऐसा नहीं हुआ जप हाल 1958 में हुआ। उस समय तो तहसील मुख्यालय से निरीक्षण के लिए नाव से बाढ़ प्रभावित गाँव का दौरा करते थे।

बाढ़ को रोकने के लिए कोई उचित उपाय नहीं थे। हमारे देश को 11 वर्ष पूर्व ही 1947 में आजादी मिली थी अंग्रेजी सरकार से। जब हमारी अपनी भारत की सरकार आई तो हमने विकास का कार्य करना प्रारम्भ किया और धीरे-धीरे विकास की रफ्तार बढ़ती रही। परंतु विकास के कार्य में समय तो लगता ही है और इस कारण बाढ़ की स्थिति को रोकने के लिए कोई कारगर उपाय अभी नहीं थे। इस वर्ष 1958 में जब यह बाढ़ आई तो स्थिति को देखते हुए सरकार ने चिंता की और उसके बाद यहां एक ड्रेन या नाला बनाने का काम प्रारम्भ हुआ जिसको हम गौंछी ड्रेन के नाम से जानते हैं। उसके बाद में एक और ड्रेन या नाला जिसे जनौली ड्रेन के नाम से जानते हैं, बनाई गई। जब इन दोनों नालों के काम पूर्ण हो गए तो उसके बाद में इस इलाके में बाढ़ नहीं आई और ऊपर की ओर से आना वाला बारिस का पानी जो यहाँ हमारे इलाके में बाढ़ का रूप ले लेता था, अब यह बरसात का पानी इन दोनों नालों में आ जाता है और आगे जा कर जाकर यमुना नदी में गिरता है। इस तरह सरकार ने बाढ़ पर नियंत्रण पाने में सफलता प्राप्त की।

वर्ष 1958 में मेरे गाँव में बहुत बड़ी आग भी लग गई थी। कछारिया मोहल्ले से शुरू हो कर लगभग आधे से ज्यादा गाँव को अपने चपेट में ले लिया था। इस आग में कई मोठे भी हो गई थी। सभी लोग आग बुझाने के लिए दौड़ पड़े। मुझे अच्छी तरह याद अभी भी , मेरी उम्र उस समय लगभग 10 साल की थी। बड़ी मुश्किल से आएग पर काबू पाया जा सका। दूसरे साल भी फिर आग लग गई थी। उसके बाद आने वाले 5-6 वर्ष बड़ी ही मुसीबत में गुजरे हैं दिन। लोगों को बाढ़ ने तबाह कर दिया और गाँव छोड़ने को मजबूर कर दिया गया। आर्थिक स्थिति बिगड़ गई थी सभी लोगों की।

हिन्दू और मुसलमान की लड़ाई:

लोग बताते हैं कि 1947 में हिन्दू और मुसलमान की लड़ाई गढ़ गंगा से शुरू है। कहते हैं कि किसी मुसलमान ने एक हिन्दू की लड़की को छेड़ दिया था। वह लड़की रोहतक की तरफ की रहने वाली थी। अब इसमें हिन्दू और मुसलमान का झगड़ा हो गया। देश का बटवारा हुआ और देश में दंगे शुरू हो गए थे। यह गढ़-गंगा का दंगा भी इसी-का ही एक हिस्सा था। लोग अपनी बैलगाड़ियां ले कर वापिस आने लगे। इस लड़ाई में मेरे गाँव में असर हुआ। लोगों को बंदूकें उपलब्ध कराई गई। लोग कहते हैं कि छोटी बंदूके भरतपुर रियासत से भेजी गई।पियाबास का एक पौधा होता था उससे बारूद बाई जाती थी, उसको आधा जला कर और उसे पीस कर। श्यामा खाती बन्दूक की लकड़ी का बेंटा बनाता था। भुक्कल, घुस्सू चमार ये बन्दूक लाए भरतपुर से - इन छोटी बंदूकों को तोरा कहते थे। पहरे लगते थे गाँव में। लड़ाई करने वालों के लिए मंडकौला की नहर की कोठी इकट्ठे होने का स्थान होता था। इस कोठी में खाना पहुंचाते थे। गाँव से पैदल जाते थे, यादपुर होते हुए सीधे मंडकौला निकल जाते थे। आखिर में जब गाँव घासेड़ा पर हुन्दुओं ने चढाई की और उससे मुसलामानों को भगा दिया या मार दिया गया, तब जा कर यह लड़ाई यहां समाप्त हो गई। उस ह इस प्रकार का किस्सा पुराने सभी लोग बताते हैं। लड़ाई गंगाजी गढ़गंगा से शुरू हुई और घासेड़ा में ख़त्म हुई। गाँव के सभी लोगों ने इस लड़ाई में भाग लिया। मैंने देखा है बचपन में हमारे घर में बंदूकें थी। पिता जी मेरे इनको दरवाजे के पीछे दीवार के अंदर घुसा कर रखते थे। मेरी आयु लगभग 3- 4 साल की होगी तो हमारी चौपाल पर पुलिस आई थी और पूरे मोहल्ले के घरों से बंदूकें निकलवाई और पुलिस उन बंदूकों अपने साथ ले गई। हो सकता है दूसरे हत्यार भी होंगे, जैसे भाला बरसी आदि।

गांव की संस्कृति

इस गांव के लोग लगभग 550 वर्ष पूर्व राजस्थान से आए थे और वहां की संस्कृति भी अपने साथ लाए थे। मैंने अपने ही बचपन के समय में देखा है। यहां के लोगों का रहना, सहना व पहनना राजस्थान की संस्कृति से मिलता था। लोगों का पहनावा राजस्थान के पहनावे जैसा था। सिर पर पगड़ी पहनते थे, कमर के नीचे आधी धोती पहनते थे और शरीर को ढकने के लिए कुर्ती पहनते थे। जिसमें घुंडी दार कपड़े का ही बना हुआ गांठ दार बटन होता था। ऐसा भी पाया जाता था कि कुछ लोग कानों में सोने का आभूषण पहनते थे। जिसको पुरुष लोग भी पहनते थे इसको मुरकी बोलते थे। कान सबके छिदे रहते थे। और महिलाओं का पहनावा इस प्रकार था की जैसे अभी भी दूरस्थ ग्रामीण इलाकों में राजस्थान में पहनावा पाया जाता है। वक्ष को ढकने के लिए अंगिया पहनते थे। और कमर से पैरों तक नीचे जाता हुआ घाघरा पहनते थे। बाकी शरीर को ढकने के लिए कुछ भी नहीं पहनते थे। एक ओढ़ना होता था जो सिर पर ढका जाता था और उसी से ही घागरे में अटका कर पूरे शरीर को ढक लिया जाता था। आभूषण के तौर पर पैरों में चांदी के आभूषण होते थे जिनमें करूला, पाज़ेब आदि कहलाते थे। सिर पर बाल में अटकाते हुए बोरला पहनती थी। नाक में नथ या बूरा पहनती थी, वह छोटे बड़े आकार की हुआ करती थी। गले में सोने की हसली, हार, मोहर, आदि पहनती थी। देखते देखते सब बदल गया। पुराने गहने बदल गए। औरतों का पहनावा बदल गया। पुरुषों का पहनावा बदल गया। 50 के दशक में मैंने जो देखा था वह मैंने ऊपर लिखा है और यह 70 के दशक तक चलता गया और उसके बाद इस तरह का पहनावे में और आभूषणों में बदलाव आता चला गया। गांव में लोग शिक्षित होने लगे। पहनावे में भी बदलाव आने लगा। 80 के दशक के बाद बदलाव तेजी से आने लगा। नए-नए जो लड़के आ रहे थे (और मैं भी) पेंट, कमीज और कच्छा पहनते थे। पुरुष आभूषण के नाम पर कुछ नहीं पहनते थे। वह जो कान में मुरकी पहनते थे अब नही पहनते थे। और औरतों में, जो मैंने देखा था 50 और 60 के दशक में जो पहनावा था, वह तेजी से बदलने लगा। अंगिया का पहनावा और घागरा का पहनावा 70 के दशक के बाद खत्म सा ही हो गया था। घागरे की जगह पेटीकोट ने ले ली और धीरे-धीरे आज स्थिति यह है कि यह घागरा पेटीकोट आज खत्म हो गया।

अंगिया तो अब देखने को नहीं मिलती है। अंगिया का स्थान 60 दशक की शुरुआत में ही कमीज ने ले लिया। 1947 के बाद में भारत के विभाजन के बाद पकिस्तान से लोग जब भारत आए, तो यह अपना छोटा छोटा व्यापार सड़कों पर कपड़ा बिछाकर करने लगे और गांव में फेरी लगाकर रोज मर्रा की जरूरत की चीजें बेचने लगे, उनमें वे कमीज और कच्छे भी बेचा करते थे। लोगों ने उनसे कमीज और कच्छे लेने शुरू किए। पुरुषों ने और महिलाओं ने भी कमीज और कच्छों का इस्तेमाल करना शुरु कर दिया। बहुत हद तक हमारे गांव में और सभी इलाकों में इन पंजाबी शरणार्थियों के फेरी वाले व्यापारियों ने गांवों के पहनावे पर बहुत असर डाला। और वह राजस्थान का जो पहनावा था वह प्राय समाप्त ही हो गया। आज हम कह सकते हैं शत प्रतिशत महिलाएं अब पंजाबी सूट सलवार ही पहनती है। पुराने जो महिलाएं हैं अपवाद के रूप में देखी जाएगी कि पेटीकोट और कमीज ही पहनती और इसी प्रकार पुरुषों, में पुराने लोगों में, अभी है धोती पहने का चलन। आधी धोती होती है जिसको अद्धा कहते हैं, पहनते हैं पुराने लोग। नीचे कच्छा जरूर पहनेंगे, पहले कक्षा नहीं पहनते थे और ऊपर कमीज या कुर्ता पहनते हैं। इस प्रकार गांवों का पहनावा पहले क्या था और अब क्या है, यह मैंने अपने जीवन के इन 70 साल में देखा है। बड़ा तेजी से बदलाव आया। अब तो एक दम परिवर्तन हो चुका है। लड़के लोग जींस, टॉप, बरमूडा, लोअर, ट्रैकसूट पहनते हैं। एक दम शहरी लिवास और पूरा विदेशी पहनावे की और तेजी से बढ़ रहा है।

पहले किसानो के हर परिवार के पास में दो घर हुआ करते थे। एक घर हुआ करता था जिसमें महिला और बच्चे रहते थे। दूसरा एक बैठक हुआ करती थी जिसको नौहरा कहते थे, उसमे पुरुष लोग रहते थे । और यूपी में यमुनापार इलाके में उसको घेर बोलते हैं। परन्तु दो मकान जरूर हुआ करते थे। उस बैठक में गाय भैंस व बैल फालतू पशु रहा करते थे। और पुरुषों के लिए बैठक हुआ करती थी। वहां खाट बिछाई हुआ करती थी। और आवश्यक रूप से हुक्का रखा हुआ करता था। हुक्के पर आसपास के लोग सिर्फ हुक्का पीने के लिए वहां आया करते थे। सामाजिक सद्भावना बना कर रखते थे। यह पूरे हरियाणा में और जाट बहुल इलाके में सभी जगह चाहे दूरस्थ हरियाणा हो या यमुना पार का का क्षेत्र, यह जाट, गुर्जर, यादव निवासित क्षेत्र हुक्का पर बैठे हुए लोग आपस में भाईचारे की बात करते थे। अपने दुख सुख की बात करते थे। कोई समस्या हो उस को निपटाने की बात करते थे। तब यह हुक्का बैठक में रखा हुआ करता था। दूसरी तरफ पाया गया कि जब किसान अपने बैलों को लेकर सुबह सुबह खेत जोतने के लिए घर से बाहर निकलता था तो अपने साथ एक छोटा सा हुक्का भी ले जाया करता था। उसको कली बोलते थे। और खेत में काम करते करते थक जाने के बाद जब वह थोड़ा आराम करते थे तो वहीं पर ही वह अपने इस छोटे से हुक्के को पीते थे। हुक्के में एक चिलम रहती है। उस चिलम के अंदर तंबाकू रखकर आंच के छोटे-छोटे टुकड़े रखते थे। गांव में जाट जाति की बहुलता है। यह लोग किसान इनके पास में जमीन है और यह खेती करते हैं। वर्ष भर में दो बार फसल बोई जाती है। एक खरीब की और दूसरी रवि की फसल। खरीफ की फसल मानसून या बरसात काल में बोई जाती है और रवि की फसल नवंबर में बोई जाती है जो मार्च-अप्रैल में काट ली जाती है। ज्यादातर खरीब की फसल में ज्वार बाजरा बोया जाता था। कुछ लोग मक्का और कुछ दाल भी बोया करते थे और कपास भी बोते थे। रवि की फसल में उस समय मैंने देखा है 50 के दशक में पानी के साधन नहीं थे, चना बोते थे, जौ बोते थे, गेहूं बहुत कम हुआ करता था। गेहूं और चना मिलाकर जिसको गोचनी बोलते थे, और जौ व चना मिला कर जिसे बेझर बोलते थे खेतों में बोया करते थे। इस तरह की खेती हुआ करती थी। पानी के साधन न होने के कारण किसानों की आधी से ज्यादा जमीन बोई नहीं जा सकती थी। खेती का उत्पादन ज्यादा नहीं हुआ करता था। लोग निर्धनता में जिया करते थे।

स्वास्थ सुरक्षा के नाम पर यहां पर कोई सुविधा नहीं थी। मुझे याद है अभी भी यदि कोई खास बीमारी होती थी तो पलवल यहां से 10 किलोमीटर जाते थे। पैदल जाया करते थे या फिर घोड़ा तांगा चलता था जो सुबह जाता था शाम को आता था उसमें जाया करते थे। पलवल में सरकारी अस्पताल था और मिशन हॉस्पिटल भी था और क्रिश्चियन हॉस्पिटल भी था। वहां अपना इलाज किया कराया करते थे। प्राइवेट डॉक्टर भी बैठा करते थे। मुझे भी याद

है उस जमाने में मूलचंद डॉक्टर हुआ करते थे। और सरकारी अस्पताल में भी था, उसका भी मुझे याद है। आज मेरे इस गाँव में प्राथमिक चिकित्सा केंद्र है अर्थात एक छोटा सा अस्पताल है यहां के चिकित्सा अधिकारी प्रभारी डॉ संजय सिंह बहुत मेहनत करते हैं। यहां का अनुशासन बहुत अच्छा है। साफ सुथरा है। आज के दिनांक में बहुत सुविधा है मरीजों के लिए। 6 बिस्तर उपलब्ध हैं प्रवेश देने के लिए। उसने आज मुझे बताया यहां महिलाओं की डिलीवरी भी होती है। पर्याप्त मात्रा में डॉक्टर उपलब्ध है, डेंटिस्ट है, हर शुक्रवार को आंखों का डॉक्टर आता है और महिला डॉक्टर तो प्रतिदिन यहां बैठती हैं। डॉक्टर संजय ने बताया कि यहां पर 29 गांवों का केंद्र है। आज मैंने देखा यहां गर्भवती महिलाएं बहुत संख्या में इकट्ठी हुई बैठी हैं। मैंने डॉक्टर संजय से पूछा कि यह कौन लोग हैं जो आज की डेट भीड़ में इकट्ठी हुई है। उसने बताया कि आज इनका एक विशेष रूप से चेकअप का दिन रखा गया है। डॉक्टर महिला ने अभी गर्भवती महिलाओं का चेकअप करना है और यही यही इन को आगे निर्देश देना है कि किन-किन बातों का ख्याल रखना है। डॉक्टर साहब ने बताया कि आज के दिन हमने बाहर से कांटेक्ट पर लैब टेक्नीशियन भी बुलाए हुए हैं जो इन गर्भवती महिलाओं का आवश्यक रूप से खून और अन्य निरीक्षण भी करेंगे। मैंने अस्पताल में एक रुपए 2,00000/- के चेक का लैमिनेटेड पोस्टर लगा हुआ देखा। मैंने उसके बारे में पूछा तो डॉक्टर संजय ने बताया कि यह हमें अच्छे कार्यों के लिए चीफ मिनिस्टर की ओर से रुपए 2,00,000/- का चेक मिला है और उसको हमने आवश्यक रूप से सुविधाएं बढ़ाने के लिए हॉस्पिटल के कार्य में ही खर्च किया है। पर्याप्त मात्रा में दवाइयां मिलती हैं, स्टाफ नर्स है, इमरजेंसी के समय 24 घंटे डिलीवरी का कार्य किया जाता है। इस प्रकार की सुविधाओं को देखकर मुझे आज बहुत अच्छा लगा कि मेरे गांव में इतना साफ सुथरा और इतना अच्छा हॉस्पिटल है। इतने अच्छे डॉक्टर हैं और बहुत ही अच्छी तरह से अनुशासन को कायम रखते हुए अस्पताल का संचालन किया जा रहा है। हमें गर्व है ऐसी इकाई पर।

शिक्षा के कार्य में पहले यहां पर लगभग 1905 से पहले कोई भी स्कूल नहीं था। फिर एक प्राइमरी स्कूल आया जिसमें 1 से 3 कक्षा तक पढ़ाई हुआ करती थी। उसके बाद हमें बच्चों को पास के गांव, जो यहां से 4 किलोमीटर दूर होगा कम से कम, वहां भेजना पड़ता था। उस गांव का नाम है धतीर। वहां सिर्फ दो क्लास लगती थी चौथी और पांचवी क्लास। उसके बाद छठी, सातवीं व आठवीं के लिए गांव पृथला चला जाना पड़ता था, जो यहां से 12 किलोमीटर दूर स्थित है। पहले शिक्षा पाने के लिए कोई सुविधा नहीं थी और आज आजादी के 71 साल के बाद में मेरे इस गांव में, मुझे इस बताने में खुशी होती है, कि यहां पर कि एक हायर सेकेंडरी स्कूल है जिसमें 12वीं तक शिक्षा दी जाती है और एक प्राइमरी स्कूल है जहां एक से लेकर पांचवी तक शिक्षा दी जाती है। दोनों स्कूलों में अच्छा स्टाफ है। प्राइमरी स्कूल में मेरी बिटिया मधु चौहान मेरी बड़ी बिटिया है, यहां पर स्कूल की प्रभारी है 2016 से। वह इस स्कूल में पदस्थ है और प्रभारी के रूप में कार्य कर रही है। हायर सेकेंडरी स्कूल में बहुत अच्छा स्टाफ है। वहां भी बहुत कार्य किया है, बहुत अच्छी बिल्डिंग है बहुत बड़ा ग्राउंड है और अध्यापक लोग बहुत मेहनत करते हैं। परन्तु सरकारी होने के कारण स्कूल के भवन का रखरखाव अच्छा नहीं है और अंदर का जो कार्य है उसमें भी बहुत सुधार की बहुत जरूरत है। लगभग 10- 15 सालों से दोनों स्कूलों में,प्राइमरी स्कूलों में स्कूल में और हर सेकेंडरी स्कूल में भी, पुराना फर्नीचर टूटा हुआ पढ़ा हुआ है, पहले तो बाहर आंगन में ही पड़ा था अब उसको उठाकर छत पर रख दिया है, उसको राइट ऑफ करने की जरूरत है। मगर शिक्षा विभाग इस ओर कोई ध्यान नहीं दे रहा है। मैंने जो लिखा था 14 में शिक्षा विभाग को कि इस पुराने फर्नीचर को नीलाम कर दिया जाए या नष्ट कर दिया जाए परन्तु मेरे इस पत्र पर किसी ने ध्यान नहीं किया। आज शिक्षा की स्थिति बहुत अच्छी हो गई है। जहां पहले आजादी के बाद कुछ ही लोग स्कूल जाते थे आज 100% बच्चे स्कूल जा रहे हैं। यह गर्व की बात है। मैंने अभी वह रिपोर्ट देखी है जिसमें सरकार ने सर्वे कराया था कि 14 साल तक के बच्चों की स्थिति क्या है कि कितने स्कूल जाते हैं और कितने स्कूल नहीं जाते हैं। रिपोर्ट में मैंने पाया कि 887 बच्चों में से जितने भी बच्चे स्कूल जाने लायक हैं वे सभी बच्चे स्कूल जाते हैं अर्थात

शत-प्रतिशत बच्चे स्कूल जा रहे हैं। यह भी हमारे लिए बहुत ही बड़ी उपलब्धि है। राष्ट्रीय स्तर पर मेरे देश में 1947 में आजादी के समय आजादी के मिलने से पहले शिक्षित वर्ग का प्रतिशत मात्र 17% था और आज वह बढ़कर 74 प्रतिशत हो गया है। मेरे इस गाँव के लोगों में से आज जज भी हुए, अनेकों वकील है, अनेकों अच्छे-अच्छे पदों पर रहे हैं, बहुत बच्चे मेरे गांव से विदेशों में नौकरी करते हैं, डॉक्टर है। बहुत अच्छे बहुत अच्छा लगता है यह सब देख कर। और इंजीनियर तो मेरे गांव में बहुत है। कुछ लोग अपना व्यवसाय करते हैं। हमारे गांव के लोगों में से ही किसी ने एक हॉस्पिटल भी बना लिया है। बहुत लोग प्रॉपर्टी डीलर का काम करते हैं। शहरों में जाकर बस गए। हमारे देश के बड़े शहरों में ही नहीं विदेशों में भी जाकर बस गए, अमेरिका में रहते हैं, इंग्लैंड में रहते और चीन में भी रहते हैं। बड़ा अच्छा लगता है जब हमारे बच्चे विदेश पढ़ने के लिए जाते हैं। यह हमारा सौभाग्य है।

गाँव में औरतों का पहनावा और आभूषण

जब दुल्हन पहली बार ससुराल शादी में और गोने में जाती थी तो तीहर, जिनमें घागरा, कमीज और ओढ़ना होता था, उसको अंगिया से बांधते थे। पहले घाघरे अवश्य देते थे। फिर या भी बदल गया, घाघरे का चलन खत्म हो गया।

आभूषणों में हसली, मोहर, गुलिबन्द, जौ माला, कानो की बूचनी, नथनी, बंदनी, घुंगट, चांदी का चुटीला, बोरला, हथफूल, हाथ के करूला, गजरे हाथों के, छन हाथों के, डार हाथों की, दुआ हाथों के, पछेरी हाथों की, पावों के करूला, पायजेब, छैल करे, नेवरी, गठिया, पाती, चांदी की अंगिया, तागड़ी, नाडा, कठला, आदि पहनती थीं नई दुल्हन। ये सब 1980 के दशक तक चलन में रहा। फिर धीरे धीरे खत्म हो गया।

गांव के रीति-रिवाज

हर वर्ष या हमारे गांव में बूढ़ी तीज का मेला लगता है और मैंने देखा है बचपन से ही यह मेला लगता आ रहा है। यह पुराना मेला है जो सदियों से चला आ रहा है। यह विक्रम संवत भादों के शुक्ल पक्ष में तृतीया को पड़ता है। इस त्यौहार पर बड़ी खुशी से गांव की महिलाएं लड़कियां मेले में जाती है और वहां पर यहां का परंपरागत नृत्य करती हैं। आज के दिन गाँव की शादी शुदा लडकियां अपनी ससुराल से मायके अर्थात गाँव में आ जाती हैं। इस त्यौहार को सदियों से बड़ी ही धूम धाम से मनाती चली आ रही हैं। दो तीज का त्यौहार होता है - एक जवान तीज और दूसरा बूढी तीज। नाच गाना, अच्छे अच्छे पकवान तो जवान तीज के दिन भी होता है। परन्तु बूढी तीज का त्यौहार एक बड़ा त्यौहार है हमारे गाँव का।

इसी दिन हमारे गाँव में दंगल भी लगता है। इसमें क्षेत्र के आस पास के पहलवान आते है और कुस्ती करते हैं। गाँव की पंचायत की ओर से इनाम दिया जाता है। नगद धन राशि और पगड़ी, शेला, टोपी, गमछा आदि दिए जाते हैं। हमारे गाँव अल्लीका में बड़े अच्छे अच्छे प्रसिद्द पहलवान भी हुए हैं। मेरे पिता जी श्री शिब्बन पहवान अपने जमाने के एक प्रसिद्द पहलवान थे। श्री धनमत पहलवान (मेरे पिता जी के सौतेले पिता थे) एक बहुत ही अच्छे पहलवान थे। डल्लू पहलवान हुए और उसका पुत्र झम्मन पहलवान हुआ। हमारे गाँव का नगरा है यादपुर, इसमें एक बहुत नामी पहलवान हुआ है जिसका नाम है – सूरजमल। बहुत ही मजबूत, तगड़े, लम्बे चौड़े बदन वाले व्यक्ति थे वह।

गाँव में होली का मौसम:

फागुन में आने वाला होली का त्यौहार बड़े ही धूम धाम से मनाया जाता है। यह दो दिन का त्यौहार होता है। पहले दिन होलिका दहन किया जाता है। और दूसरे दिन धुरेंडी मनाई जाती है। धुरेंडी रंगो का त्यौहार है। लोग

एक दुसरे को रंग डालते हैं और गुलाल लगाते है। मैंने बचपन में देखा है कि धुरेंडी के दिन गाँव के मंदिर में फूल डोल का मेला लगता था। यह फूल डोल का मेला 1970 के दशक तक बड़े जोर शोर से मनाया जाता रहा। परन्तु समय के साथ यह समाप्त हो गया। सम्भवत: यह उस समय की बढ़ती हुई मंहगाई के कारण ही समाप्त कर दिया गया। इस दिन नगाड़े उतारे जाते मोहल्लों की चौपाल से। ढोल, झांझ, चिमटा आदि सभी संगीत का साजो सामान इकट्ठा किया जाता। और तब लोग इकट्ठा हो कर ब्रज के लोक संगीत रसिया गाते और मस्ती में हो कर सुर तान सजा कर ऊँची आवाज में इस त्यौहार को एक अलग ही रंग दिया जाता था। यह सभी मोहल्ले वाले करते थे। अब यह नगाड़े का लोक संगीत समूह चल निकलता था गाँव के फेरी लगाने के लिए। यह सायं काल के समय होता था। ढोल नगाड़ा बजाते बजाते पूरे गाँव की फिरकी में हो कर गाँव की परिक्रमा लगाते थे। अंत में ये समूह गाँव के मंदिर में पहुँचता था। वहां उनका स्वागत किया जाता था। मंदिर में प्रवेश करने पर उनके ऊपर गुलाल बखेरा जाता था। और सभी को बतासे बांटे जाते थे। मंदिर के दोनों तरफ चबूतरे बने थे। इन चबूतरों पर खड़े हो कर बतासे बांटे जाते थे। हमार गाँव के चारों नगरा (यादु पुर, ककराली, कैराका और रजोलाका) के सभी लोग यहां आते थे। सभी लोगो को बतासे बांटे जाते थे। बहुत बड़ा त्यौहार था यह। औरतें अपना स्थानीय संगीत की धुन में नाचती थी। सभी लोग नए कपडे पहनते थे। लोग के रिस्तेदार इस फूलडोल के मेले को देखने के लिए विशेष तौर पर आते थे। आज वह सब इतिहास बन गया। नै पीड़ी को तो मालुम ही नहीं हैं की क्या होता है फूल डोल का मेला।

फागुन का यह उत्सव लगभग एक माह से ज्यादा समय तक चलता था। रात और दिन चौफी (चौपई, चौफई) होती थी। चौफी एक संगीत उत्सव है जो ब्रज के क्षेत्र में गाया जाता है।

लोक संगीत अपने चरम सीमा पर था। गाँव के लोगों में लोक कविताएं लिखने और गाने का शौक था। हमारे मोहल्ले मूसाका के एक बहुत प्रसिद्द कवि हुए हैं जिनका नाम है चौधरी रघुवीर सिंह। पूरे इलाके में उनका नाम था और आज भी है। उनका नाम लोक संगीत की कविताई में प्रसिद्ध है। उसने ब्रज की चौपाई, भजन और कविताएं लिखी। आज वे सब लुप्त ही हो गई हैं। रघुवीर के पोते देवीसिंह का कहना है कि उनके पास अभी कुछ पुस्तिकाएं उसके पास है जो उसके दादा जी ने अपने हाथ से लिखी हैं। अच्छा तो यह रहेगा कि उन सभी पुस्तिकाओं का प्रकासन करवा दिया जाए। तब के समय में प्रकाशन में थी ये सब पुस्तकें परन्तु समय के साथ लुप्त हो गई। अब तो कहीं ढूंढ़ने से भी नहीं मिलती हैं। चौधरी रघुवीर सिंह बहुत बड़े कवि तो थे ही, इसके अतिरिक्त इलाके के एक अच्छे पंच भी थे। गाँव के सरपंच रहे और मुकदम - लम्बरदार थे।

इसके अतिरिक्त गाँव में और भी कवि हुए है। चन्दन सिंह (मुकदम - लम्बरदार) ने भक्ति गीत लिखे और ब्रज की चौपाई भी लिखी। और भी हैं जिसने कविताऐं लिखी हैं। चेत राम सूबेदार (राम चंद का पुत्र) जो साधमोहल्ला से था, फ़ौज में नौकरी करता था, वहीँ से ही कविताऐं लिखता था। बैरागी का एक व्यक्ति दयाली राम हुआ उसने भी कविताएं लिखी हैं। वह पढ़ा लिखा नहीं था फिर भी कविताएं बनाई और दूसरा व्यक्ति लिखता था। वर्ष 2019 में उसकी मृत्यु हो गई। हमारे मोहल्ले का रामचंद है। मेरा साथी है बचपन से ही। मेरी ही आयु सामान है और साथ साथ पढ़े भी है पहली कक्षा से ही। उसने आठवीं कक्षा के पश्चात पढ़ाई छोड़ दी थी। उसने भी कविताएं लिखी हैं।

ब्रज के लोक संगीत की धुनें समाप्त हो गई। ढोल नगारे इतिहास बन गए। अवश्य ही बंचारी गाँव के लोगो ने अभी भी बनाये रखा है यह चौफी कराने का चलन। परन्तु वह अब मूल रूप नहीं दिखाई देता अब। बंचारी का नगाड़ा चौफी संगीत विदेशों तक प्रसिद्ध हो चुका है। प्रत्येक वर्ष लगने वाला फरीदाबाद में लगने वाला अंतरास्ट्रीय क्राफ्ट सूरजकुंड मेला बहुत ही प्रसिद्दि प्राप्त कर चूका है। इस मेले में बंचारी के चौफी नगाड़े संगीत अपनी एक अलग ही छाप छोड़ रहे हैं और अभी निरंतर जारी है। हरियाणा सरकार ने इस परम्परा को संरक्षण दे कर बहुत बड़ा काम किया है।

गाँव में झांजी (सांझी) रखी जाती है जो दस दिन तक चलती है। घरों की दीवारों पर गोबर से (पहले समय में) और अब मिटटी से बनाई जाती है। यह देवी दुर्गा का प्रतीक है। महिलाएं पूजा करती है और दस दिन के पश्चात दीवार से उतार कर सम्मान पूर्वक गाँव के जोहड़ में विसर्जन कर दिया जाता है। सम्माप्त तो नहीं हुआ है परन्तु पहले जैसा शृंगार उत्सव नहीं रहा है यह झांजी रखने का उत्सव।

महिलाएं रात प्रारम्भ होते हे ही जोहड़ में मल्हो तैराती थी। मिटटी के मटको में छेद किये जाते थे, उसमें दिए रखे जाते थे और फिर उन सभी मटकों को जोहड़ के पानी में छोड़ा जाता था। टोलियां बना कर अपना लोग गीत गाते हुए मस्ती में झूमते हुए निकलती थी महिलाएं। समाप्त हो गया यह सब।

गाँव में प्रत्येक अमावस्या और पूर्णिमा के दिन प्रत्येक घर में खीर और अच्छे पकवान बनाये जाते थे और अब भी यह परम्परा जारी है।

मैंने देखा है कि किसी त्यौहार पर अपने अपने मवेशियों (बैल, भैंस और गाएं आदि)के सींगो को सरसों के तेल से चमकाया जाता था। उनके गलों में कौड़ियों और मोर पंखो से बनी मालाएं पहनाई जाती थी।

किसी विशेष त्यौहार पर मिटटी की खड़ी मिटटी से मवेशियों के पैर और घर सदस्यों के पैर बनाए जाते थे और आज भी ऐसा होता आ रहा है।

हुक्का का चलन:

हुक्का एक सामजिक भाई चारे की परम्परा मानी जाती रही है। अब धीरे समाप्त होती जा रही है। लोग अपनी बैठकों में हुक्का रखते थे। लोग वहां बैठते थे और आपस में अपने सुख दुःख की बाते करते थे। पहले लोग कम थे, जगह प्रयाप्त थी और इसी कारण लोगो के पास प्राय सभी के पास घर के अतिरिक्त बैठक हुआ करती थी। लोगो की संख्या बढती गई, जगह कम होती गई और बैठके भी समाप्त होती जा रही हैं। इसी कारण सम्भवत: हुक्का का चलन भी समाप्त होता चला गया। एक दूसरे का सुख दुःख सुनते थे इस हुक्का की बैठक में। समस्याएँ दूर करते थे एक दूसरे की। भाई चारे बढ़ने के साथ आपस में प्यार बढ़ता था और इस तरह काम करने की स्फूर्ति मिलती थी। हुक्का जिस बैठक में नहीं होता था उस बैठक को, उस परिवार को लोग कहते थे कि कैसा घर है इसके यहां हुक्का भी नहीं है। सम्मान का प्रतीक होता था हुक्का।

हमारे मदद गार विशेष वर्ग:

वह जमाना चला गया जब कुम्हार मटके, दीवाली के दिये, तसला, नांद, करवे, दिवाला, कुल्हो, परदुआ,पारी ढक्कन, सरैयां, कुल्हा, सुराही बनाते थे। बल्हार रुई धुनते थे, एक घर लुहार का भी था जो लोहा पीटने का काम करता था। मैंने देखा है बचपन में तेली भी था जो बैल से कोलू से सरसों का तेल पेलता था, बैल की आँखे ढकी रहती थी। कोरी जुलाहे मोटा कपड़ा खेस बुनते थे। मुझे याद है हमारे साजी रामधन ने खेस (वाला नौकर खेती का काम करने) बुना था, खड्डी लगाई थी हमारी सार में। कोली समाज और बाल्मीकि समाज के बिना हमारा काम चल नहीं सकता। कौली समाज के ये लोग ना हों तो किसान के खेतों में कौन काम करेगा। ये लोग खेती का काम करने साथ साथ किसान के मवेशियों की देखभाल उनकी सेवा करते थे। घर का अधिकाँश काम ये लोग करते थे। और बाल्मीकि समाज के लोग एक दिन काम छोड़ दें तो पूरा गाँव एक दिन में ही गन्दा हो जाएगा। पहले सालाना अनाज भी लेते थे किसान से, ये लोग अपनी सेवाओं के बदले में। सफाई वाले परिवार, खाती (बढ़ई), नाई, कुम्हार और कोली परिवारों के लोग किसी न किसी किसान से जुड़े रहते थे और वहां से सालाना अनाज लेते थे। अब यह सब ख़त्म हो गया।

पूरे इलाके के लोग गंगा जी नहाने की लिए गंगा जी जाया करते थे। बैल गाड़ियां से जाते थे। एक बार में एक साथ 6 - 7 बैलगाड़ियां और ज्यादा भी चलती थी। सुबह सुबह आधी रात के बाद कभी भी चल देते थे। पहला पड़ाव बदरपुर बॉर्डर पर डालते थे। नास्ता करते थे। बैलों को आराम दिलाते थे। इनको चारा खिलाते थे। ये बैल मनुस्य के सहयोगी होते थी और मित्र की तरह आपस में प्रेम करते थे। नास्ता करके और सस्ता कर फिर यह कारवाँ

चलना शुरू करता था। दूसरा पड़ाव गाजियाबाद के बाद डालते थे और बैलों को आराम का समय देते थे। और दोपहर का भोजन करते थे। कार्तिक के महीने में पूर्णमासी के 10 दिन पहले जाते थे गंगा जी नहाने। लगभग 1 सप्ताह ठहरते थे वहां। यह गढ़ गंगा का घाट था और आज भी है, यहां जाते थे गंगा जी नहाने के लिए, दिल्ली के आस पास के गाँवों के लोग। हेड दिया था अपने परिवार के साथ। सभी बूढ़े बच्चे और महिलाएं भी।

----xxxx---------xxxx----

जाने कहां गए वो दिन !

पोखर खौटा

बचपन के दिन बहुत याद आते हैं। वहां हम बच्चे लोग हॉकी खेलते थे, दौड़ लगाते थे, एक दूसरे से झगड़ा भी करते थे और फिर प्यार भी करते थे। दोस्ती बनाते थे दुश्मनी कभी नहीं बनाते थे। पोखर के अंदर चले जाते थे। पानी के अंदर एक पार से दूसरी पार तक चले जाते थे – पार का मतलब किनारा। यह पोखर खौटा के नाम से जानी जाती थी। इसमें एक कुआं था, कुआं के साथ में एक बहुत बड़ी हौजी थी, जहां पहली बार पानी गिरता था और फिर उसके बाद में 30 लंबी लंबी कोई 1-फिट लंबी दूसरी हौजी थी और उसके बाद में एक छोटी हौजी थी। इन सभी 40 टी हो जी को गधा वाली कहते थेहौजियों कीऊंचाई उसी तरह क्रमवार कम हो जाती थी। सबसे छो, क्योंकि इस हौजी में हमारे गांव के कुम्हारों के गधे पानी पीते थे। इस खौटा में मवेशियों को पानी पिलाने के लिए लाते थे। भैंस तो अंदर चली जाती थी, लेट जाती थी और फिर आती ही नहीं थी। घंटो घंटो वही रहती थी और कभी कभी तो मालिक को- अंदर जाकर पानी में से उनको निकालना पड़ता था। और जब एक बार पानी में भैंस चली गई, उसका निकलना मुश्किल है। तभी तो हम लोग अभी भी कहते हैं - गई भैंस पानी में। एक कहावत ही बन गई जब कोई औरत पास में कहीं चला जाए, किसी औरतों की भीड़ में, गपशप में लग जाए, पुरूष लोग भी कहीं ऐसे ही बैठ जाए जहां बहुत देर देर और तो बहुत देर हो जाए, वह वापस ही नहीं आते हैं - तभी कहने लगते हैं गई भैंस पानी में।

मैंने देखा है इस खौटा वाले कुआं पर चरस परत चलते थे

नईकी पोखर:

अब मैं आपको दूसरी पोखर की ओर ले जाता और इसका नाम है - नई की। यह बहुत अच्छी पोखर थी। इसमें दो लंबे-लंबे बुर्ज बने हुए थे। जिसका पानी एकदम नीला था। हमारे पुराने लोग बताते थे कि उसका पानी जमीन के नीचे से स्रोत के रूप में आता था। जिसको चोभा कहते थे। इसका पानी चोभा से आता था। इसका मतलब जो जमीन के नीचे से पानी आता हो। वह क्या नजारा था जब हम बच्चे लोग सुबह हो, शाम हो दो पहर बाद हो इस नई की पोखर में नहाने कि लिए जरूर आते थे। इस नई की पोखर के चारो तरफ ऊंची ऊंची पार थी। पार का मतलब बड़ी बड़ी ऊंची मिट्टी की चट्टानें जैसी किलेबंदी के रूप में इस पोखर को घेरे हुए थी। स्कूल जाने से पहले नहाने के लिए यहां इसी पोखर में आया करते थे। कपडे धोते थे परन्तु एक समय साबुन लगाना मना था इस पोखर में। अपनी तकती (स्कूल में लिखने के लिए लकड़ी की पट्टी) को पानी में तैराया करते थे। दोनों बुर्जों के बीच में पानी में उतरती हुए सीढ़िया थी। बच्चे व बुजुर्ग लोग इन सीढ़ियों में उतर कर नहाते थे और युवक लोग बुर्ज के ऊपर दौड़ लगा कर पानी में कूद कर छलांग लगाते थे। पार के ऊपर लम्बी कीकर के पेड़, डूंगर के पेड़ जिसमे पीलू लगते थे, करील के पेड़ जिसमे हींसा के फल लगते थे - यह नजारा आज भी मुझे यह पुस्तक लिखते समय सब याद आ रहा है।

पोखर नई की पार चारों दिशाओं में थी - पूर्व पश्चिम उत्तर और दक्षिण। उत्तर वाली पार पर जाते थे हम लोग। इसी पार की और ही थी ये दो बुर्ज घाट जिसमे सीढ़ियाँ बनी हुई थीं। 1960 का दशक की शुरुआत है - ओम प्रकाश शास्त्री उर्फ़ देवदत्त हम पढ़ने वाले हम बच्चों को ले गए इस नई की पार पर। बुर्ज घाट के सामने उत्तर दिशा वाली इस

पार पर । यहां एक बड़ा सा एक चबूतरा बनवाया हम बच्चों से, एकसार किया जगह को । उसको मिट्टी से लेपा और अंत में गोबर का चौका लगाया गया । हमको आदेश दिए गए गुरु जी देवदत्त के द्वारा की प्रति दिन चार बजे उठ कर यहाँ इस चबूतरे पर 5 बजे से पहले आया करें । व्यायाम किया करे और संध्या किया करें । हम बच्चे लोग उन आदेशों का बड़े ही शौक से पालन करते थे । गुरु जी का आदेश था की सर्दी व गर्मी हो, इस पोखर में नहाना है और हम नहाते थे । गर्मी में तो खूब तैर तैर कर मस्ती करते थे परन्तु सर्दियों पानी ठंडा होता था तो बस दो चार डुबकी लगाईं और बहार निकल आए । गुरु जी पानी के अंदर योग करते थे और सिखाते थे । गुरु देव दत्त जी (ओम प्रकाश) हमें हिंदी और संस्कृत पढ़ाते थे । आदेश मिला कि जब घर से यहाँ पोखर के लिए आओ तो राम शब्द के रूप बोलते जाना है - राम: रामौ रामा: ………… । |एक तो भगवान का नाम लिया जाएगा और राम शब्द के रूप याद हो जाएंगे ।

आज गुरु जी की आयु 94 वर्ष के आस पास हो गई है । उनकी दी हुई शिक्षा अभी भी याद करके हम गुरु को याद करते रहते हैं । मेरे जीवन पर ईमानदारी और अनुशासन में रहने का प्रभाव गुरु का ही है । मेरा बड़ा समर्पण है आपके लिए । मैं नई पोखर की, उसके घाट की, उसके पारों पर लगे हुए कीकर, छोंकर, करील, डूंगर के पेड़ की बात कर रहा हूँ । कीकर में गौंद लगता था - चढ़ कर तोड़ते थे गौंद । कीकर की वनी थी - जिसको हम रख्या कहते थे और आज भी कहते थे । इसका विवरण आगे दूंगा । करील के फल का नाम टेंट कहलाता था - तोड़ कर कहते थे, पकने के बाद लाल हो जाते थे । डूंगर का फल - उसको पीलू कहते थे - खूब तोड़ कर कहते थे । डूंगर यहां ज्यादा होते थे जहां आज हायर सेकेंडरी स्कूल है । और छौंकर के पेड़ का फल को सेंगर कहते हैं । हींस का पेड़ है एक - उसके फल को हिंसा हैं । घूब खाएं हैं ये फल हमने ।

पूर्व की तरफ पार पर यहां वर्णित किए गए पेड़ों के अतिरिक्त यहां एक बहुत बड़ा विशाल काय बरगद का पेड़ था । इसके बारे में अलग से ही आगे लिखा जाएगा - एक हमारे गाँव की पहचान व शान के रूप में था या पेड़ । इस पार पर कुछ कच्चे घर भी बने हुए थी - उसके खँडहर देखे हैं मैंने । सुना है यहां कोई साधू रहता था । मुझे बार बार वह दृश्य याद आ रहा है - इस नई पोखर की ऊँची ऊँची चारों दिशाओं में बनी हुई पार - उस पर ये पेड़ । ख़त्म हो गया सब । बस याद कर लेते है हम उस समय के लोग ।

अब मैं दक्षिण दिशा की ओर वाली पार की बात करता हूँ । सबसे घनी पेड़ो वाली पार थी वह । उस पर कीकर के पेड़ तो थे ही, करील और हींस के पेड़ भी बहुत थे । यह नई पोखर रख्या (वनी) का एक हिस्सा थी - पूर्व की ओर वाला हिस्सा । और इस दक्षिण वाली पार की बात कर रहा हूँ तो हमारे मोहल्ले के बुज़ुर्ग घुरमल (बूचा के पिता जी - कर्नल रवि के परदादा जी) की छींके कोई नहीं भूल सकता । आज भी लोग चर्चा करते हुए याद करते हैं । एक ऊँट था दादा घुरमल के पास । उसको चराने रख्या में जाया करते थे वे । ऊँट कीकर की पत्तिया बड़े शौक से खाते हैं । ऊँट को चराते चराते वे इस दक्षिण वाली पार पर आ जाते थे और वह बैठ कर विश्राम करते थे । अब उनको जब छींक आती थी । जब वे छींकते थे तो एक अलग ही नजारा था । एक बार जो छींक आना शुरू हो गया था तो 15 - 20 मिनट तक चलता था । और इन छींको कि आवाज इतनी तेज होती थी कि आवाज एक पार से दूसरी पार तक तो जाती ही थी बल्कि आगे भी दूर तक सुनी जा सकती थी । लोग कहते थे कि घुरमल छींक रहा है ।

अब पश्चिम वाली पार कि बात करूँ तो यह भी उतनी ही ऊंची थी जितनी कि दूसरी पारे । एक बहुत बड़ा कीकर का पेड़ था । उस पर एक उल्लू बैठा हुआ करता था । पहली बार उल्लू मैंने वहां देखा था । उस पेड़ के नीचे जहां उल्लू बैठता था वहां छोटी छोटी हड्डिया देखते थे हम बच्चे लोग और कहते थे कि ये हड्डिया उन छोटे छोटे पक्षियों की हैं जिनको इस उल्लू ने अपना भोजन बनाया है ।

इस प्रकार का विवरण नई पोखर की पारों का है ।

चारों दिशाओं में चार ऊँची ऊँची पार और इन चारों पारों के एक दूसरे के बीच से खाली छोड़ी हुई जगह थी । इन दो पारों के बीच के रास्तों से बहार का पानी पोखर में आता था । यह पोखर बारह महीने पानी से लबा लब पानी से

भरी रहती थी। संभवत: यह नई पोखर अंग्रेजी शासन काल में बनवाई गई थी। अकाल से समय राहत कार्यक्रम के अंतर्गत लोगों को रोजगार देने के उद्देश्य से पोखर बनवाने का काम कराया जाता था। यह नई पोखर का काम भी उसी कार्यक्रम का हिस्सा था। क्योंकि यह पोखर नई थी इसलिए इसका नाम नई ही रख दिया गया।

खौटा पोखर नई पोखर के पूर्व में थी। गाँव भी पूर्व में ही है। गॉव की ओर का पानी पहले खौटा में जाता था और फिर यह पूरी भर जाती तो दूसरी पोखर नई की में जाकर इस को भी पानी से भर देता था। इस जगह पर जहां दोनों पोखर जुड़ती थी उस किनारे पर था वह बरगद का पेड़ जिसकी मैं अब बात करने जा रहा हूँ।

बरगद का पेड़:

विशालकाय आकार लिए बरगद का पेड़ था यह जो दो पोखरों 'खौटा' ओर 'नई की' के मिलने के रास्ते के कोने पर था यह पेड़। वाह ! क्या गजब का पेड़ था। लम्बी लम्बी, मोटी मोटी चारों तरफ फैली हुए अपनी शाखाओं से मेरे गाँव की शोभा बढ़ाए हुए था। दोनों पोखरों में इस पेड़ की शाखाएं जा रही थी। इन शाखाओं पर चढ़ कर हम युवक लोग पोखरों में कूदते थे। कभी खौटा में तो कभी नई में। और इसके फल भी खाते थे। तीज के त्यौहार के दिन के पर्व पर कई दिनों तक सावन के महीने में इन शाखाओं पर मोटी रस्सी डाल कर गाँव की लड़कियां झूला झूलती थी। इस रस्सी को बरही कहते थे। और जिस लकड़ी से बने जुआ को बैलों के कंधे पर रखते थे, लाव चलते समय उस जुआ को झूला के लिए प्रयोग करते थे। लाव उसे कहते थे जब पानी खींचने के लिए चरस बरत का प्रयोग कर बैलों द्वारा नहची में रस्से को नीचे की और खींचते थे। चरस चमड़े का बना हुआ एक बड़ा थैला होता था जिसमे कुए से पानी निकाला जाता। वह नजारा , लड़कियों का बरगद के पेड़ पर झूलना, इन लड़कियों का सावन के महीने में इस बरगद के पेड़ के नीचे नाचना - सावन के गीत गाना आज पुरानी यादें ताजा कर रहा है मुझे। गाँव की महिलाओं के गीत, किसी तरह के गीत हों, चाहे सावन के हो, शादी के हों, बच्चे के जन्म के उत्सव के हों या समय समय पर दुसरे गीत हों - ये सब गीत कोई कहीं भी लिखे नहीं रहते थे और ना ही आज लिखे हुए हैं, सभी गॉव की महिलाओं को पूरे क्षेत्र में सभी को आते हैं और जाती चली आ रही हैं और आज भी चला आ रहा है यह निरंतर। महिलाऐं नहाया करती थी इन पोखरों में। और भक्ति भावनाए वाली महिलाए पोहरों से कीच (गीली मिट्टी) निकाला करती थी और ऊँचे स्थान पर रखती थी।

दो दुर्घटनाएँ देखीं है मैंने एक 1960 के अंतिम दशक में और दूसरी 1978 में। एक तो एक महिला (दानिकामोहाली के रूरा का गिर्राज की पत्नी अपने दो बच्चों के साथ) नई पोखर में डूब कर मर गई थी। और दूसरी खौटा की पार पर चिकनी मिट्टी खोदने के लिए, गाँव के एक पंडित हेतलाल (दादा दो कहते थे - चिढ़ाने के लिए) की पत्नी और उसके दो बच्चे, 1978 की बात है, गई थी। एक गुफा जैसे बनी हुई थी जिसमें से मिट्टी निकाल रही थी। गहरी थी यह गुफा। और गुफा की छत गिर गई। और महिला और उसके दोनों बच्चे दब कर मर गए। गाँव के लोग भाग कर गए। मैंने देखा था उस दृश्य को, मैं वहीँ खड़ा था। लाला राम, दानिकामोहल्ले का, फावड़े से मिट्टी खींच रहा था और बहार फेंक रहा था। एक फावड़ा का कौना जब महिला के बदन को छुआ तो देखने वालों का दिल दहल उठा। रोने लगे सब, मातम छा गया। दोनों बच्चे भी मिल गए। परन्तु तीनो जावित नहीं थे। उस समय गौंछी ड्रेन (गॉव का बड़ा नाला) का काम पूरे जोरों पर था। क्रेन से मिट्टी खौटा की पार पर डाल दी गई थी और खौटा पोखर को नाले में ले लिया था। बाद में इसको नाले से अलग किया गया है। आज भी दिल दहल जाता है जब कोई उन दुर्घटनाओं को याद करते हैं।

पोखरों का विनाश

जब किसी वस्तु, स्थान या धरोहर का अस्तित्व समाप्त हो जाए तो उसको हम उसका विनाश ही कहेंगे। यह स्थिति हमारी इन दोनों धरोहर पोखरों की है। इनका विनाश का प्रारम्भ हुआ 1958 में आई बड़ी बाद के बाद। यह

हमारे गाँव के इलाके के आस पास के स्थान नीचे स्तर की भूमि है। यहाँ ऊपरी क्षत्रो की भूमि से पानी यहाँ इकट्ठा हो जाया करता था सदियों से प्रत्येक बरसात के दिनों में। इसको रोकने के लिए सरकार ने एक नाला बनाने की योजना बनाई 1960 के दशक में। फरीदाबाद के गौंछी गाँव से निकाल कर इस नाले को आगे दक्षिण की दिशा की तरफ ले जाया गया। हमारे गाँव पोखर खोटा इस नाले के बींचों बीच आ गई। रात और दिन क्रेन चली, मिट्टी खोद कर नाले की पटरी बनाती चली गई। तब ही इसी समय, नाले की खोदी गई मिटटी से, यह खौटा की पार बन गई थी। इसमें चिकनी मिट्टी थी। महिलाएं इस चिकनी मिट्टी को को खोदती थी। मिटटी को खोदते खोदते उस पार में कई गुफानुमा गहरे बड़े गड्ढे बन गए थे। पंडित हेतलाल की पत्नी इसी पार में मिट्टी खोदते समय उन एक गुफा में दब कर दो बच्चो सहित अपनी जान गवां बैठी।

आज इन दोनों पोखरों का 'खौटा' और 'नई की' का अस्तित्व समाप्त है। आज इन्हे देख कर कोई यह नहीं कह सकता कि इमारत कभी बुलंद थी। कब खोदी गई ये दोनों पोखरे - यह प्रश्न उठता है। यहाँ पहले खोटा कि पोखर खोदी गई। बहुत गहरी थी पहले। समय के साथ यहां रेट मिट्टी का बह कर आ जाना, इस पोखर को अटाता चला गया और गहराई कम होती चली गई। आज यह हाल है कि एक बड़े गड्ढे का रूप जैसा ले लिया है खौटा ने तो। और यही हाल 'नई की' पोखर का है। 'नई की' नाम इस लिए रखा गया की या नई पोखर थी - पुरानी तो खौटा थी। प्रश्न अभी भी वही खड़ा है - ये दोनों पोखर कब बनी, कब खोदी गई।

अंग्रेजों का शासन 190 वर्ष रहा - 1756 से 1947 तक। इस अवधि में अंगेजो ने दिल्ली की ओर उन्नीसवीं सदी के मध्य में रुख किया। विकास के कार्य बहुत ध्यान नहीं दिया गया।

पोखर का अर्थ है - एक विशाल फैला हुआ बड़ा गड्ढा, जिसमें वर्षा का जल जमा हो जाता है। मुझे नहीं लगता की ये पोखरें हमारे क्षेत्र में अंग्रेजी शाशन की अवधि बनाई गई हों। यह हो सकता है कि अग्रेजो ने इनमे गहराइयाँ कराने का काम किया हो। यह शोध का विषय है। इस पर मैं आगे शोध करूँगा। अंग्रेजों से पहले चलते हैं। चूने का प्रयोग हुआ है 'नई की' पोखर के घाटों में और खौटा की कुई में (लोग कुई कहते आए है - परन्तु यह भी एक बड़ा ही कुआ था, लाव चलती थी, देखा है मैंने, हौजी में कूद कूद कर, नहाया हूँ मैं इसमें।

अब बात करता हूँ अंग्रेजों से पहले मुग़ल काल की। यह निर्माण शैली मुग़ल कालीन प्रतीत होती है। पूरे इलाके की पोखरें तालाब लगभग एक ही शैली के लगते हैं। यह कहा जा सकता है कि ये पोखरे 18वीं सदी में बनवाई गई होंगी उस समय के शासक द्वारा। इसका अर्थ हुआ ये तीन सौ साल पुरानी हैं।

रख्या या वनी (अर्थात छोटा वन)

रख्या होती क्या है - पाठक इसको समझने का प्रयत्न करेंगे सबसे पहले। यह एक छोटा वन होता है। छोटा वन अर्थात वनी कहेंगे छोटे वन को। यह वन आज देखने में आ रही खौटा पोखर और नई की पोखर के पश्चिम की ओर, आज का सरकारी अस्पताल, आज का हायर सेकेंडरी स्कूल, आज का बाबा मंसाराम वाला मंदिर की कुटी जो क्वैल , की पोखर के किनारे पर बना है, में तक फैली हुई है। यह लगभग 100 एकड़ का रकबा होगा। मैं चलता हूँ फिर से बचपन के दिनों की ओर, जब स्कूल के दिनों की ओर। बहुत ही घनी वनी थी यह। कीकर के पेड़ों की भरमार थी। डूंगर के पेड़ थे , करील के पेड़ थे, छोंकर भी के पेड़ थे, और बड़े विशालकाय इसी वनी का हिस्सा थे।

चरवाहे (ग्वाले - जिन्हे गवारिया कहते थे) उनका तो स्वर्ग था यह वनी। दिन दोपहर को यहीं पर आराम करते थे पशु धन के साथ। पशु धन को धन बोलते थे। हो सकता है प्राचीन काल से चला आ रहा है यह नाम। पशु के समूह को ही धन मानते थे उस समय और यही उनकी समत्ति थी। मैं प्राचीन काल की बात कर रहा हूँ। और कालांतर से चला आ रहा नाम पशु धन से मात्र धन हो गया। गाँव के लोग अपने गाय व भैसों को ग्वालों के पास भेज देते थे, जो कभी खौटा की इस पार और कभी उस पार इन मवेशियों को इकट्ठा करते थे। और यह काम सुबह सुबह का था।

कलेऊ (कलेवा - अर्थात नास्ता) करने के बाद इस धन को (पशुधन को) जंगल में चरागाहों में दूर तक रख्या में ले जाते थे या कहीं खाली जगह होती वहां ले जाते। रख्या को डहर भी कहत थे। कभी बामनी के डहर में तो कहीं दूसरी जगह पर ले जाते थे। उस समय के किशन सिंह ग्वाला प्रसिद्द था। पैसे मिलते थे ग्वालों को लोगों से महीने में पशु धन चराने के। किशन ने हम से कभी पैसे नहीं लिए। उनसे हमारा एक अलग सम्बन्ध था। उनके परिवार में मेरी मौसी थी - प्रकाशी जो हेती की पत्नी थी।

फिर से मैं रख्या की बात करता हूँ। कीकर के पेड़ से गौंद तोड़ने के जाते थे युवक वर्ग, डूंगर के पेड़ से पीलू खाते थे, हींसा हींस के पेड़ से और करील के पेड़ से टेंट तोडा करते थे। या तो मैं अपने समय उस 1960 के दशक की बात कर रहा हूँ। उससे पहले तो और भी ज्यादा घना जंगल था। मेरे समय में भी घना था। बुजुर्ग बताया करते थे कि जंगली जानवर रहा करते थे जंगलों में - तेंदुआ, लक्कड़ बग्गा व बाग़ भी देखे गए हैं ऐसा पहले के लोग बताते थे। रख्या की दक्षिण की ओर एक पोखर जिसका नाम है क्वैलकी है। कुछ लोगों का कहना है कि इसका नाम कोयल की था और बाद में क्वैलकी पड़ गया, ऐसा भी हो सकता है। इसका पानी एक दम नीला दिखता था। गहराई बहुत थी। मैंने कई बार देखा है लोगों को इसमें तैरते हुए। ग्वाले लोग यहाँ विश्राम करते थे व अपने पशु धन को ले जाते थे। कुछ पढ़ने वाले बच्चे इस रख्या में अपनी किताब ले जाते थे और वहां पढ़ते थे। अनेकों बार मैं भी गया हूँ।

मैंने मुसलमानों की कवरों के 10 - 12 गड्ढे देखे हैं। हिन्दू और मुसलमान की 1947 की लड़ाई में गॉव में रह रहे मुसलमानों को मारा गया होगा और उनको इस रख्या में दफना दिया गया होगा। इन गड्ढों के बारे में पुराने लोग उस समय बताया करते थे कि ये मुसलमानों की कवरों के गड्ढे हैं।

पहले भी रख्या के बीच से आदुपुर (यादपुर) के लिए रख्या के बीच से रास्ता जाता था और आज भी वही है।

रख्या का पतन:

जिसका भी विकास हुआ है उसका पतन भी हुआ है। रख्या का भी यही हाल हुआ। पेड़ काट दिए गए। पंचायत ने कई बार रख्या के पेड़ों को कटवा डाला, बेच दिए पेड़ और आय बढ़ाने के लिए इस एक सुन्दर वनी का विनाश कर दिया। 1950 के दसक में भी रख्या के पेड़ कटवाए गए। फिर 1970 के दशक में कटवाए। इस वनी की बीचों बीच की जमीन को कृषि करने के लिए पट्टे पर दे दिया गया। मात्र आमदनी बढ़ाने के लिए। गाँव की पंचायत ने और यहां के लोगों ने कभी भी नहीं सोचा की पेड़ों की रक्षा की जावे। आज भी पेड़ कट रहे आए दिन। पंचायत चुप है। मेंबर लोग चुप हैं जबकि हर मोहल्ले में दो मेंबर हैं। लम्बरदार हैं हर मोहल्ले में। चुप है सब। कोई मतलब नहीं है विकास से। पेड़ लगाना चाहिए - काटना नहीं चाहिए। इसी वनी में सरकारी स्कूल बन गया व एक अस्पताल बन गया।

रख्या के बीचों बीच से कई एकड़ जमीन से, ट्रेक्टर ट्रॉली से मिट्टी उठवाई जा रही है। यह हुआ है मनरेगा के ना पर। वहां 10 - 12 फुट गड्ढा बना दिया गया। अब क्या होगा इस जमीन का। कोई देखने वाला नहीं है। मुझे बहुत दुःख होता है यह सब देख कर। और भी जगह हो सकती हैं मनरेगा की मिट्टी उठवाने के लिए। पोखरों से मिट्टी उठवाई जा सकती है। उसको स्कूल के मैदान को लेवल करने के लिए उपयोग किया ला सकता है। अस्पताल के भवन के चारों ओर जमीन को एक सार किया जा सकता है। दुर्भाग्य यह हैं की जब भी जो भी पंचायत आई उसने इस ओर ध्यान ही नहीं दिया गया कि इस सुन्दर वनी को सुरक्षित रखा जाए।

रख्या में काबुली कीकर के पेड़ लगा दिए। ऐसी स्थिति में वहां कोई घुस ही नहीं सकता। अब तो जरूरत वाले लोग लकड़ी काटने लिए जाते हैं।

कीकर ख़त्म है प्राय, बहुत कम रह गई हैं, डूंगर कि नस्ल ही देखने को नहीं मिलती। करील व हींस नस्ल ख़त्म हो गई।

कोई काम कभी भी शुरू किया जा सकता। इस वनी का, जितनी भी रही है उसका आधुनिक तरीके से फिर से विकास करके नया स्वरुप दिया जा सकता है। हरियाली बहुत जरूरी है। भवन जरूर बनाए परन्तु पेड़ काट कर नहीं। पेड़ तो ज्यादा से ज्यादा लगाएं। और मेरा पंचायत से - पूरी पंचायत से, लम्बरदारों से निवेदन है कि पेड़ नहीं काटें चाहे वे अपने खेत पर ही क्यों न लगे हों।

स्कूल के दिन

वर्ष 1962 तक मैं गाँव के स्कूल मेन ही रहा। रह रह कर उन दिनों की याद आती रहती है। गाँव के स्कूल में वर्ष 1954 से 1962 तक पढ़ाई की। स्कूल के वे दो अध्यापक अलग तरह के लोग थे। एक का नाम है बुधराम मास्टर और दूसरे का नाम है समरथसिंह। दोनों स्कूल में ही रहते थे। परीक्षाओं के दिनों में हम सभी आठवीं के छात्रों को स्कूल में बुलवाते थी और रात में स्कूल में ही सोते थे। अपने घरों से खाना कर हम बच्चे लोग सायं को स्कूल पहुँच आई जाते थे। जमीन पर बिस्तर लगता था। रात को 10 बजे तक पढ़ते थे। सुबह 4 बजर उठ जाते थे। उठ कर प्रार्थना बोलते थे थे बिस्तर पर ही बैठे बैठे -“उठ जाग मुसाफिर भोर भई अब रैन कहाँ जो सोवत है “

दूसरे मास्टर सौदान सिंह देवरी के रहने वाले थे। तीसरी कक्षा लेते थे प्रायः। मलखान सिंह पी. टी. आई. और फ़क़ीर चंद हेड मास्टर भी अभी तक याद है। हम से पहले शोभा राम हुआ करते थे सीही के रहने वाले।

बुध राम मास्टर मित्रोल के निवासी थे। वे पी टी नहीं थे फिर भी हॉकी खिलाते थे। हमारी टीम जिले में प्रथम आती रही थी वर्षो वर्षो तक। बावनी खेरा जाया करते थे टूर्नामेंट मेन्ट में। हॉकी के खिलाड़ियों में यादुपुर का हुक्म, प्रताप, भरती कैप्टन रहे हैं। कारने गांव का छोटू राम गोल कीपर रहा करता था। ख्याली राम, लखमी और हमसे पहले बुधराम चौक पट्टी से ये बहुत अच्छे खिलाड़ी रहे हैं हॉकी के। इस हॉकी खेलने का जुनून ऐसा चढ़ा बच्चों में कि हर बच्चा कीकर के पेड़ की लकड़ी काट कर हॉकी बना लिया करता। और गाँव की खाली जमीन खौटा पोख)र के पास (पर हॉकी खेलते थे। खेतों को जाने वाली राह में खेलने जाते। नहीं भूल सकते वे दिन।

शाक भाजी व बनस्पति:

जंगल में से हमें शाक भाजी मिल जाया करती थी। पंवार के पत्ते की कढ़ी, साटी के पत्तों की कढ़ी बनाया करते थे। नूनखरा के पौधे की कढ़ी बनाया करते थे। महिलाएं खेतों पर जाती और ये सब तोड़ कर लाती थी।

बदन में कहीं काट जाए तो कटेरी के पौधे का रस लगा लिया जाता था। इसी तरह फरफेन्दुआ की बेल का फल भी दवाई के काम आता था। आक के पेड़ का रस कटे या फोड़े फुंसियों में लगा लिए जाते थे। धतूरा का पौधा भी काम आता था दवाई के रूप में। खेतों में पड़ी हुई कचरिया बीन बीन कर इकट्ठा कर लिया करते थे। लेहसुआ के पौधे के पत्तो को मसल कर फुंसियों पर लगा लेते थे।

फूट कचरा कहते हैं जिसे अब याद आते हैं, खाया करते थे, अब कोई नहीं बोता है। खेतों में से पपोटन बीन कर खाना, अब नहीं रहा, बहुत कम मिलती है। झार के छोटे छोटे लाल लाल बेर कहाँ चले गए पता नहीं। डूंगर के पेड़ पर चढ़ कर उसके फल पीलू खाया करते थे। छोंकर के फल सेंगर तोड़ कर खाना, कीकर का गोंद तोड़ना, करील के पेड़ के टेंट, हींस के फल हींसा अब नहीं हैं, गायब हो गए सब।

जाने कहाँ गए वो दिन !

वाह ! क्या दिन थे। बरसात में बोरी की खोई ओढ़ना ताकि बरसात से अपने आप को बचा सकें। बरसात में मोहल्लों की गलियों में अपना मधुर संगीत सुनाता हुआ पानी का खार अब देखने को नहीं मिलता है। अपने साथ गलियों की सारी गन्दगी को बहा कर ले जाता था। खेतों में सिचाई के लिए बैलों का कुए से लगे हुए चबूतरे पर गोल चक्कर में चलना , वह रहत का दृश्य अब कभी देखने को नहीं मिलेगा। पानी को परोहे से उलीचना देखा है मैंने। नहीं मिलेगा - कहानियों में भी नहीं। ढेकली क्या होती है अब जानते ही नहीं हैं लोग। कच्ची कुई से पानी निकालने का साधन होता था यह।

औरतें अपने सिर पर पानी लाती थी। ये पनिहारियाँ मीठा पानी के लिए पारवारे कुए पर जाती थी। और खारे पानी के लिए खारे कुए पर। आज पारवारे कुए हालत बस एक निशानी के रूप में आंसू बहा रहा है - जैसे कहा रहा हो की हम भी कभी जवान थे। और खारा कुआ जो दानी मोहल्ले में है, कुआ तो है परन्तु इसमें पानी नहीं है। याद रहा है मुझे वह बुजुर्ग दाता राम जो इन कुओं में घुस कर पानी के अंदर से बाल्टियां, कैसे, दुसरे बर्तन सामान जो भी कुए में पड़ा होता था, कैसे निकाला करते थे।

यदि रास्ते में भरे पानी के मटके लिए हुए कोई महिला मिल जाए तो शुभ माना जाता था। अब वाटर सप्लाई के नल आ गए हैं, कुए ख़त्म हो गए , जिस हालत में ये कुए बचे हैं उनमे पानी नहीं है। इस हालत में पनिहारी कहाँ मिलेंगी देखने को !

औरतों का, बालिकाओं का, युवतिओं की वेशभूसा बदल गई है। महिलाऐं अंगिआ, शीशे लगे ओढ़ना व घागरा पहनती थी। राजस्थानी लिवास था वह।

शादी का वह नजारा:

शादी में ऐसा नहीं था कि बरात जाए और खाना खा कर एक घंटे में लौट आओ, और पीछे रह जाते हैं दूल्हा और घरवाले वे भी तीन चार घंटे ठहर कर वापिस आ जाते हैं दुल्हन को ले कर। जी नहीं, दो रात ठहरती थी बरात और तीसरे दिन वापिस आती थी विदा हो कर। फिर एक ज रात ठहरना शुरू हुआ। बरात पहुँच गई गाँव के सिवाने पर, रास्ते में जो भी कुआ पड़ता था उस बाल्टी - नेजु (रस्सी) रख दी जाती, स्वापी (गमछा), सरसों का तेल व साबुन भी रख दिया जाता। जिसको नहाना है तो नहा सके। गाँव से बहार किसी हरे भरे स्थान पर बरात विश्राम करती और कोशिश रहती कि किसी बाग़ में ठहराते बरात को। सुबह ही पंहुच जाती थी बरात, अपने गाँव से भोर 4-5 बजे ही। नहा धो कर तैयार हो गई बारात तो उसको उस बाग़ में बरात को नास्ता दिया जाता। इसी को कहते थे बाग़ रोटी। बरात का नजारा अनोखा होता था। आज की तरह डी जे नहीं थे। वाहन देखिए बरात के। दूल्हे के लिए रथ होता था। रंग बिरंगे मोटे धागों की पच्चीकारी से सजा हुआ यह रथ, एक अनोखी शान था बारात के लिए। इसी में दुल्हन को लाया जाता था, जैसे आज फूलों से सजी कार में लाया जाता है। और दुल्हन के साथ पीहर से कोई नाई की लड़की और बाद में घर से ही कोई लड़की साथ आती थी दुल्हन के साथ। मैं रथ की बात कर रहा था। दो बैलों की जोड़ी इस रथ को चलाते थे। बैलों की सजावट देखिए - उनको झूल उढ़ाते थे। रंगीन मोटे कपडे की, उस मोटे रंगीन धागों की कढावत की गई रंगबिरंगी यह पोशाक होती थी बैलो के लिए - इसी पोशाक को झूल बोलते हैं। रथ के बात फिर बहली चलती थी - यह भी रंग बिरंगी कशीदाकारी से सजी हुए एक सवारी थी। इसमें दूल्हे के परिवार वाले ख़ास सदस्य बैठते थी। रथ में दो भाग होते थे - एक मुख्य बैठने वाला हिस्सा और दूसरा उससे आगे वाला जो पहले वाले को जोड़ता था। चार पहिए होते थे रथ में और बहली में दो पहिए होते थे। उसके बाद रहरू होते थे। ये भी बैलों से चलाए जाते थे। सभी वाहन बाई ही खींचे थे और हर तरह वहां दो बैलों से ही खींचा जाता था। रहरु छोटा था सबसे। और फिर होती थी बैल गाड़ियां। वाह : क्या नजारा था बारात का। सभी बैलों के ऊपर झूलें उढाई हुए होती थी। इस तरह का एक भव्य नज़ारे के साथ बारात का यह समूह निकलता था - लड़के को ब्याहने के लिए जाने का। पीछे बाग़ रोटी की बात कर रहा था। बाग़ रोटी में दूध के लड्डू जलेबी जरूर होती थी। चाय नहीं - चाय बहुत बाद में आई समाज में। नीचे बिछाई बिछाई जाती थी। (बिछाई, उस लगभग दो फिट चौड़ी और बीस तीस फिट लंबी जूट (सन) की फर्स (टाट पट्टी) होती थी जो शादी ब्याह में बरात को खाना खिलाते समय जमीन पर फैलाई जाती थी। बाग़ रोटी के बाद और कुछ देर आराम करने के बाद बारात को गाँव के अंदर ले जाया जाता और जनमासे में ठहराया जाता। जनमासा कहते है जहां बारात ठहरती है। यह उस मोहल्ले की चौपाल पर होता था। वाह: क्या बात है इस चौपाल पर जान मासे का। मौचे खाट पहले से ही बिछे रहते इस पर दरी चद्दर बिछी रहती। कई हुक्का रख दिए जाते पहले से ही।

हुक्का के लिए उपलों की आँच सुलगा कर तैयार है। पीने के पानी के लिए अनेकों घड़े रख दिए जाते थे। एक बड़ा बर्तन जिसे, तामनी कहते थे, पानी से भरी हुए। दूसरी तामनी ठंडाई की भरी हुए होती थी। स्वागत पूरा इंतजाम किया जाता था।

जनमासा - लोग मोहल्ले के आस पड़ोस के आपने अपने घर से बिस्तर दरी खेस रजाई जो भी जरूरत होती सब भेज देते और इंतजाम में लग जाते थे।

अपने अपने घर दूध पहुंचा देते थे ब्याह वाले के घर। सारे लोग लग जाते थे बरात की सेवा में। रात और दिन लगे रहते थे काम में। अब दोपहर का खाना - उसी तरह बिछाई पर बैठ कर खाना खिलाया जाता था। दोपर बाद डन्डाई का समय हो गया - बादाम किसमिस खसखस काली मिर्च और भी अन्य चीजें रहती थी डन्डाई की पोटली में। पत्थर एक बड़ी सिल व लोढी से डन्डाई की पिसाई चलती थी आधा घंटे तक। तामनी में पानी डाल कर उसमे उस पइसे हुए मसाले को मिला दिया जाता और मीठा करने के लिए उसमें खांड मिलाई जाती थी। फिर सायं का खाना होता। इस प्रकार दो दिन पुरे और तीसरे दिन नास्ते के बाद और कभी कभी दोपहर का खाना खाने बाद बरात को विदा किया जाता था। खाने में बदल बदल कर दिया जाता था। घी बूरा और दही बूरा जरूर होता था। और मिठाई थी जाए थी बदल बदल कर। जी हाँ - बैलो को भी घी पिलाया जाता था रात को।

बरात को बिदा (विदा) करने रिवाज अलग था जो आज बदल गया है। हर बाराती को एक रुपया दिया जाता और गुलाल का तिलक किया जाता था। समधी दोनों मिलते थे, विशेष रूप से, गले लग कर, उस समय बाजा बजाया जाता था - मैंने देखा है उस बाजे को अंग्रेजी बाजा कहते थे। आज का संगीत तो अलग है - बैंड व डी जे।

रिवाज तो आज भी चले आ रहे हैं - गुरचढ़ी दूल्हा अपने गाँव के घर से चलता है दुल्हन को ले कर। गुरचढ़ी का मतलब घुड़चढ़ी अर्थात घोड़ी पर चढ़ी - यह ही गुरचढ़ी है। गीत की लहार के साथ अपने बरने को (दूल्हे को) को विदा करती थी परिवार की महिलाएं। भूमिया देव की पूजा कराई जाती थी दूल्हे से। और फिर मंदिर में पूजा कर के पुजारी से आशीर्वाद लिया जाता था। ससुराल में द्वार पर द्वारचार होता था जिसे बारौठी कहते हैं - आज भी है। फेरे होते हैं जिसमे दो घंटे से भी ज्यादा समय लगता था। आखिर में दूल्हे को घर बुला कर औरतें टीका करती हैं। और दुल्हन को विदा कर दिया जाता है। बरात का पूरा कारवां दुल्हन को ले कर अपने गॉव लौट आता है। यहाँ भी रिवाज हैं - कंगना खेलना - खोलना आदि आदि।

रिवाज वे ही हैं - परन्तु स्वरुप और तरीके बदल गए हैं। बैल गाडी ,रथ, बहली, रहरु, की जगह कार, बड़ी गाडी, बस ने ले ली है। अंग्रेजी बाजे ने डी जे ने ले ली है और बैंड ने ले ली है। जनमासे की जगह बैंक्वेट हॉल ने ली है। तीन दिन की बरात अब एक घंटे की हो गई है। लोगो का काम में जुट जाना की जगह खाने पीने के ठेके दार कैटरर ने ले ली है। पत्तल पर बिछाई पर बैठ कर खाने की जगह खड़े खड़े खाने ने ले ली है। मिटटी के कुल्हा और सरैया की जगह प्लेटों ने ले ली है। अब तो इकट्ठे ही विदाई के रुपए ले लिए जाते हैं - पहले जैसा नहीं कि हर बाराती खड़ा होगा और तिलक करेंगे उसका। समधन समधी को हल्दी का हाथ का छापा लगाती थी दोनों हाथों से। यह नए सम्बन्धो का प्रेम था और मन्नत कि जाती कि ऐसा स्नेह हमेशा बना रहे। लालच नहीं था उस समय। दहेज़ नहीं था - यह तो समय के साथ लालच बढ़ता गया। आज को बदलती हुए तस्वीर को देख कर यही कहूंगा - जाने कहाँ गए वो दिन।

भाभियों के साथ देवरों का होली खेलना:

सावन के महीने में सायं को भाभियों के साथ देवरों का होली खेलना - अब नहीं है। देवर लोग नए कपड़े पहनते, सिर पर साफा बांधते, साथ में ढोला वाला, ये मंडली खड़ी हो जाती थी। और इनके सामने भाभियाँ, अपने सजे धजे कपड़ों के साथ और आभूषणों से सुसज्जित, खड़ी हो जाती थी। भाभियों के हाथ में एक लाठी होती थी। ये

लाठीयां मोर पंख और कोड़ियों से नक्कासी द्वारा सुसज्जित रहती थी। देवरों अब होली गाते थे बड़े जओष के साथ। और गाते गाते भाभियों के नजदीक तक पहुँच जाते थे। उसके बाद महिलाएं गीत शुरू करती। गीत गाते गाते पुरुषों को वापिस, उन अपनी लाठीयों को उनकी पीठ पर लगा कर, उनको अपनी जगह पर पहुंचाती थी। जो उन गीतों का रस था, सभी का मन मोह लेता था। इस समय कुछ भाभिया गुड का भेला (5 सेर का गुड का पिंड) अपने सिर पर रखती थी और बाद में मर्दों को दे देती थी। फागुन का महीना, भाभियों का होली खेलना, नए नए कपड़े – मर्द कुर्ता-धोती व सिर पर पगड़ी, महिलायों का घाघरा-कमीज-काढ़ा हुआ ओढ़ना और सिर पर गुड की भेली, हाथ में कोढ़ी-पेंच से सजी हुई लाठी, देवरों को लाठी सटा कर उनको तंग करना --- सपना हो गए सब। .... जाने कहाँ गए वो दिन !

गुड़ बनाने के कोल्हू चलते थे - सामूहिक रूप से - मुझे याद अभी अच्छी तरह 1960 का दशक था वह। खेतों में एक जगह कोल्हू लगाया जाता था - बहुत से लोग जुड़ जाते थे - सामूहिक तौर पर काम करते थे। यह रात दिन काम चलता था गुड़ बनाने का। फिर खांड बनाने कि मशीन आ गई - सरूप के परिवार वाले ले कर आए थे। रवा उतारा करते थे गन्ने के रस से - एक ड्राम में या किसी बड़े बर्तन में - फिर मशीन द्वारा हाथ से चलाया करते थे। झोंपड़ी बनाई जाती थे फूस की (फूस अर्थात सरकंडे के पेड़) इन खोपड़ियों को छाया कहते थे। मैं सोया करता था इन छायों में अपने पिता जी के साथ - बैल हाँके है कोल्हू के, गन्ने लगाएऊ हैं मशीन में। खूब याद है अभी भी। वह ज़माना याद आता है। जाने कहाँ गए वो दिन !

महिलाओं का संगीत –

कहीं भी लिखा नहीं है, फिर भी सदियों से महिलाओं में संगीत आज तक चला आ रहा है। मेरे गाँव कि महिलाएं ही नहीं बल्कि पूरे क्षेत्र की महिलाओं को अपने लोग संगीत याद हैं और समय समय पर गाए जाते हैं। दूल्हा बारात ले कर जाता है तब, रात भर गीत गाये जाए है, बधाए गाए जाते हैं। बरना और बरनी के गीत गाए जाते हैं। पुत्र पैदा होने पर गीत, शादी में नाचने के समय गीत, पानी भरने जाती थीं महिलाएं उस सामी के गीत, पूजा करने मंदिरों में जाते समय गीत, तीजों के त्यौहार पर गीत, होली के त्यौहार पर गाए जाने वाले गीत, ग्रहण पड़ता है तो गीत, देव उठनी व देव सोवनी ज्ञास को गाने वाले गीत ..... इस तरह सेंकड़ों तरह के गीत हमारे गाँ और हमारे क्षेत्र की महिलाएं गीत गाती हैं। सभी याद है, परंतु कहीं भी लिखे हुए नहीं हैं।

नई नई लड़कियां जो स्कूल / कॉलेज जा रही हैं उनको यह सब गीत नहीं आते हैं। भूलते चले जाएंगे यदि यह परंपरा आगे नहीं बढ़ी तो। जी अवश्य ही शादी विवाह और अन्य उत्सवों मे नई पीढ़ी की लड़कियां पीछे नहीं हैं। खूब नाचती हैं, परंतु DJ या भारी आवाज के सगीत पर पर। परम्परा वाले गीत इस नई पीढ़ी को नहीं आते हैं।

“......कुंदा के बीच बलम मेरौ छौटों है ......” “ जल कौ लोटा लाई रे नवलदे, लाई हथेली के बीच .....”

वे पुराने गीत कहीं लुप्त ना हो जाएँ .... फिर कहना पड़ेगा ..... जाने कहाँ गए वो दिन !

कुंदा के बीच मोरनी नौचे लठिया पै, मेरे बावरिया भरतार मौहर ना पहरी छतिया पै। कुंदा के बीच उड़ाई तूरी, योंहके कारे कारे लोग, लुगाई बूरी। कुंदा के बीच हरी ककरी, रावण सीता है हर लायो, देखौ कैसी सफारी। कुंदा के बीच देख मौहै काहीत काऊ बौनौ, छोरा घाट में धार लै ध्यान, सीख लै हम पै ते गौनौ।	जल कौ लोटा लाई नवलदे। लाई हथेली के बीच, मेरे पियो आर्य भाई, मैं सभा सुनन कें आई। .... बरनी के गीत – मेरी लाडो के लंबे लंबे केश, दादा जी से अरज करै, दादा वर ढूंढौ रघबीर, जाके गले में माला परै। माला माला गले की जंजीर, जाके गले में माला परै।

अध्याय - 2

गाँव की बसावट व वंशावली

॥ गाँव की बसावट- बिक्रम संवत 1532 (लगभग) -सन 1475 में ।।

भाट यह कहता है कि अल्लीका गाँव बिक्रम संवत 1122 में बसाया गया ।
यह गलत है - गाँव बिक्रम संवत 1122 में नहीं बसाया गया ।
कृपया देखें:-

- ✓ भाट कहता है कि - गाँव बिक्रम संवत 1122 में बसाया गया ।
- ✓ भाट यह भी कहता है कि - गाँव साला राम ने बसाया ।

कृपया ध्यान देवें:-

- ➢ साला राम का जन्म तो बिक्रम संवत 1122 से लगभग 600 वर्ष बाद पैदा हुआ है ।
- ➢ साला राम का जन्म लगभग 1512 बिक्रम संवत में हुआ है ।
- ➢ यदि साला राम 20 वर्ष की आयु में अल्लीका आया होगा तो - 1532 बिक्रम संवत में गाँव बसा है ।
- ➢ अर्थात 1475 ईशवी (1122 में से 57 घटा देवें)

बदन सिंह चौहान

अल्लीका गॉव की बसावट के बारे में जानकारी
हमारे गांव के भाट ने बताया कि बिक्रम सम्वत 1122 (अग्रंजी वर्ष 1065) में ग्रव अल्लीका बसा। माह असाड पचंमी, क्रष्ण पक्ष, सोमवार। चौहान कुल – गोत्र कून्डू। – अग्नि वशं। अनलकुन्ड से निकलने के कारण कून्डू कहलाए।
;हमारे गांव का भाट सितम्बर 29, 2015 को गांव आया और उसने वशांवली की पुस्तक से पढ कर यह सभी जानकारियां दी। भाट का नाम पज्डित श्री क्रष्ण अ्त्री गांव बडवान गोहाना रोड सौनीपत। इससे पहले हमारे भाट इसके नाना थे उसको कोई पुत्र नही था तो यह काम इन्होने सभ्भंल लिया। इससे पहले यह भाट 2008 सन में आया था।

		गांवो के नाम	अनुमानित सन – 20 साल एक जगह – मेरा मत है।	अन्य विवरण
1	यहां से निकले	अलनकुन्ड,आबू गुजरात से	अनुमानित सन 1122 बि.स	अलनकुन्ड,से निकासी 1122 बि.स में हो सकती है।
2	फिर गए	चित्रकूट	टनुमानित सन 1129 बि.स	
3	फिर गए	बीसलमेर	अनुमानित सन 1149 बि.स	
4	फिर गए	सांगानेर	अनुमानित सन 1169 बि.स	
5	फिर गए	अजमेर	अनुमानित सन 1189 बि.स	
6	फिर गए	कम्बनपुर	अनुमानित सन 1209 बि.स	
7	फिर गए	इंद्रप्रस्थ	अनुमानित सन 1229 बि.स	भाट कहता है कि • पृथ्वीराज चौहान के समय इन्द्रप्रस्थ आए। • मौहम्मद गौरी के व्दारा पृथ्वीराज चौहान को हराने के बाद फिर इन्द्रव्रस्थ छोड दिया और चरखी दादरी ‘‘ हरियाणा’’ आ गए। • मौहम्मद गौरी ने सन 1192 अग्रेजी सन ‘‘बिक्रम समंवत 1249 में पृथ्वीराज चौहान को हराया था।
8	फिर गए	चरखी दादरी	**बिक्रम समंवत 1249 में**	
9	फिर गए	पारयाना .	अनुमानित सन 1269 बि.स	
10	फिर गए	साम्बद	अनुमानित सन 1289 बि.स	
11	फिर गए	टिटोली	अनुमानित सन 1309 बि.स	
12	फिर गए	हाटतालवान– जिला जीदं	अनुमानित सन 1329 बि.स	
13	फिर गए	चिडावा	अनुमानित सन 1349 बि.स	
14	फिर गए	साहपुर	अनुमानित सन 1369 बि.स	

बदन सिंह चौहान

15	फिर गए	पापरी माजरा	अनुमानित सन 1389 बि.स	● ''बिक्रम समंवत 1249 में इन्द्रव्रस्थ छोड दिया ओर चरखी दादरी आ गए। ● इन्द्रव्रस्थ से अल्लीका तक आने में 17 जगह बदली हैं। ● भाट ने बताया है कि बिक्रम सम्वत 1122 (अग्रंजी वर्ष 1065) में गाव अल्लीका .... सत्य प्रतीत नहीं होता।
16	फिर गए	धारुहेरा	अनुमानित सन 1409 बि.स	
17	फिर गए	मालीयर	अनुमानित सन 1429 बि.स	
18	फिर गए	बेनीपुर	अनुमानित सन 1449 बि.स	
19	फिर गए	लोधावाडा	अनुमानित सन 1469 बि.स	
20	फिर गए	मूडे का नगंला	अनुमानित सन 1489 बि.स	
21	फिर गए	धल्ला खेडी	अनुमानित सन 1509 बि.स	
22	फिर गए	सरुरपुर	अनुमानित सन 1529 बि.स	
23	फिर गए	हसनपुर , तावडू के पास	अनुमानित सन 1549 बि.स	पहले धतीर गए फिर धतीर से अल्लीका आए
24	फिर गए	अल्लीका	अनुमानित सन 1569 बि.स अर्थात 1512 अग्रेजी सन के आस पास ।	अतः भाट जैसा कहता है कि 1122 बि.स में गॉव बसा सही नही लगता। यह अनुमानित सन 1569 बि.स के आस पास हो सकता है। अर्थात 1512 अग्रेजी सन के आस पास ।

अल्लीका गॉव के बसने के समय के बारे में निम्न बातें ध्यान देने की है।

- भाट यह भी कहता है कि **बिक्रम समंवत 1605 में** खानीचन्द ने उस समय के भाट को दान में चॉदी के टोडर ''आभूषण '' दिए। और खानीचन्द साला राम का पोता है।
- बिक्रम समंवत 1605 में खानीचन्द की आयु 30 साल की भी मान लेते हैं तो उसका जन्म 1575 बिक्रम समंवत में बनता है।
- खानीचन्द सज्जन का तीसरे नम्बर का बेटा है। अतः खानीचन्द के जन्म के समय सज्जन की उम्र कम से कम 28 साल तो होगी।
- अतः सज्जन का जन्म 1547 बिक्रम समंवत का हुआ।
- और सज्जन साला राम का पॉचवे नम्बर का बेटा है। अतः सज्जन के जन्म के समय साला राम की उम्र कम से कम 35 साल तो होगी।
- अतः साला राम का जन्म 1512 बिक्रम समंवत का हुआ।
- अतः हो सकता है कि साला राम ने जब अल्लीका बसाया उस समय 10 की उम हो 1522 बिक्रम

समंवत में अल्लीका को बसाया हो।

- अतः हो सकता है कि भाट की पुस्तक में 1522 बिक्रम समंवत की जगह गलती से 1122 बिक्रम समंवत लिख गया हो।
- बिक्रम समंवत 1605 में साला राम का पोता खानीचन्द जिन्दा था, उम्र कम से कम 30 साल होगी, तो साला राम 1122 बिक्रम समंवत में कैसे जीवित हो सकता है ..... यह असम्भव है। साला राम और खानीचन्द '' दादा व पौत्र में 63 साला का अन्तर है। अतः साला का जन्म 1512 बिक्रम समंवत (1575 – 63 =1512) में हुआ।

- हसनपुर से साला और गोला का परिवार धतीर आए। बाला इनका ''साला और गोला का'' मामा का पुत्र था। साला और गोला ने छोड दिया। और अल्लीका के स्थान पर एक जोहड–पोखर के किनारे बस गया जिससे अल्लीका ग्रव बसा। इस गांव को गारेका भी कहते हैं क्योंकि साला के मवेशी–पशओं में से एक पशु झोटा पोखर के किनारे कीचड में लेट गया था, वही पर सालाराम ने अपना पहला निवास बनाया। उस समय हिन्दु और मुसलमानो की लडाई के कारण हसनपुर छोडना पडा। साला और गोला का पिता मोहन लाल धतीर गावॅ में ब्याहा था।

- बिक्रम सम्वत 1875 में अर्ग्रेजी सन 1818'' में यादूपुर बसाया – जैना राम और खड्डु राम ने।
- बिक्रम सम्वत 1903 में अर्ग्रेजी सन 1846'' में रजौलाका बसाया।
- बिक्रम सम्वत 1904 में अर्ग्रेजी सन 1847'' में नवम्बर माह में रुप राम यादूपुर ने भाट को चॉदी के टोडर दान में दिए।
- बिक्रम सम्वत 1605 में अर्ग्रेजी सन 1548'' में साला राम के पोते सज्जन के बेटे खानीचन्द ने चॉदी के टोडर दान में दिए।

- साला राम और गोला राम दो भाई थे। बाला इनका मामा का बेटा था।
- साला ने अल्लीका बसाया।
- गोला गढ गगां की ओर चला गया जिनके वशंजो ने 4 गांव बसाए – ये सभी गावॅ गढ गगां के आसपास हैं।
    1. जयमलपुर,
    2.. अकबरपरु,
    3. नारायनपुर
    4. किशनपुर।

  भाट ने बताया कि साला ने 5 मौहर दान में दी।

बदन सिंह चौहान

गोला राम गढ गगां की ओर चला गया जिनके वशंजो ने 4 गांव बसाए

		गांवो के जाम	
1	यहां से निकले	अलकनवुर, आबू गुजरात	
2	फिर गए	चित्रकूट	
3	फिर गए	बीसलमेर	
4	फिर गए	सामनेर	
5	फिर गए	अजमेर	
6	फिर गए	कम्बलपुर	
7	फिर गए	इन्द्रव्रस्थ	
8	फिर गए	चरखी दादरी	
9	फिर गए	परयाना	
10	फिर गए	साम्बड	
11	फिर गए	टिटौली	
12	फिर गए	चिडावा	
13	फिर गए	साहपुर	
14	फिर गए	औस्टालवान	
15	फिर गए	पापरी माजरा	
16	फिर गए	धारुहेरा	
17	फिर गए	मालीयर	
18	फिर गए	बेनीपुर	
19	फिर गए	लोढावाडझ	
20	फिर गए	धावडा	
21	फिर गए	मुन्देडा नगंला	
22	फिर गए	धल्ला खेडी	
23	्फिर गए	सरुरपुर	
24	फिर गए	हसनपुर , तावडू के पास	पहले धतीर गए फिर धतीर से अल्लीका आए
25	फिर गए	अल्लीका	
		साला और गोला दो भाई थे। साला ने अल्लीका बसाया। गोला गढ गगां की ओर चला गया जिनके वशंजो ने 4 गांव बसाए – जयमालपुर, अकबरपु, नारायनपुर और किशनपुर।	भाट ने बताया कि साला ने 5 मौहर दान में दी।

- गांव धतीर में ब्याहा था।
- राय सिहं का पुत्र मोहन लाल
- मोहन लाल के 2 पुत्र साला और गोला

राय सिह्न
↓
मोहन लाल
↓
साला गोला

साला ने अल्लीका गांव बसाया।

''यह जानकारी मूसा के कुनबा के धरम पुत्र लीतर ने दी, 6 मार्च 2011 को।''

बाला इनका ''साला और गोला का'' मामा का पुत्र था। साला और गोला ने धतीर छोड दिया। और अल्लीका के स्थान पर एक जोहड–पोखर के किनारे बस गया जिससे अल्लीका ग्रव

बदन सिंह चौहान

बसा। इस गांव को गारेका भी कहते हैं क्योंकि साला के मवेशी–पशओं में से एक पशु झोटा पोखर के किनारे कीचड में लेट गया था, वही पर सालस ने अपना पहला निवास बनाया।

रिसाल . उसके वंश से साधपट्टी में खचेरू धन सिंह आदि चला आ रहा है । **देवीसिंह/देवीराम . इनके वंश से साधपट्टी समली के आदि चला आ रहा है ।** **खिनवाड . इनके वंस से साधपट्टी मियां आदि चल रहा है ।** **सज्जन . इनके वंस से दानी पट्टी, मूसा पट्टीए चौक पट्टीए भैड्या पट्टी ।**
भाट ने बताया कि– • कछारिया पट्टी कुन्डू गोत्र के नही है। • ये लोग अपनी मां के पिता के ''नाना'' के स्थान वर हैं । अर्थात नाठ पर हैं ।

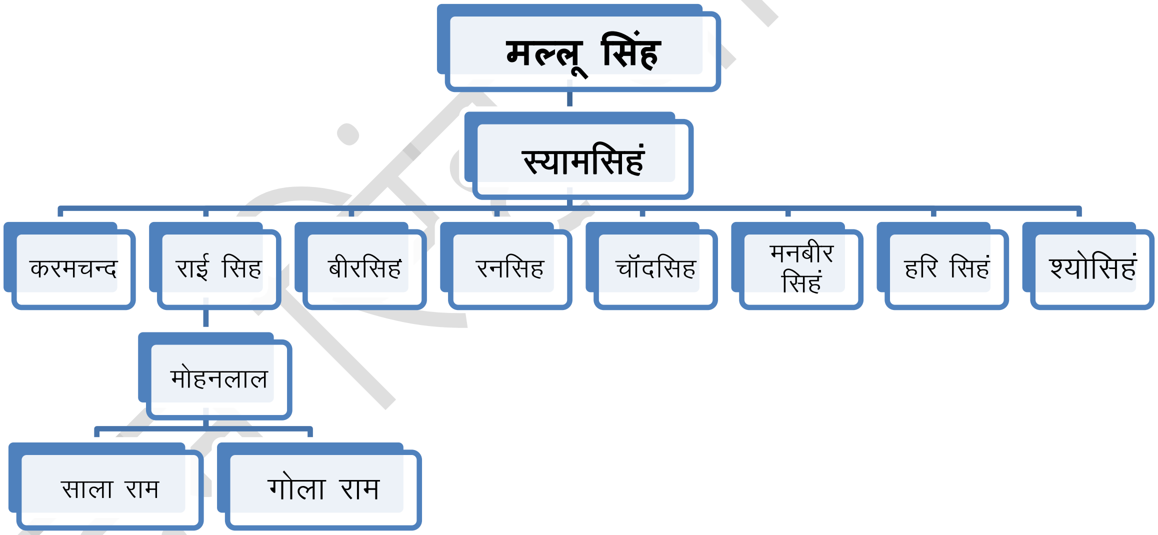

बदन सिंह चौहान

निम्नलिखित जानकारी धरम पुत्र लीतर ने दी – 6 मार्च 2011 को।

- मोहन लाल गांव धतीर में ब्याहा था।.
- राय सिहं का पुत्र मोहन लाल
- मोहन लाल के 2 पुत्र साला और गोला ..गोला राम ने वह गढ गगां की ओर चला गया जिनके वशंजो ने 4 गांव बसाए

  साला ने अल्लीका गांव बसाया।

- रिसाल के साद पट्टी में खचेरु का धनसिहं का परिवार है।
- देवीरामं के साद पट्टी में समली के परिवार है।
- और खिम्मड के साद पट्टी में दीपचन्द परिवार, मियॉ लोग राधे आदि चला आ रहा है। ये परिवार तिघरिया कहलाते हैं।

सज्जन के वशं से बाकी सारा गावं है। – इनमें दानी, मुसा, चौक, भन्डिया और साद भी पट्टियां है।

मल्लू सिंह - इनका एक पुत्र हुआ - स्याम सिंह

1. श्याम सिंह - इनके 8 पुत्र हुए
    1) करम चन्द
    2) राय सिंह - इनका 1 पुत्र हुआ
        i. मोहन लाल
            1. साला - इनके 8 पुत्र हुए
                1) रिसाल
                    i. **रिसाल के साधपट्टी में खचेड़ू का धन सिंह का परिवार है**
                2) राम करण
                3) देवी राम
                    i. देवी राम साधपट्टी में समली के परिवार है ।
                    ii. खिममड खिममड के साधपट्टी में डीप चंद परिवार , मियाँ लोग राधे अदि चला आ रहा है ।
                4) सज्जन –
                    i. **सज्जन के परिवार से पूरा गाँव है ।- इनमें दानी का, मूसा चौक भंडिया और साधभी हैं**
                5) रज्जन
                6) भोलाराम

तिघरिया → (रिसाल, राम करण, देवी राम)

बदन सिंह चौहान

3) गोला - वे गढ़ गंगा गए - 4 गाँव स्थापित किए
4) बीर सिंह
5) रण सिंह
6) चाँद सिंह
7) मान बीर सिंह
8) हरि सिंह
9) सियो सिंह

लेखक (मैं स्वयं - बदन सिंह) की वंशावली)

	मेरे **परिवार का वंशावली**	जन्म का वर्ष - अनुमानित निकाला गया है
1	साला	जन्म सन 1455 ईसवी (1512 बिक्रम सम्वत)
2	सज्जन	
3	भीखामल	
4	घासी राम	
5	राम करन	
6	मूसाराम	जन्म 1735 ईसवी
7	सूरता	जन्म 1760 ईसवी
8	अनूपा	जन्म 1780 ईसवी
9	तुलसी राम	जन्म 1800 ईसवी
10	राम सुख	जन्म 1826 ईसवी
11	कूढे	जन्म 1848 ईसवी
12	राम फूल	जन्म 1869 (मृत्यु 1893 ईसवी))
13	कारे	जन्म 1892 (मृत्यु 1918 ईसवी))
14	शिब्बन 1. भीम सिंह - जन्म – 1936 – 3 पुत्र 2. चरण सिंह - जन्म – 1945 – 2 पुत्र **3. बदन सिंह - जन्म – 1948** – 1 पुत्र 4. महेंद्र सिंह - जन्म – 1959 – 2 पुत्र 5. अमर सिंह - जन्म – 1961 – 1 पुत्र 6. सुरेंद्र सिंह (लाला) - जन्म - 1966 7. नरेंद्र (चुनमुन) - जन्म - 1972	जन्म 1915 - (मृत्यु 2003 ईसवी)

बदन सिंह चौहान

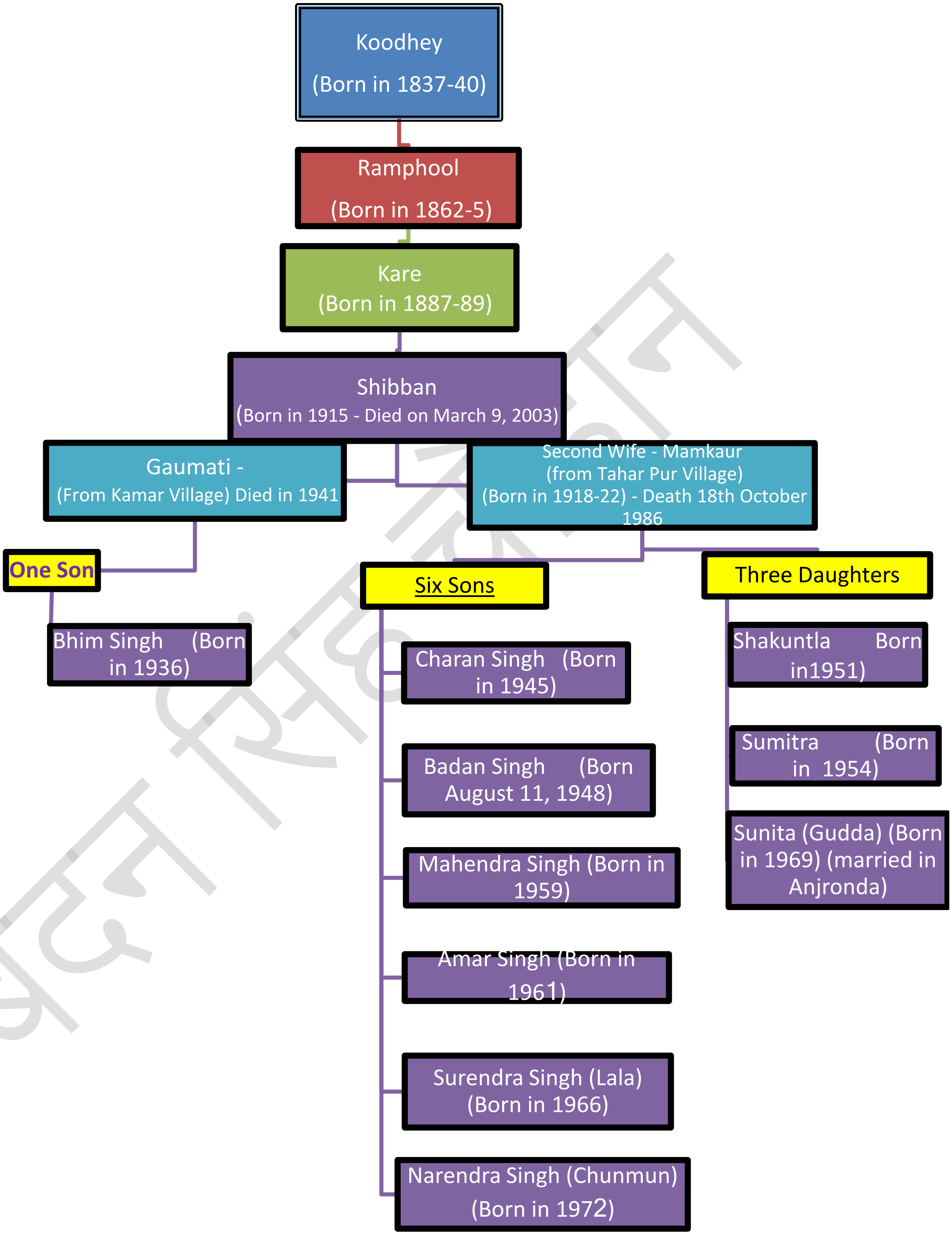
Koodhey
(Born in 1837-40)
Ramphool
(Born in 1862-5)
Kare
(Born in 1887-89)
Shibban
(Born in 1915 - Died on March 9, 2003)
Gaumati -
(From Kamar Village) Died in 1941
Second Wife - Mamkaur
(from Tahar Pur Village)
(Born in 1918-22) - Death 18th October 1986
One Son
Bhim Singh (Born in 1936)
Six Sons
Charan Singh (Born in 1945)
Badan Singh (Born August 11, 1948)
Mahendra Singh (Born in 1959)
Amar Singh (Born in 1961)
Surendra Singh (Lala) (Born in 1966)
Narendra Singh (Chunmun) (Born in 1972)
Three Daughters
Shakuntla Born in1951)
Sumitra (Born in 1954)
Sunita (Gudda) (Born in 1969) (married in Anjronda)

मूसाका मोहला

भुक्कल का परिवार

भुक्कल का परिवार

सेग राम - एक पुत्र - दूल्हे राम

दूल्हे राम – 2 पुत्र

1. कुंदी
2. भुक्कल

………

कुंदी का परिवार

कुंदी – 4 पुत्र

1) धुंदल- 5 पुत्र
    i. हुकम सिंह – पुत्र व दो पुत्री 1
        1. चरण सिंह
        2. पुत्री बीना
        3. पुत्री दरराई
    ii. प्रताप सिंह – 2 पुत्री
        1. पुत्री सीमा
        2. पुत्री सुशील
    iii. मोहर्राम – एक पुत्र
        1. नरेश
    iv. तेजपाल – एक पुत्र व दो पुत्री
        1. कुलदीप
        2. रानी
        3. बाला
    v. जय सिंह – 3 पुत्र
        1. कल्लू
        2. दया चंद
        3. आनंद
2) बिल्ली – 2 पुत्र व पुत्रियां 4
    i. बृजेश - पुत्र
    ii. मुकेश – पुत्र
    iii. पुत्री – नथिया
    iv. सांता

बदन सिंह चौहान

v. लाली
vi. हरबति

3) कासी – 2 पुत्र व पुत्री 3
   i. राजेन्द्र – पुत्र
   ii. इंदर – पुत्र
   iii. पुत्री – कमला
   iv. बिमला
   v. बिरमना

4) दरकन – 3 पुत्र व पुत्री 1
   i. हरकेश – पुत्र
   ii. जय पाल - पुत्र
   iii. सतीश - पुत्र
   iv. पुत्री – विजय

……..

भुक्कल – पत्नि भूलिया कामर से – 6 पुत्र व पुत्रियां 2

1. भूपलाल – पत्नि चन्दरी अटारी से – 3 पुत्र व two पुत्री
   a. भारत – 3 पुत्रियां
   b. उदय – एक पुत्र – मृत्यु 12वर्ष की आयु में
   c. जगदीश – एक पुत्र aishwaiya – 2 पुत्रीnimrita n chitra
2. रुमाल – मृत्यु 1980– पत्नी ग्यासो अटारी से - 2 पुत्र व - पुत्रियां 3पुत्री – तारा
   पुत्री – दया ,पुत्री – शशि
   a. सुरेंद्र – 2 पुत्रamit n sumit –
   b. देवरन्द्र – पत्नी सुमन कानी गढ़ीson n 2 daughter tanu n poojaa 1 –
3. परसी – 1 पुत्र व पुत्री 2
   a. अशोकson 2 –
   b. पुत्री – बाला
   c. पुत्री – सुनीता
   d. daughter
4. देवी राम – 1 पुत्र व पुत्री 1
   a. दिनेश- पत्नी चांदहट
   b. पुत्री – सुमन – शादी गुरुग्राम
5. राम चंद – 3 पुत्र व पुत्री 1
   a. प्रदीप – पत्नी नागर जाट
   b. राजू - पत्नी नागर जाट

बदन सिंह चौहान

    c. संजय – पत्नी – छचेरा
6. देव दत्त – 2 पुत्र व पुत्री 1
    a. सुशील
    b. अनील
    c. पुत्री गुडिया
7. पुत्री – राजन – होडल छिद्दा लंबरदार
8. पुत्री – पृथला – गिर्राज सरपंच रतुआ मोहल्ला

……..

लीतर का परिवार

दो भाई – लीतर और छीतर (चितरू)– छीतर बड़ा था – नावल्द – एक पुत्री थी श्यामो – रातीपुर में शादी

लीतर (रामदयाल)–

1. करन – पत्नी मूर्ति खेरी से - 2 पुत्र व पुत्री 1
    a. महिपाल – पत्नी पिंकी नंदू गढ़ी मथुरा के पास – 2 पुत्र हिमांशु विवेक
    b. राकेश – पत्नी मुनेश नंदु गढ़ी – 1 पुत्र व एक पुत्री
2. धरम – जन्म 1947 जुलाई 5, पत्नी मुक्ति खेरी – 1 पुत्र व पुत्री2
    a. अजीत – जन्म 1983 जनवरी3
    b. पुत्री – जगन – मिजाज पुर
    c. पुत्री – अनेजवती – आल्दौका
3. भंवर – जन्म 1950, मृत्यु ट्रैन से कट कर आत्महत्या में 1967
4. भरत लाल – जन्म 1958, एक पुत्र व तीन पुत्री
    a. धीरज
    b. पुत्री – सोनिका, मोनिका, रेणुका

5. पुत्री – राजपाली – जन्म 1953– पनेहरा में
6. मुख्त्यारी - एक सौतेली पुत्री – जन्म 1941 (पहले पति से पीछे से लाई – इसकी मां रामकली (– मंडकौला में शादी

बदन सिंह चौहान

राय राम

मूसा

1	2	3	4	5	6
सूरता	भागीरथ	राम किशन	जय सिहं	बाल किशन	तेजा सिहं
5 पुत्र	नाबल्द	नाबल्द	1 पुत्र	नाबल्द	2 पुत्र

5 पुत्र

1	2	3	4	5
अनूप सिहं	बासी राम	अजब सिहं	रतन सिहं	गुमानी
6 पुत्र	नाबल्द	नाबल्द	नाबल्द	नाबल्द

आगे देखिए

आगे देखिए

1	2	3	4	5	6
बख्ता सिहं	पोहप सिहं	धन सिहं	बाल किशन	सीता राम	तुलसी
नाबल्द	नाबल्द	नाबल्द	नाबल्द	नाबल्द	1 पुत्र

राम सुख
3 पुत्र

1	2	3
राम प्रसाद	कूढे	कुन्दन
नाबल्द	4 पुत्र	नाबल्द

1	2	3	4
किशन शाह	राम फूल	हर किशन	विजय राम
नाबल्द	1 पुत्र – कारे	नाबल्द	1 पुत्री धौरा व 1 पुत्र चन्दा
	1 पुत्र – शिब्बन		नाबल्द
	7 पुत्र		

1	2	3	4	5	6	7
भीम सिहं	चरण सिहं	बदन सिहं	महेन्द्र सिहं	अमर सिहं	सुरेन्द सिहं	नरेन्द सिहं
3 पुत्र भगत सिंह करमपाल रवीद्र	2 पुत्र जीतेंद्र धर्मेंद्र _ (2008 में मृत्यु)	1 पुत्र कुलदीप सिंह	2 पुत्र अरविंद सिंह अशोक	1 पुत्र पंकज	1 पुत्र लोकेश	1पुत्र वीरेश

राय राम

मुन्ना

1	2	3	4	5	6
सूरता	भागीरथ	राम किशन	जय सिहं	बाल किशन	तेजा सिहं
5 पुत्र	नाबल्द	नाबल्द	1 पुत्र – भूरे सिहं	नाबल्द	2 पुत्र

पिछले पृष्ठ से आगे

आगे देखिए

भूरे

1	2
अमी सिह	जस राम
1 पुत्र	3 पुत्र

बक्सी राम

1	2	3
रूप सिहें	हर जस	आराम
नाबल्द	नाबल्द	1 पुत्र
		सावंलिया
		3 पुत्र

1	2	3
सहब सिहं	लक्षमन	नैहरू
2 पुत्र	नाबल्द	2 पुत्र

1	2
केशरिया	गोविन्दा
नाबल्द	2 पुत्र
	1,बदलू– . नाबल्द
	2,निहाला– नाबल्द

1	2	3
खूबी	सूखी राम	वासू देव
1 पुत्र	2 पुत्र	नाबल्द

जगीं

असरफी –पुत्री

5 पुत्र – अजंरोदा गावं से

1	2
भूले	मन्नु
1 पुत्र	नाबल्द

बिरखू

1	2
नानक	शिव सिहं
2 पुत्र	2 पुत्र

1	2
राम लाल	जौहरी
जय राम–उर्फ चेता	हरचैन
छज्जन	नाबल्द
2 पुत्र	

1	2
सुखपाल –उर्फ छैला	सुखलाल

1	2
.हेती	राम फूल
नाबल्द	गिंराज

1	2
भागमल	कशन
नाबल्द	नाबल्द

1	2
सुमेर	बच्चु

मूसा

1	2	3	4	5	6
सूरता	भागीरथ	राम किशन	**जय सिहं**	बाल किशन	**तेजा सिहं**
5 पुत्र	नाबल्द	नाबल्द	**1 पुत्र – भूरे सिहं**	नाबल्द	**2 पुत्र**

पिछले पृष्ठ से आगे लाया

हरध्यान									जोशी	
1	2	3	4	5	6	7	8	9	नथ्थु	हीरा
मेदा सिहं	जयसिहं	चैन सुख	आदिमल	हजारी	ईसर सिहं	दाता राम	राम बक्स	नन्द किशोर	2 पुत्र	2 पुत्र
2 पुत्र	4 पुत्र	नाबल्द	2 पुत्र	नाबल्द	नाबल्द	भोला	नाबल्द	नाबल्द		
			1.नागर मल नाबल्द			गुलाबकौर–पुत्री				
			2. मन सूख– नाबल्द			नाबल्द				

1	2	3	4
ननुआ	मुखराम	शीश राम	मांहन
3 पुत्र	नाबल्द	नाबल्द	नाबल्द

आगे

1	2
बस्ती	निर्मल
नाबल्द	2 पुत्र

1	2	3
हरफूल	बौहरू	किशन शाह
4 पुत्र	2 पुत्र	नाबल्द
1.भूले – नाबल्द 2.उमराव– नाबल्द 3.भीमा– नाबल्द 4.हुक्का– नाबल्द		

1	2
जय हरि	राम रीख
नाबल्द	शादी
	3 पुत्र

1	2	3
चन्दरी	तुलसी	डल्ली
जीवन	नाबल्द	नाबल्द
3 पुत्र		

1	2	
नथ्थन	हरिराम	
धनमत	राम दयाल	चितरू
अमीलाल	4 पुत्र	1 पुत्री
		नाबल्द
6 पुत्र		

तेजा सिहं										
हरध्यान									जोशी	
1	2	3	4	5	6	7	8	9	नथ्थु	हीरा
मेदा सिहं	जयसिहं	चैन सुख	आदिमल	हजारी	ईसर सिहं	दाता राम	राम बक्स	नन्द किशोर	2 पुत्र	2 पुत्र
2 पुत्र	4 पुत्र	नाबल्द	2 पुत्र	नाबल्द	नाबल्द	भोला	नाबल्द	नाबल्द		
			1.नागर मल नाबल्द 2. मन सूख– नाबल्द			गुलाबकौर–पुत्री नाबल्द				

	नथ्थु
1	2
जुगली	मोहन लाल
नाबल्द	2 पुत्र

1	2
चेत राम	सीता राम
3 पुत्र	टोटरू –नाबल्द

1	2	3
नारधा	धरम सिहं	खिल्लन
नाबल्द	4 पुत्र	बुद्धि

1	2	3	4
बहाल सिहं	लिक्खी	सूखी	सुख राम
अमी चन्द	नाबल्द	नाबल्द	नाबल्द
किशन वीर . आदि			

1	2
दीप चन्द	नन्दा

हीरा	
1	2
सह जीत –	गाजे
नाबल्द	

1	2	3
झन्डु	चैन सुख	प्रेम सुख दृ उर्फ पैमू
नाबल्द	नाबल्द	नेत राम

1	2	3	4
तेजी	पाला	गगांलाल	हरबीर
5 पुत्र			

धनमत – 1 पुत्र व दो पुत्री

1. अमीलाल – पुत्र धनपत – 6 पुत्र
2. पुत्री – परसन्दी
3. पुत्री – लाल मति

……. अमीलाल – 6 पुत्र

1) राम सिंह - जन्म 24.01.1946 – पत्नी रेशम (खेरी से अमीलाल की पुत्री)
    a. धीरेंद्र – पत्नी रविता (पुत्री नेतराम भुदेई)
    b. पुत्री - मृदुला – सत्यागढ़ी
    c. प्रितिभा – यशपाल को –
2) राज पाल – जन्म 04. 06.1949 (मार्क्स शीट में (– पत्नी सिरदारी खेरी से रेशम की छोटी बहन
    a. पुत्री – सत्यवती – निरंजन को करसाढे में
    b. वेदपाल – पत्नी श्याम लता होडल से
    c. ऋषि – पत्नी हेमलता – श्याम लता की बहन
3) देव रतन – जन्म 02.02.1952 – पत्नी विमला बिजवासन से
    a. दिनेश – जन्म 02.07.1979 -पत्नी मनदीप – पुत्र ऋषभ
    b. बृजेश – जन्म 31.07.1983
4) दारा सिंह – जन्म 06.03.1954 – पत्नी – 1 पहली पत्नी राजवती पृथलेसे व दूसरी पत्नी पुष्पा ताहर पुर से
5) शक्ति सिंह – 17.02.1960 – भगवती पुष्पा की)छोटी बहन(
    a. मॉनवेंद्र – पत्नी तन्मय
6) शिवेंद्र – जन्म 10.02.1963 - पत्नी सुनीता पुत्री ताराचंद व कमला देवी), पाकसमा से (– एक पुत्र
    a. श्वेतांग

रघुबीर सिंह की वंशावली

जीता – पुत्र 2

1. राम करन - नावल्द
2. महा राम – एक पुत्र
    1) भोलू –(ताऊ राम करन ने गोद ले लिया (– दो पुत्र
        i. सुखपाल - नावल्द
        ii. स्याम फल – एक पुत्र
            1. रघुबीर सिंह – एक पुत्र – ताऊ सुखपाल ने गोद ले । - एक पुत्र

रघुबीर - एक पुत्र

1. गंगा लाल - 5 पुत्र
    1. देवी सिंह - 2 पुत्र + पुत्री
        1) विजय लक्मी - पुत्री - एन आई आई टी से कंप्यूटर डिप्लोमा – गृहणी

बदन सिंह चौहान

2) अजय - एम एस - कंप्यूटर एप्लीकेशन - अमेरिका से - नौकरी न्यूयार्क में - इंटरनेट लीडर
3) अशोक - एम एस इलेक्ट्रिकल्स - अमेरिका - ब्रिस्टल मायर्स सक्वीव - - नौकरी नई जर्सी में सप्लायर्स परफॉर्मन्स और डेवलपमेंट मैनेजर

2. भारत - बी ए, बी लिब, बी एड - लाइब्रेरियन - केंद्रीय विद्यालय - पत्नी कुंती - नए गाँव से - एक पुत्र -
   1. मनीषा - बी टेक - एक्सेटर बैंगलोर में - टीम लीडर
3. बिक्रम - 3 पुत्री व एक पुत्र
   1) मोनिका - अमेरिका में - बैंक में कार्यरत
   2) वर्षा - ग्रहणी
   3) खुसबू - एम एस सी - फैसन डिजानिंग - हैंडलूम क्लोथिंग का अपना व्यवसाय
   4) नितेश - एम डी - जनरल मेडिसिन - राम मनोहर लोहिया अस्पताल में - सीनियर रेजिडेंट डॉक्टर
4. प्रताप - बी ए, एल एल बी - इनकम टैक्स ऑफिसर - 2 पुत्री व 1 पुत्र
   1) पुत्री - ज्योति - डॉक्टर - एम डी - स्त्री रोग विषेशज्ञ - सहरावत हॉस्पिटल की मालिक -
   2) पुत्री - पारुल - BDS, MDS,,
   3) राहुल - बी टेक - सिविल - फरीदाबाद में - शॉप राइट डिपार्टमेंट के मालिक -
5. विजय - पशु चिकत्सक - 1 पुत्री व 2 पुत्र
   1) पुत्री - कामना - एम ए मैथ्स, MCA, BeD, - दिल्ली में स्कूल टीचर
   2) संदीप - बी फार्मा - दवा कंपनी वान्या फार्मा फरीदाबाद के मालिक
   3) विशाल - बी ए - अपना निजी कारोबार

बदन सिंह चौहान

नारायण सिंह – 2 पुत्र

1. अतर सिंह – एक पुत्र
    a. श्री
2. रामजी लाल – वल्द

राम जस – दो पुत्र

1. बीरबल – एक पुत्र
    a. बूचा -4 पुत्र
        i. अखै
        ii. गुलाब
        iii. गजराज
        iv. फौजी
2. घूर मल – नावल्द

हरपाल-एक पुत्र

- बाल किशन – 2 पुत्र
    1) सरूपा – 1 पुत्र
        - पतराम
    a. बाल मुकंदी - नावल्द

बाले - 2 पुत्र

1 भगवान सहाय - 3 पुत्र
    a. गोविंदा - नावल्द
    b. बुद्धी - 3पुत्र
        i. हरदयाल
        ii. जगदेव
        iii. बीर सिंह
    c. बल्ली (बलबीर)
2 खचेरा
    a. जयनारायण - 3 पुत्र
        i. महेंद्र
        ii. ऊधम सिंह
        iii. अशोक

परसादी - के 4 पुत्र

1 बुधराम - नवल्द
2 बालू - 2पुत्र
    a. घनश्याम
    b. शेर सिंह
3 मनीराम - 1 पुत्र
    a. चंदर
4 टूँडा -(श्रीचंद)

फतेली - 4पुत्र - नंदराम, देवीराम, रतिराम व देवीराम

कुन्दन - का पुत्र

1 धर्म सिंह - के 3 पुत्र
    a. पुत्र
    b. पुत्र
    c. पुत्र

मवासी - के 2 पुत्र

1 रामसिंह
2 अमर सिंह

नेतराम - 4 पुत्र

1) तेजी
    a. सरदार
        i. महेश
        ii. नरेश
    b. मुखत्यार
        i. सूरज
    c. सौदान
        i. रमेश
    d. रिशाल
        i. योगेश
        ii. देवी लाल
    e. नवाब
        i. लवली
        ii. भूषण
2) पाला - x
3) गंगा लाल
    a. राजबीर
        i. भारत
        ii. उधम सिंह
        iii. मंजीत कुमार
    b. महाबीर
        i.
    c. रणबीर
        i. राहुल
        ii. संदीप
4) हरबीर

केवल - (का भाई भुललाल- नवाल्ड)

केवल - के 2 पुत्र

1. रामजीलाल - 4 पुत्र
    a. देवी - 3 पुत्र
        i. धर्मवीर। 2 पुत्र
            1. विकास
            2. दीपक
        ii. प्रकाश - 1 पुत्र
        iii. काश्मीर - 1 पुत्र
    b. लखमी - 3 पुत्र
        i. राजेंद्र - 1 पुत्र
            1. वतन सिंह
            2. पुत्र
        ii. विनोद - 1 पुत्र
        iii. विक्रांत - 2 पुत्र
    c. रतन
    d. चरण
2. नंदराम - के 1 पुत्र
    a. कन्नौ (कन्हीराम) - 5 पुत्र
        i. भान सिंह - गुम हो गया
        ii. भीम
        iii. गंगाराम
        iv. दयाराम
        v. राजकुमार

चन्दन - के 2 पुत्र(हुकम सेहा व बुधसिंह) - हुकम के
कारे ज़ीमन - 5 पुत्र - जवाहर, रन्नों, राज, महावीर, सुखवीर कारे जीमन 2 भाई थे - दूसरा गंगादान (नवल्द) - इसकी जमीन जवाहर ने ले ली “

दानिका मोहल्ला

दानिका मोहल्ले – इसमे 4 कुनबा है।

1. भज्जर
2. भुमिया
3. जैमन ठुरा
4. ठाकरा

प्रत्येक का विवरण निम्न प्रकार है-

…………..

1. भज्जर – कुनबा
    1) रामजीलाल – 2 पुत्र- जीवन लाल व मोती
        i. जीव लाल – 4 पुत्र
            1. दिल सुख – पत्नी किसनौ पयारे से – मृत्यु सड़क दुर्घटना 2006– 3 पुत्र व पुत्री 1
                a. ओम पाल – पत्नी दयड्योटा – 1 पुत्र हेम राज व पुत्री सविता 1
                b. रतन – पत्नी मिश्रा गोपिखेरा से – 2 पुत्र
                c. हर केश – पत्नी बन्ति भिडूकि –
                d. पुत्री – कमलेश – भूपगढ़ में
            2. चतरी – पत्नी हरप्यारी पयारे से – 4 पुत्र व पुत्री 2
                i. घनश्याम – मृत्यु वर्ष की उम्र में आत्महत्या 25– पत्नी नथिया – नथिया ने घनश्याम के छोटे भाई राम रथ की चूड़ी पहन ली – 1 पुत्र बृजेश व पुत्री रेखा 1
                ii. समरथ - 1पुत्र गौतम व पुत्री शशि 1
                iii. बिल्ले – पत्नी पृथला से
                iv. सुम्मेर – पत्नी पृथलेसे
                v. पुत्री – विद्या जौहर खेरा में
                vi. पुत्री – लच्छो – खेलला में
            3. ईश्वर – पत्नी बहरी अहरवां से – 1 पुत्र व पुत्री 2
                i. वीर सिंह – पत्नी लोहानी
                ii. राजकुमार
                iii. पुत्री – कश्मीरी मोहना में
                iv. पुत्री बेबी – मोहना में
            4. पूरन – पत्नी कबूल पुर – 2 पुत्र व पुत्री 2
                i. सुभाष -
                ii. मनोज –
                iii. पुत्री – सीमा
                iv. पुत्री – लाली
            5. मोती – 3 पुत्र व पुत्री 1

a. मान सिंह – पत्नी किशोरी बैठन सुक्का परिवार में
    i. गोविन्द – 1 पुत्र व 3 पुत्री
b. राजवीर – पत्नी महा विद्या बल्लभगढ़ से 3 पुत्र व 1 पुत्री
c. सिंघबीर - 1 पुत्र व् 2 पुत्री
d. पुत्री – मुखन मछगढ़ में

2) हेतली परिवार – हेतली – 6 पुत्र व पुत्री 1
    i. मामचंद – पत्नी धापा पृथला से – 3 पुत्र व पुत्री 2
        1. भरतपाल – 2 पुत्र व पुत्री 1
        2. धर्म वीर – उर्फ लाला - 1पुत्र व पुत्री 2
        3. रोहतास – 2 पुत्र व पुत्री 1
        4. पुत्री – लाली मोहाना में
        5. पुत्री –
    ii. रोशन – पत्नी बीरो सारन से
        1. सतीश
        2. पोपन
    iii. यादि (यादराम)– पत्नी भोला सारन से – 1 पुत्र व पुत्री 4
        1. कुलदीप
        2. पुत्री – घररौट में
        3. पुत्री – कोमल
        4. पुत्री – निर्मल
    iv. भरतलाल - 1पुत्र व पुत्री 4
        1. पुत्र
        2. पुत्री
        3. पुत्र
        4. पुत्री
        5. पुत्री
    v. पुत्र नाम ?
    vi. हरि चंद – 2 पुत्र व पुत्री 1
        1. पुत्र
        2. पुत्र
        3. पुत्री
    vii. पुत्री – राजपाली – मोहना में

3) इंद्राज – 2 पुत्र
    i. अम्मी चंद – पत्नी पहाड़ी से - 2पुत्र व पुत्री 1
        1. कमल – 3 पुत्र

बदन सिंह चौहान

2. सुरेंद्र – पत्नी होडल में
3. पुत्री – कमला घोरी में

ii. चंदी – पत्नी पहारी से – 4 पुत्र व पुत्री 2

1. गुलाब –
2. ओमी
3. विजय पाल
4. नंद राम
5. पुत्री – ओमवती
6. पुत्री

4) श्यामी भगत – 5 पुत्र व पुत्री 2

i. बीरेंद्र – 1 पुत्र मदन
ii. बीर सिंह – पत्नी प्रेरणा
iii. बिष्णु
iv. लाला
v. लखमी

2. भुमिया वाला कुनबा

चन्दन सिंह - ताहर पुर में शादी -एक पुत्र

1) किरन - पत्नी गैलपुर से 5 पुत्र

i. बिजेंद्र - प्याला में शादी 3
    1. भूपेंद्र सिंह
    2. जीतेन्द्र सिंह
    3. पुत्र
ii. बलदेव - दुर्गा में शादी 2 पुत्र
    1. रविंद्र
    2. गोपाल
iii. हरबीर - प्याला में शादी 1 पुत्र
    1. राहुल
iv. भगत सिंह - दुर्गा में शादी 1 पुत्र
    1. नवीन
v. धर्म राज फरीदाबाद में शादी - 1 पुत्र
    1. रौनक a

औंधुला परिवार में - 3 परिवार हैं।

1. कुंदन,
2. मंगतू और
3. उदयराम

कुंदन - के 3 पुत्र

1. भीम

2. बीर सिंह
3. मुक्का

मंगतू - 1 पुत्री

उदय राम - के 3 पुत्र

1. नंदन - 1 पुत्र मेहरचंद
2. बुधराम
3. अर्जुन

बदले - यह भी औँधुला परिवार से है - इसके 3 पुत्र

1. चंदी –
    a. 1 पुत्र
2. किशन –
    a. 1 पुत्र इन्दर
3. तेजी - 2 पुत्र -
    a. पुत्र,
    b. पुत्र

खिलुआ - का पुत्र

1. हरिराम - के 2 पुत्र –
    a. डाली - के पुत्र
        i. कर्मबीर व
        ii. धर्मबीर
    b. बल्ली (बलजीत)
        i. राजेंद्र
        ii. बीरसिंह
        iii. जलसिंह

रतनलाल - का पुत्र

1. प्यारे - का पुत्र
    i. तोता - 1(2 शादी - 1 मानपुर व दूसरी यू पी से)- - का पुत्र –
        1. रणबीर - के पुत्र –
            a. पुत्र

शिवलाल – के 2 पुत्र –

1. अम्मी
    i. मोहनलाल

बदन सिंह चौहान

1. राजेश
2. बृजेश

ii. भूप सिंह

2. श्रीचंद

ईशरा - के पुत्र –

a. टेकी .

i. समय सिंह

ii. सतपाल –

1. रोहित

b. रामखिलारी –

i. होशियार

3. जैमनठुरा कुनबा रूरा)**,** कुंदी**,** सिंघराम**,** निहाला**,** गोपी परिवार(

1) रूपचंद उर्फ़ रूरा – 3 पुत्र

i. गिर्राज – 1 पुत्र

1. मदन- 2 पुत्र

ii. हल्ली – 2 पुत्र

1. सतवीर – मोहर्राम के पुत्रों द्वारा हत्या – 1 पुत्र
2. जगबीर – पत्नी कंजर पुर

iii. शिव चरण – 1 पुत्र

1. राम सिंह – पत्नी बहिन – 5 पुत्र

a. राजेश
b. सुमेर
c. सुरेंद्र
d. मुकेश
e. इंदरजीत

2) कुंदी – 1 पुत्र छाजू

i. छाजू – 1 पुत्र व पुत्री 2

1. बीरपाल – पत्नी सतुआ गढ़ी – एक पुत्र

3) सिंघराम – 1 पुत्र

1. लोहरे – 2 पुत्र व पुत्री 1

a. पतराम – 2 पुत्र व पुत्री 3

बदन सिंह चौहान

i. बीरपाल
ii. लाला

4) निहाला – 2 पुत्र
    i. नत्थी – 1 पुत्र व पुत्री 4
        1. जोगिंदर – 2 पुत्र
    ii. वेद पाल – पत्नी सुखबती बंचारी से – 2 पुत्र व पुत्री 2
        1. पुत्र
        2. पुत्र
5) उद्दी – 1 पुत्र – गोपी
    i. गोपी – 5 पुत्र व पुत्री 4
        1. वीर सिंह
        2. बिजेंद्र
        3. नेपाल
        4. सुभाष
        5. बच्चू
6) तुलसी – 1 पुत्र थान सिंह
    i. थान सिंह – 4 पुत्र व पुत्री 1
        1. भजन – 1 पुत्र राजेन्द्र
        2. जवाहर - 2पुत्र
        3. बाल वीर – 2 पुत्र व पुत्री 1
        4. बुद्धि – 1 पुत्र
7) गयासिया (पत्नी कोंडल) - (ये दो भाई थे - दूसरे का नाम था घमंडी - नावल्द) - का पुत्र रामजीलाल - का पुत्र मोहर्रम - के 6 पुत्र मोहर्राम – 2 पत्नी 1)चम्पी ऐंच से व (चंदा पोंडरी से 2 – चम्पी से पुत्र 6 पुत्री लज्जा सिहौल में और चंदा से 1
    i. प्रकाश – पत्नी बहिन से – 3 पुत्र
        1. आजाद
        2. मनिंदर
        3. विशमहेन्द्र
    ii. भरत – पत्नी मूर्ति सारण से – 2 पुत्र व 2पुत्री
        1. धीर सिंह
        2. अमित
    iii. देश राज – पत्नी गुलबीरी अटारी से – 3 पुत्र
        1. रोहित
        2. नारायण
        3. जसबीर

iv. रूप चंद – पत्नी अनिता दुर्गापुर से – 1 पुत्र व पुत्री 1
v. सुम्मेर – पत्नी हतौने से –
1. उत्कर्ष व
2. उपकार
vi. महेंद्र –
1. अमन

4. ठाकरा कुनबा –
   1) सुख राम – 1 पुत्र व पुत्री 1
      i. पुत्र – देवी – 4 पुत्र
         1. रमेश
         2. सुरेश
         3. महेश
         4. नर वीर
   2) चिरंजी – 1 पुत्र
      i. जोरमल – 3 पुत्र व पुत्री 1
         1. वीर सिंह
         2. शेरा
         3. केहर – 1 पुत्र
   3) नाम ?- 3 पुत्र
      i. ब्रिंजु – 2 पुत्र व 5पुत्रज 1
      ii. मोती – 2 पुत्र व पुत्री 3
      iii. भजन लाल – पत्नी जनौली से – 3 पुत्र व पुत्री 2
   4) गिर्राज – 3 पुत्री
   5) बिनेन्द्र – 1 पुत्र

दुली चंद - इसका 1 पुत्र - इनको टावर कहते हैं
1. बिजन

कछारिया मोहल्ला

बलवंत व लालेरम
उदय राम – 1 पुत्र

1. राम चंदी – 2 पुत्र + 6 पुत्रियाँ (धर्मवती, रामवती, भगवती, चंद्रावती, ज्ञानवती व सनवती)
   1) धर्म चंदा विद्यालंकार
   2) रतन सिंह

बदन सिंह चौहान

खचेरा उर्फ खिच्चू – 2 पुत्र

1. खेम चंद – 2 पुत्र
    a. डॉक्टर
    b. डॉक्टर
2. देवी सिंह – 2 पुत्री
    a. डॉक्टर
    b. डॉक्टर

कछारिया मोहल्ले के कुनबा

(1) किसनी के

(2) गाजे के - 5 पुत्र पोदा, खचेरा, खैमी, सुखराम और अटारी।

(3) टून्ड़ा – बलमत के - अमर सिंह, धर्मचंद विद्यालंकार, लिक्खी, सियाराम, राम रामचंद, श्याम लाल आदि

बलमत के 5 पुत्र - जीवनलाल, उदयलाल (उद्दी), खिलुया, लक्खीराम, कन्हैया

जीवन लाल - का 1 पुत्र

1. श्यामलाल
2. उदयलाल (उद्दी) - का पुत्र
    a. रामचन्दी - 2पुत्र व 6 पुत्रियाँ
        i. धर्मचंद -
            1. अभिषेक
                a. अभिमन्यु
            2. अभिनव
        ii. रत्नसिंह

भुल्ली - 3 पुत्र

1) रतन लाल

2) भूप सिंह

3) पूरन

1. रामसिंह
    a. मिथुन
    b. अजय

कन्हैया

खिलुआ - 2पुत्र

1. सियाराम

कन्हैया - के 4 पुत्र

1. अमरसिंह
2. करणसिंह
3. हरीसिंह
4. कमालसिंह

लक्खीराम - 3पुत्र

1. देवीसिंह
    a. दिनेश
2. ब्रगभन (झबरू)
3. जगतपाल
    a. चिराग (चिंटू)

रूपा (रूप सिंह) - पत्नी रूरी (कोंडर में शादी) - 1 पुत्र गाजे

i. गाजे - पत्नी बुद्धो - गोविंदगढ़ (कानि गढ़ी के पास) - 7 पुत्र + 2 बहन (झंता -'जये में', व सुपेदी)
    1. खचेरा
        a. किरण
            i. पुत्र - मृत्यु
            ii. पुत्र - पप्पू
        b. भीसी - दो पत्नी
            i. सुन्दर - पहली पत्नी से
            ii. परसी
            iii. पुत्र - यादराम उर्फ़ भट्टर

2. खिल्लू
    a. श्याम चरण -1 पुत्र + 4 पुत्रियां
        i. कल्लू
            1. पुत्र
            2. पुत्र
            3. पुत्री
3. खैमी
    a. गंगा
        i. राजबीर
    b. जिले
        i. पुत्र
        ii. पुत्र
        iii. पुत्री
        iv. पुत्री
4. पोदा (उर्फ़ सुखनंदन)
    a. दिलीप
        i.
        ii. पुत्र
        iii. पुत्री
        iv. पुत्री
5. मोहन लाल - नावल्द
6. सुखराम
7. अतरी - पत्नी रति - धुमौके से - 5 पुत्र
    a. सतवीर
        i. शोभाराम
        ii. धौरू पुत्र
        iii. पुत्री
        iv. पुत्री
        v. पुत्र
    b. बीर सिंह
    c. देवेंद्र
        i. पुत्र गौतम
        ii. पुत्र महेंद्र
    d. देवरतन - देवी राम
        i. पुत्र

गाजे के - 5 पुत्र

1) पोदा - 1 पुत्र

    दलीप - 1 पुत्र

    दीपक

2) खचेरा - 2 पुत्र किरन और भीसी

    किरन के दो पुत्र - नाम ?

3) खैमी - 3 पुत्र -

    गंगा - 2 पुत्र

    जिले -

    राजबीर - 1 पुत्र

4) सुख राम -

    रणजीत

5) अतरी - 5 पुत्र

    सतवीर

    कलुआ

    बीर सिंह

    रोहतास

    पुत्र - नाम ?

e. रोहतास – 1पुत्र व 1 पुत्री
    i. पुत्र

चौक पट्टी

मुख्य रूप से कुनबे हैं। 4

1. साधु के – कुनबा
2. सरूप का कुनबा
3. अतर सिंह – आलू के
4. गंगा सहाय का कुनबा

…..

साधु के – कुनबा

भूले – 2 पुत्र – किशन सिंह व तोता

1. किशन सिंह – पत्नी कामर – 1 पुत्र
    a. नवल – पत्नी छपेरा – 3 पुत्री
2. तोता - 2 पत्नी – घोशन नौरंगाबाद – व पोंडरी – चंद्रकला। पुत्री 1 पुत्र हेति और शिब्बन व 2
    a. हेती पोंडरी वाली से (हेतलाल)– पत्नी प्रकासी ताहर पुर से – 3 पुत्र
        i. घनस्याम – पत्नी अंगूरी छपरौला – 2 पुत्र व पुत्री 2
            1. कुलबीर – 2 पुत्र
            2. जलवीर –
        ii. सुख सिंह – बाबाजी हो गया
        iii. बल्लन – शादी नही की
    b. पुत्री – चंद्रकला – घोसन से – चांदहट में शादी - विधवा – मायके में रह रही है।
    c. शिब्बन – घोसन से – पत्नी सुपेदी पृथला – 2 पुत्र
        i. वीरेंद्र – पत्नी करसाडा – 2 पुत्र – मृत्यु में 2011
        ii. नरेन्द्र – पत्नी करसाडा - 1पुत्र व दो पुत्री

जंगी परिवार – 1 पुत्र – अंतराम (भम्बोला)– पत्नी मंडकौला

1. अंतराम – 5 पुत्र व पुत्री 2
    a. रतन लाल – पत्नी – मानपुर – 2 पुत्र –
        i. कुंवरपाल व
        ii. मानसिंह
    b. रतिराम – पत्नी अलावलपुर - 2पुत्र
        i. घनश्याम
        ii. सुखीराम
    c. बिजेंद्र – अलावलपुर - 1पुत्र – करन

बदन सिंह चौहान

d. राजेन्द्र – पत्नी जैन पुर (मंडकौला)-2 पुत्र – उधम व थानसिंह
e. राजपाल -पत्नी बंगाल - 2पुत्र – सौरव व सचिन

जीती -पुत्र सुरता का - परिवार – 1 पुत्र पहलाद

1. पहलाद – पत्नी अटारी – 3 पुत्र व पुत्री 6
    a. मामचंद – पत्नी अलवाल पुर – 2 पुत्र बलराम व किशन व पुत्री 1
    b. करम चंद – पत्नी अलावलपुर – 11 पुत्री
    c. नरेश – पत्नी भिडूकि - 1पुत्र व दो पुत्री
2. सुमेर – पत्नी बढ़ा – 3 पुत्र व पुत्री 3
    a. बिजेंद्र
    b. अतर सिंह – मृत्यु 2011
    c. अजीत

भोले व कुंदन परिवार उर्फ ग्वार खावा

1. भोले – निसंतान
2. कुंदन – पत्नी नागर जाट – 3 पुत्र व पुत्री2
    1) नत्थी – पत्नी भिडूकि – 1 पुत्र व पुत्री 2
        a. भूपसिंह – झार सेतली - 2पुत्र विक्की व अनील
    2) गंगाराम – पत्नी भिडूकि - 2पुत्र व 4पुत्री
        a. पदम सिंह – ट्रैन से कट कर मृत्यु – पत्नी कालियाका - 1पुत्र व पुत्री 2
        b. देवी सिंह – पत्नी कालियाका - 2पुत्र व पुत्री2
    3) मोहर पाल – पत्नी झार सेतली - 2पुत्र व पुत्री 1
        a. सजंय - 3पुत्र
        b. ओम प्रकाश - 1पुत्र

खिलुआ – परिवार - 2पुत्र

1. उदय – 1 पुत्र व पुत्री 3
    1) सुमेर – पत्नी भनकपुर - 4पुत्र
        i. नेम सिंह – पत्नी अलावलपुर- 2 पुत्र अमित व देवेश
        ii. देवीलाल – पत्नी – झार सेतली - 1 पुत्री
        iii. करन – पत्नी सोतई
        iv. शिव सिंह

सरूप परिवार

पृथी - 3 भाई थे - नारायण सिंह (हरी सिंह) और मनसुख (नावल्द - इसकी जमीन पृथी के पास चली गई - क्योंकि वह पृथी के पास रहता था।)

पृथी - इसके पुत्र सरूप

2) सरूप - 5 पुत्र व 3 पुत्री हुए ( )

बदन सिंह चौहान

i. लज्जा
ii. हेता
iii. राम सिंह
iv. डाली
v. कासी - पहले ही मृत्यु हो गए

3) नारायण सिंह (हरी सिंह)- का 1 पुत्र
   i. जीमन - 1 पुत्र
   ii. श्याम लाल - 1 पुत्र
   iii. राम प्रसाध

4) मनसुख - नावल्द

एक बार सारी जमीन रहन (गिरवी राखी थी - महाजन सालिग राम महेश्वरी 'बोहरे' के पास - लगान नहीं पटा पाए थे तो बोहरे सालिग्राम से कर्जा लेना पड़ा। फसल प्रयाप्त होती नहीं थी - लगान दे नहीं पाते थे तो महाजन से कर्जा लेना पड़ता था - इसी कारण ही कर्जा लिया पृथी ने सालिगराम से - कहते है कि जब कर्जा नहीं पटा तो सालिगराम सेठ ने सरोप्प कि हवेली पर कब्जा कर लिया - यहां तक कहते है कि हवेली में सूअर गुसा दिए थे। उस समय पंजाब था बहुत बड़ा जिसमे पूरा आज का पकिस्तान और हरियाणा सम्मलित था - पंजाब की राजधानी लाहौर थी। सरूप ने लाहौर की कोर्ट तक मुकदमा लड़ा। और जीत गए - इसके बाद लगान माफ़ हुआ। उस समय बैंक का काम करते थे ये महाजन। लोग कहते हैं की जब लाहौर से वापिस आ रहे थे, तो बस से तालाब 'सोहना मोड़ पर' पर उतर गए। गहरा घना जंगल था उस समय यहाँ पर और जंगली जानवर भी रहते थे। बाघ और तेंदुए ,लक्कड़बघ्घा आउडी रहते थे। गाँव की ओर आते हुए कच्चे रास्ते से जॉब आ रहा था तो पृथी को जंगली जानवरों की याद आई कि यहाँ रहते हैं। इस भय ने अंदर से डर पैदा कर दिया। उसने दौड़ लगाना शुरू कर दिया और अपनी जूतियां हाथ में ले ली - दौड़ते हुए घर आए। जानवर मिला कि नहीं यह तो वही जानता था।

नारायण सिंह - पृथला में शादी
लज्जा और हेता खेरी में शादी
पहले शादी हुई थी राम सिंह की - में नौंगर में, डाली की भी नौंगर में शादी (यह पत्नी की मृत्यु हो गई, बावली गिदरिया ने खा ली थी) - फिर दूसरी शादी हुई मोहला में) हुई लज्जा और हेता (खेरी में शादी) से पहले।

2. अतर सिंह परिवार
3. गंगा सहाय का कुनबा

साध मोहल्ला

सुखपाल - 3 पुत्र + 1 पुत्री (भौहती - दीघौट में शादी - इसकी दो पुत्री - कस्तूरी और केशर बहिन में बीर सिंह और जिंदा को ब्याही - बहिन में बीर सिंह और गेंदा मेरे पिता जी के मां के परिवार में से हैं)

सुखपाल के 3 पुत्र

1. **राम चंद**
2. **दुल्ली**
3. **गिर्राज**

1. **राम चंद** (पत्नी - परमाली - बहिन से) - 2 पुत्र + 3 पुत्री (पुत्री राजेश + पुत्री ब्रजेश + सुरेश)
    - a. चेतराम - 5 पुत्र
        - i. मोहन सिंह - 3पुत्र
            1. कमल सिंह 1 पुत्र व 1 पुत्री
                - a. सोनू
                - b. पुत्री
            2. गुलाब सिंह –
                - a. साहिल
                - b. राहुल
            3. गैंदा सिंह - 1 पुत्र + 3 पुत्री
                - a. पुत्र
                - b. पुत्री
                - c. पुत्री
                - d. पुत्री
        - ii. भगत सिंह - 2 पुत्र +4 पुत्री
            1. गजेंद्र
            2. देवेंद्र -
            3. सीमा - पुत्री
            4. नीलम - पुत्री
            5. मोनिका - पुत्री
            6. सुमन - पुत्री
        - iii. खुशाल सिंह - 2 पुत्र
            1. नरेंद्र
            2. रमेश
        - iv. जवाहर सिंह –x शादी नहीं की

बदन सिंह चौहान

v. भौमेश - 1 पुत्र + 2 पुत्री
   1. गौरव
   2. मनीसा - पुत्री
   3. शीतल - पुत्री

b. सुखदेव - 2 पुत्र
   i. रोहताश - 2002 में मृत्यु - 1 पुत्र + 4 पुत्री
      1. पुत्र – अरुण
      2. आशा - गहलब में शादी
      3. मधु
      4. कुसुम
   ii. ऋषि प्रकाश - 2 पुत्र
      1. वरुण
      2. नीतू
      3. तरुण

2. **दुल्ली (दुली चंद) - 3 पुत्र** –
   a. घसीटा - (पत्नी सफेदी - पृथला से) - 5 पुत्र + 2 पुत्री
      i. मामचंद - 3 पुत्र
         1. संजय
         2. बीर सिंह
         3. धर्म वीर
      ii. बच्चू - 2 पुत्र + 1 पुत्री
         1. दिनेश
         2. संदीप
         3. पुत्री – सविता
      iii. रणवीर 3 पुत्र
         1. पुत्र
         2. पुत्र
         3. पुत्र
      iv. जगदीश - 1 पुत्र + 1 पुत्री (ज्योति 'उर्फ़ गोली' 2002 में मृत्यु)
         1. दीपक
      v. सतीश – 1 पुत्री
         1. पिंकी
      vi. पुत्री – मुन्नी

बदन सिंह चौहान

vii. पुत्री - महेन्द्री

b. विजय - (पत्नी चन्दा - पृथला से) – 2 पुत्री (प्रकासी + संतो) +1 पुत्र
- i. पुत्र – जयदेव - उर्फ़ सतन - 1 पुत्र + 3 पुत्री
  1. पुत्र रोहित
  2. पुत्री - शशि
  3. पुत्री - बबली
  4. पुत्री - रीना

c. जुगल गिर्राज (पत्नी - केला - विधवा) - 1 पुत्र + 2 पुत्री
- i. सुभाष
- ii. लक्ष्मी
- iii. रोशनी

3. **गिर्राज -** पत्नी कैला (विधवा) - 3 पुत्र

a. पूरन –
- i. आसु - आर्मी में
- ii. सागर
- iii. सोनम

b. शिव चरण –
- i. पुत्र
- ii. पुत्री
- iii. पुत्र

c. रणजीत
- i. पुत्र
- ii. पुत्र
- iii. पुत्री
- iv. पुत्री

सुखपाल 3 भाई थे - सुखपाल + बहाल सिंह + निहालसिंह
पिता ? - 4 पुत्र
1. सुखपाल - इनके पुत्र - पुत्रियों का वर्णन ऊपर दे दिया गया है
2. बहाल सिंह
3. निहाल सिंह
4. पुत्र - ?

बहाल सिंह – 1 पुत्र
1. भरता

a. चौखराम
- i. हेता - x
- ii. भीम -
  1. मुकेश – मृत्यु
     - a. लव

बदन सिंह चौहान

b. सविनय
iii. पुत्री
iv. पुत्री
v. पुत्री
b. लौहरे - (कव्वा)
i. नानक - उर्फ़ ननकी
1. प्रेम चंद
a. पुत्र - देव
c. उल्लन - x
d. सैलानी – 2 पुत्र
i. हरबंस - पागल बाबा
1. गजेंद्र - पुत्र
2. पुत्री
ii. कुंवरपाल - 2 पुत्र
1. सुमित - फ़ौज में
2. हेमंत
3.

…..xxx……

पिता - इसके 2 पुत्र - नत्थी और श्याम लाल
1. नत्थी - इसके 2 पुत्र -
i. खचेरा और
ii. बलबीर - इसके 2 पुत्र -
1. चन्दर और
2. पुत्र
2 श्याम लाल श्याम लाल - इसके 3 पुत्र -
i. धनराज - इसका 1 पुत्र -
1. अजय
ii. देवी - इसका - 1
1. पुत्र
iii. खंटा - दयालपुर में ससुराल में रहता है

..xx..

भम्बू - इसका 1 पुत्र - भजन लाल
1 भजन लाल - इसका 1 पुत्र - दूल्हेराम
a. दूल्हेराम - इसके 4 पुत्र
i. बुद्धि पटवारी - इसका 1

बदन सिंह चौहान

1. पुत्र

ii. बीर सिंह फौजी

iii. सुक्की (x)

iv. अंतराम

..xx..

बहरे - इसके 2 पुत्र

1. दयाली - इसके 4 पुत्र
    - i. बाबू (पहली पत्नी से)
    - ii. धन सिंह
    - iii. चंद्र पाल
    - iv. गुल्लू

2) भरतली - (पत्नी नब्बो - मेरी मौसी थी - ताहरपुर से)
    - i. लज्जा
    - ii. पुत्र

..xx..

रामफल - 2 पुत्र

1. गिरधर - शादी ताहरपुर में - 1 पुत्र
    - a. अमर सिंह - 2 पुत्र
        - i. रोहतास
        - ii. पुत्र
2. यादराम - 2 पुत्र
    - a. रामचंद - 2 पुत्र
        - i. पुत्र
        - ii. पुत्र
        - iii. चेतराम - 2 पुत्र
            1. पुत्र
            2. पुत्र

..xx..

खचेरा - उर्फ़ कनकट -

1. पुत्र धन सिंह - 2 पुत्र
    - a. महेंद्र और
    - b. लाला

..xx..

बदन सिंह चौहान

- **2 भाई - जाहरिया व डाकारिया जाहरिया - 2 पुत्र**

जाहरिया - बड़ा था - इसका पुत्र - राधे - इसका पुत्र गंगालाल - इसके दो पुत्र - भगत सिंह व कृष्ण
डाकारिया - इसका 1 पुत्र - दौलती - इसके 2 पुत्र - भूपलाल और सोहनलाल

राधे - 1 पुत्र

1. गंगालाल - 2 पुत्र
    a. भगत सिंह
    b. पुत्र

1. भूपलाल - के 5 पुत्र -
    a. जगबीर, -
        i. मुकेश
            1. प्रिंस
            2. चंद्रभान
        ii. हरकेश -
            1. साहिल
            2. अजय
    b. धर्मबीर,
    c. राजबीर
    d. रणबीर फौजी
    e. सुखबीर
2. सोहनलाल - इसके 4 पुत्र
    a. बीर सिंह, - 1 पुत्र व 3 पुत्री
        i. aपुत्र नरेन्द्र
    b. धन सिंह, - 3 पुत्र व 1 पुत्री
        i. महेश
        ii. नरेश
    c. किशन - 2 पुत्र व 2 पुत्री
        i. कमल व
        ii. पुत्र
    d. रतन - - 2 पुत्र व 1 पुत्री
        i. दिगंबर व
        ii. सुनील

जस्सी का - 1 पुत्र - गोवर्धन - इसके दो पुत्र - जाहरिया, ठाकरिया

बदन सिंह चौहान

मुसलामानों के ऊपर कर्ज था - hiiy ने पटाया - मुसलामानों की मदद की। वर्ष 1947 में - धतीर के लोग मुसलामानों को मारने के लिए आ गए थे गाँव में - इनको राधे ने बचाया।

..xx...

पदम् - 3 पुत्र

1. सोहन लाल - x
2. रति राम - 1 पुत्र
    a. सुन्दर
3. हुकम - 3 पुत्र
    a. पुत्र
    b. पुत्र
    c. पुत्र

समली कड़े - रामस्वरूप परिवार - ये रहते कछारिया में हैं - परन्तु ये कछारिया नहीं हैं -ये साधमोहल्ले से हैं।

रामस्वरूप - इसके 3पुत्र है –

1. मोहरपाल,
2. तेजपाल व
3. देशपाल उर्फ़ देसु

बदन सिंह चौहान

भण्ड्या मोहल्ला:

मुख्या रूप से भण्ड्या मोहल्ला में 2 कुनबा है - एक भण्ड्या और दूसरा धौरिया। - धौरिया में ग्यासी आदि आते हैं। अब देखना है कि भण्ड्या में कितने परिवार हैं और धौरिया के कितने परिवार हैं।

बलमत - 2 पुत्र

- i. ग्यासी - 3 पुत्र
    - a. मामचंद
        - i. दर्रायाब
        - ii. उदयपाल
        - iii. हरपाल
        - iv. बंसी
        - v. कालू
        - vi. भूरा
        - vii.
        - viii. जीतेन्द्र
    - b. खैमी – 2 पुत्र + 1 पुत्री
        - i. पुत्र
        - ii. पुत्र
        - iii. पुत्री
    - c. जगन – 3 पुत्र
        - i. पुत्र
        - ii. पुत्र
        - iii. पुत्र
- ii. अतरी – 3 पुत्री
    - a. पुत्री
    - b. पुत्री
    - c. पुत्री

पिता ? - इसका 1 पुत्र –

1. पोदन - इसका 1 पुत्र –
    - a. राम सिंह - इसका 1 पुत्र –
        - i. शराबी सा नाम ?

.रूपा - इसके दो पुत्र - पतराम और राधे (नावल्द)

1. पतराम - इसके 4 पुत्र –
    - i. लाला
    - ii. पप्पू
    - iii. हाउ
    - iv. मवासी
    - v.

रामजीलाल - इसके 2 पुत्र - हुकम और चरण - (धौरिया कुनबा से)

1. हुकम - इसके 5 पुत्र -
    - i. प्रताप
    - ii. हरचंद
    - iii. करतार
    - iv. छत्तर

बदन सिंह चौहान

v. भिक्कन

2. चरण - इसका 1 पुत्र

1. पुत्र

..xx..

खरखरिया - इसका 1 पुत्र - (हवेली वाले)

1. लौहरे - इसका 1 भजनलाल - इसके 3 पुत्र -

i. सुखबीर

ii. चरण सिंह

iii. धर्मबीर

..xx..

पिता - इसके 3 पुत्र - गुलजारी लौहरे घुरमल

1. घुरमल - इसके 1 पुत्र खचेरा - इसके 2 पुत्र –

i. पुत्र

ii. पुत्र

2 गुलजारी - इसके 3 पुत्र –

i. तारन

ii. टीटी

iii. किशन

3 लौहरे - इसके 2 पुत्र –

i. हरचंदी

1. भजनी - इसके पुत्र –

a. सुखबीर सिंह आदि

चितरू - इसके 4 पुत्र –

i. शिवलाल

ii. गोपी

iii. तेजी

iv. शिव चरण

..xx..

बोहरे - पालीवाल परिवार

चंद्र भान - इसके 2 पुत्र - जय नारायण कन्हैया

1. जय नारायण - इसके 6 पुत्र -

a. राम अवतार

b. बृजेश (इसका पुत्र पवन)

महेंद्र

c. अशोक

d. पुत्र

e. पुत्र

2. कन्हैया - इसके 3 पुत्र –

a. श्याम

b. बटोल

c. रज्जन

..xx..

अजिराम - पत्नी औजो - 2 पुत्र - नत्थी और सरूपा

1 नत्थी - पत्नी खेरी से - इसके 3 पुत्र - बाली करन पूरन

a. बाली - पत्नी पहलादि अंधोप से - इसके 4 पुत्र –

i. धन सिंह
ii. भरती
iii. धर्मपाल
iv. पप्पू

b. पूरन - पत्नी प्रेम - शादी हतौना से - 3 पुत्र + 1 पुत्री –

i. रणजीत सिंह
ii. रणधीर सिंह
iii. किशोर
iv. पुत्री
v.

c. करन - शादी दकौरा - इसके 2 पुत्र –

i. यशपाल
ii. महिपाल

2 सरूपा - पत्नी देहलाका - इसके 2 पुत्र - धनमत (धन्नी) और अमर

a. धनमत - इसके 2 पुत्र –

i. प्रकाश
ii. अजीत

b. अमर - इसका पुत्र -

i. कल्लू

(औजो - पति के देहांत के बाद - मूसाका मोहाली के चंदा के यहां पुनर्विवाह (कराव) कर लिया। गदूस (चंदा के पिता) से शादी कर ली थी)

डल्लू - इसके 2 पुत्र - झम्मन और लेखी

1. झम्मन - इसके 6 पुत्र

a. बिल्ली
b. मान सिंह
c. पीतराम
d. मालिक
e. पुत्र
f. पुत्र

लेखी - इसके पुत्र ?

..xx..

पिता - इसके 2 पुत्र - खूंटा और दूल्हे राम

1. खूंटा - इसके 1 पुत्र - डीप चंद - इसके 2 पुत्र –

i. धर्मबीर
ii. गिर्राज

2. दूल्हे राम - इसका 1 पुत्र –

i. भाव सिंह – नावल्द

बदन सिंह चौहान

तेजा - 7 पुत्र - 2 शादी - पहली ताहरपुर से (इससे 1 पुत्र)- दूसरी रतीपुर से (इससे 6 पुत्र)

1. शोभा - (ताहरपुर वाली पत्नी से) - शादी चिरवारी में
2. कुंदन - पत्नी लुहेना
3. बच्चू - 2 शादी - पहली इंडरी से और दूसरी होडल से -
4. जीमन - पत्नी खर्रोट से -
5. बिजन (बिजय) - पत्नी राठीवास से
6. रज्जन - पत्नी राठीवास से
7. बीरसिंह - x

..xx..

पिता ? - इसके 2 पुत्र नारायण सिंह मूसे (खिल्लन - उर्फ मूसे)

1. नारायण सिंह - इसका पुत्र
   i. लाला राम - इसके पुत्र –
   ii. गिर्राज (नावल्द) और
   iii. शेर सिंह - इसके 2 पुत्र –
      1. बिजेंद्र व
      2. पुत्र
2. मूसे (खिल्लन - उर्फ मूसे) - इसका 4 पुत्र –
   i. अमीलाल (नावल्द)
   ii. किरण
   iii. कुंजी
   iv. लालचंद

..xx..

रामजीलाल - इसके 2 पुत्र –

a. हुकम और
b. चरन

(धौरिया का कुनबा - ग्यासी का परिवार पूरन का परिवार चंदा का परिवार हुकम-चरन आदि का परिवार है)

दौलती - बोहरे - का परिवार इसने अपनी हवेली झम्मन के पुत्र को बेच दी।

चेतराम - इसका पुत्र दौलती

1. दौलती - इसके 2 पुत्र -
   i. ओम प्रकाश - पलवल में रहते और
   ii. शिब्बू - पलवल में रहते हैं

बदन सिंह चौहान

अल्लीका के मन्दिर के बारे में:—15 अक्टूबर 2015 को

- यह मन्दिर निर्मोही अखाडा से सम्बन्धित है।
- आज की तिथि में इस मन्दिर का मुख्य महन्त स्वामी श्री सर्वेश्वरदास है। वह धतीर गावं से यहॉ आए हैं। एक दूसरा पुजारी भी है जिसका नाम भगवानदास है वह भी इसी मन्दिर में रहता है जो व्रन्दावन से आया।
- मन्दिर के बारे में जानकारी:—
    - सन् 1737 ईस्वी में बाबा मनसाराम को भजन करते देखा गया।
    - दैनिक कार्यक्रम
        1. 3 प्रातः काल बजे जागरन
        2. 4 बजे प्रातः काल पूजा पाठ
        3. 8 बजे प्रातः काल दैनिक यज्ञ
        4. 8.30 बजे प्रातः काल बाल भोग
        5. 12 बजे दसेपहर जल परिवर्तन
        6. 3.00 बजे सायं काल वेशभूषा परिवर्तन
        7. 7.30 बजे सायं काल सन्ध्या आरती
        8. 9.00 बजे सायं काल परसाद

महन्तों की गद्दी — कुर्सीनामा

मनसाराम
↓
आत्माराम
↓
धूनादास
↓
महीराम
↓
हरिदास
↓
रामटहलदास
↓
श्याम सुन्दरदास —उर्फ सुरेश।
↓
श्री सर्वेश्वरदास

- इस मन्दिर में गउशाला, सन्तनिवास, यज्ञशाला और सत्सगं भवन है।
- श्रावन में श्रीमद्भागवत् कथा, बाबा की नागपन्चवी, और वेदप्रवचन भी होता है। दीवाली पर निर्मोही अखाडा से व्रन्दावन से साधू आते हैं ।

महंत (मुख्य पुजारी) राम टहल दास - बरात में जाने से पहले
आशीर्वाद लेते हुए देव रतन (पुत्र अमीलाल महाशय जी)

मंदिर के पुजारी सुरेश - राम टहल दास के बाद

मुख्य पुजारी के बाद

बाबा मंसाराम की कुटी

बाबा मंसाराम की हमारे गॉव में बहुत ही मान्यता है। अपना देव मानते है हम लोग। गाँव बसने के बाद एक मंदिर भी बना जो गाँव के अंदर है। वह कृष्ण मंदिर है - उस मंदिर पहले पुजारी - महंत बाबा मनसा राम है। आज पुजारी - महंत की आठवीं गद्दी है अर्थात आठवीं पीढ़ी है। वहां पुराने मंदिर में आज के पुजारी - महंत का नाम सर्वेश्वर दास है, जिसका विवरण पहले दिया गया है। सन 1980 के आसपास यह बाबा मंसाराम की कुटी बनाई गई। बाबा मंसाराम की मूर्ती स्थापित की गई। पहले यह मूर्ती हायर सेकेंडरी स्कूल में स्थापित की गई थी - गंगालाल सरपंच द्वारा। फिर बाद में यहां कुटी में लाकर पुन: स्थापित किया गया। आज यहां एक बहुत अच्छा मंदिर है। इसको मंदिर को लोग कुटी बोलते हैं। गाँव की रख्या (वनी) के पश्चिम में पोखर है क्वैलकी - इस पखार के दक्षिण वाली पार पर बानी हुई है यह कुटी। यहाँ भंडारा भी कराया जाता है लोगो द्वारा और मंदिर की और से भी।

बाबा मंसाराम का मंदिर का मुख्य द्वार

बाबा मंसाराम की मूर्ति

बाबा मंसाराम के मंदिर में शिव परिवार

बाबा मंसाराम के मंदिर में - पुजारी राम दास

वर्ष 1974 में - बाबा मंसाराम की
मूर्ति की पहली बार स्थापना -
स्कूल हायर सेकेंडरी स्कूल में

वर्ष १९७४ में - बाबा मंसाराम की स्थापना - बड़े
स्कूल हायर सेकेंडरी स्कूल अल्लीका में

पागल बाबा का मंदिर

आज दिनांक 30 मई 2020 को मैं प्रात: पागल बाबा के मंदिर गया। मुझे वहां जा कर अच्छा लगा । मंदिर के पुजारी और मालिक हरचंदा से मिला। उससे बातें की। उसने मुझे जानकारी दी, मंदिर के बारे में। हरचंदा हमारे गाँव का ही निवासी है और साधकी तिघरिया पट्टी से सम्बन्घ रखता है । तीन घर हैं तिघरिया में। राधे का परिवार, दुल्ली व राम चंद का परिवार और बलबीर मास्टर व धनराज मास्टर का परिवार आते हैं तिघरिया पट्टी में।

यह मंदिर इसका (हरचंदा का) अपना निजी मंदिर है । इसको पागल बाबा इसलिए कहते हैं कि यह भगवान् की भक्ति में पागल है । मुझे पुजारी हरचंदा ने[redacted] बताया की उसने यह मंदिर लगभग 30 वर्ष पूर्व[redacted] बनाया था अपने खेत में। लगभग आधा एकड़ जमीन में बना हुआ हैं। इसमें लगी मूर्ति ककराली से लाइ गई । भंडारा करके लोगों को भोजन करा कर ये मूर्ति स्थापित की गई । उसने बताया की उसके गुरु खाम्बी के मंदिर के बाबा थे , उन्हीं के आशीर्वाद से वे पूजा का भक्ति का काम संभाल रहे हैं। प्रात: 3 बजे उठते हैं पागल बाबा। परिवार सहित रहते हैं। उसकी पत्नी है और बच्चे भी हैं । पहले धतीर में रहते थे मंदिर बनाने से पहले किसी अपने रिस्तेदार के यहां । फिर धतीर से गाँव में फिर आ गए। इसे पहले खाम्बी में अपने गुरु के पास रहे। और अंत में अपने खेत में एक झौपड़ी बना कर वहाँ एक मूर्ति रखी शिवजी की। और फिर दूसरी मूर्ति गणेश की और अन्य भी ककराली से लाए। बाबा मंसाराम की मूर्ति है इसके मंदिर में। 2008 के बाद इसमें लोगो ने कई भवन बना दिए। औरगांबाद के किसी व्यक्ति ने एक बड़ा हाल बना दिया। ऐसे ही अन्य कई लोगों ने इसमें कई भवन जोड़ दिए।

दूर दूर से लोग आते हैं यहां अपना इलाज करने। पूछने पर बताया कि संतान प्राप्ति की इच्छा ◌ाजार भी वालों की यहाँ मनोकामना पूरी हुई है । लोगों का कारोबार नहीं चला है ऐसे लोग भी यहां आए और उनकी भी

मनोकामना पूरी हुई है। बताया कि वे 3 बार भंडारा कराते हैं। 20 गाँवों में बुनियादी करा कर लोगों को आमंत्रित करते हैं। साधू लोग नहीं आते हैं यहाँ, ऐसा हरचंदा बाबा ने बताया। बड़े बड़े हाल ऊपर भी बने हुए है। नीचे खुले हाल हैं 3 तरफ। लोगों का ठहरने का इंतजाम भी किया जाता है।

इसके पास ही एक पोखर है - जिसका नाम गरोखरी है। वहां सनी का मंदिर है, सारदा माँ का भी मंदिर है छोटा सा। और मैंने देखा कि यहां पर एक पीर बाबा कि मज़ार भी बानी हुए है - यह मेरी समाज से बहार है कि पीर बाबा जो मुस्लिम समुदाय से संबधित है, यहां कैसे मज़ार बनाई गई जबकि यहां तो मुस्लिम लोग रहते ही नहीं है।

गाँव में अन्य जातियों के बारे में

पंडितों का परिवार

देवदत्त वालीं का

नंद किशोर – 2 पुत्र

1. प्यारे लाल – 2 पुत्र ओम प्रकाश उर्फ देवदत्त व)प्रेम प्रकाशपुत्री 4 व (
2. अमीलाल – 6 पुत्र व पुत्री 2

प्यारे लाल

1. ओम प्रकाश – 6 पुत्र व पुत्री 4
    a. कृष्ण कुमार – पत्नी पूनम – 1 पुत्र व पुत्री 2
        i. तेजश्वी
        ii. पुत्री – पल्लवी
        iii. पुत्री – निधि
    b. चिंतामणि – पत्नी सुमन छाजरा जयपुर के पास – 1 पुत्र व 1 पुत्री
        i. प्रकाश
        ii. पुत्री – दिव्या
    c. नरेंद्र उर्फ नीटू – पत्नी सूरज रैयाबा आगरा के पास – 2 पुत्र व पुत्री 1
        i. मोहित
        ii. प्रिंस
        iii. पुत्री
    d. पुत्री – विजय मातन हेल में – 1 पुत्र व पुत्री 1
    e. पुत्री – निर्मल आगरा में – 1 पुत्र व पुत्री 1
    f. पुत्री – योगेश्वरी – 1 पुत्र व पुत्री 1

अमीलाल – पंडित – 6 पुत्र व पुत्री 2

1. उत्तम प्रकाश
2. लक्षमण उर्फ लच्छू
3. भीष्म
4. राम प्रकाश
5. लोकेश
6. दिनेश
7. पुत्री – सविता
8. पुत्री -

भगवान शहाय - पंडित - 5 पुत्र

नत्थी
    a. राज कुमार
    b. मदन कुमार

जिले - दो पुत्र
    c. –
    d. --

श्याम - दो पुत्र
    e. –
    f. --

वेद प्रकाश - दो पुत्र

बदन सिंह चौहान

g. उमा गांगोली में

2. प्रेम प्रकाश - ??

पंडितों का परिवार

पप्पन लम्बरदार का परिवार - बहार से आए

बिहारी - कुतकपुर से आए - (शिकार पुर - जिला बुलंद शहर - उत्तर प्रदेश) -

1. पुत्र - राम शरण - (पत्नी रेवा - सेदमपुर से, झाजर के पास)
    a. पुत्र - कैलाश - (पत्नी - किशमिश - अल्लीका से) - 2 पुत्र + 4 पुत्री
        i. सुभाष - 4 पुत्र + 2 पुत्री
            1. उत्तम - (पत्नी सुमन - खेरी गाँव) - 1 पुत्र + 1 पुत्री
                a. पुत्र - आदित्य
                b. पुत्री - संजू
            2. मुकेश
            3. गुरुदेव
            4. आदेश
        ii. पुत्र - थान सिंह - उर्फ़ पप्पन- शादी नहीं की
        iii. पुत्री रामबती - गाँव टींट में - होरी के पास, रेवाड़ी में
        iv. पुत्री राजवती - गाँव टींट में - होरी के पास, रेवाड़ी में
        v. पुत्री बिना -
        vi. पुत्री संतोष

भूले का परिवार - बहार से आए - इसके पिताजी आए थे। निवासी - राठीवास के हैं।

भूले के 2 पुत्र -

i. रतन - 3 पुत्र
    a. जवाहर सिंह - 1 पुत्री + 2 पुत्र
        i. पुत्र
        ii. पुत्री
        iii. पुत्री
    b. बीर सिंह – 3 पुत्र
        i. पुत्र
        ii. पुत्र
        iii. पुत्र
    c. संतराम - 2 पुत्र
        i. पुत्र

बदन सिंह चौहान

ii. पुत्र

ii. जयपाल - पत्नी बीरबती - बामनी खेरा
   a. सत्य प्रकाश
   b. संजय
   c. हरीश
   d. मनोज

बालिया के - का परिवार - भण्ड्या में – 2 पुत्र

i. नत्थी - नावल्द
ii. श्याम लाल
   a. परसराम
   b. परमानंद
   c. सत्तन
   d. विजेंद्र
   e. रोहतास

शोभाराम - पत्नी चलती

i. 1 पुत्र - लाला राम
   a. 1 पुत्र भगवान् शाहय - 5 पुत्र
      i. नत्थी
         1. राज कुमार
         2. मदन
      ii. जिले - 1 पुत्र + 2 पुत्री
         1. पुत्र
         2. पुत्री
         3. पुत्री
      iii. वेद - 2 पुत्र
         1. पुत्र
         2. पुत्र
      iv. श्यामलाल - पुत्र ?
      v. देवी - पुत्र ?

पिता - ? - 2 पुत्र

i. हरलाल - 2 पुत्र
   a. बुधराम –
      i. मोहन लाल - 1 पुत्र
         1. सत्यप्रकाश - 1 पुत्र + 3 पुत्री
            a. पुत्र
            b. पुत्री
            c. पुत्री

बदन सिंह चौहान

d. पुत्री

b. हिरदे - फैज में - नावल्द

ii. दबा - - 1 पुत्र

a. पतराम - शादी नहीं की – नावल्द

जमीन में - आधे में हरलाल + दबा हैं - और आधे में प्यारे लाल + अमीलाल है।

लाल सिंह पंडित - का परिवार - 3 पुत्र

i. हेत लाल - इसकी पहली पत्नी 2 बच्चों के साथ खोटा की पार में मिट्टी खोदते समय दब कर मृत्यु हो गई। दूसरी पत्नी कैलासी - 2 पुत्र हुए

a. वेद प्रकाश- 3 पुत्र

i. पुत्र

ii. पुत्र

iii. पुत्र

b. करन सिंह - 1 पुत्र + 1 पुत्री

i. पुत्र

ii. पुत्र

ii. याद राम - 4 पुत्र + 1 पुत्री

a. पुत्र

b. पुत्र

c. पुत्र

d. पुत्र

e. पुत्री

f.

iii. गंगा लाल – 1 पुत्री

a. पुत्री

प्यारे पंडित - बहार से आए - पत्नी ? - 2 पुत्र

i. राम किशन – 2 पुत्र

a. पुत्र

b. पुत्र

ii. बृजु - 2 पुत्र + 2 पुत्रियां

a. पुत्र

b. पुत्र

c. पुत्री

d. पुत्री

शिब्बन पंडित - एक बहन थी इसकी - ख़जानी - बहार से आए थे ये लोग। - नावल्द

नाईयों के परिवारों के बारे में

बदन सिंह चौहान

रघुनाथ – 3 पुत्र – बंचारी से निकास – पहले धतीर आए – फिर अल्लीका में – एक दादा धतीर में, एक यादुपुर में आ गया और एक बाबा जी हो गया।नाथ – 3 पुत्र

1. उदय चंद
   1) पूरन – 2 पुत्र व पुत्री 5
      i. उमेश
      ii. पुनीत
   2) डाल चंद – 3 पुत्र
      i. धीरज
      ii. दीपू
      iii. चंचु
   3) वेद प्रकाश – 6 पुत्र व पुत्री 1
      i. चरण सिंह
      ii. भूपेंद्र
      iii. मनोज
      iv. राजू
      v. नाम ?
      vi. नाम ?
   4) बीरेंद्र – 3 पुत्र
      i. महेश
      ii. सुरेश
      iii. विष्णु
   5) लखमी – 2 पुत्र व पुत्री 3
      i. किशन
      ii. अंकु
   6) विजय – 2 पुत्र व पुत्री 3
      i. चेतन
      ii. पुत्र ?

2. सुखपाल – 3 पुत्र व पुत्री 1
   1) लाखू – 4 पुत्री व पुत्र 1
   2) मान सिंह – 2 पुत्र व पुत्री 2
   3) रतन – 3 पुत्र

3. नानक चंद – 6 पुत्र
   1) तेजपाल – 4 पुत्र
      i. पीतम – 1 पुत्र
      ii. जितेंद्र – 1 पुत्री
      iii. रविन्द्र
      iv. मुनेश
   2) भारती – 2 पुत्र
      i. रोहित
      ii. दिनेश
   3) लक्ष्मण – 1 पुत्र व पुत्री 2
      i. प्रिंस
   4) भारत – 2 पुत्र व पुत्री 1
      i. सूरज
      ii. योगश
   5) सुनील – 2 पुत्र
      i. हर्ष

………

हरजीवन – यह परिवार इसी गांव का बासिन्दा है।

हरजीवन – 4 पुत्र

1. चेती – 2 पुत्र
   a. मुकेश
   b. बृजेश
2. बेदी – 1 पुत्र
   a. प्रवीण
3. राजन – 2 पुत्र व पुत्री 1
   a. हरदेव

बदन सिंह चौहान

b. पुत्र नाम ?

a. पुत्र

4. राजू – 1 पुत्र

फक्कर का परिवार - इसका परिवार यहां रहता नहीं है
इसकी पुत्री और दामाद यहाँ अपने परिवार के साथ रहते हैं।
दामाद का नाम हुकम है।

………XX……..

खाती (बढ़ई) परिवार

विजन के 5 परिवार - एक पलवल रहता है , 4 गाँव में रहते हैं

कुटुंब 3 हैं - एक चिरंगी का कुटुम्भ है - इनके 4 बेटे हैं - दररयाब , सुभास , प्रीतम व् जोगिंदर। इनमे से 2 पलवल कहते हैं व् 2 गाँव में रहते हैं।

दररयाब के 2 पुत्र - कुलदीप व कर्मवीर।हरीचंद - 2 पुत्र - योष प्रवीण व नवीन।हरिचंद बढ़ई गिरी करता है - पलवल में।

विजन का परिवार - पिताजी का नाम दीप चंद। (दीप चंद , हॅंडल व चिरन्ज ये लग अलग परिवार हैं।)

विजन के पुत्र 2। तेजपाल व सत प्रकाश। तेजपाल के 3 पुत्र - मनीष , गनीश व तनीष - ये उपनाम जांगड़ा लिखते हैं। झंगा ब्राह्मण कहते हैं ये अपने आप को। दीप चंद के 2 पुत्र - बड़ा की मृत्यु , नावल्द व

हॅंडल - 3 पुत्र - देशराज , वेदपाल , राजपाल , - देश राज के 2 पुत्र बल्लभगढ़ रहते हैं - राजपाल के 2 पुत्र - हॅंडल व चिरंजी   भाई भाई नहीं थे। इनकी कुटम्बरी अलग है। एक चिरन्ज और है जो विजन के परिवार से सम्बन्ध है - पलवल रहते हैं - कुटम्बरी एक है। हॅंडल सब अलग है। इन बधाई लोगो के पास जमीन जायदाद नहीं है

धोबी का एक ही घर

बालमुकंद – उर्फ लीलू – 1 पुत्र

1. हरदेव – 202 में सड़क दुर्घटना में मृत्यु ही गई 0– 2 पुत्र
    a. पुत्र
    b. पुत्र

बल्हार के परिवार

गुरगल – 3 पुत्र

a. देशी - x
b. दीपा - x
c. दुल्ली- 4 पुत्र
    a. पुत्र
    b. पुत्र
    c. पुत्र
    d. पुत्र

सोनी – 1 पुत्र

1. ज्ञानी – 2 पुत्र
    a. पुत्र
    b. पुत्र

काशी – 2 पुत्र

1. बिज्जी - x
2. सुमेर – 1 पुत्र

बदन सिंह चौहान

.कुम्हार के परिवार – **2** घर है

कारे – 1 पुत्र

1. पूरन - - 2 पुत्र
    a. मान सिंह
    b. तेज पाल
2. नत्थी – 4 पुत्र
    a. सोहन लाल
    b. देवी शाहय
    c. गिर्राज
    d. धन सिंह

अनुसूचित जाति - कोली समाज

गाँव में अनुसूचित जाति के समाज व बाल्मीकि समाज के लोग हैं। घर हैं। जिसमें कोली 222

यह निम्न लिखित जानकारी सुमेर सिंह पुत्र राम चंद पुत्र अमर ने दी – 8 मई को। 2020

कोली जाति के कुछ प्रमुख लोग

अमर सिंह -उर्फ अमरा – दो भाई थे – दूसरे का नाम खम्मन

अमर सिंह – मुरादबास गाँव से आए (नूह तहसील)– 1857 के बाद – 3पुत्र

1. पुत्र राम चंद)– पत्नी राम कली – इसी गाँव की रहने वाली थी – मायका था यह गांव 3 पुत्र (
    a. मूल चंद
        i. निर्मल – कोर्ट में नौकरी – फरीदाबाद
        ii. सुधीर – अपना धंधा
    b. माम चंद
        i. पुत्री – कांता
        ii. गजेंद्र
        iii. निशांत
    c. सुमेर सिंह
        i. ललित
        ii. हिमांशु
2. कन्हैया
    a. श्री चंद – दिल्ली में नौकरी
        i. पुत्र
        ii. पुत्र - सुंदर
    b. गिर्राज
        i. राजेश
        ii. राजेन्द्र
        iii. भगवान सिंह
        iv. नरेश
3. प्रभू
    a. – 4 पुत्र

तुहिया – (तुहि राम (– पत्नी सुपेदी – राम कली से बड़ी थी – तावडू का रहने वाला था - 3 पुत्र

1. श्रीचंद – नेवी में नौकरी की
    a. विनोद
    b. अमित
    c. अजित
2. बाबू राम – गाँव का सरपंच रहा से 2005 तक 2010
    a. भूषण
    b. विजय
3. हरि – म्रत्यु – परिवार है इसका

तुहिया के अलग और दूसरे भी तावडू से आए। जैसे – कैंचा
कैंचा- एक पुत्र-

1. पृभु
    a. हरचंदा - लंबरदार है

…..

- नई मंडी वाले (बस्ती)– प्रायः सभी बाहर से आए।
- दो बस्ती हैं सनु (इनको मंडी बोलते हैं)सूची त जाति की।
- कोली समाज से फौजी हुए हैं – जैसे मूल चंद, श्री चंद, रघुनाथ (कंगाल राजमिस्त्री का पुत्र(, ओम प्रकाश पुत्र चन्दगी का
- सरकारी प्लाट सभी की नहीं मिले हैं।
- इस समाज से कोई विदेश में नौकरी नहीं करता है।कोली समाज

मोगा (पत्नी नथिया)– 1 पुत्र

1. कूका राम – 4 पुत्र
    1) टेक चंद - x
    2) मॉम राज – 3 पुत्र
        a. भगत सिंह
            i. जतेन्द्र
            ii. भोला
        b. राकेश
        c. हरकेश
    3) देवी सिंह – चौकीदार – 2 पुत्र
        a. संदीप
        b. जीतेन्द्र
    4) करन सिंह – 2 पुत्र
        a. मैहर चंद
        b. अमित
    5) याद राम – 2 पुत्र
        a. आसू
        b. मोनू

भूले – 1 पुत्र

1. रामजी लाल (लूलू)– 1 पुत्र
    a. नत्थी – 2 पुत्र
        i. हंसराज
        ii. मोनू

नत्थन – 1 पुत्र

1) सुक्कन – 2 पुत्र
    a. धर्मवीर – 2 पुत्र
        i. पुत्र
        ii. पुत्र
    b. विजय – 2 पुत्र
        i. पुत्र
        ii. पुत्र

पूरन – 1 पुत्र

1. श्री चंद – 1 पुत्र
    a. जोगिंद्र

पिता ? – 3 पुत्र

1. शिब्बन – 3 पुत्र
    a. रामजी लाल
    b. मोहर सिंह
    c. पुत्र
2. रघुबीर – 5 पुत्र
    a. सुरेश
    b. रमेश

बदन सिंह चौहान

c. मौहर पाल

3. गूंगा - x

जोधा – 1 पुत्र

1. शिव लाल – 1 पुत्र
    a. पृभु – 2 पुत्र
        i. देवेंद्र
        ii. हर चंद उर्फ हर चंदा - लंबरदार

मोजा – पुत्र

1. रामजी लाल
    a. मनी राम
    d.

कोली समाज में से फौज में –

- राज पाल था। अब (शोभा का पुत्र) हॉस्पिटल में नौकरी।
- नाम ?– पुत्र शिव राम – पुत्र सुख देव

i. हरपाल
ii. प्रेम

b. रज्जन
    i. रतन सिंह

c. वीर सिंह
    i. हंसराज
    ii. हर केश

नथोली - पुत्र

1. याद राम – 3 पुत्र
    a. राम किशन
    b. जय पाल
    c. नारायण

- नाम ?– शिब्बन का पौत्र

कोली समाज में से मास्टर –

- गोविंदराम – पुत्र किशन सिंह
- रोहतास – पुत्र राम सिंह – पुत्रसहिव लाल
- बीर सिंह – पुत्र लेखु
- नरेश – पुत्र डाल चंद – पुत्र मवासी

बाल्मीकि समाज

मुख्य परिवार

- अर्जुन
- चिकारे

1. चिकारे – 4 या पुत्र 5
    a. पुत्र
    b. पुत्र
    c. पुत्र
    d. पुत्र
    e. पुत्र

- मिट्ठल – चौकीदार – अब इसका परिवार फरीदाबाद में रहता है।

सन्नी – पुत्र

कारे – 3 पुत्र

1) लीलू – 1 पुत्र
    a. 1 पुत्र
2) चरण सिंह उर्फ मिट्ठल – 4 पुत्र
    a. देवेंद्र

बदन सिंह चौहान

b. धन सिंह
c. जवाहर
d. ओंकार
a. तारा
b. रमेश
c. रिस्सू

3) द्योलती – 3 पुत्र
d.

भजन - इसका पुत्र - 3 पुत्र- लहरी, प्यारे व कारे
प्यारे लाल – 5 पुत्र

- नत्थी ठेकेदार
- नन्नू राम उर्फ़ नुन्ने
- लख्मी
- सूरज
- अर्जुन

कारे - इसके पुत्र पाला (पत्नी हरप्यारी) - ये 3 भाई थे - पाला, सोहनलाल व घासी
पाला - के 2 पुत्र
सोहनलाल - का 1 पुत्र
घासी - का 1 पुत्र,
नीलू दौलती और मिट्टल - 3 भाई थे
मित्तल के - 4 पुत्र -

….xx….

लुहार का परिवार

राधे लाल - 4 पुत्र राधे लाल - गाँव जल्हा के रहते थे -
दौलत राम (दौलती) 4 भाई थे (

a. दौलत राम
b. रतन
c. ज्ञान चंद
d. मैहर चंद -)

दौलत राम (दौलती) इसके 3 पुत्र

i. विजय - 2 पुत्र,
ii. हेमराज - 2 पुत्र
1. विकास
2. हरिओम,
iii. नरेंद्र - 2
1. पुत्र

श्याम लाल भी इसी कुनबे में से था - इसके पुत्र का देहांत हो गया था

बदन सिंह चौहान

हमारे नगरा

अल्लीका गाँव से निकले 4 नगरा हैं - आदुपुर (यादु पुर), कैराका, राजौलाकाऔर कराली

कैराका नगरा

इसका निकास मेरे गाँव अल्लीका से है। लगभग में बसा। दो मोहल्ले हैं 1844– एक है दानिकाऔर दूसरा है चौक।

दानिकामोगहल्ले से – दीप चंद, चंदी लंबरदार के कुनबे में से गए हैं ये लोग।

परिवार

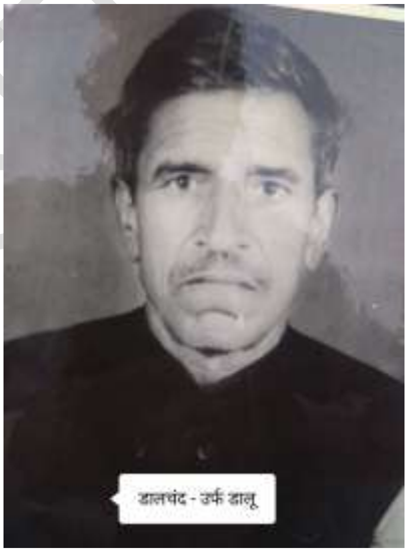

- रघुनाथ सिंह
    - सालिग राम
        - श्रिया – पत्नी तुलसा
            - चेतराम – पत्नी ज्ञानो
                - चंदन सिंह – पत्नी हरप्यारी
                    - मंगल सिंह – राम वती
                        - शिव सिंह
                            - राजू
                            - बाबू
                        - वीरेंद्र
                            - कृष्ण
                    - सुखराम उर्फ सुखी
                        - देवी सिंह
                            - पुत्र
                        - वेद पाल
                            - कुलदीप
                            - सौरभ
                            - पुत्र नाम ?
                    - जय सिंह – पत्नी रति कौर
                        - दिनेश
                            - तुसार सिंह
                            - कमल सिंह
                        - संदीप

- लोकेश

..xx..

भाऊ

तुही राम

a. याद राम – पत्नी लहर कौर
    i. गिर्राज – पत्नी जावित्री
        1. बीरेंद्र – पत्नी सुन्हेरा
            a. भगत सिंह
            b. सतबीर
            c. महेंद्र
        2. सुमेर सिंह – पत्नी राम वती
            a. बीर सिंह
            b. हरबंस
        3. राम चंद – पत्नी इंद्रा
            a. मुकेश
            b. प्रकाश

प्यारे लाल

- श्रिया – 3 पुत्र
    1. ख्याली राम
        - जल सिंह
        - नारायण सिंह
            - रतन लाल – 2 पत्नी परमली व सरमन
                - पत्नी परमाली से
                    - लाल चंद
                    - रूप चंद
                - पत्नी सरमन
                    - धर्म चंद
                    - ज्ञान चन्द
                    - विजेंद्र
    2. खिल्लु राम – 2 पुत्र
        - रूप राम – स3
        - हुकम सिंह – डॉक्टर सुख राम आदि

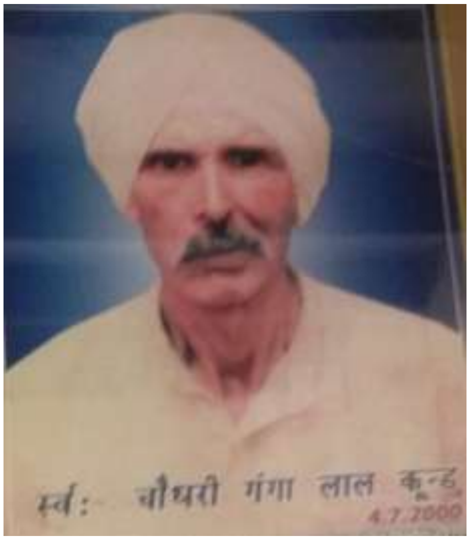

- सुख राम
    - जय पाल
        - राहुल
- प्यारे लाल

3. चेतराम – जय सिंह का परिवार
    - राजा राम – मृत्यु – x
    - चंदन सिंह – 3 पुत्र
        - मंगल
            - बिरेन्द्र
        - सुखी राम
            - देवी
            - बीरपाल
        - जय सिंह
            - दिनेश
                - तुसार
                - कमल
            - संदीप
                - लोकेश

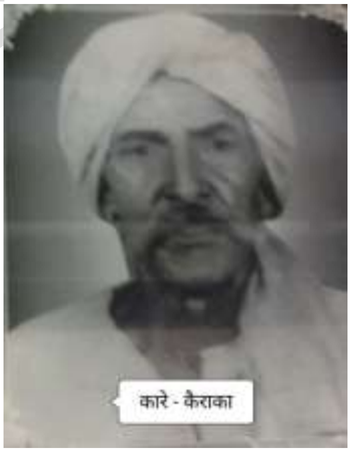

हुकम सिंह

- सुखराम – पशु चिकित्सक – पत्नी चमेली
    - जय पाल – होम्योपैथी डॉक्टर
        - राहुल – होम्योपैथी डॉक्टर

भाऊ

- किशन सहाय
        - पूरन
        - नन्नू
        - बिसम्बर
        - भजन लाल
    - दुलीचंद – निसंतान

भाऊ

- चुनी लाल उर्फ चुन्ना
    - गंगा सहाय
        - खजान
            - हेता
                - बिक्रम
                - सुभाष
                - राजेन्द्र
            - गीता - x
            - गुरदयाल - x
        - ठंडी
            - बिशन
            - श्री
            - मोहर्राम
        - देवीराम - x
    - किशन सहाय – पहले दे चुका
    - यादू
        - गिर्राज
        - हरदयाल
    - नशे बाज – निस्संतान

ऊपर जो दिया है वह दानिका मोहल्ला है।
दो मोहल्ले हैं – दानिकाऔर मूसाका।
पंडितों के घर हैं 20
जाटों के लगभग घर हैं 85
बैकवर्ड क्लास के घर हैं। 5
अनुसूचित जाति के घर हैं। 9
बाल्मीकि के घर हैं। 2
मंदिर हूं 2- ,मंसाराम बाबा का और दूसरा पंडितों का – सिया राम।
पोखर – 2 हैं – एक तालाब वाली – खुदवाई गई थी – पक्का तालाब – 1844 के लगभग – 2 पैसे प्रति दिन की मजदूरी दी जाती थी।

दादा भुमिया की मूर्ति है।
खेरा देवत की मूर्ति है नत्थी पंडित के खेत में – बड़ी पोखर के पास।
एक सरकारी प्राथमिक विद्यालय है।

बदन सिंह चौहान

पुराने कुआं –

- पोखर वाला – सामलात
- पीमनी – महेश पुर के पास – पीने का पानी वहीं से लाते थे।
- नहर वाला कुआ।

चौक पट्टी
चौक पट्टी के दो घर हैं।

- रंग लाल
- जीमन

रंगलाल – 3 पुत्र

- धर्मवीर
  - भीम
  - कर्मवीर
  - पुत्र – नाम ?
- श्यामवीर
  - प्रेम
  - अरुण
- रामहेत
  - जीतू
  - कर्मवीर
  - पुत्र नरवीर

जीमन का परिवार - पुत्र पवन सिंह (पत्नी करिया)– पुत्र – जल सिंह
गिरधर

- डालू
  - किशन
  - भागीरथ
- पुत्री - बीरबती – पहली पढ़ने वाली लड़कियों में से एक। सोन्ध गांव में शादी।

कुढ़े

- बुद्धराम
  - नानक
  - भगवान सहाय
  - राम सिंह
  - राकेश
  - पुत्री – कांता – पहली वीं पास 8 कैराके से।- मेरे बहनों शकुंतला और सुमित्रा के साथ पढ़ती थी। और बीर बती भी डालू की पुत्री।

घमंडी

राम ख़िलारी - उर्फ हल्ली

- वीरेंद्र
- पुत्र – नाम

पिता नाम ?– 2 पुत्र

बदन सिंह चौहान

- श्रिया
- भाऊ
- बिक्रम सम्वत) 1836सन (ईसवी में 1779– फागुन के महीने में – कैराका गाँव बसा।
- गांव अल्लीका से ही यह गाँव निकला हैं।
- अल्लीका गांव के दानिका मोहल्ला से निकले - श्रिया और भाऊ दो भाई।
- चौक पट्टी से – भवानी राम और ठाकारिया आए।
- लाला राम, मोहन लाल और रामबक्स – संभवत दानी के मोहल्ला से आए।
- उस समय एक पंडित - कल्लू पंडित भी आया अल्लीका से।

लोगों के बारे में जानकारी

इस नगरा में दो पट्टियां है अर्थात दो मोहल्ले हैं - एक है दानिकापट्टी और दूसरी है चौक पट्टी। दानिकापट्टी पड़ी है जिसमें 60 से ज्यादा घर हैं और चौक पट्टी छोटी है जिसमें 25 - 30 घर है।

यहां एक पक्का तालाब है। अब तो वह भर गया है मिट्टी से। उस तालाब में सीढ़ियां बनी हुई थी। बुर्ज बने हुए थे और 28 सीढ़ियां बनी हुई थी। इस तालाब में लोहे की चैन भी पड़ी रहती थी और पाइप भी लगी हुई थी। लोग बताते हैं कि वह इस तालाब में चैन पकड़ कर सीढ़ियों में उतर जाया करते थे और नहाते थे। अंग्रेजों के काल में बनाया गया था इस तालाब की बनावट और उसकी वास्तु कला उसी प्रकार है जिस वास्तुकला का प्रयोग गांव अल्लीका में नई पोखर मैं बनी हुई बुर्ज़ और सीढ़ियों में पाई जाती है। इसका अर्थ यह हुआ कि ये दोनों पोखर अर्थात यह दोनों तलाव अंग्रेजों के समय के बनाए हुए हैं और यह लगभग 130 या 150 वर्ष पूर्व के बनाए हुए तालाब है।

मुख्य परिवार

गिर्राज वकील इसके 3 पुत्र हैं रामचंद्र विजेंद्र और हरीश चंद्र गिर्राज - दो भाई हैं- दूसरा भाई का नाम है हड़ताल गिर्राज और हरदयाल के पिताजी का नाम यादु है।

दानिकापट्टी अल्लीका गांव के दानिकामोहल्ले से चंदी मुकदम के परिवार से निकले हैं।

रामचंद्र के 3 पुत्र हुए – ठंडी, हेता और खजान। हेता सरपंच का पुत्र है सुभाष।

वर्तमान सरपंच महिला है – जिसका नाम संगीता है (पत्नी नेपाल –पुत्र भज्जु)

लंबरदार – दो है – धर्मपाल और नत्थी। एक था चरण सिंह लंबरदार – उसकी मृत्यु के पश्चात अब मामला कोर्ट में है – पंडितों ने केश डाल रखा है।

चौक पट्टी

प्रेमसुख – का पुत्र कढ़ेरु

कढ़ेरु - इसके दो पुत्र

1. बिरखू - इसका पुत्र – मंगल – (नावल्द)
2. कारे – इसके दो पुत्र
    1. तेजी – इसके एक पुत्र –

a. - हरीराम – इसका एक पुत्र
    i. ममचंद
2. गंगालाल – इसके दो पुत्र
    1. देवी सिंह x
    2. शिव चरण - दो पुत्र
        a. होशयार व
        b. रणधीर

रंगलाल का परिवार

का 1पुत्र रंगलाल

रंगलाल - इसके 3 पुत्र -

1. **धर्मवीर , पुत्र**
    a. **भीम**
    b. **करतार**
    c. **महीपाल**
2. **श्यामवीर,**
3. **रामहेत**

सुभाष का परिवार

पिता इसके - 2 पुत्र सिरिया व भाऊ

भाऊ - 3 पुत्र –

1. **किशन सहाय,**
2. **यादु ,**
3. **गंगा सहाय**

गंगा सहाय -3 पुत्र –

1. **ठंडी,**
2. **खज़ान,**
3. **देवीरम**

खजान – इसके 3 पुत्र –

1. **जीतमल,**
2. **गुरदयाल,**
3. **हेता 3 पुत्र**
    a. **बिक्रम,-2पुत्र –**
        i. **सुंदर व**
        ii. **संजू**

बदन सिंह चौहान

b. सुभाष, 2 पुत्र
   i. डालचंद फौज में सेवारत है।
   ii. सूरज
c. राजेंद्र 2 पुत्र
   i. कृषण व
   ii. पवन

डालू,, बुद्धी व हल्लु – दानी पट्टी के हैं - (डालू,, बुद्धी – हल्लू के काका थे)
शिव चरण – गंगा लाला का पुत्र है -इसका पिता का नाम कारे है।

कढ़ेरू - 2पुत्र - कारे व बिरखू (नावल्द)
कारे – इसके 2 पुत्र -
1. तेजी (बाबा जी हो गया) व
2. गंगालाल

गंगालाल – के 2 पुत्र
1. देवी सिंह (नावल्द) व
2. शिव चरण – 2 पुत्र
   a. होश्यार,
   b. रनधीरा

अल्लीका से चौक पट्टी से पहले एक परिवार आया – धर्मवीर सिंह (रंगलाल के परिवार वाले), बाद में (प्रेमसुख का परिवार वाले) आया –इनके गंगालाल आए थे 1958 की बाढ़ के बाद – पहले खेत पर रहते थे और फिर बाद में गाँव में आ गए।
यहाँ की अलग चौफ़ी भी होती थी। अल्लीका के दानीका मोहल्ले की चौफ़ी में जुड़ जाते थे। नगाड़े थे अपने। परंतु अलग से कोई चौफ़ी नहीं थी। हुकमलाल – नगाड़ा बजाया करता था। अपनी चोटी सी चौफ़ी कैराके में भी होती थी। जिकरी रघुबीर की गाते थे। फूलडोल मेला तो खत्म ही हो गया है – अल्लीका में बंद होने के साथ ही। परंतु बतासे बांटे जाते हैं अभी भी – दोनों मंदिरों पर। सबसे पुराना मंदिर पंडितों का है – यह पंडित आयोद्या ने बनाया था।
पुराने कौए भी हैं यहाँ – रतानलाल वाला कुआ, मीठी कुई -बंजारे का कुआ है, लाव चलती थी यहाँ सभी कुओं पर।

8-10 घर कोली समाज के हैं। यहाँ पर भी पहले सपेरे भी आ गए थे – फिर बाद में चले गए यहाँ से।

पंडितों का परिवार

कैराके में – पंडितों का परिवार के बारे में :-
पंडितों के लगभग 15-20 घर हैं।
मुख्य रूप से ये ही परीवार है –
1. अमर सिंह – इसका एक पुत्र

बदन सिंह चौहान

a. अयोध्या – इसकी एक पुत्री है – यहीं रहती है।

2. मामचंद – इसके 2 पुत्र हैं
    a. तेजराम –का 1 पुत्र
        i. प्रभु – इसके 4 पुत्र
            1. राजेश
            2. महेश
            3. अनील
            4. विजय
    b. चरण सिंह – इसके 4 पुत्र हुए
        i. नैन सिंह
        ii. देवेंद्र
        iii. तारीफ
        iv. रवीद्र

जयलाल का परिवार - - इसके 2 पुत्र

1 देवी सिंह
2 बलबीर – इसके 1 पुत्र
    a. अजीत

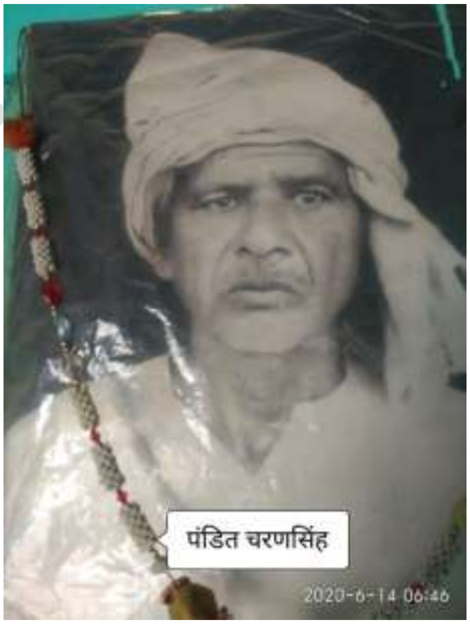

किशनलाल – ये बहार के हैं। - इसके 4 पुत्र हैं

1 मोहरू – इसके 2 पुत्र –
    a. किशनलाल – के 4 पुत्र
        i. ओमी
        ii. बेदू
        iii. जगमाल
        iv. रामफल
    b. राम स्वरूप - के 4 पुत्र
        i. जयप्रकाश
        ii. दयानंद
        iii. सतवीर
        iv. राजबीर

ककराली-

ककरारी में अभी जनवरी 2020 में एक ही परिवार के दो बच्चे एक बहन और उसकी का बड़ा भाई सेना में चयनित हुए हैं और एनडीए की परीक्षा में चयन होकर गए हैं। भाई आर्मी में है और बहन नेवी में गई है। अभी ट्रेनिंग चल रही है। यह बहुत खुशी की बात है। पूरे गांव का रोशन किया है और पूरे पांचों गांवों का नाम रोशन किया है। यह दोनों बच्चे रतनलाल का पोता और पोती है – बच्चों के पिता का नाम श्रीचंद है।

बिहारी और रतनलाल दो भाई। इनके पिता का नाम अर्जुन है। बिहारी की शादी मंडकौला में हुई। अर्जुन की शादी किशोरपुर में हुई। अर्जुन का एक भाई जिसका नाम छाजू है।

लाल सिंह, देवकरन और वेदपाल - ये तीन भाई है। इस कुनबे को बोंगर जोर कहते हैं। आज लगभग 20 घर हैं इनके।

ये लोग गाँव अल्लीका के साधमोहल्ले के गिरधर के परिवार से निकले हैं। आज से लगभग 150 वर्ष पूर्व ये गांव बसा।

यादराम आदि पांच भाई एक भाई का नाम रंजीत है व अन्य तीन भाई और हैं।

श्याम सिंह और चरण सिंह दो भाई है। चरण सिंह के पुत्र का नाम करण सिंह है।

छोटेलाल (शादी पृथला में) के पुत्र का नाम तारा है। यह अकेला पुत्र है। गोपाल, मुक्खी व मोहन तीन भाई हैं – ये तारा के चाचा के पुत्र हैं।

बलदेव – का पुत्र किशन शाहय – का पुत्र तेजराम – के 5 पुत्र हैं – प्यारेलाल, छोटे लाल, नंदन और सोनपाल।

प्यारे लाल – के 3 पुत्र – नानगा, लालचंद व मान सिंह। छोटे लाल का तारा। नंदन - के 3 पुत्र – गोपाल, मुक्खी और मोहन। सोनपाल – के 5 पुत्र हैं – यादराम, फूलसिंह, देशराज, तेजराम और रनवीर।

रामदास – का पुत्र बलदेव – का पुत्र किशन शाहय – का पुत्र तेजराम (यह अकेला पुत्र) – के पुत्र 4 – ऊपर दिया गया है। तेजराम की शादी बहिन में।

चतर सिंह (शादी पृथला में) – के 5 पुत्र – प्रताप, धर्म सिंह, नैन सिंह, जवाहर सिंह व विजय सिंह।

कबीर कुनबे में – 2 मास्टर हुए हैं – मुखराम (मुक्खी) व यादराम।

साधपट्टी में लगभग 100 घर हैं और मूसा पट्टी में 20 घर से ज्यादा हैं। और लगभग 20 % लोग दूसरी जाति के निवासित हैं।

यहाँ दो बैंक से रिटायर हुए हैं एक है प्रताप सिंह पंजाब नेशनल बैंक से और दूसरे हैं तारा कोऑपरेटिव सोसाइटी से जो विभाग में कार्य करते थे। यहां अनेकों फौजी हुए हैं जिनमें जय सिंह देशराज धर्म सिंह जवाहर सिंह जितेंद्र सिंह गजराज आदि शामिल है करण सिंह श्याम सिंह का पुत्र है ककराली गांव से लगभग 30 लोग फौज में रहे हैं 6 फौजी तो प्रताप पंजाब नेशनल बैंक में रहे हैं। इस परिवार में से

करण का भाई कमल है उदली स्वतंत्रता सेनानी रहे हैं, आजाद हिंद फौज में रहे हैं। वे हमारे गांव अल्लीका से उमेद ज़िंग9 के साथी रहे हैं।

समय सिंह का पुत्र प्रताप है, यह दूसरा कुनबा है यह साधपट्टी के हैं, यह कबीर के नहीं है।

तिघारिया से ककरारी में कोई परिवार नहीं है। सभी लोग जिगर के परिवार से संबंध रखते हैं।

ककरारी की चौफी

ककरारी की चौफी गिरधर की चौथी कहलाती थी। साज बाज, नागाड़े, ढोल, आदि और सभी गवैया कलाकार ककरारी के थे। परंतु सम्मान देने के लिए अपने बड़े घर गिरधर का नाम लगाते थे। फागुन में होली के त्योहार के उत्सव में गिरधर की चौफी का अपना अलग स्थान था। फूल डोल के मेले पर बड़े गांव अल्लीका में ये चौफी के कलाकार नगाड़ा ढोल आदि साज बाज का सामान बैलगाड़ी में रख कर लाते थे। उनको गर्व होता कि वे अलग नहीं हैं बल्कि बड़े गाँव अल्लिका का हिस्सा हैं।

हर पाल - 3 पुत्र – लक्खी, लेखी और समय सिंह। समय सिंह – के 2 पुत्र – प्रताप और एक और पुत्र (जिसकी मृत्यु हो गई)

कबीर का कुनबा – मूसाका मोहल्ले के बूढ़े के (किशनलाल आदि) नजदीकी हैं। ये लोग आधे के हैं बिसेदारी में। नकचौटी दूसरा है। अतर सिंह नाम है उसका। कुनबा ये ही है।

ककरारी को बसे लगभग 140 वर्ष हो गए।

यहां भी खेरा देवत है। गाँव खेरा का देवता होता है। प्राय: सभी गाँव में खेरा देवत स्थापित होता है। यहां भुमिया देव भी है। तह भी सभी गाँव में पाया जाता है। भुमिया गाँव की भूमि का स्वामी होता है।

यहां भी एक पुराना मंदिर है। और एक दूसरा कालका मंदिर के नाम से भी है।

चतर सिंह और श्याम सिंह दो भाई थे।

चतर सिंह के 5 पुत्र – प्रताप, धर्म सिंह, नैन सिंह, विजय सिंह और जवाहर सिंह।

श्याम सिंह के 6 पुत्र - करन, नरेंद्र, कंवर, महेंद्र, जसवंत और धनसिंह।

पृभु – का पुत्र अतरसिंह।

साधपट्टी –

गिर्राज सरपंच – पिता का नाम राम सिंह। गिर्राज के 4 पुत्र हुए – मुकंदी, गोविंद राम, खैंम चंद और चेतराम।

छाजू – का पुत्र रतनलाल – इसके 4 पुत्र हुए – संतराम, भगवान सिंह, ईसर और श्री चंद। इसी श्रीचंद के एक पुत्र रोहित आर्मी में और एक पुत्री मेघा नेवी में एक अधिकारी के रूप में कमीशन में चयन हुआ है। जनवर 2020 में ट्रेनिंग के लिए गए हैं।

उदयराम मास्टर – 5 भाई - इनके पिता का नाम किशोरी लाल है – उसके पतस का नाम निताराम है।

अभी गांव में 2 लंबरदार हैं – एक नैनसिंह कुम्हार व सुरेंद्र (टोडर का पोता)

पंचायत

सरपंच – सफेद(महिला) – किशन की पुत्र वधु।

7 पंच – मुकेश, अशोक, बाबूराम, सुरेंद्र, अमित, महिला और महिला।

रतनलाल परिवार को बोंगर जोर परिवार कहते हैं। बोंगर जोर भी दो भागों में है – एक बाहर के बोंगर जोर और दूसरा भीतर के बोंगर जोर।

पिता और भरता दो भाई। इनका परिवार। रामसिंह व खजान – का पिता रामजीलाल। इनके परिवार में ये हैं – गिर्राज, सई सिंह, रामचंद और नेती। नेती के पुत्र – बुद्धि और नंदन। रामजीलाल अकेला था

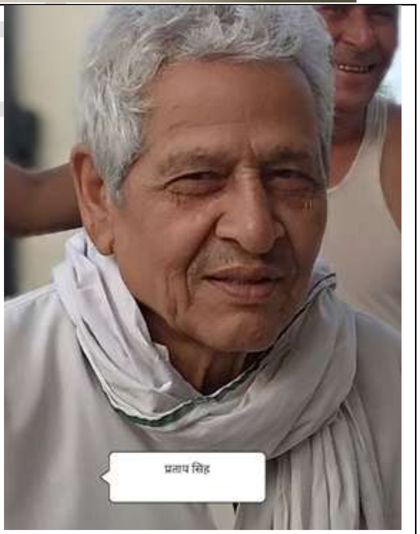

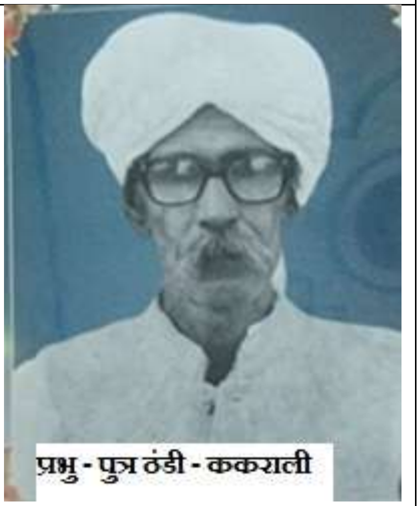

चौपाल - ककराली - मूसा पट्टी
2020-6-1 07:01

चौपाल - ककराली - साध पट्टी .1

छोटे कबीर की हवेली - ककराली

बड़े कबीर की हवेली - ककराली
2020-6-1 07:37

हवेली- बोंगार ज़ोर अंदर वाली - ककराली
2020-6-1 07:56

हवेली - बोगर जोर ककराली

रजौला

रतनलाल और उसकी पत्नी कलावती हमारे खेतों को पट्टे पर लिया करते थे। 1960 का दशक था वह उस समय पूरे इलाके में ईख बोई जाती थी। उन खेतों में ईख बोते थे। इनके अतिरिक्त और अन्य लोग भी ईख बोते थे रजौला के लोग हमारे खेतों में। में कल दिनांक 2 जून 2020 को गया था रजौला। बहुत लोगों ने मुझे पिछली बातें बताई कि कोल्हू चला करते थे, ईख बोते थे और गुड़ बनाया करते थे। मेरे पिता के बहुत अच्छे संबंधों को आज भी रजौला के लोग याद करते हैं।

रजौला में एक ही पट्टी है साधपट्टी। रजौला गाँव का पहला पूर्वंज अल्लीका के साधमोहल्ला से उदली परिवार से निकले हैं। उदली के रामस्वरूप, रजौला के परिवार वाले खास घरैतिया हैं। इनका भी गिरधर वाला कुनबा है। पूरन और रामस्वरूप ये घरैतिया हैं। खतौनी एक है अभी तक भी। उमेद और लूला के घर के सामने, साधमें, इन रजौला वालों का घर था। कनकट धनसिंह के घर के बराबर इन लोगों का घर था। रजौला में आज के दिनांक में लगभग 140 घर हैं। हो सकता है गिरधर के कुनबा से साथ साथ ही निकले होंगे ये परिवार। ये परिवार ककराली चला गया और ददूसरा रजौला आ गया हो। ये भी लगभग 150 वर्ष पूर्व ही बसा है।

थान सिंह (सूरता के चौथे पुत्र)

आज के सरपंच का नाम रामदास है। इस गाँव में सपेरे जाति के लोग भी रहते हैं। इनको नाथ कहते हैं। और घुमंतू भी कहते हैं। एक लंबरदार है। नाम है – इंदर सिंह। दादा सुरता पुराना लंबरदार रहा है।

यहां खेरा देवत भी है। और भुमिया भी है। एक पुराना मंदिर है और नया भी बनाया गया है। पुराना मनसा राम बाबा का और दूसरा मौहन बाबा का मंदिर है। इसको भन्डेरी के नाम से जानते हैं।

यहां 3 पुरानी पोखर हैं। एक रूदके की पोखर, दूसरी भन्डेरी की पोखर और तीसरी पोखर भी है। भन्डेरी पोखर पर एक मंदिर बन गया है – मोहन बाबा के नाम से। कई पोखरों में सीढ़ियां बनी हुई हैं। मोहन बाबा की मूति है भन्डेरी वाले मंदिर में। भन्डेरी के यहां एक रख्या भी थी। वहाँ एक महात्मा भी हुए हैं – घूरेदास। उसने बारह साल दीपक जलाया था एक पीपल के पेड़ के नीचे। तपस्या की थी। उसको भगवान प्रकट हुए। कारने में उसके नाम का एक मंदिर बना। उसका नाम था – मोहन बाबा। वह कारने से रजौला भी आया करता था। मंसाराम और मोहन बाबा दोनों गुरुभाई थे। पोखर में – भन्डेरी पोखर में जो सीढ़ियां बनी हुई हैं वह पुरानी नहीं है – ये नई बनाई गई हैं।

नगाड़ा (पुराना)

रजौला गाँव में आज लगभग 600 वोट हैं।

यहाँ इस प्रकार बड़े घर हैं – दादा सूरता का परिवार, छाजू राम पंच का परिवार, लेखा का परिवार, गंगादान का परिवार। कुल 4 कुनबा हैं। दादा सूरता का दिन (मृत्यु भोज) किया गया था।

छज्जे (उर्फ गैंडे) – का पुत्र सूरता – के 4 पुत्र हुए –

छझे – का एक पुत्र

- सूरता – इसके 4 पुत्र
    1. मान सिंह – इसके 4 पुत्र
        a. चरण सिंह थानेदार – इसके 4 पुत्र
            i. संतराम हवालदार
            ii. शिवराम जे ई
            iii. सुंदर ड्राइवर
            iv. बबलू
        b. भीम सिंह सरपंच – इसके 3 पुत्र
            i. सुखबीर सूबेदार
            ii. बेदन ड्राइवर
            iii. बलराम
        c. बलबीर – इसके 2 पुत्र हुए
            i. समय सिंह हवालदार
            ii. जयपाल
        d. बिजेंद्र – इसके 2 पुत्र हुए
            i. सुनील
            ii. रवि
    2. गंगाराम – इसके 3 पुत्र हुए
        a. छिद्दा सूबेदार – का 1 पुत्र
            i. एक पुत्र
        b. सोनपाल ड्राइवर – 2 पुत्र
            i. सतीश
            ii. टोलु
        c. चंद्रपाल डॉक्टर – का एक पुत्र
            i. सुमंत
    3. रतनलाल – इसके 2 पुत्र
        a. भजनलाल – के 2 पुत्र
            i. लच्छी
            ii. रोहित
        b. महिपाल – के 2 पुत्र
            i. बबलू
            ii. टिंकू
    4. थान सिंह – अभी जीवित है – इसके 2 पुत्र
        a. बीर सिंह

बदन सिंह चौहान

b. जवाहर मेंबर

उदली का कुनबा

शिवलाल – कवि - ,इसके 5 पुत्र हुए

1. राजेन्द्र सिंह
2. अतर सिंह फौजी
3. जिले सिंह
4. शिव सिंह
5. शिवराम
6.

छाजू पंच का कुनबा

छाजू – इसके 2 पुत्र

1. चरण सिंह – इसके 5 पुत्र हुए
   a. हुकम हवालदार
   b. दयाचंद
   c. महेश
   d. पहलाद
   e. सुरेश
2. शिवराम – उर्फ शिब्बन
   a. सुंदर
   b. राजेश

लेखा का कुनबा

लेखा – इसके 4 पुत्र हुए

1. दीपचंद – इसके 5 पुत्र
   a. लालचंद कैप्टन
   b. रतीराम
   c. गंगाराम
   d. डाली
   e. रणवीर
2. हुकमलाल
3. मोहनलाल
4. मोहन लाल

कारे का कुनबा

कारे – इसके दो पुत्र हुए

1. गंगादान – इसके 2 पुत्र
   a. बुद्धि सरपंच – इसके 4 पुत्र
      i. महेंद्र
      ii. जलसिंह
      iii. नब्बी पहलवान
      iv. शमशेर सिंह
2. सुक्की – इसके 2 पुत्र
   a. हरबंस
   b. संजय

यहाँ पंडितों का कोई परिवार नहीं है।

हरिजन का भी कोई परिवार नहीं है।

बाल्मीकि का एक परिवार अल्लिका से आ कर बसा है। फक्कर परिवार में से।

नाई का एक परिवार है। ककराली में जो सूरती रहता था उसका बड़ा भाई यहां आ कर बस गया।

वकील प्रकाश – अर्जिनवीस है – बहुत ही सफल व्यक्ति है अपने काम में। ये पूरा नाम प्रकाश वीर चौहान लिखते हैं।। इसने खल- बिनौले की मिल भी खोल रखी है गांव में। प्रकाश गाँव में रहता है और उसके 2 बड़े भाई पलवल में रहते हैं। ये लेखा दादा के परिवार में से हैं।

पिता – नाम ? -एक पुत्र

1. परसा – के 2 पुत्र
    a. सदा राम – 1 पुत्र
        i. हीरालाल – के 4 पुत्र
            1. तुलसी
            2. सुमेर
            3. रमेश फौजी
            4. रामचंद
    b. मोहर्राम

(पीछे से ये परिवार गंगाराम से संबंध है)

--xx—

शिवलाल – इसके 5 पुत्र

1. शिब्बन
2. शिवसिंह
3. जिलेसिंह
4. प्रताप फौजी
5. राजेन्द्र

रामु – अकेला – 2 पुत्र

1. शिवलाल
2. ब्रजु

रामजीलाल – (ये तीन भाई – घीसाराम रागी, रामजीलाल और बुद्धि) – इसके 5 पुत्र

1. किशन पहलवान
2. रतन सिंह फ़ौजी
3. अमरसिंह
4. तारा चंद
5. राम सिंह

रजौला की चौफी – रजौला की चौफी अलग थी। और ककराली की चौफी अलग थी। ककराली की चौफी को गिरधर की चौफी कहते थे। और रजौला की चौफी को रजौला की ही चौफी कहते थे। नगाड़ा पूरन बजाता था। ढोल थानसिंह भी बजाया करता था। फूलडोल का मेला होली के दूसरे दिन अल्लीका में लगता था। उस दिन बैलगाड़ी में रख कर नगाड़े को अल्लीका ले जाया करते थे। वहां मंदिर में फूलडोल के उत्सव में शामिल होते थे। सभी नगरा के लोग यहां आते थे और नगाड़े, झांझ आदि बजाना, सिर पर पगड़ी बांधते थे लोग। बच्चे, बूढ़े, जवान सभी मर्द - औरतें नए कपड़े पहनते थे। फूलडोल का मेला जो हमारे पांचों गांवों की शान होती थी – खत्म हो गया वह मेला महंत रामटहल दास के समय, कारण बताया गया महँगाई कि मंदिर यह बोझ नहीं उठा सकता। परन्तु रजौला नगरा में यह प्रथा बनाए रखी है - फूलडोल का मेला लगता है यहां, बतासे बांटे जाते हैं

चरणसिंह थाने दार ने सबसे पहले मैट्रिक की परीक्षा पास की थी – हथीन से।

2 मास्टर हैं यहाँ – चंद्रवीर और दूसरा पहलाद।

यहां सपेरा जाति केलोग भी आ कर बस गए हैं । इनको नाथ कहते हैं। 8 – 10 घर हैं इनके। 2 घर प्रजापति जाति के भी हैं। ये सभी लोग मेवात से आए हैं।

बदन सिंह चौहान

पिता ? – 2 पुत्र

1. शीतल – का पुत्र
    a. नत्थू लंबरदार – (ये बुद्धि पटवारी के परिवार से है) - के 3 पुत्र
        i. ओम प्रकाश स्टेशन मास्टर – 2 पुत्र
            1. पुत्र
            2. पुत्र
        ii. सत्य प्रकाश – 2 पुत्र
            1. पुत्र
            2. पुत्र
        iii. चेतराम
2. चंदी सरपंच – का 1 पुत्र
    a. पुत्र

(दादा थान सिंह की पत्नी 4 बहन थी। एक ही परिवार दादा के परिवार में ही हैं। मायका पहाड़ी है। सबसे बडी थानेदार की माँ हूं। उससे छोटी छिद्दा आदि की माँ है। फिर रतनलाल की पत्नी कलावती है।

अंची दादी थी एक – वह सभी आने जाने वालों को छाछ का दलिया पिलाया करती थी – दलिया बना कर छाछ में घोल कर तैयार कर लिया जाता और दरवाजे पर बैठ जाती थी। और बडे ही परे से दलिया पिलाती थी सभी को।

शिवलाल ने बहुत जिकरी लिखी हैं। - 2 पुत्र – शिवराम (उसके 1 पुत्र) और शिव सिंह ।

जिले सिंह शास्त्री कवि भी थे । उसने बहुत सी जिकरी लिखी हैं। हारमोनियम भी बजाते थे । शिवकाल मुख्य कलाकार थे। खुद गाते भी थे । षज्वलक वाल्ट जाते थे और जिले सिंह लिखते जाते थे।

रामफल - का पुत्र लेखा – का पुत्र शिवचरण – का पुत्र प्रकाश वकील।

मनसुख के 2 भाई और थे।

मनसुख – के 2 पुत्र –

1. रामलाल – के 3 पुत्र
    a. अर्जुन
    b. सुरजन
    c. मंगल
2. रामफल – के 3 पुत्र
    a. तेजा
    b. लेखा – 4 पुत्र
        i. दीपचंद
        ii. हुकम लाल
        iii. मोहनलाल
        iv. शिवचरण
    c. केवल

निहाल – 4 पुत्र

1. जवाहर सिंह – के 2 पुत्र
    a. जीमन – का पुत्र
        i. सूंडा मल

b. शीशराम – 5 पुत्र
   i. केहर सिंह
   ii. रामसुख
   iii. मनसुख
   iv. दिलसुख - x
   v. कालेराम
   vi.
2. हरकिशन
3. अमरसिंह
4. और गुरशरण

(संवत 1903 में (1846 ईसवी में “1903 -57 =1846”) में केहर सिंह और रामसुख आए थे अल्लीका से – इनके पिता का नाम था शीशराम)

यादुपुर (आदुपुर भी कहते हैं)

दिनांक 2 जून 2020 को मैं यादुपुर गया। लोगों ने मुझे एक पुरानी हवेली दिखाई। अब इस हवेली के मात्र खंडहर ही रह गए हैं। बताया कि यह हवेली एक ढोकसी में बनी है। मैंने इसका मतलब पूछा इस एक ढोकसी का। बताया गया कि एक ढोकसी अनाज में बनी है यह हवेली। उस जमाने में दिन भर काम करते थे मजदूर और सांय को एक ढोकसी मजदूरी मिलती थी। इस लिए इसको एक ढोकसी वाली हवेली कहते हैं। बहुत बड़ी हवेली है यह। जब कभी आबाद रही होगी तक तो इसकी भव्यता अलग ही बहुत ही ऊंची रही होगी।

मुख्य हवेली अलग है। जो इसके पास ही है। जो एक किलेनुमा है। राजस्थानी वास्तुकला का प्रतिरूप है यह। दो मंजिला दिखने वाली यह हवेली मुख्य निवास स्थान रहा होगा। मुख द्वार पर ऊंचे ऊंचे दरवाजे के दोनों ओर घोका बने गए हुए हैं जिन पर पत्थर के खम्ब लगे हुए हैं । पत्थर के छज्जे बने हुए है। मुख्य द्वार पर झरोखे बने हुए हैं। ये सभी भवनों में चुने का प्रयोग किया गया है। कंकरों और कखिया ईंटों का प्रयोग किया गया है। कखिया ईंट छोटी आकार की ईंटों को कहा गया है। यह हवेली एक एक छोटे से किले आभास कराती है। मुख्य हवेली ठेकेदार परिवार का निवास स्थान हुआ करता था।

ईसी प्रकार और भी कई हवेलियां हैं यहां। आज सभी खंडहर हो चुकी हैं। कई हवेलियों की दीवार तो 4 फुट से भी ज्यादा चौड़ी हैं। अदभुत भवन निर्माण कला देखने को मिलती है यहां। दीवारों में से निकाले गए रोशनदान अदभुत हैं।

अंग्रेजों के समय में लगान लिया जाता था किसानों से। और ठेके पर जमीन दी जाती थी जोतने के लिए। अंग्रेजों द्वारा जप्त की गई जमीन को ठेके पर देते थे। जिन लोगों ने इन जमीनों ठेके लिए उनको ठेकेदार कहा गया। इस जमीन पर मजदूरों से खेती करवाते थे। और सरकार को लगान पहुंचाते थे। और यदि किसान लगान नहीं दे पाते तो जमीन के मालिक भी बन जाते थे। ठेकेदार के परिवार के एक व्यक्ति से बात करने पर उसने एक पुराना किस्सा सुनाया। इन ठेकेदारों के पास अल्लिका के आसपास के गाँव कारना, लालुआका, रजौला, धौमाका, नगरी आदि गांवों तक की जमीनें इन ठेकेदारों के कब्जे में थी। एक बार ठेकेदार अपनी सवारी से घोड़े या रथ से जा रहे थे तो रास्ते में कुए से पानी भरके ला रही कुछ महिलाएं मिली।। महिलाओं ने विनती की कि उनकी जमीन को छोड़ दिया जाए। ये

बदन सिंह चौहान

महिलाएं नगरी गाँव की थी। उनका निवेदन सुन कर ठरकेदार ने कहा कि कल चार आदमी भेज देना हवेली पर। दूसरे दिन दिन नगरी गाँव के लोग हवेली ज पहुंचे और उनकी जमीन वापिस कर दी।

पूरा यादुपुर नगरा एक ही परिवार का है। यह अल्लीका गाँव के भंडिया मोहल्ले से निकला है। परिवार बढ़ा आगे चल कर – कोई ठेकेदार कहलाए क्योंकि ये जमीन का ठेका लेते थे। कोई गढ़ीवाले कहलाए, कोई बहरूपिया कहलाए और कोई मोहल्ला पट्टी कहलाई । बहरूपिया दौलती, बदले पीताम्बर आदि परिवार है।

जीते जी अमीचंद (अमीराम) ने अपना दिन कराया।

ठेकेदार में एक बुज़ुर्ग हुए हसीन जिनका नाम था अमीराम। उसने अपने जीते जी अपना दिन कराया। दिन का मतलब है मृत्यु भोज। यह कहानी ठेकेदार के परिवार वाले पहले से ही सुनाते आ रहे हैं। मेरे पिता जी भी और गाँव के पुराने लोग यह कहानी सुनाते थे। अमीराम ने इस भोज में आगरा और दिल्ली के बीच में सभी को न्योता दिया था। उस समय ब्योपारी के रूप में बंजारे चला करते थे। अपने खच्चरों पर सामान लाते थे और बेचते थे। अमीराम के परिवार वालों ने बंजारों को आदेश दे दिया कि 100 बोरी चावल और 100 बोरी शक्कर दे दें। इसका भुकतान करने के लिए जब लोगों ने पूछा कि इतना धन का भुगतान कैसे करोगे तो उनको विश्वास दिलाने के लिए अमीराम ने कहा कि उनको धन की उपलब्धि दिखाना चाही। शर्त रखी कि कुछ लोग उसके साथ आए परंतु आंखों पर पट्टी बांधकर। लोगों की आंख पर पट्टी बांधी गई। उनको हवेली ले जाया गया। परंतु आंखों पर पट्टी बांध कर। हवेली के उस कमरे में ले जाया गया जहाँ धन रखा हुआ था। आंखों पर पट्टी बंधी हुई लोगों की, कुछ नहीं देख सकते थे कोई भी। एक को अपना एक हाथ आगे करने को कहा गया। और उस हाथ को एक बहुत बड़ी गोर (मिट्टी का बड़ा मटका जिसको कुम्हार बनाते थे) में डाला और पूछा कि बताओ इसमें क्या है। जवाब मिला कि उसमें तो चांदी के रुपए हैं। इस प्रकार बहुत सारी गोरों में हाथ डाल कर पूछा कि धन पर्याप्त होगा कि नहीं। उन की आंखों पर पट्टी बंधे हुए लोगों ने गोरों में हाथ से चांदी के रुपियों को गहराई तक ऊपर नीचे करके अंदाजा लगाया। बाहर आ कर सबके सामने सामने कहा कि ठेकेदार के पास बहुत धन है, इस दिन (मृत्यु भोज) का इंतजाम हो जाएगा। और इस भोज का इंतजाम करने काम शुरू कर दिया। चावल और शक्कर बंजारों ने हवेली में पहुंचा दिया। भुकतान की कोई समस्या ही नहीं थी। पानी का इंतजाम एक पोखर से किया गया जिसका पानी बिल्कुल साफ था। जमीन खोद कर भट्टियां बनाई गई, जिनमें नीचे लकड़ियां जलाई गई। बड़े बडे कढ़े रखे गए आग के ऊपर और चावल पकाए गए। फर्स के मोटा कपड़ा जिसे खेस कहते हैं बिछाए गए गए। अब इसके ऊपर एक बोरी पका हुआ चावल फैला दिया और फिर उस पके हुए चावल के ऊपर कच्चे चावल फैला दिए, फिर उसके ऊपर पका हुआ चावल और इसके ऊपर कच्चा चावल फैलाते चले गए। इस तरह भाप से कच्चा चावल भी पक गया।

यादुपुर वंशावली

भाट का पता – चिरंजीलाल पुत्र सुखदेव

गाँव – बड़वासनी
डाकखाना – खास
जिला – सोनीपत - हरियाणा
---xx….
सहीराम – चार पुत्र

1. जवाहर सिंह – के 3 पुत्र
    a. गुलाब सिंह
    b. सिंगराम
    c. अर्जन - ,के 2 पुत्र
        i. देवीराम ,- 4 पुत्र
            1. नारायण सिंह
            2. किशनी
            3. पीतराम
            4. नेतराम
        ii. देवीलाल

2. धूप सिंह – के 4 पुत्र
    a. नहचल – के पुत्र
        i. तुलसीराम – के पुत्र
            1. फतेह सिंह – के पुत्र
                a. मोहर सिंह - पुत्र
                    i. मन्नू – का पुत्र
                        1. रामजी लाल
                        2. गोकुल
            2. बुद्धसिंह -
            3. गोर्धन
        ii. मोहन
    b. दलेल सिंह – के पुत्र
        i. सुखराम
        ii. कन्हि राम – पुत्र
            1. रामप्रसाध– का पुत्र
                a. राधे कृष्ण
            2. हरप्रसाद– पुत्र
                a. चतरू – का पुत्र
                    i. भुल्ली – के पुत्र
                        1. बस्ती

बदन सिंह चौहान

2. हरकेश
ii. दिल्लू
b. प्यारे लाल
c. मेदसिंह – के पुत्र
i. हरफूल – के पुत्र
1. भरतसिंह
2. केशरिया
ii. हरबल – के पुत्र
1. पृभु
2. खिल्लु
3. पीतम्बर
4. मोतीराम
d. किशन बली
3. हरिसिंह – के पुत्र
a. जीसुख
b. लालाराम – के पुत्र
i. बस्ती राम – के पुत्र
1. हर्बक्स
2. तेजसिंह
3. रेवती - x
4. निहाल सिंह - x
5. रामफूल – के पुत्र
a. किशोरी लाल
b. श्यामलाल
c. रूपलाल
ii. नेतराम
iii. गजेराम
iv. विजय – का पुत्र
1. कल्याण – पुत्र
a. ठंडी राम
2. नोकराम – पुत्र
a. किसरी सिंह
b. रंजीत या लौहरे
c. मनसुख
4. रतन सिंह

3. नानू राम
5. ग्यासी
6. बदले
7. मूसा
8. केवल

बदन सिंह चौहान

रतन सिंह खानदान –

रतनसिंह – के 4 पुत्र

1. रामसिंह – के पुत्र
    a. नेतराम – का पुत्र
        i. हरिराम ..x
    b. प्रेमसुख – का पुत्र
        i. आशाराम
        ii. सैली
        iii. शिवचरण
        iv. सिरदारा
    c. जगराम – पुत्र
        i. चंद्र सुख – के पुत्र
            1. चेतराम – इसने गोद लिया भीखा को
            2. मुनिलाल – के पुत्र
                a. भगवान स्वरूप
                b. सूरजमल
            3. ठाकारिया
        ii. गोविंद – के पुत्र
            1. फज्जी
            2. सुखपाल
        iii. ईसर – पुत्र
            1. राय राम
            2. मोहरपाल
            3. सौन पाल

2. मानसिंह – के पुत्र
    a. लक्ष्मण – का पुत्र
        i. भगवान
        ii. हर किशन
        iii. चंद्र सेन – के पुत्र
            1. रामफल – के पुत्र
                a. चरण सिंह
                b. फतेह राम – के पुत्र
                    i. ओमी
                    ii. किशोरी
            2. खिल्लु
            3. नेतराम
    b. ईसर
    c. महाराम

बदन सिंह चौहान

d. सूरत सिंह
3. जैसी – (ये है ठेकेदार खानदान) – 3 पुत्र
a. नवल सिंह – का पुत्र
i. सुखराम – का पुत्र
1. खचेरु – के 2 पुत्र
a. प्रहलाद
b. जसमत
2. सोहन लाल – के 5 पुत्र
a. मान सिंह
b. धन सिंह
c. तेज सिंह
d. केहर
e. विजेंदर
3. राधे लाल – के 6 पुत्र
a. बलबीर
b. रगबीर
c. भरत सिंह
d. रणधीर
e. हरिचंद
b. अमीराम – नावल्द
c. दया किशन – का पुत्र
i. राम किशन – के पुत्र
1. लक्खी – के पुत्र
a. रघुनाथ
b. गिर्राज
c. प्रताप
2. गंगालाल – के पुत्र
a. प्यारे लाल
b. रंजीत
c. नत्थी
ii. छोटन – नावल्द
4. किशनलाल

बदन सिंह चौहान

अध्याय 3

गाँव के साहित्यकार और अन्य प्रमुख व्यक्ति

हमारे गाँव के कवि एवं साहित्यकार

चौधरी रघुबीर सिंह मुकदम

हमारे गाँव में कई कवि एवं साहित्य कार हुए हैं। इनमें सबसे ऊंचा स्थान लोक कविताओं में मेरे गाँव के मेरे मोहल्ला मूसाका के निवासी चौधरी रघुबीर सिंह हुए हैं। आपका जन्म वर्ष 1896 में हुआ और मृत्यु 04 दिसंबर 1979 में हुई। इनका एक पुत्र था जिसका नाम गंगा लाल था। आप पहले व्यक्तियों में से थे जिन्होंने गाँव के स्कूल में प्रवेश लिया और तीसरी कक्षा पास की। प्रारम्भ में उस समय प्राइमरी स्कूल ही था। उसमे मात्र 1 से 3 तक कक्षाएं लगती थी। उस समय उनके स्कूल के साथी राधे व सरूप रहे होंगे। यदि आपने 8 - 9 की आयु में देर से भी स्कूल में दाखिला लिया होगा तो इस प्रकार स्कूल हमारे गाँव 1905 में खुलना का अनुमान लगाया जा सकता है। अंग्रेजी शासन काल में जब गाँव में स्कूल खुला तो पहले में कक्षा पहली से तीसरी कक्षा तक प्रारम्भ की गई। स्कूल का भवन नहीं होने के कारण किसी एक चौपाल पर स्कूल लगाया गया। चौधरी रघुबीर सिंह ने तीसरी कक्षा तक पढाई पूरी की। उसी शिक्षा का लाभ उठा कर कविताएं लिखना प्रारम्भ किया। उसकी कविताओं में समाज के तत्कालीन परिवेश पर प्रकाश डाला। होली के पर्व पर चौफी में गाए जाने वाली पारम्परिक शैली में कविताएं लिखी। सामजिक, राजनैतिक और धार्मिक क्षेत्रों में विषय की गहराइयों में जा कर अपनी कविताओं के माध्यम से लोगो को सन्देश दिया। उनकी कविताएं प्रकाशित हुई थी उस समय। परन्तु अब वे सब उपलब्ध नहीं हैं। उन पुस्तकों की मूल हस्तलिपि उसके पौत्र देवी सिंह के पास उपलब्ध हैं। मेरी देवी सिंह से बात हुई थी कि उसका पुन: प्रकाश दिया जाए तो अच्छा रहेगा। क्योकि साहित्य तो समाज की धरोहर होता है। कवि रघुबीर सिंह के पोते देवी सिंह गाँव के मिडिल स्कूल व पलवल के गवर्नमेंट हायर सेकेंडरी स्कूल में मेरे सहपाठी रहे हैं। उसने कुरुक्षेत्र यूनिवर्सिटी से फिजिक्स में बीएससी (ऑनर्स) और एमएससी की डिग्री प्राप्त की। स्कूल से ले कर यूनिवर्सिटी तक सभी परीक्षाएं प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। हमारे गाँव के पहले एमएससी हैं। एक बार मुझे देवी सिंह ने बताया कि उनके दादा रघुबीर सिंह की कुल 54 होलियों और जिक्रियों की हस्तलिपियाँ

कवि चौधरी रघुबीर सिंह - मुकदम

उनके पास हैं। जिन्हे वह निकट भविष्य में एक पुस्तक के रूप में प्रकाशित करा रहे हैं। वैसे तो ये सारी पुस्तके एक से एक बढ़ कर हैं और ब्रज क्षेत्र के विशेषतय: ग्रामीण लोगों द्वारा अति प्रसंसा की गई है।

उनकी शैली और कविताई के भाव ने आस पास के क्षेत्र के लोगों को बहुत ही प्रभावित किया है।

चौधरी रघुबीर सिंह की कविताओं के कुछ अंश निम्न लिखित हैं।

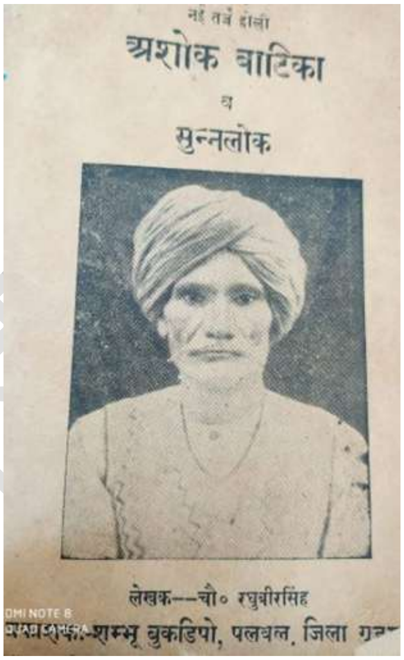

फागुन का वह महीना, चौफियों का मौसम को कोई भी नहीं भूल सकते उस समय के लोग। मुझे बार बार रह रह कर याद आता है -वह गोविंदा का चबूतरा जहां चौफी की स्टेज सजाई जाती थी। और – "मेरौ चरखा रंग रंगिलौ तौय कहां रंगाउँ रे ...." जिसको बालू गा रहा है। वह दो मोहल्लों की आपस में प्रितयोगीता – मूसाका हमारा और दानिका– दानिकाकी चंदन सिंह की चौफी। गिर्राज स्टेज पर - उसका पटका – "मुक़दमनी यों कह किरण ते तैनै कैसो पाप कमायो रे ... हरिरौम के खेतन में तौ दो दिन भी नौ खायौ रे ...." इस तरह के व्यंग दर्शकों को हसीं से लौट पोट कर देता। और कोई बुरा भी नहीं मानता था। चौफियों का वह मंज़र कोई नहीं भूल सकता (नजारा) है। हमारी चौफी, गिरधर की चौफी, चंदन सिंह की चौफी, यादुपुर, ककराली, रजौला इन सभी की चौफियां अपना अपना संगीत का खेल प्रस्तुत करती थी दिन को और रात को भी। दूसरे गावों से भी अपनी अपनी मंडली लाते थे लोग। आज सब खत्म हो गया। मुर्गा की चौफी किशोर पुर से, पतंगा की चौफी धतीर से आती थी। सपने हो गए वे सब। धतीर जाती थी हमारे गाँवों की चौफियां। हर एक की जगह तय होती थी। हमारी रघुबीर की चौफी हजारी बंगला पर ही होना है। इस तरह दूसरों की भी जगह तय होती थी। लोग पैदल जाते चौफी देखने धतीर, छोटे बच्चे भी, मुझे अभी याद है, रात में हजारी बंगला की सपील पर सो जाया करता था मैं। लोग खाने का इंतजाम करते थे। दूध तो था ही। खीर पूरी जरूर बनती यह और उसके ऊपर देशी घी। फिर मैं – कहूँ कि सब खत्म हो गया वह। चौफी सिर्फ चौफी नहीं थी जिकरी रागनी पटकों का संग्रह गाना बजाना ही नहीं था। एक भाई चारे की एक मजबूत नींव थी। कुनबे से कुनबे का भाई चारा, मोहल्ले का मोहल्ले से भाई चारा और गॉव से गाँव का भाई चारे को मजबूत करने का काम करती थी ये चौफियां - एक माध्यम था उस जमाने का। जाने कहाँ गए वो दिन !

मन्नू का और खिल्लु का नगाड़ा, धनमत का ढोल, बाद में मेरे पिता जी का और बिरखु का का ढोल, झांझ, चिमटा – जाने कहां गए। घमंडी का कंठ व उसकी पहलगी नहीं भूली जाएगी कभी। घमंडी का चेला मान सिंह का चिमटा व घमंडी के सुर ताल के साथी – जाने कहां गए वो दिन ......

मैंने अपने बुज़ुर्ग अति सम्मानीय दादा जी को, वे सबके दादा जी थे, आखिरी बार सुना है हारमोनियम पर ..... सक मेंके द 1960....

"....सुन रोहाणी के लाल ॥ चित दै सुनियो हे ...

आज उन ढोल, नगाड़े, पेटिबाजा, हारमोनियम, ढोलक, चिमटा, झांझ सभी कहाँ हैं – निसानी भी नहीं हैं ? यहां तक कि तकत, मौचे कहाँ है – चौपाल पर तो नहीं हैं – क्या हुआ उनका जो हमारे बुज़ुर्ग की निसानी थी। कौन ? यह सोच कर दादा जी की आत्मा भी दुखी होती होगी। ? या उनकोले ग

दादा जी .. कोटि कोटि नमन आपको।

कवि रघुबीर सिंह की कविताओं के कुछ अंश

॥ होली सोमनाथ की ॥

गुजरात के सोमनाथ के मंदिर की व्यवस्था पंडितों के हातों में रही ॥ पूरा पाखंड और दुर्दशा वहां व्याप्त रही। वहां के बिगड़ते हुए हालातों का विवरण कवि ने इस प्रकार किया है।

॥ टेक ॥ खो दिए तिलक बाज्जनें ॥
॥ उठाव ॥ लै कैं बैठ गए पैंदे में ॥
॥ लावनी ॥ लै कें बैठ गए पैंडें में, मरवाय दिए गिरन्धी नें ॥
भारत कौ गार्त कर दियौ झूठे आपा पंथी नें ॥
॥ चाल ॥ वा सोमनाथ के मंदिर में इतने पुजारी थे ॥
अट्ठावन हजार तौ वहां कर्मचारी थे ॥
लगै नित चौदह सौ मन आटो ॥
फिर घी मीठे कौ कहा घाटो ॥
पाटौ कैसें बंधें, खर्च तौ इतने भारी थे ॥
नित दो मन सुल्फा है पी जायँ इतने सुल्फा धारी थे ॥
घटें नहीं मासें भर भरपूर अहारी थे।
शराब और कबाबन के भी अत्याचारी थे ॥

॥ होली नल दमयंती ओखा की ॥

हालतों से हताश, लाचार और दुखी राजा नल अपनी पत्नि दमयंती के सामने विपदा के बाकी आगामी दिन ससुराल में बिताने का प्रस्ताव रखता है। दमयंती की प्रतिक्रिया को इस तरह व्यक्त किया है।

॥ भजन ॥
हल्की बात मत कर साजन अमर लचारी में ॥
टोटे में ना जाया करते रिस्तेदारी में ॥
ताने मारें पीहर वारे ॥
मुखड़ा फेरें मुखड़ा सारे ॥
न्यारे टूटे ढहला लारें खरख दुबारी में ॥
धरती न ही बहन भैया कैं, भोजन थारी में ॥
॥ दुबोला ॥ - आफत, बिपत सतवादी दुनियां में सहे करैं हैं ॥
सर्प, सेर और छतरी तीनों बन में रहे करें हैं ॥
खोटो बखत पति पत्नि की बैयाँ गहे करैं हैं ॥
हिम्मत कौ भगवान हिमाती ऐसें कहे करें हैं ॥
॥ पटोला ॥ - माता मारै बोल ॥ जै मैं पीहर जाऊं ॥
तेरे संग में डोल ॥ अपनी उमर बिताऊं ॥
अपघात करूँ मर जाऊं ॥
॥ तुक ॥ - काटे ते बिपदा कट जाएगी, सदा रहै ना टोटो ॥

बदन सिंह चौहान

॥ होली द्रोपदी स्वयम्वर की ॥

लाक्षागृह से निकलने के बाद पांडु पुत्रों ने सन्यासियों का वेश धारण कर गुप्त रुप से रहने का निर्णय किया। इसी वेश में वे द्रोपदी स्वयंबर में पँहुचे। और द्रोपदी ने विजयी अर्जुन के गले में वर माला पहनाई। दुर्योधन को यह स्वीकार कहां था। द्रोपदी को ले कर जब सन्यासी पांडव चलने लगे तो उस स्थिति का वर्णन कवि ने इन शब्दों में किया है।

॥आध ड्यौढ़ ॥

लीनी द्रोपद अपने साथ सबते करी नमस्ते ॥
बन कैं सिधारे पांचों भ्रात, चल दिए हसते हसते ॥
कैरोंन को जर गयो गात, भरयो दुर्योधन गस ते ॥
मारौ करण इनकै लात लूटकें ला कुर्रसते ॥

॥ दुबोला ॥

किल्ली दै कें करन भग्यो और दैतौ आवे झाले ॥
राजसुता है कैसैं लै जायगौ भीक मांगने वाले ॥
इसको मेरे अर्पण कर दे, झारौ कहीं शिवाले ॥
रस ते दै जस बढ़ै, नहीं तो कर दु मौत हवाले ॥

॥ भजन ॥

कटक वचन नै कारजे में साल कर दिए ॥
बोली ने नेतर भीम के मसाल कर दिए ॥
इतनों बचन झिलै नौ खोटो ॥
ठाड़यो मन्नावै जन झोटो ॥
छोटो सौ मौहौं इतने बड़े सवाल कर दिए ॥
तेरी बोली की गोली नै हम बेहाल कर दिए ॥
जो जर जावै तेरी भय से ॥
हम बैरागी ना हैं ऐसे ॥
तू जैसेन के मौहड़े हमने लाल कर दिए ॥
जो ना करै काल की संख्या उनके काल कर दिए ॥

॥ होली लक्ष्मण मूर्छा की ॥

आज के दौर में अदालतों पुलिस थानों यहां तक कि खेतों और सड़कों के बीच भाईचारे का गरेबान पकड़े खड़ा है ॥ खून और भाईचारे के रिश्ते आदि ये सब तिनकों की तरह उड़ जा रहे हैं। मगर मुकदम उस जमाने के कवि है जो गांव के बड़े बूढ़े अपनी संतानों को समझाया करते थे कि - चलना सड़क का चाहे फिर क्यों ना हो और बैठना " शायद इसी कारण अपने भाई लक्ष्मण को जमीन पर मूर्छित पड़े देख कर भगवान राम के ”भाई का चाहे बैर क्यूं ना हो विलाप और पीड़ा का वृतांत इस महान कवि के द्वारा इस प्रकार किया गया है।

॥ गाहयो चंपत ॥

व्है गई आधी रात कपि नहीं आए ॥

अबन बच्चे गौ बंध नीर नैनन भर लाए ॥
दे दे मारे मूड हिलकीन ते रोयो ॥
मेरे प्रानन प्यारे वीर आज करयौ बिछोयो ॥
गयौ धरन में सोय।
कहां गिरूं कुआ भार में कहीं जगह बताजा मोय ॥
॥ टेक ॥ --- ॥ भैया मेरे हार गरे कौ ॥
॥ चाल ॥ -- सिया राम चन्द्र है तक कें ॥
दगा कर छोड़ चल्यो रन में ॥
अकेलौ छौड़ चल्यो भैया ॥
या मल्हा है छोड़ चल दियौ, पार कैसे होगी नैय्या ॥
॥ उठाव ॥ -- काई और बैद को बोलो ॥ अंगद कोई नबज टटोलो ॥
व्है जा बेटी बेटा रे ॥ कोई भैया ना मिलै सुकारौ॥
॥ खेंच ॥ -- हो है इकले की माटी बरबाद ॥ भैया बिन जग में ना सरै ॥
आवै बखत परै पै भैया याद, बैरी संक्या ना करै ॥

...xx....

तुलसी दास ने जो यह कहा है क़ि "ढोल गवाँर, शूद्र, पशु और नारी। ये हैं ताडन के अधिकारी। सदियों से इसी मानसिकता के इर्द गिर्द नारी का समाज में जीवन गुजरा है।

गाँव में पंचायत राज आया परन्तु बहुत समय तक महिलाएं मात्र मतदान ही कर सकती थी। उन्हें पंच या सरपंच चुने जाने का अवसर नहीं दिया जाता था। जब महिलाओं को भी पंचायत में महिलाओं की भागीदारी प्रारम्भ हुए। हमारे गाँव की पंचायत के चुनाव में 1960 के दशक में महिलाओं में भी भाग लिया। महिलाओं में उत्साह और ख़ुशी और उत्साह की सीमा नहीं रही। इस चुनाव में गाँव के हरिजन समाज के एक व्यक्ति का नाम था श्री धोंदु। उसकी पत्नी पंचायत के चुनाव में मेंबर पद के रूप में जीत गई। यह एक पहला और अद्भुत परिवर्तन का उदाहरण था। इस पर कवि रघुबीर ने अपनी कविताई में एक व्यंग रूप में लिखा और चौफी में गाया -

" धौंदु जन कहा जानैगो .... "

इसी सन्दर्भ में एक कविता जिसे पटका कहते हैं, लिखा गया - उनके पोते देवी सिंह ने दर्शको के एक विशाल जन समूह के सामने उसी समय चौफियों में गाया करते था। पटका तो बहुत लंबा था। मुझे उसकी पहले कुछ बोल याद हैं। ये बोल उस नव निर्वाचित महिला पंच के हैं जो पहली बार पंचायत के उनाव में चुनी गई हैं। और मैंने तो यह पटका कश्मीर के श्रीनगर में अपने कॉलेज के दिनों में गए टूर के समय अपने ग्रुप के सामने गाया था। उस समय टूर के लीडर उस समय के सनातन धर्म कॉलेज प्रिंसिपल थे। और माननीय सुभाष कटियाल (पूर्व मंत्री हरियाणा सरकार और वर्त्तमान में हैफेड के चेयरमैन हैं।) भी उस टूर में थे। सभी मेरे टूर के साथियों ने इस पटका पर बहुत आनंद उठाया और मुझे बार बार गाने की कहते थे और मैं ही बड़े ही उत्साह से आता था।

पटका के बोल इस प्रकार हैं -
" गूठा पौवे रे बलम तेरे रोट - इलेक्शन जीती पोलिंग में।
पोलिंग अफसर है बुलवा कैं पहलै मोते कह दी रे।
जितने रँडुआ बसें गाँव में सबनै मेरी दै दी रे।

और सबनै कह दी रे, भर दिंगे नोटन की पोट।
इलेक्शन जीती पोलिंग में।
जब दिल्ली जाउंगी तो मोते इंदिरा हाथ मिलावै रे।
ए ... बैठ्यो रहियो रे चूल्हे पै अनपढ़ ठोट -- इलेक्शन जीती पोलिंग में।

देवी सिंह उम्र उस समय आयु 10 - 12 वर्ष की रही होगी। वह इस पटका को झूमझूम कर गाते थे। और अंगूठा (गूठा) को बार बार दर्शकों को दिखाते थे। गाँव के खुले रास्तों में बैठी देशों की खचा खच भीड़ के बीच बैठी महिलाएं गुंझती खिलखिलाहट के साथ तालिया बजाती थीं। मानों के मन की बात कोई कह रहा हैं। ताली बजाने वालों में रँडुवां ही होंगे ही वे लोग बड़ा आनंद उठाते।

चौधरी चन्दन सिंह मुकदम – एक बहुत सम्मानीय व्यक्ति

चौधरी चन्दन सिंह मुकदम हमारे गाँव के दानी के मोहल्ला के निवासी थे। बड़ा घर है आपका। आपका पुत्र किरण सरपंच रहा है गाँव का। आप की कविताऐं बड़े सम्मान से सुनी जाती थी। आप भक्ति रस के कवि थे। फागुन के महीने और व होली चौफी के उत्सव में आपकी कविताऐं गए जाती थी। कुछ भक्ति भजन के नमूने यहां दिए जा रहे हैं।

भजन

दोहा - ओम ओम मुख ते कहो जब उठो सवेरे आप।
मोक्ष प्राप्ति होएगी, कटै जन्म के पाप।
पार ब्रह्म परमात्मा, उसके नाम अनेक।
पर सब नामन में मुख्य है, ओम नाम यू एक।
जो इसका सुमरन करें, नर हो चाहे नार।
भवसागर में होएगा उसका खेवा पार।
वेद शास्त्र कूखते, इसमें मीनन मेख।
वो नही किसी को दीखता, वो सबको रहा है देख।

भजन

टेक - जगदीश्वर तेरे देखे निराले काम
कली – तैनै अधर पधर बसधा डाटी, भूचाल बिना डुगलाती ना।
खूंटा से नेजू रस्सी कहीं पर भी नजर आती ना॥
जगह-जगह से जिसम जुरा दिया, लगी कील और पाती ना ।
तोसा और होशियार जगत में, लोहार कोई खाती ना॥
तोर - अपनी शक्ति से अभिनाशी, रहे धरा को थाम। ... जगदीश्वर ....

निरंकार हौ आप नाथ दुनिया साकार बनाई रे।

बदन सिंह चौहान

बिना भुजा सब काम किया, तेरी माया लखी ना जाई रे ॥
कान नहीं सुनते सबकी तेरी न्यों उड़ रही आवाई रे ।
भगतन में जब भीर परै, पग बिन जा करो सहाई रे ॥
तोर – नैनन बिना निगाह के नीचे, राखौ पृष्ठ तमाम । ... जगदीश्वर........

देख्यो अकल लगय जगत में, तोसा नौ कोई कारीगर ।
बिना कतरनी वृक्ष के पत्ते दिए इकसार कतर ॥
अंबर में सागर नौ कोई, बरस के जंगल को दे भर ।
बिना रंगे तैनै रंग-बिरंगे फूल खिला दिए परमेश्वर ॥
तोर - सभी जगह मौजूद नजर मे ना आयो गुण धाम । ... जगदीश्वर........

इतना सबको ज्ञान दिया, तुझे सदा अमर ना रहना है ।
कैसा पौधा दोगे और उसका ही हो लेना है ।
चंदन सिंह का बार-बार बस यही सबसे कहना है,
शुभ काम करो हर नाम जपो, इसमें पीछे की भय ना है ।
तोर - छिन छिन बीती जाए उमर, करौ आगे कौ इंतजाम । .... जगदीश्वर तेरे देखे निराले काम ।

चेत राम सूबेदार

श्री चेत राम गाँव के साधमोहल्ला के निवासी श्री राम चंद के पुत्र थे । वह महाशय सुखदेव आर्य सम्माजी के बड़े भाई थे । वह फ़ौज में नौकरी करते थे । कविताऐं लिखने का शौक था उनको । फ़ौज में नौकरी करते हुए भी उसने कविताएं लिखीं और चौफी में गए जाती जाती थी । छपवाई भी । आज अब ये पुस्तकें उपलब्ध नहीं हैं।

सेना में चेतराम का आर्मी सर्विस नंबर 3170166 था ।

सूबेदार चेतराम का जन्म वर्ष 1934 में हुआ और मृत्यु 12 दिसंबर 1999 को हुई । जैसे मैं पहले भी लिख चुका हूँ आप गाँव के पहले व्यक्ति थे जिसने मीट्रिक (दसवीं) की परीक्षा पास की । यह एक गौरव की बात है । उस समय उर्दू भी पढाई जाती थी और अंग्रेजी तो पढाई जाती ही थी । आपने आठवीं कक्षा मित्रोल से पास की और दसवीं की कक्षा सरकारी हाई स्कूल पलवल से पास की ।आपको उर्दू और अंग्रेजी का अच्छा ज्ञान था । उर्दू का अखबार पढ़ते थे आप । आपकी शादी वर्ष 1950 को हुई, धर्म पत्नी का चम्पा देवी (पुत्री श्री प्यारे लाल ग्राम भिदुकी) था । चंपा देवी की मृत्यु 16 मई वर्ष 1995 को हुई ।

फ़ौज की नौकरी 7 दिसंबर वर्ष 1953 को प्रारम्भ की और 7 दिसंबर वर्ष 1985 को रिटायर हुए, इस प्रकार आपने 32 वर्ष देश की सेवा की । रिटायर होने से पूर्व आपको ऑनरेरी कैप्टन के पद दे कर सम्मानित किया गया । आर्मी सप्लाई कोर के ASC ट्रेनिंग सेंटर में प्रशिक्षण प्राप्त किया था । पहली पोस्टिंग अम्बाला हुई । और रिटायरमेंट दिल्ली से हुई ।

आप दो भाई (दूसरा भाई सुख देव महाशय जी - आर्य समाजी) हैं और एक बहन प्रेम वती है।

भजन

जग के पालनहार, शरण जगदीश तुम्हारी जय जय। - टेक
अगन गगन जल पवन पृथ्वी पांचों तत्व मिलाय।
हाड मांस की देह आपने कैसी दई बनाय।।
दे दिया चोला ! क्या अनमोला।
तूने किया मनुष्य को त्यार - शरण जगदीश तुम्हारी जय जय।

जब इंसान जगत में आया, किया बहुत अभिमान।
काम मद लोभ मोह में फंस गया वो अज्ञान।।
गया भूल सभी, तेरा नाम कभी,
ना लिया हाय करतार - शरण जगदीश तुम्हारी जय जय।

दुनिया एक मुसाफिर खाना बना दिया भगवान।
होता है इंसान यहां पर तो दिन का मेहमान।
जब कर्म फल, बस नहीं चलाई,
दिया छोड़ सकल संसार - शरण जगदीश तुम्हारी जय जय।

ऐसी शक्ति दे सच्चिदानंद जिससे मिटे कलेश।
तेरी भक्ति हम अज्ञानी करते रहें हमेश।
कह चेतराम, तेरा रहे नाम,
कर भवसागर से पार - शरण जगदीश तुम्हारी जय हो।।

रागनी.
(सीता की रावण को चेतावनी)

नजरिया मत मारै दाहेदार।
चुभै तेरे नैनन की तेज कटार।। टेक

लियो तैंनै कादिन कौ दायौ।
दगा ते मोहै हर लायौ।।
दिखावट कौ तेरौ झूठौ प्यार। (1)

सत्य पै नीयत है तेरी।
बात मैं ना मानु तेरी।।
धिंगी नौ चलसै अबकी बार। (2)

शान मेरे देवर की न्यारी।
पति मेरौ ज्यादा बलकारी।
ख़तम तेरौ कर दिंगे अत्याचार। (3)
बखत वो चेतराम आयौ।
राम नै रावण भैरायौ।
मची वा लंका में हाहाकार। (4)

डॉक्टर धर्म चंद विद्यालंकार

आज डॉक्टर विद्यालंकर का साहित्य लेखन के क्षेत्र में बहुत बड़ा योगदान है। डॉक्टर साहिब पलवल के एस डी कॉलेज से सेवानिवृत हिंदी के प्रोफेसर हैं। आज भी प्रतिदिन लेखन का काम करते हैं। 50 से अधिक पुस्तकें लिख चुके हैं | आपका विषय तो हिंदी रहा है परन्तु इतिहास में भी आपकी बहुत रूचि है A आपके द्वारा गद्य और पद्य दोनों क्षेत्रों में लेखन किया गया है और आज भी निरंतर लिख रहे हैं। अनेको पत्रिकाओं में प्राय : लिखते रहते हैं। आपके लेखन में अपना स्वयं का चिंतन है, अंधविश्वास से बहुत दूरियां है और मानवता का दर्द और समानता का बोध है A अपनी जाति जाट के प्रति पूर्णतय : समर्पित। आपने जाटों के ऊपर कई पुस्तकें लिखी हैं। डॉक्टर धर्म चंद विद्यालंकार के द्वारा लिखी गई कुछ ग़ज़लें निम्न प्रकार हैं।

डॉक्टर धर्मचंद विद्यालंकार - बीच में माला पहने हुए

कुछ ग़ज़लें

१०५. हुकूमत वे करेंगें हाकिमी का जिनमें हुनर है।

बन्दे तुझे यहाँ अब काहे का फिकर है,
हकूमत वे करेंगें हाकिमी का जिनमें हुनर है।
सियासत कहाँ सिर्फ मैनेजरी वो अब है,
बाँटने में माहिर जिसका बस जिगर है।
वायदों का टॉनिक वो जन को है पिलाती,
मजहब का घोले जो तो बस जहर है।
राष्ट्र की सुरक्षा का बस दे दो यां नारा,
जनता पै टूटे बेशक बेकारी का कहर है।
भय, भूख और गैर बराबरी बेकार की हैं बातें,

भले न आवे बिजली-पानी या नहर है।
मदमस्त करदो मजहब की घुट्टी पिलाके
बेदारी औ खुद्दारी का फिर आवै क्यों पहर है।
सोच-समझ तक को कुंद करदो तुम यहाँ,
तास्सुबी सुनाओ बस लोगों को तुम वहर है।
जनतंत्र को भी बदलो बेशक से भीड़ में यहाँ,
मचवा दो भले ही देश भर में ही गदर है।
लड़ाई-दंगों से ही तो वोटों की फसल फलती है,
तभी तो उबल रहा अब मेरा ये जो शहर है।
नफरत की नदियाँ बेशक तुम बहाओ,
दंगों की उठेंगी वहीं तो फिर लहर है।
हिन्दू-मुसलमां में बाँटों सारे ही तो जन को,
हकूमत जाएगी फिर सदियों तक ठहर है।
अपने हाथों में भीड़ भले कानून को भी ले ले,
फैले भले ही चाहे जितना मजहब का जहर है।
बेकारी औ गैरबराबरी तब होंगी हवा ही हवाई,
गरीबी औ अमीरी बस कुदरत की मेहर है।

------

६. देवता किसी को हम जब बनाते हैं।

किसी को देवता जब हम बनाते हैं।
देखो बस वहीं पर तो चूक जाते हैं।
देवता धरती पर कहाँ बसते हैं कहाँ,
तभी निद्वन्द्व वे हमको सुहाते हैं।
उपासना के ही उपकरण बस वे तो हैं याँ-
महज बस पूजे ही तो वे जाते हैं।
वे सिर्फ उपदेश या आदेश करते हैं यां,
आदर्श ही वे बस हमको सिखाते हैं।
आकाश दूर से ही तो सुन्दर लगता है यां,
मेघ ही वर्षा के हम वंशावली को तो सुहाते हैं।
देवता मनुज का सर्वस्व माँगे हैं यां-
बु(-विवेक तो उनको मानो चिढाते हैं। वंशावली
प्रस्तर-प्रतिमा बनाकर पूजते हम उनको यां,
पाषाणवत् जड़मति बन हम भी तो जाते हैं?
देवता अंधेरे आकाश में ही बसते हैं यां,
धरती से भला क्या उनके रिश्ते-नाते हैं।
आदमी को तो जमीं पै होता है बसना बस,

भले ही सपने उन्हें आसमां के लुभाते हैं।
देवता कब किस की याँ करते हैं रक्षा,
कब कष्ट में किसके भले वे काम आते हैं।
विमल विवेक जो मानव का है देख लो यहाँ,
हवा में वे उसको भी तो सदा ही उड़ाते हैं।
दिमागी दासता ही तो वे देते हैं हमको यां,
वो तो पराये आसरे रहना ही बस सिखाते हैं।

- o - o - o -

श्री दयाली राम बैरागी

हमारे गाँव के निवासी श्री दयाली राम जो बैरागी पंडित परिवार से थे, वे गाँव की संस्कृति के स्थानीय कवि भी थे। वे एक शिक्षित व्यक्ति नहीं थे, यहाँ तक कि उन्होंने ग्रामीण विचारों पर कविताएँ भी लिखीं। मैंने उनकी कुछ रचनाएँ एकत्र की हैं। उनकी रचनाओं को अन्य कलमों द्वारा लिखा गया था, जो ज्यादातर उनके बेटे द्वारा लिखी गई थीं।

ये अनपढ़ थे, कुछ लिख नहीं सकते थे और ना कुछ पढ़ सकते थे। इसी कारण इसकी कविताऐं छप नहीं सकी, जो भी इनकी कविताऐं है, यर बोलते गए और दूसरों से लिखवाते रहे। दूसरों ने कितना सही लिखा और कितना गलत लिखा ये तो लिखने वाला ही जानता है। अपनी ही कविताओं को खुद ये बैरागी पढ़ नहीं सकता। मृत्यु से कुछ माह पहले मैं इनके पास गया था। उनकी कविताओं के बारे में पूछा तो मुझे एक कपडे की पोटली दिखाई जिसमें बहुत सारे रद्दी कागज़ बांधें हुए थे। उसमें से मैंने उसकी कविताओं के बहुत सारे फटे हुए पन्ने ले लिए। पढ़े नहीं जा सके हैं अधिकांश। एक अच्छा कवि बन सकता था परन्तु गरीबी और पनपढ़ता ने दयाली राम को गुमनामी में खो दिया। अपने जीवन काल में भी लोगों ने उसका महत्त्व ही नहीं समझा। संभवत: निर्धनता और अशिक्षा व साथ में पारिवारिक जिम्मेदारी ने एक कवि को अपनी पहचान नहीं मिल सकी।

रसिया

टेक - हो है मतलब कौ यार, मरदूआ कभी काम ना आए।
बखत परै पै धोकौ दैज्या कैई बार आजमाए।

मर्द - छोडो मोहड़ो बात बड़ी, तू ऐब बता मरदन के।
निर्दोषी कें दोष लगावै, नौ मैंडे दर्दन की।

औरत - बनवास जब हुयो राम कैं, ही संग जनक दुलारी।
मिलते ही राजा राम नै, सीता घर ते बहार निकारी।

मर्द - पटरी जीब चलादी दम्मैं, तनक शरम नौ आई।

जितनी रार हुई दुनिया में राँडन नैं करवाई।

औरत - जुआ में हार गए पांडव, धरी दाव पै नारी।
भरी सभा में पतीबरता क्यों करवाई खुआरी।

मर्द - अगर द्रोपदी द्रयोधन ते ठट्टा ही नौ करती।
तौ यू महाभारत हूतौ नौ, ना यू दुनिया भर्ती।

औरत - एक नहीं परमान भुतेरे, अलग अलग बताऊँ।
बन के बीच दुमेंती छोड़ी, नल की कथा सुनाऊँ।

मर्द - दयाली राम गाँव गारेकौ कैसे ही सुरजेरो।
नौ मन सूत अरझैगौ भैया, सुरजा लियो भुतेरौ।

…xx…

भजन

टेक - बचियो रे लोगो बोहत जबर तूफ़ान।
इतने भगत हुए दुनिया में दुखी करयो इंसान।

कली (1)- आपौ तौ काबू में ना है पनमेश्वर कैं बांधे पाँव।
ले कें लाठी पीछें इनते फिरै डुबकतौ राम।
सवा की परसाधवोहै मेरे पूरन कर दै काम।
टाटा बिरला की सम्पत्ति मेरे ही घर में भरें तमाम।
तोर - अहरन की चोरी कर कैं ये करें सुई कौ दान।

कली (2) - कोई कह मंदिर में ईश्वर लम्बौ तिलक लगावै है।
हरे रामा हरे रामा झांझन नें बाजामें है।
तीन लोक का नाथ जो खीलन ते रिझामें।
दो औंगर की कत्तर लै कें राघव है सजामें हैं।
तोर - जाने सबरौ जगत रच दियौ, बहकामें सैतान बचयौ।

कली - (3) आर्य समाजी देखौ, कैसे बादर फार रहे।
आग फूस सगरे देश में पजार रहे।
बालकनें छाछ नहीं अग्नि में घी लार रहे। .
सबरे दिनयों वारे भैया काई ते जी हार रहे।
तोर - लै कें जनम फिरै धरती पै गधा बने इंसान।

….xx….

रामचंद्र

बदन सिंह चौहान

रामचंद्र ने भी अपनी कविताओं के माध्यम से आसपास के क्षेत्रों में अपना एक नाम स्थापित किया है और आपकी कविताएं, रसिया समयअभी एक इन का लिखा हुआ -समय पर अनेक आयोजनों में गाए जाते हैं। मैंने अभी- गीत यूट्यूब पर सुना है जो जाट आरक्षण के समारोह के में गाया गया था। जब आप छटवीं क्लासमें पढ़ते थे तभी से अपनी अलग शैली के गीत लिखा करते थे। शुरू शुरू में आप श्रृंगार रस पर बहुत ज्यादा लिखते थे । जब जब समय आगे बढ़ता गया तब तक आपने अपने रस बदले और वीर रस और धार्मिक आधार पर कविताएं लिखनी शुरू की। मेरी आप से मुलाकात हुई थी, उस समय मुझे बताया कि उसने पहले लगभग पुस्तिकाएं गीतावली की निकाली है 65 हां देना। परंतु अब वह उपलब्ध नहीं हो पा रही हैं। इस कारण पुरानी किताबों का उदाहरण व उनके छायाचित्र य मुश्किल हो रहा है। आप अभी पिछले हफ्ते मेरे पास आए थे। वर्तमान में जो लिख रहे हैं उसके प्रतीक रूप कुछ अंश आगे यहाँ दिए हुए हैं।

आपको महाकवि चौधरी रघुबीर सिंह का शिष्य कहा जा सकता है। उसी उसी के पद चिन्हों पर चलकर उन्होंने यह कविताएं सीखी है और प्रेरणा स्रोत हैं वे व कविताई शिक्षा भी उन्ही से ही प्राप्त की है। जब चौधरी रघुवीर सिंह अपनी चौफी कविताओं की तालीम लगाया करते थे अपनी बैठक में, शाम को बजे तक 10:00 से रात के 7:00 ला ग्रहण करते थे। और अपनी तब उस तालीम में रामचंद्र जी जाया करते थे और वहां से शिक्षा के रूप में यह क अलग पहचान बनाई।

आठवीं कक्षा तक शिक्षा लेने के पश्चात आपने अपने परिवार की जिम्मेदारी सम्भालना उचित समझा। आपके तीन पुत्र हैं। एक पौत्र IIT गोहाटी में पढ़ता है। यह भी हमारे गाँव के लिए गर्व की बात है। पहला लड़का है जो IIT में गया है। बधाई हो प्रिय राम चन्द्र जी। ईश्वर महिमा

रसिया – दहेज प्रथा

तर्ज - अभी उमर मेरी की 10 और 9
तोउ बलम तौपे ना …..
मौहै क्यों रह्यो लोभ दिखाय, मैं ना लुंगी कच्ची पाई।
इंनै उल्टे लै समधी , छोरा की व्है लई सगाई।
पंचन्नै पंचायत जोर कें ऐसी रीत निकारी है।
रूपिया एक मिलै छोरा है, एक ही दियौ सिरदारी है।
पंचन ना करी सुनाई, घर कै आयो सरम ना आई।
मौहै जो ग्यारह सौ दे है, मैं पंचन ते बडी बनाई।(1)
ना तौ मील चलै तेरी, ना कोई खत्ता पायौ।
बालक पार अरे बेहूदे, सै इतनों बौरायो।
सिर पै झझ रही महँगाई, कतई बिगर जायगौ अन्याई।
ढाबे ते भी भूल दबे नौ, भौहतन की ऐसी निकर आई।
बेटी दै दी तैनै अपनी और कहा ल्यू तोपे ते।
करियो मॉफ चौधरी कोई गलत निकर जाय मोपे ते। (2)
तू परबत और मैं हूँ राई, तौहै आगे ते रही जताई।

जपा सपा में मिलै सहारौ, असने की हो है असनाई।
एक चीज मांगू तोपै ते, घनी समझ या थोरी है।
बनाने काढ़ने में तौ,बनिया छोरी है।
घर धंधे में सुघराई, बोली चाली में निधनाई।
रामचंद भी करै जो देख देख कें बौहत बड़ाई। (3)-
………xx………

रजौला के कवि

चौधरी शिव लाल

अपने जमाने के भक्ति और वीर रस के लोक कवि थे चौधरी शिवलाल। हमारे नगरा राजौला के निवासी चौधरी साब की अपनी चौफ़ी की एक अलग मंडली रहती थी। नए युवाओं की टोली के साथ बड़े गाँव अल्लीका में अपनी चौफ़ी लाते थे। साध मोहल्ले में चौफ़ी का तखत बिछाते थे। क्योंकि रजौला का निकास इसी मोहाले में से हुआ है, इसी लिए अपनी बड़ी बाखर को सम्मान देने के लिए साध मोहल्ले में ही अपना संगीत का साज सज्जा बैलगाड़ी में रख कर लाते थे और चौफ़ी करते थे। पहले ककराली की चौफ़ी होती थी फिर उसी तक्त पर रजौला की चौफ़ी का आयोजन होता था। कविताएं लिखने के अतिरिक्त आप गाते भी थे और अपने सुरीले मीठी आवाज से दर्शकों का मन मोह लेते थे। हारमोनियम बजाने में महारत हासिल था, आपको। आपके नाम से सुनने आते थे लोग आपकी चौफ़ी में।

शिवलाल की रागनी:-

तर्ज – तेरे पूजन को भगवान …
टेक - मेरी बिनती सुन भगवान, ध्यान हम तेरौ ही धरते।
कली (1) - तेरी ऐसी अदभुत माया,
तैनै कैसे जगत रचाया।
तोर - तेरौ भेद कभी नौ पायौ, अपने मनमौजी करते।
मेरी बिनती सुन…….
कली (2) - तुम तो हरदम ऐसे ख्याली,
सबकी आप करौ रखवाली।
तोर - तेरे बिना हलै ना डुलै, सबके पेट को भरते।
मेरी बिनती सुन ……..

कली (3) - जापै ईश्वर पंजों धर दे,
वो राई को पर्वत कर दे।
तोर - सूखे हुए ताल को भर दे, नहीं कहीं परछाई परदे।
मेरी बिनती डन ……
कली (4) - तेरौ भेद मिल्यौ नहीं प्यारे,

बदन सिंह चौहान

ऋषि भूमि में पच पच कें हारे।
तोर - तू शिवलाल हरि गुण गा रे, सच्चो हेत कर हरते।
मेरी बिनती सुन ……

रागनी

टेक – तू भारत देश हमारौ है, सबते ऊंचे पैमाने में।
लरवईया ज्वान हरियाणे में।
कली (1) – सुन काल 72 की प्यारे,
ज्या दुश्मन के नकुआ झारे।
तोर – या है द्यौस दिखा दिए तारे, जब गोली लगी निशाने पै।
लरवईया ज्वान हरियाणे में।
कली (2) – बोय बीज महात्मा मरग्यो रे,
छाती पै पत्थर धरगौ रे।
तोर - पैदा तू बिसियर करगौ रे, चूकै नौ बैरी खाने में .
लरवईया ज्वान हरियाणे में।
कली (3) - मत दुश्मन कौ आंकीन करौ,
अपने मौकै पै वीर झरौ।
तोर – याके गलुबान्नै फेर धरौ, टीम5 रहौ क्षत्री बोने में;
लरवाईया ज्वान हरियाणे में ……
कली (4) – बंगला आजाद बनायो रे,
इंदिरा नै यू जस पायौ रे।
तोर – ऊंचो झंडा फैरायो रे, भारत के कोने कोने में।
लरवाईया ज्वान हरियाणे में।
कली (5) – जितने ये फौजी भाई रे,
भारत की शान बढ़ाई रे।
तोर – शिवलाल करै कविताई रे , त्याहरी लिख देगौ परवाने में।

जिले सिंह शास्त्री

जिले सिंह ने बहुत सुंदर ढंग से अपनी लेखनी से फागुन के मौसम में गाई जाने वाली चौफ़ी में गाने जाने वाली जिकरी व रागनी लिखी हैं। इनके पिता एवं गुरु का नाम शिव लाल था। आप हारमोनियम बजाने में अति विशेष वादन योग्यता रखते थे, बिलकुल अपने पिता गुरु चौधरी शिवलाल की तरह।

जिले सिंह (रजौला) की रागनी:-
तर्ज:- टपकी जाय जलेबी रस की ....
टेक - सब भैया ते अर्ज हमारी, जुरकै बैठी है सिरदारी;

बदन सिंह चौहान

जितनौ ज्ञान हमारे भीतर, सब हौ सुनने के अधिकारी।
कली - पहलै नाम हरी कौ सुमरौ, बहाव सागर ते तर जाएगौ;
दूजौ काम समझ कै कर ल्यौ, पार जिन्दगी कर जाएगौ। (1)
तोर - एक तौ झूठ कभी मत बोलौ, असल बात है सैट पै तौलौ;
बनकै कौमी कहीं मत डोलौ, यामें तेरी लाचारी, ... सब भैया ते ..
कली – खान दान की लाज राख़ लै, घर की घर में रह जाएगी;
ठाड़े पल्ला तुलन लगी तौ, हवा सवाई बह जाएगी। (2)
तोर – मत राखौ नियत चोरी की, बात गला सीना जोरी की;
प्रेम रूप गंदी डोरी की, कड़वी बेल होय है नारी ... सब भैया ते ...
कली – दरखत कौ जब पीन्ड घुन्यौ, देखौ पत्ता में कहा धरयौ
भीतर तेरें जंग लग्यौ, ऊपर लता में कहा धरयौ .। (3)
तोर – तैनें करी सफाई तन की, खोज करी नौ तैनें मन की;
आशा तौ है लग रही धन की, अंत रहै सूनी फुलवारी ...सब भैया ते ...
कली – दो चूहे तेरें पीछे लगे रहे, एक कारौ एक भूरी है;
बिना गुरु के देख जिले सिंह, तेरौ ज्ञान अधूरौ है। (4)
तोर – तेरौ हाथ लग्यौ है जस में, रम रहयौ नस नस में ;
काल बली तेरी गर्दिस में, छौड़ गयौ सब महल अटारी ... सब भैया ते

जिले सिंह (रजौला) की रागनी:-

टपकी जाय जलेबी रस की ....

टेक – क्यों राजा बचन नै हारै, कुल अपने की रीत बिगारे ;
पूरौ दान जभी मैं मौनूंगौ, सूल है चीर शेर कै लारे।
कली – राजा सोच फिकर में परगौ, नैन झुका लिए नीचे कै;
बेटा कह पिता जी सुनियो, मत ना हटिऔ पीछे कै। (1)
तोर – बेटा ऐसे बचन उचारै, आज पिता आँसू मत लारै;
देख धर्म के ऊपर, तारा साड़ी में ते कफन फारै।
..क्यों राजा बचन ...
कली - इतनी सुन कें बात, भूप तौ रौग्यौ है मन ही मन में;
हियौ देख लरिज रहगौ, जाकौ नीर बह आयौ नैनन में। (2)
तोर – कमिर भूप सुत की फटकारै, यू है कुल की रीत हमा रै;
मौपै नहीं डटयौ जायरौ है, जौलौ शेर तौय नौ मारै।
... क्यों राजा बचन .....
कली – हाथ ज़ोर कें कह शेर ते, क्यों नौ ज़िंदे है खा है;
जय सुन पावै मेरी माता, मर जाय चीर करेजा है। (3)
तोर – फिर माता सुत है पुचकारै, फल जाएगौ दौन हमारे;
आरे पै दो फार करौ तुम, धरती माता बोझ संभारे।

बदन सिंह चौहान

..... क्यों राजा बचन......

कली – कृष्ण जी नै रूप बदल लिऔ, जिनके दिल में मौनी है;
कह गुरु शिव लाल मोरध्वज सौ नौ पायौ दौनी है। (4)

तोर – कृष्ण जी ये बचन उचारै, धर्म कर्म ते जो नौ हारे;
कह जिले सिंह नेक कर्म ही मानिस के पूरे पारै।

... क्यों राजा बचन.....

हमारे गाँव के कवि एवं साहित्यकार

1- **चौधरी रघुबीर सिंह मुकदम** - बृज चौफी संस्कृति के कवि। सरपंच, लम्बरदार व इलाके के पंच भी थे।
2- चौधरी चन्दन सिंह मुकदम – लम्बरदार थे - भक्ति भाव पर कविताएं लिखते थे ।
3- चेत राम हवलदार - फ़ौज में में नौकरी की और कविताएं लिखी जो होली क्र समय चौफी में गए जाती थी।
4- डॉक्टर धर्म चंद विद्यालंकार - पी एच डी, डी लिट - प्रोफेसर, एस डी कॉलेज पलवल में - लेखक - 50 से अधिक पुस्तकें लिखी।
5- दयाली राम बैरागी - श्रृंगार रस पर कवितायेँ लिखी।
6- रामचंद्र - श्रृंगार रस पर कवितायेँ लिखी।
7- शिवलाल – राजौला का से ।
8- जिले सिंह राजौला का से ।

सरपंच व मुकदम

1 सरूप मुकदम - पुत्र पृथ्वी - चौक मोहल्ले से लंबरदार
2 राधे मुकदम - लम्बरदार - लगभग 20 वर्ष सरपंच रहे।
3 चंदी मुकदम - लम्बरदार।
4 गिरधर - सरपंच रहे।
5 गंगा लाल-पुत्रा रघुबीर सिंह - स्थानीय राजनीति में रुचि रखते थे - सरपंच थे।
6 अमीलाल - पुत्र धनमत - प्रथम श्रेणी आठवीं पास - सरपंच - अल्लीका में आर्य समाज के संस्थापक
7 किरण - पुत्र चंदन सिंह - दानिका मोहल्ला - मैट्रिकुलेट – सरपंच।
8 तोता - सरपंच - दानिका मोहल्ला से ।
9 चतरी सरपंच - पुत्र जीमन लाल - दानिका मोहल्ला।
10 बाबू राम - सरपंच - अनुसूचित जाती से - कोली समाज से।
11 महेंद्र - सरपंच - पुत्र धन सिंह - साधमोहल्ला से।
12 माया वती - सरपंच - कछारिया मोहल्ला से।
13 महिला - सरपंच - मोहर्राम के परिवार में से - दानिका मोहल्ला से।
14 धीर सिंह - सरपंच - पुत्र भरत - दानिका मोहल्ला से।

पुराने फौजी

1. पत राम पंडित - गॉव से पहला फौजी - 1947 से पहले।
2. हृदये पंडित - फौजी
3. उम्मेद सिंह - गनर हवलदार - साधपट्टी से - फौजी - आजाद हिंद फौज में थे।
4. शेर सिंह - भांडिया मोहल्ले से सेवानिवृत्त सेना - पाँचवीं कक्षा पास - कविताओं का पाठन- भक्ति चिंतन।
5. सरदार - पुत्र तेजी - मूसाका मोहल्ला से।

फ़ौज में ऑफ़िसर

1 कर्नल तारा चंद – यादु पुर नागरा से - सेना के पहले कमीशन अधिकारी बने।

2 कर्नल रवि - पुत्र अखे पटवारी - पुत्र बूचा - मोसाका मोहल्ला से।

…….xx……

गाँव के एक्स सर्विसमैन एसोसिएशन की सूची।

Ex Service Man Association – Date 26.01.2014					
S.N.	Army No.	Rank	नाम	Unit	Mobile No
1	JC 173379M	Sub Moj	भजन लाल चौहान	A.E.C	9324892461
2	JC 192368P	Hony Sub	जीत राम	GDR	805345058
3	JC 218872P	Sub	रघुनाथ सिंह	EME	8814862758
4	JC 270068H	Sub	चरण सिंह	ARTY	705037919
5	JC 301035F	Sub	बिजेंद्र सिंह	AD REG	881605560
6	15365025L	HAV	रंजीत सिंह	Signals	885752440
7	6927058H	HAV	जसवंत सिंह	AOC	
8	3170166W	HAV	चेतराम	JAT REG	9813446419
9	3122788	HAV	धन सिंह	JAT REG	
10	6721925L	HAV	उदय पाल	AOC	
11	77782522A	HAV	ओम प्रकाश	CMP	
12	14564641W	HAV	राम वीर	EME	
13	2870775	HAV	विक्रम सिंह	Raj Rif	
14	14908044	L/HAV	खुशाल	MECH	
15	15104751A	NK	बिजेंद्र सिंह	ARTY	9671454481
16	14259194L	NK	हरबीर सिंह	Signals	9671539425
17	15161416L	NK	नवल सिंह	ARTY	9613314205
18	14568010X	NK	भरत पाल	EME	9813364607
19	2861412	NK	परसु राम	Raj Rif	Expired in 2018
20	14422101X	NK	विजय पाल	ARTY	941617239
21	14345713M	HAV	चरण सिंह	ARTy	9671437205

22	14626116F	SUP	दिनेश		9671437205
23	3166707P	SUP	बीर सिंह		9991309431
24	2880179X	GDR	सुभाष		9991225811
25	14464465N	HAV	जय पाल		9671921108
26	2676491	GDR	राजन		9867023168
27	13697624L	HAV	करम चन्द	CDR	9728408065
28	2663113	NK	तेज सिंह	Raj Rif	48901507864
29	29811484	SEP	राज पाल	INF	8816940702
30	697380R	SGT	जग्गी	AF	8750052405
31	635316R	SGT	राम रतन	AF	
33	057403N	POME	रणधीर	Navy	9813340648
34	174161Y	POWTR	रोहतास	Navy	98962001203
35	053933A	LS	श्री चन्द	Navy	96715044144
36	164872K	POME	चरण सिंह	Navy	9582215826
37	14262203	HAV	संत राम	Signals	9253784825
38	2659678	HAv	छिद्दा	GDRS	9315804720
39	2659627	Cap	शिव सिंह	GDRS	
40	JC 722689P	Capt	भारत पाल	ADC	9448095337
41			श्री चन्द	NAVY	8199062544
42			उदय पाल सिंह		9996958582

गाँव में से एक जज बना –

1- माम चाँद - एडिशनल डिस्ट्रिक्ट जज - पुत्र राम चंद - पुत्र अमरा - अनुसूचित जाति (कोली समाज) से।

गाँव के वकील -

1 अमर सिंह - पुत्र शिब्बन पहलवान - मेरा पांचवें नंबर का भाई।
2 रविंद्र - उर्फ़ टीटू - पुत्र भीम सिंह (मेरे सबसे बड़े भाई) - दो बार - बार एसोसिएशन पलवल के प्रेजिडेंट बने।
3 अजय - पुत्र - मास्टर धन राज - साधमोहल्ला से।
4 चन्दर - पुत्र मास्टर बलबीर - साधमोहल्ला से।
5 राम वीर - उर्फ़ रामी (आंजरोन्दिया) - मूसाका मोहल्ला से।

धार्मिक समर्मण में लगे व्यक्ति -

1 भगवान सहाय - पंडित - एक अच्छे वैद्य थे - कछारिया मोहल्ला से।

बदन सिंह चौहान

2 भगवाना पंडित - भण्ड्या मोहहला से।

3 झम्मन पहलवान - पुत्र डल्लू - भांडिया मोहल्ला से - आठवीं पास एक पहलवान - आर्य समाजी - धार्मिक व्यक्ति - बुढ़ापे में एक साधु बन गए।

4 शेर सिंह - भांडिया मोहल्ले से सेवानिवृत्त सेना - पाँचवीं कक्षा पास - कविताओं का पाठ करने में रुचि - भक्ति चिंतन।

आर्य समाज

1- अमीलाल महाशय जी - पत्र धनमत - गाँव में आर्य समाज के संस्थापक।
2- श्यामी भगत महाशय जी - दानिका मोहल्ला।
3- किशन महाशय जी - पुत्र बदले - दानिकामोहह्ल्ला से।
4- सुख देव महाशय जी - पत्र राम चंद - साधमोहहला।
5- राज पाल महाशय जी - पुत्र अमीलाल महाशय जी - अमीलाल महाशय जी का पुत्र।
6- लाल चंद भंडिया से।
7- लाला राम भगत जी।

शिक्षा के क्षेत्र में

प्रोफेसर

1 डॉक्टर धरम चंद विद्यालंकार - पीएचडी और डी लिट इन हिंदी - एसडी कॉलेज पलवल में प्रोफेसर (रिटायर्ड)।

शिक्षक - प्रथम दौर के।

1. ओम प्रकाश शास्त्री (देव दत्त) - हिंदी के प्रथम शिक्षक – शास्त्री।
2. मास्टर भीम सिंह - दूसरे सत्र के लिए मैट्रिकुलेट - प्रथम शारीरिक शिक्षा शिक्षक - मेरे सबसे बड़े भाई ।
3. मास्टर बलबीर सिंह - दूसरे सत्र के लिए मैट्रिकुलेट तीय मैट्रिक - एक शिक्षक।
4. मास्टर रती राम - मूसाका मोहल्ला से
5. मास्टर कन्ही राम - पुत्र दीप चंद - दानी पट्टी - जेबीटी शिक्षक।
6. नत्थी मास्टर - दानी पट्टी से - जेबीटी शिक्षक।
7. नन्दन मास्टर – दानी पट्टी से।
8. मास्टर दिल सुख - पुत्र जीवन लाल - दानीका मोहल्ला से ।
9. तारा मास्टर - चौक से।
10. प्रेम प्रकाश पंडित - शास्त्री - ओम प्रकाश शास्त्री के छोटे भाई।
11. मास्टर हुकुम लाल - फौजी उमेद सिंह का भाई - साधमोहल्ला से।
12. ओम प्रकाश शास्त्री - पत्र हकला बौहरा - भण्ड्या मोहल्ला से

शिक्षक - दूसरे दौर के।

1. मास्टर - हुकुम लाल - साधमोहल्ला से।
2. मास्टर चरण सिंह - मेरे बड़े भाई।
3. मास्टर धन राज - साधमोहल्ला से ।

बदन सिंह चौहान

4. मास्टर ईश्वर - जीवन लाल के पुत्र - दानी पट्टी मास्टर से - बीए बी.एड. |
5. मास्टर नानक सिंह - पुत्र बिरखु - मोहल्ला मूसाका से।
6. श्याम अवतार पालीवाल

गाँव की राजनीति में –

1. राम चंद - हरिजन स्थानीय राजनेता - कांग्रेस पार्टी
2. सविता चौधरी - रतन सिंह की पत्नी - कचरिया मोहल्ला - एक राजनीतिज्ञ - कांग्रेस पार्टी से।
3. गोविंदा - पुत्र भगवान सहाय - मूसा मोहल्ला - 8 वीं कक्षा पास - स्थानीय ग्रामीण राजनीति में रुचि रखते थे।

पहलवानों की सूची –

1 धनमत पहलवान (उर्फ भुसरा) - नत्थन के पुत्र - पहलवानी के क्षेत्र में अग्रणी - वह अमीलाल महाशय जी के पिताजी हैं।
2 शिब्बन पहलवान - मेरे पिता जी - धनमत पहलवान के शिष्य - पहलवानी के क्षेत्र में अग्रणी।
3 डल्लू पहलवान - झम्मन पहलवान के पिता जी।
4 झम्मन पहलवान - पुत्र डल्लू - भांडिया मोहल्ला से - आठवीं पास एक पहलवान - आर्य समाजी - धार्मिक व्यक्ति - बुढ़ापे में एक साधु बन गए।
5 राम चंदी पहलवान - कच्छारिया मोहल्ला से।
6 सूरजमल पहलवान - यादु पुर नगरा से।

पटवारी –

1 अखे सिंह पटवारी - मुसाका मोहल्ले से - दसवीं पास 1960 में पास की, 6 महीने की पटवारी की ट्रेनिंग की रेवाड़ी में और उसके बाद पटवारी की नौकरी की। पुत्र है रवि जो कर्नल है आर्मी में।
2 भूपलाल - पुत्र भुक्कल - मूसाका मोहल्ला - 1959 में आठवीं पास की, 6 महीने की पटवारी की ट्रेनिंग की रेवाड़ी में और उसके बाद पटवारी की नौकरी की।
3 बुद्धि पटवारी – साध मोहहाला से।
4 ख्याली पटवारी - दानिकामोहहाला से।
5 राम दास पटवारी - बैरागी बैरागी से।

खेल के क्षेत्र में –

1. भगत सिंह चौहान - मुक्केबाजी में चैंपियन - कई राष्ट्रीय और राज्य स्तर के चैंपियन थे।
2. सुनीता कुंडू - पुत्री बीर सिंह - दानिका मोहल्ला से।
3. एक लड़का - सरूप के परिवार में से - दानी मोहल्ला से।

बैंक में सेवाएं-

1. अम्मी - पुत्र इंद्राज – दानिका मोहल्ला से - कोपरेटिव बैंक।
2. पुत्र देवी सिंह चौहान - पुत्र गंगा लाल पुत्र रघुबीर सिंह - पंजाब नेशनल बैंक - शाखा प्रबंधक
3. भीष्म पकाश - पंडित - पंजाब नेशनल बैंक - शाखा प्रबंधक।
4. चरण सिंह - पुत्र रामजी लाल (केवल के) – दानिका मोहल्ला से - पंजाब नेशनल बैंक

बदन सिंह चौहान

5. गंगा राम – साध मोहल्ला से।

अन्य सेवाओं के क्षेत्र में –

1. गंगा लाल - पुत्र राधे सरपंच - प्रथम डिप्लोमा इंजीनियर - दिल्ली में सेवा की -दिल्ली से उप मंडल अधिकारी के पद से रिटायर हुए।
2. बदन सिंह चौहान - अर्थशास्त्र में पहले एमए - महाप्रबंधक (मध्य प्रदेश पर्यटन निगम) के रूप में सेवा निवृत्त हुए।
3. डॉक्टर देव रतन चौहान - हिसार विश्वविद्यालय से कृषि में प्रथम पीएचडी - हरियाणा कृषि विभाग से एक वैज्ञानिक के रूप में रिटायर हुए।
4. खेम चंद - कचहरिया मोहल्ला से - सरकारी शुगर मिल पलवल में कार्यरत है।
5. डॉक्टर कांता चौहान (बेटी) पीएचडी। (प्राचीन इतिहास) - डिप्टी रजिस्ट्रार के रूप में कार्यरत है, (लाल बहादुर शास्त्री संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली - केंद्र सरकार विश्वविद्यालय)।
6. गजेंद्र मेहरा - (बेटा - जज मम चंद महरा - अनुसूचित जाति - कोली समाज) - कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय से कानून (एलएलएम) की मास्टर डिग्री - कार्यकारी अधिकारी लोकसभा सचिवालय (संसद भवन) के रूप में कार्यरत हैं।
7. डॉ. नेलु मेहरा - (बहु - जज मम चंद महरा - अनुसूचित जाति - कोली समाज) - पीएचडी कानून कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय से - इंद्रप्रस्थ विश्वविद्यालय द्वारका दिल्ली में कानून के सहायक प्रोफेसर के रूप में कार्यरत है।
8. निशांत मेहरा - (बेटा - जज मम चंद महरा -(अनुसूचित जाति - कोली समाज) - B.B.A, MBA, MA, LLB - लोकसभा के उप-संसदीय सचिव रूप में कार्यरत है।
9. डॉ. नीरू मेहरा – (बहु - जज मम चंद महरा - अनुसूचित जाति - कोली समाज) पीएचडी "प्रबंधन अध्ययन में - इंद्रप्रस्थ विश्वविद्यालय के कॉलेज में सहायक रूप में कार्यरत है।

गाँव के डॉक्टर –

1. विजय - पशु चिकत्सक - पुत्र गंगालाल - मूसाकामोहल्ला से
2. डॉक्टर अभिशेख कुंडू - चीन से MBBS किया और चीन में ही रहता है।
3. उसकी पत्नी भी - डॉक्टर है।
4. डॉक्टर तमन्ना – पुत्री वेदपाल - राज पाल की पौत्री - अमीलाल महाशय जी की परपौत्री - पहली लड़की - रूस से - एक मेडिकल डॉक्टर।
5. नितेश - पुत्र - बिक्रम - पुत्र गंगालाल - मूसाकामोहल्ला से -एम डी - जनरल मेडिसिन - राम मनोहर लोहिया अस्पताल में - सीनियर रेजिडेंट डॉक्टर
6. ज्योति - पुत्री - प्रताप - पुत्र गंगालाल – मूसाका मोहल्ला से -डॉक्टर - एम डी - स्त्री रोग विषेशज्ञ - सहरावत हॉस्पिटल की मालिक -
7. नाम ? डॉक्टर - पुत्र - खेम चंद - कछारिया मोहल्ला से।
8. नाम ? डॉक्टर - पुत्र - खेम चंद - कछारिया मोहल्ला से।
9. नाम ? डॉक्टर - पुत्री - देवी सिंह - कछारिया मोहल्ला से।
10. नाम ? - पुत्री - देवी सिंह - कछारिया मोहल्ला से।

बदन सिंह चौहान

11. नाम ? डॉक्टर - पुत्र वधु - खेम चंद - कछारिया मोहल्ला से।
12. नाम ? डॉक्टर - पुत्र वधु - खेम चंद - कछारिया मोहल्ला से।

अन्य व्यक्ति –

1. महाजन सालिग राम माहेश्वरी - गाँव और आसपास के क्षेत्र का एक महाजन।
2. जय नारायण व कन्हैया पालीवाल - दोनों भाई - इनका पाली जिला - राजस्थान से निकास है - महाजनी का काम करते थे - पहली आटे पीसने की चक्की लगाई गाँव में।
3. सुखी राम - पोंगा में से (सुखराम , बहाल सिंह , लिक्खी और सुखी राम चार भाई थे) - (किशन बीर बहाल सिंह का पोता है - और अमीचंद का पुत्र है।) - पाला की आडेट पर काम करते थे।

गाँव में - प्रथम –

1. प्रथम आठवीं पास - अमीलाल महाशय जी।
2. प्रथम दशवीं पास - चेत राम हवलदार
3. प्रथम बी ए - भजन लाल - दानी पट्टी से - प्रथम बीए - सेना में सेवा की।
4. प्रथम - जज - माम चंद मेहरा।
5. प्रथम - एल एल बी - माम चंद मेहरा। (प्रताप -पुत्र गंगालाल ने बताया कि वह स्वयं हैं - प्रथम LLB – 1981 में की है)
6. प्रथम वकील - अमर सिंह - मेरा भाई
7. प्रथम बीएससी व एमएससी (भौतिकी विज्ञानं) - देवी सिंह
8. प्रथम बीएससी व एमएससी (गणित) - भीष्म प्रकाश पंडित
9. प्रथम एम ए (अर्थशास्त्र) - बदन सिंह - मैं स्वयं।
10. शकुंतला - मेरी बहन –
    a. पहली लड़की - आठवीं,
    b. पहली लड़की - दसवीं
    c. पहली लड़की - हायर सेकण्ड्री
    d. पहली लड़की - कला और शिल्प में पहली लड़की शिक्षक।
11. एकता सिंह चौहान - मेरी पुत्री –
    a. पहली लड़की - पहली बीएससी - गाँव में।
    b. प्रथम - बीपीएड, - फरीदाबाद जिले में।
    c. प्रथम - एम पी एड - फरीदाबाद जिले में।
    d. प्रथम - एनएनसी कमिशन - फरीदाबाद जिले में।
    e. प्रथम – एन आई एस केरल से, फरीदाबाद जिले में।
    f. प्रथम शारीरिक शिक्षा शिक्षक – (एवं प्रमुख शारीरिक शिक्षा - मोदी यूनिवर्सिटी लक्षमण गढ़ (राजस्थान), झांसी, मुंबई, अम्बाला और गाँधी नगर - गुजरात) ।
13. पहली लड़की - मेडिकल डॉक्टर - डॉक्टर तमन्ना - पुत्री वेदपाल - राज पाल की पौत्री - अमीलाल महाशय जी की परपौत्री - पहली लड़की - रूस से - एक मेडिकल डॉक्टर।
12. कुणाल -पत्र कुलबीर पुत्र राम चंद - प्रथम IIT मकेनिकल ट्रेड में

बदन सिंह चौहान

1967 में – पहली बार बस में बारात गई थी – एक मेरे बड़े भाई चरण सिंह और मेरी (दोनों की एक ही दिन शादी हुई – पृथला से), गंगाराम साध पट्टी और तीसरी पुत्र पूरन – पुत्र दीपचन्द – साध मोहल्ला से।

हमारे गॉव के फौजी - हमारी शान

गॉव में रिटायर्ड फौजियों की एक एसोसिएशन भी है - एक्स सर्विस मैन एसोसिएशन के नाम से। आपस में समय समय पर मिलते रहते हैं ये लोग - वर्ष में दो बार तो जरूर मिलते हैं - 26 जनवरी और 15 अगस्त को। इन दोनों दिन शायं को इकट्ठे होते हैं और हँसते बोलते हैं - शराब जरूर पीते हैं। फ़ौज की संस्कृति मानते हैं शराब पीने को। शराब पीने के चलन को मैं समर्थन नहीं करता हूँ।- कई बार बल्कि हर बार मैंने इस बात को स्कूल के कार्यक्रम के समय पर अपने सम्बोधन में कहा भी है। सूबेदार जीत रात (जीता) से मैंने पूछा था कि आपकी एसोसिएशन क्या काम करती है और कौन कौन सा फौजियों का या समाज का काम करती है - तो उसने बताया कि काम तो कोई ख़ास नहीं कर रही है वर्तमान में - पलवल जिले की एक्स सर्विसमैन एसोसिएशन से जुडी हुई है। रिटायरमेंट के बाद फौजियों की सेवा से जुडी समस्यों के निराकरण के लिए काम करती है। यहां तक वित्तीय सहायता भी करती है। गॉव के स्तर भी सुधार व विकास कार्यो में यह एसोसिएशन बहुत काम कर सकती है।

अच्छे लोग हैं जितने भी फौजी हैं। और होंगे भी क्यों नहीं - देश की सेवा करके आएं हैं। हमें गर्व है इन सिपाईयों पर। आजादी से पहले के भी हमारे गॉव के लोग सेना में गए हैं - जिनमें पतराम पंडित (जो पहले फौजी थे गाँव के) हमारे गाँव के गौरव गनर हवालदार उमेद सिंह (आजाद हिन्द के सिपाई थे) हृदेय पंडित फौजी और हवालदार चेतराम - ये लोग हमारे गाँव की शान है। मैं सैल्यूट करता हूँ इन सभी को। हमें नाज़ है हमारे फौजियों पर। मैं चाहूंगा की इन लोगों की यह एसोसिएशन समाज कल्याण के कार्यों को अपने हाथ में ले। शराब पीने के विरुद्ध झगड़ा-हिंसा व अपराध जैसी सामाजिक बुराइयों के विरुद्ध एक युद्ध यहां भी लड़ा जाए। आपके साथ सारा गॉव आ जाएगा। गाँव वाले बहुत अच्छे हैं। इनसे प्यार से और सम्मान से मिलना होगा , अहम् से नहीं। मेरे फौजी मित्रों मैं आपके साथ हूँ - परन्तु हर अच्छे काम के लिए। मैं फिर से कहता हूँ - शराब पीने की परम्परा में मेरा समर्थन नहीं है।

मैंने देखा है पिछले वर्षों में कई फौजी हमारे युवक वर्ग को शारीरिक व्यायाम कराते हुए। हवलदार रंजीत सिंह गाँव के हायर सेकेंडरी स्कूल के मैदान में सुबह 5 बजे युवकों को शारीरिक मेहनत कराते थे सेना में भर्ती होने के लिए शरीर को उसी मापदंड रूप ढालने के लिए उनको प्रशिक्षण देते थे। अब मैं यह नहीं देख पा रहा हूँ इन लोगो को। ऑफीसर रंजीत सिंह फिर शुरू हो जाइए - इन युवको को आपकी ज़रूरत है।

सूबेदार जीतराम (जीता) की जीवन शैली तो एक उदहारण है। उसने गॉव में रह कर भी सुबह घूमना नहीं छोड़ा है और सायं को भी देखा है घूमते हुए। अपनी धर्मपत्नी को साथ लेते हैं हमेशा जब घूमने निकलते हैं। अधिकांश लोग पत्नी को साथ ले कर घूमने जाने को ले कर पीठ पीछे मजाक भी उड़ाते हैं। ऐसे लोगों को मैं क्या कहूं। शिक्षा की कमी ही कह सकते हैं ऐसे लोगों की। आप घूमिए इसी तरह ऑफीसर जीतराम जी, मेरा पूरा समर्थन आपके साथ। कुछ तो लोग कहेंगे। पैरों से चला नहीं जाता है ठीक से परन्तु अपना घूमना बंद नहीं किया है आपने। मोटर साइकिल सैकड़ों किलोमीटर चला कर ले जाते हैं, जी हाँ उनकी धर्म पत्नी जरूर रहेंगी साथ में - बहुत अच्छी बात है। मेरा आपको सैल्यूट - ऑफीसर जीतराम।

मेरा सुझाव है कि आप लोग खेल प्रतियोगिताए कराए समय समय पर, समाज कल्याण से जुडी की सेवा हेतु शिविर लगाएं, सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजन करें। और हमारे प्यारे ऑफीसर कर्नल रवि को बुलाएं ऐसे अवसरों पर। राजनैतिक नहीं बनाएं इन आयोजनों को। यदि किसी राजनेता को बुलाया जाएगा तो सारा आयोजन उस नेता खुश

करने और उसका सम्मान करने में ही केंद्रित हो कर रह जाएगा। लाभ उठाइए कर्नल रवि का जो हमेशा प्रतिभशाली बच्चों को प्रोत्साहित करते रहते हैं और अपनी और से हजारों रुपयों का इनाम दे कर जातें है इनको। आयोजन को किसी व्यक्ति निजी प्रोग्राम ना बनाएं - सभी को बुलाएं। सभी आपके साथ हैं

।

अमीलाल– महाशय जी

गांव का एक ऐसा व्यक्तित्व जिसने एक अलग हट कर अपना अलग ही स्थान बनाया है। बचपन में स्कूल के दिनों में एक मेधावी छात्र के रूप में उभर कर आते हुए आपने अपनी अलग जगह बनाई। अंग्रेजों के जमाने में उस समय 4रुपए प्रति माह वजीफा पाया, जो उसको अपनी पढ़ाई के दौरान वर्षों तक मिलता रहा। आपने आठवीं कक्षा पास की। गांव में स्कूल मात्र तीसरी क्लास तक ही पढाई होती थी, इसको प्री प्राइमरी कहते थे। और चौथी और पांचवी क्लास पास करने के लिए आपको धतीर गाँव जाना पड़ा, और छठी सातवीं आठवीं क्लास पास करने के लिए पृथला गाँव जाना पड़ा। पढ़ाई की सुविधा कम होने के बावजूद भी उस जमाने में उसने आठवीं कक्षा एक मेघावी छात्र के रूप में पास की और अपने गांव नाम रोशन किया। ऐसा था बचपन मेरे चाचा अमीलाल महाशय जी का। जी हां वह मेरे चाचा थे, वह मेरे पिताजी से छोटे भाई थे। वह मेरे पिताजी से आठ नौ वर्ष छोटे थे। चाचा अभी लाल के पिता जी का नाम धनमत था और मेरे पिताजी का नाम काले राम था, फिर भी वे दोनों भाई भाई थे, क्योंकि उन दोनों की माता जी एक थी - मेरी दादी जी थी वे। मेरे पिताजी के पिताजी (मेरे दादा जी) श्री काले राम के देहांत के बाद मेरी दादी जी ने अमीलाल के पिताजी से शादी कर ली। उस समय मेरे पिता जी बहुत ही छोटे थे। धनमत का अमीलाल पुत्र हुआ। इस तरह मेरे पिताजी और अभी लाल की माताजी एक है परंतु पिता अलग-अलग है और वह दोनों भाई भाई ही तो है। पढ़ाई के बाद अब लाल जी ने कोई सरकारी नौकरी करने के लिए बिल्कुल भी नहीं सोचा। उसने सोचा कि मैं अपने घर पर रह कर ही अपनी पुश्तैनी जमीन जायदाद को ही संभाला जाए। और अपनी आर्थिक स्थिति को मजबूत करने के लिए उसने खेती करना पसंद किया और खेती भी की तो बहुत ही मजबूती से की। यह भी एक उदाहरण है। जब खेती करते थे तो वे गांव में प्रथम ही रहे कृषि उत्पादन में। हर एक एकड़ से ज्यादा से फसल पैदा की। खाद पानी जो भी जरूरत होती थी उसको पूरा किया। पढ़े लिखे थे वे, जानते थे कि एक जमीन से किस तरह उत्पादन लिया जा सकता है और ज्यादा लिया जा सकता है। कैसे कैसे खेती से अच्छी फसल ली जा सकती है, ये सब प्रयोग अमीलाल जी ने किए।

आइए अब मैं उनकी जीवन यात्रा को आगे की ओर ले जाता हूं। आर्य समाज की स्थापना की गांव में। लोगों को जोड़ा, उसने झम्मन पहलवान को साथ लिया, उसने सुखदेव को लिया, श्यामी भगत को साथ लिया (अमीलाल और श्यामी भगत बचपन के साथी थे - स्कूल में पढ़ते भी साथ थे) उस समय अखे पटवारी भी साथ आए (परंतु बाद में वह गाँव से बाहर चले गए तो आर्य समाज से भी दूर हो गए)। यह 1970 के दशक की बात है। आर्य

समाज की स्थापना करके उन्होंने समाज में बहुत अच्छे-अच्छे संदेश दिए ।उनके संदेशों में कहा गया कि शराब मत पियो, चाय मत पियो, झूठ मत बोलो, एक दूसरे से भाईचारा रखो, वेद का पाठन करो, हवन करो झूट मत बोलो - यह संदेश थे। मुझे याद है - दीवारों पर भी ये नारे लिखवाए गए थे। लोगों ने उनका अनुसरण भी किया था। मगर समाज एक ऐसा होता है उसमें पूर्ण रूप से अनुसरण होना संभव नहीं हो पाता है। पूरा जीवन आर्य समाज का पालन किया और महाशय कहलाए। आज की आर्य समाज की विरासत उस के पुत्र राज्यपाल संभाले हुए हैं।

आर्य समाज का काम बड़े जोरों पर था। हमारे इस इलाके में आर्य समाज अब राजनीति में भी आने लगा। मुझे याद है स्वामी रामानंद को आर्य समाज ने एमएलए के लिए खड़ा किया और उसमें मैं विजय प्राप्त की। लोगों को लेकर अमीलाल जी ने बहुत प्रचार किया, बहुत काम किया रामानंद को जिताने के लिए। अब वो राजनीति में रुचि लेने लगे थे। रामानंद के बाद आर्य समाज ने अलावलपुर गांव के श्यामलाल को खड़ा किया और वह विजयी हुए। गांव में आपके घर आर्य समाज के बड़े बड़े लोग आने लगे जैसे स्वामी अग्निवेश, स्वामी इंद्रवेश और अनेक आर्य समाजी लोग आपके घर आने लगे। इन लोगों को अपने घर बुलाकर, भोजन कराकर और स्वागत करने के पश्चात आपको बहुत खुशी मिलती थी।

इसी समयावधि में एक बार 1975 के आसपास चंडीगढ़ गए, दो-तीन लोग और भी थे और मैं भी उनके साथ था। रात में चल कर सुबह हम लोग एमएलए हॉस्टल में स्वामी अग्निवेश के कमरे में हम लोग ठहरे थे। मैंने देखा कि स्वामी जी फर्श पर गद्दा बिछा कर लेते हुए हैं रात को फर्श पर ही सोये थे। स्वामी जी ने बताया कि चारपाई / बेड उसके लिए वर्जित है। उस समय स्वामी अग्निवेश MLA थे। हम लोग रात की बस में पलवल से दिल्ली कश्मीरी गेट बस स्टैंड तक गए, कश्मीरी गेट से चंडीगढ़ के लिए अलग से बस ली थी और सुबह-सुबह चंडीगढ़ पहुंच गए थे और सुबह ही एमएलए हॉस्टल पहुंच गए थे। दिनभर अपना काम निपटा कर हम लोग चंडीगढ़ के बस स्टैंड पर आ गए। मैंने चाचा से कहा कि 'मैं तो रात को आज यही चंडीगढ़ में अपने मित्र के पास में ठहरूंगा, आप लोग वापस जाए, मैं कल आऊंगा'। मैं बस स्टैंड पर उन लोगों को छोड़ कर अपने मित्र सूबे सिंह के घर चला गया। रात को 11:00 बजे की बस को पकड़ने के लिए टिकट लेनी है। अब यहां एक अजीब घटना घटती है 10:30 और 10:45 के बीच में चाचा बस की टिकट रेलवे के लिए बस टिकट काउंटर पर जाने के लिए धीरे धीरे चलते हैं। उसने देखा कि फर्श पर कुछ एक नोटों की गड्डी पड़ी हुई है। उसने उसको उठाया वह हैरान रह गए कि यह तो नोट हैं, थोड़ा आगे बढ़े तो उनको और दूसरे नोट की गड्डी मिली, फिर आगे चले तो फिर और नोटों की गड्डी मिली और फिर आगे बढ़े इस तरह उनको खाने कई नोटों की गड्डी मिली और उसने उनको उठाकर अपने बैग में रख लिया। अब सोचने लगे कि आप क्या करें। आगे वह बस स्टैंड पर डिपो के ऑफिस में गए। वहां बैठे हुए कर्मचारी से कहा कि उनको कुछ हजार रुपए मिले हैं - यह सूचना नोट कर ले और अपना पता दे आए, जिस किसी के ये नोट हो तो वह सब संपर्क कर सकते हैं। रात में आप लोग 11:00 बजे की बस से वे सभी लोग दिल्ली आ गए। दिल्ली आकर अखबार में निकलवा दिया कि 'मुझे कुछ हजार नोट मिले हैं चंडीगढ़ के बस स्टैंड पर, रात को 11:30 बजे 10:45 बजे के बीच में, जिस किसी के भी हो मुझसे संपर्क कर सकते हैं'। मुझे याद है दूर-दूर से लोग आते थे, वह हमारी बैठक में आते थे, सीधे अपना परिचय देते, अपनी बात बताते हैं थे। मैं भी वहां बैठा रहता था। चाचा उनसे सवाल करते कि नोटों की निशानी बताइए अपने नोटों की, कितने कितने के नोट थे। परन्तु जितने भी लोग आए उनमें से कोई भी चाचा आर्मी लाल के अनुसार उनके बताए हुए नोटों की पहचान सही नहीं बता सके थे और वे सभी लोग वापस चले गए। यह सिलसिला आने जाने का गभलग 6 महीने तक चला। कोई भी रुपयों की पहचान ठीक से नहीं बता सका जो चाचा अमीलाल को मिले थे। कितने रुपए थे व कैसे कैसे नोट थे आज तक अमीलाल के सिवा कोई नहीं जान सका। यह रहस्य उनकी

मृत्यु के साथ ही यह रहस्य भी साथ में चला गया। उसके पुत्र डॉक्टर देव रतन का कहना है उसके पिताजी कभी नहीं बताया कि कितना पैसा मिला था चंडीगढ़ बस स्टैंड पर। अमीलाल जी ने अपने साथी आर्य समाज के लोगों से बात की। सलाह ली कि इन पैसों का क्या किया जाए। सलाह अनुसार उसने इनमें से कुछ पैसा गदपुरी के आश्रम की पाठशाला में दे दिया है। देव रतन उसके पुत्र का कहना है कि उन पैसों को उसके पिताजी ने स्कूल की बिल्डिंग बनाने में लगा दिया।

आप राजनीति में तो आ ही चुके थे। अब आपने गॉंव का सरपंच का चुनाव लड़ा और विजयी हुए। सरपंची के चुनाव में राधे को हराया था। बड़े बड़े फैसले लिए। रास्ते जो राह खेतों के लिए जातें है उनको सही माप करके उनको चौड़ा कराया जिन्होंने राह दबा रखी वे छुड़वाए। रास्तों में जो झुण्ड सरकंडो के थे मेंड़ों पर कटवा कर पंचायत के कब्जे में लिए। यदि आधा मेंड़ भी दबा रखा है किसी ने तो वह आधा आधा कर खेत मालिक का हिस्सा छोड़ दिया गया। लॉगिन ने साथ भी दिया , मुझे तो याद नहीं परन्तु देव रतन बताते हैं कि गॉंव की घेरी - फिरकी और अंदर रास्ते में जिन्होंने गालियां दबा रखी थी चबूतरे बना रखे हैं उन सबको तुड़वा दिया था।

देव रतन ने मुझे बताया कि -

- "जब आप गॉंव के सरपंच थे तो आपने पटवारी से सारे गॉंव की गलियों की पैमाइस (माप) कराई। जिसने भी रास्ते में चबूतरे बना रखे थे सबको तुड़वा दिए थे।
- अब अभियान चलाया गॉंव के खेतों के रास्तों का। जिसने भी रास्तों में खेत बढ़ा रखे थे वे सभी छुड़वाए। सभी पैमाइस (माप) की पटवारी से करा कर खेतों के रास्तों को चौड़ा करवाया।
- गणित के वे आर्यभट्ट थे। गणित का उनका ज्ञान कमाल का था।
- पटवारी गिरी का उसको पूरा कार्य आता था। गॉंव जमीन की एक एक इंच का उसको पूरा ज्ञान था।
- करन दलाल MLA एक बार उसको कहा था कि उसको गॉंव की वोट नहीं चाहिए महाशय अमीलाल जी मेरे साथ आ जाएं क्योंक जो डमी 40 गॉंव का उप प्रधान हो उसको कौन नहीं चाहेगा अपने साथ। परन्तु वे दलाल के साथ नहीं जा कर सुभाष कतियाल के साथ गए।
- पिता जी को एक बार चंडीगढ़ में रुपयों की थैली मिली। वे आर्य समाज के सम्मलेन में भाग लेने गए थे। वे सारे पैसे स्कूल की बिल्डिंग बनाने में लगा दिए। और कभी हमें नहीं बताया कि कितने पैसे थे।
- स्कूल के लिए आई सीमेंट का ट्रक खुद अकेले ने खाली किया। क्योंकि रात हो चली थी और बूंदाबूंदी हो रही थी। सारी सीमेंट खराब हो जाती।

ये उपरोक्त कथन देव रतन का है।

अब मैं करूँगा अमीलाल जी की एक अनोखी कला की। वह है मौचा (एक प्रकार की बड़ी चारपाई होती है।) की बुनाई। वे मौका बुनते थी , बेमिशाल थी उनकी यह कला। उनकी यह कला पूरे इलाके में प्रथम स्थान पर कह

सकते है। आज भी उपलब्ध हैं उनकी बुनी हुई कला के नमूने। चौपाल के लिए मौचे बुने, अपने लिए और दूसरों के लिए भी। आज इस कला को सके पुत्र राजपाल आगे बढ़ा रहे हैं।

दिनांक मई 01, 2020

उम्मेद सिंह – गाँव का गौरव

(जन्म 26 अप्रैल 1925 -

आजाद हिंद का वह सिपाई – जिसको हमने भुला सा दिया है। कोई याद नहीं करता आज उनको। नेताओं को याद करेंगे। मैं अपने गाँव की बात कर रहा हूँ इस पुस्तक में। लोग याद करते है - सरपंच को, मास्टर को, पटवारी को। जज को, इंजीनियर को याद करेंगें। कोई विदेश चला गया तो बार बार याद कर के गर्व महसूस करेंगे उसके घर वाले। जिसने खूब पैसा कमाया है चाहे कैसे भी कमाया हो, लोग तारीफ करेंगे। अपराध करने वालों को, गुंडों को इन सब को आए दिन याद करेंगे लोग। हमारे इस नायक को कभी कभार ही किसी ने याद किया हो। मुझे नहीं लगता। कहां भुला दिया उसको जिसने दूसरे विश्वयुद्ध के समय मेरे भारत की उस आजाद हिंद फौज में भर्ती हो कर, जिसको सुभाष चंद्र बोस ने बनाया था और अंग्रेजों के खिलाफ युद्ध करके उनको नाकों चने चबाने पर मजबूर कर दिया, उस समय हमारे गाँव के इस महान सपूत ने भी विदेशों में अंगेजों के विरुध्द लड़ाई लड़ी। यातना झेली उस समय- वह भी विदेशों में। उसको कैसे भूल गया मेरा गावँ, क्यों नहीं याद करता कोई आज उनको ….?

आपके बारे में मुझे भी ज्यादा जानकारी नहीं थी। परसों 29 को मेरे मित्र डॉक्टर विद्यालंकार मुझे उनके परिवार के घर 2020 अप्रैल ले गए। उनसे बात की और फिरपरिवार वालों ने वे सभी अभिलेख दिखाए जो हमारे इस नायक से जुड़ी हुईं थीं। मेरी खुशी का ठिकाना नहीं रहा जब उस पोटली में जिसमें ये सब कागज रखे हुए थे, उसमें से अनेकों मैडल दिखाई दिए। धूल खा रहे थे ये मेडल और सभी कागज, फटे हए हैं।

स्व॰ श्री उमेद सिंह हिन्द फौज सेनानी

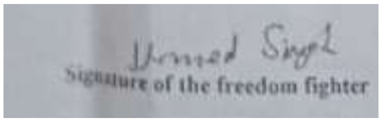

हमारे साधमोहल्ले के ग्यासी के पुत्र थे उम्मीद सिंह जी। आपकी शादी 15 अगस्त 1940 को हुई। पत्नी का नाम श्रीमती जगबीरी है) जिसका जन्म 18 अप्रैल 1927 और मृत्यु 15 अक्टूबर 1950 हो गई)। जगबीरी मेरी माता जी (मामकौर) की छोटी

बहन थी। ताहरपुर (उत्तर प्रदेश - तहसील खेर, जिला अलीगढ) में उदय सिंह की पुत्री थी।

यह नौजवान) वर्ष की आयु में 18उस समय उनकी लंबाई इंच थी 8 फुट और 5, छाती सामान्य इंच 38 81.6" पोंड 180 इंच थी व उस समय उनका वजन 40 और फुला कर किलोग्राम" था – यह उसके सेवा रिकॉर्ड में लिखा हुआ है(। शिक्षा में वर्ष की उम्र में आपने रैंक गनर हवलदार के रूप 18 को 1941 अक्टूबर 8 वीं पास थे ।7, जिसका नंबर 51293GHR था, हांगकांग में सिंगापुर रॉयल आर्मी फौज में जॉइन किया और 27.04.1946 तक सेवा की । इस युवक ने आजाद हिंद फौज में नौ सितंबर सन को प्रवेश 1942– जॉइन किया। और यह फौज अंग्रेजों के विरुद्ध तैयार की गई थी नेता जी सुभाष चंद्र बोस के द्वारा। और इस ब्रिगेड का नाम था – नंबर गांधी ब्रिगेड। और 2 इस ब्रिगेड के कमांडर थे – ब्रिगेडियर एम जेड केनी। जिन जिन मोर्चों पर यह नायक रहा और दुश्मनों से लोहा लिया वे हैं – मलाया, थाईलैंड, बर्मा व आसाम।

कितने ही तगमे इस सेनानी ने लिए - देश का गौरव है। और मेरे गांव का रत्न रत्न हैं गनर हवलदार उमेद सिंह - मैं सैल्यूट करता हूँ उनको ।

दूसरा विश्वयुद्द समाप्त होने के बाद में मलाया से भारत लौटे। अपने साथियों के साथ पंजाब के मुल्तान की केंद्रीय कारागार में रखा गया। उसके बाद पूछताछ के लिए बंगाल के जिगरगच्छा स्थान पर लाया आया। पूछताछ के बाद घर जाने का आदेश दिया गया। परन्तु डिस्चार्ज सर्टिफिकेट नहीं दिया गया। और अंत तक वर्षों वर्षों तक उस डिस्चार्ज सर्टिफिकेट के चिट्ठियां लिखते रहे। उनसे कागजों में मिला है की उसने वर्ष 1991 में ही चिट्ठी लिखी है। अब महसूस कीजिए कितना सहना पड़ता है नौकरी के बाद।

स्वतंत्रता के 25 वर्ष के पूर्ण होने के अवसर पर स्वतंत्रता संग्राम में स्मरणीय योगदान के लिए राष्ट्र की और से तत्कालीन प्रधान मंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने ताम्र पात्र भेंट किया - 15 अगस्त 1972 को।

"तुम मुझे खून दो मैं तुझे आजादी दूंगा" - नेता जी सुभाष चंद का यह नारा आजादी के बाद कई दशकों तक जन जन की जुबान होता था। आज भूल चुके हैं लोग - आज की पीढी को शायद पता ही यहीं हो। अक्टूबर 1997 में नेताजी के जन्म शताब्दी समारोह के सन्दर्भ में स्वतन्त्रता संग्राम सक्रिय भाग लेने के उपलक्ष्य में हरियाणा सरकार की ओर से तत्कालीन मुख्य मंत्री चौधरी बंसी लाल ने हवलदार उमेद सिंह को ताम्र पत्र दे कर सम्मानित किया। इस तंत्र पत्र की छाया प्रति आगे दी गई है।

इस महानायक की याद में कुछ तो करें हम लोग। कम से कम पंचायत की ओर से उनकी एक मूर्ति स्थापित की जा सकती है। बहीन गाँव में जैसे कान्हा रावत की मूर्ति रावत पाल ने बड़े धूम धाम से स्थापित की है, वैसे ही हम हवलदार उमेद सिंह की याद में भी उनको श्रद्धांजलि अर्पित कर सकते हैं। पंचायत को करना चाहिए यह काम।

उनकी याद में वर्ष में एक बार कुछ आयोजन करना चाहिए जैसे अगस्त को कोई खेल 15 जनवरी और 26 अगस्त को हमारे स्कूल 15 जनवरी और 26 आयोजन कर उमेद ट्रॉफी दी जा सकती है। आज की हालत यह है कि मे◌ं आयोजन होता है तो इस गाँव की लगभग की आबादी में से चार पांच लोग ही पहुंचते हैं। कुछ लोग 7000 कहते हैं उनको निमंत्रण नहीं दिया। अब आप ही निर्णय करें ऐसे राष्ट्रीय पर्व पर कोई निमंत्रण की आवश्यकता होती है ? यदि कहीं भंडारा होगा, भागवत कथा में जोर जोर से माइक पर भक्ति गीत सुनाए जाएंगे वहां लोग बिना बुलाए पहुंच जाते हैं, और पहुंचना भी चाहिए। में तो यहां अपील करता हूँ कि हमारे दोनों राष्ट्रीय पर्वों पर गाँव वालों को पहुंचना चाहिए। यह उन सभी आजादी के दीवानों के लिए सच्ची श्रद्धांजलि है। मैं तो पिछले वर्ष स 6◌े निरंतर देख रहा हूँ – गाँव वाले नहीं आते हैं। कहीं राजनैतिक उद्देश्य होगा तो बिना बुलाए भीड़ इकट्ठी हो जाती है। मैं किसी की आलोचना नहीं कर रहा हूँ, अपितु अपील के रूप में निवेदन कर रहा हूँ। मेरे गाँव में 30 से ज्यादा रिटायर्ड फौजी हैं , उनको आना चाहिए इन दोनों राष्ट्रीय पर्व पर , परन्तु लोग नहीं ते हैं , कभी कभार एक दो फौजी पहुँच भी जाते हैं। इन फौजियों की एक एसोसिएशन है - एक्स सर्विसमैन एसोसिएशन के नाम से। इन दोनों दिन ये सायं को इकट्ठे होते हैं और ख़ुशी मनाते हैं जिसमें मदिरा का सेवन किया जाता है। एक बहुत अच्छी बात है यह इकट्ठा होना। परन्तु मदिरा का सेवन का मैं समर्थन नहीं करता हूँ। इन दोनों राष्ट्रीय पर्व के आयोजन के समय अपने संबोधन में में हर बार अपील करता हूँ कि गाँव वाले ज्यादा से ज्यादा संख्या में लोग आएं और उन सबको याद करें जिन्होंने इस देश के लिए कुर्बानियाँ दी है, यातनाएं सही है। उनमें से गनर हवलदार उमेद सिंह हमारे ही गाँव के हैं। कोटि कोटि नमन उनको। मेरे गाँव का गौरव ।

जय हिन्द।

कर्नल तारा चंद

हमारे गाँव के नगरा यादुपुर के रहने वाले थे कर्नल ताराचंद - आपके के पिता जी का नाम जाहरिया था। हमारे इलाके की शान थे। वह पहले सेना के ऑफिसर थे जो हमारे क्षेत्र से इतने बड़े ऑफिसर कर्नल बने। हमें नाज़ है उन पर और बड़े ही गर्व से हम सभी क्षेत्र वाले उनका स्मरण करते हैं।

बाएं से - कर्नल ताराचंद सफ़ेद बालों वाले गिरधर पगड़ी वाले, चेत राम सामने करन दलाल

के बारे में डॉक्टर धर्मचंद विद्यालंकार बताते हैं कि मेरी कर्नल साहब से मुलाकात हुई थी मैंने उनसे बहुत कुछ बातें की और बहुत कुछ जानकारियां प्राप्त की। वह आगे बताते हैं कि जब मैंने कर्नल ताराचंद को पूछा की अपने बारे में कुछ बताएं और कोई खास अपना अनुभव हमें बताएं तो उन्होंने कहा इसमें एक कहानी है जो कर्नल ताराचंद ने बताई। कहानी इस प्रकार है कि एक बार सर छोटू राम हमारे पड़ोस के

गांव धतीर में आने वाले थे और वहां पर भाषण देने वाले थे । गांव के लोगों ने और आसपास के बड़े-बड़े लोगों ने सोचा की ऐसा कोई पढ़ा लिखा लड़का तलाश करो जो अंग्रेजी जानता हो। वह लड़का अंग्रेजी में भाषण लिखे और उसको सर छोटू राम के सामने पढ़कर हमारी मांगे प्रस्तुत करें। उन्होंने सोचा कि अंग्रेजी में भाषण कोई हमारी ओर से करेगा और हमारी मांगे रखेगा तो उसका असर छोटूराम के ऊपर अच्छा रहेगा। लोगों ने ऐसा पढ़ा लिखा तलाश करना शुरू किया और हमारे क्षेत्र से ही कोई ऐसा लड़का हो ऐसा प्रयास करना प्रारंभ किया । अंत में किसी ने बताया यादों पुर गांव में एक लड़का है जो पढ़ा लिखा है और अंग्रेजी भी जानता है । किसी को यादों पर भेजा गया और पूछा गया कि कोई लड़का ताराचंद नाम का है अनु कहां है । उसको बताया गया कि वह लड़का ताराचंद तो अपने खेतों पर काम कर रहा है । वह आदमी ताराचंद को देखने के लिए उसको खेत पर ही पहुंचा और देखा कि वह एक नौजवान लड़का खेत पर काम कर रहा है । उस आदमी ने सारी बातें ताराचंद को बताई । अपने पिताजी से अनुमति लेकर वह लड़का जाने के लिए तैयार हो गया । उसने जो एक लड़का अभी हाई स्कूल में ही पढ़ रहा था अंग्रेजी में भाषण तैयार किया लोगों से पूछा की क्या-क्या मांग रखनी है गांव के इलाके की ओर से उसने वह सारी बातें अपने भाषण में सम्मिलित की। किस दिन सर छोटू राम दतिया गांव में आए और सभा का आयोजन किया गया । सभा के मंच पर गांव की ओर से अपनी मांग रखने के लिए गांव वालों ने उस लड़के को स्टेज पर भेजा और अपना भाषण पढ़ने के लिए कहा। उस युवक ने अपना भाषण पढ़ना शुरू किया सब लोग आश्चर्यचकित रह गए कि काम का एक लड़का अंग्रेजी बोल रहा है । सर छोटूराम ने उसके भाषण को बहुत ही ध्यान से सुना और बहुत ही प्रसन्न हुए कि गांव के लड़के अंग्रेजी पढ़ रहे हैं । प्रसन्न होकर सर छोटू राम ने उस लड़के को अपने पास बुलाया और उसके सिर पर हाथ रखा और आशीर्वाद दिया । उसको नगद इनाम भी दिया गया । आगे की पढ़ाई का खर्चा सर छोटूराम ने उठाया।

पढ़ाई करने के पश्चात वह सेना में भर्ती हो गए । और आगे चल कर कर्नल के पद पर पहुंचे। हमारे क्षेत्र का और हमारे गाँव का नाम रोशन किया ।

कर्नल रवि चौहान

आप हमारे गांव के अनुसार पट्टी के निवासी हैं आपके पिता का नाम अखिलेश सिंह है दादाजी का नाम बूचा है और परदादा का नाम चौधरी बीरबल उर्फ)– घूरमल (है । आप सेना में कर्नल के पद पर तैनात है| रवि का जन्म चार सितम्बर 1969 को हुआ । रवि चौहान से आज दिनांक को जानकारी प्राप्त हुई जो उसने अपने बारे में बताया वह इस प्रकार है :-

उनके अपने शब्दों में -

“My family left Delhi in 1985 . I was studying in class 10 in village school but I didn't check my results for class 10. Someone told my father that I had failed in class 10 Bhiwani Board exams. But I am not sure. In 1985 , my father got me admitted to Rotary Public School in Gurgaon , sector 17. I passed my 10 class from there in full English medium school despite having studied in Hindi Medium village school. It was quite appreciated . I passed my 12 class from CSKM public school Delhi in humanities in 1988 with good percentage of 72 percent for those times. There after ,I took admission in Political science Honours in Sri Venkateswara College Delhi University and passed out in 1991. In 1991 itself ,I also took admission in Law faculty of Delhi University for a 3 year LLB course.

I cleared my Combined Defence Services examination in 1991 itself and cleared Staff Selection Board interview in first attempt and joined Indian Military Academy in Jan 1992. I was commissioned in Rajputana Rifles in 1993. After commission , now I have completed about 26 years of service. Highlights of my career are that I have served as ADC to Governor , commanded a rifle company in Operation Rakshak , served in State of J and K for 13 years and 6 tenures. Commanded Two Units , have done a long course of 6 months with USA Army . I was also awarded Sena Medal for gallantry in 2003 by President of India for my services in J and K. Currently , I am posted in Arunachal Pradesh as a Commanding officer of a Army Transit Camp"

"मेरा परिवार 1985 में दिल्ली चला गया। मैं गाँव के स्कूल में 10 वीं कक्षा में पढ़ रहा था, लेकिन मैंने कक्षा 10 के लिए अपने परिणामों की जाँच नहीं की। किसी ने मेरे पिता को बताया कि मैं कक्षा 10 भिवानी बोर्ड की परीक्षा में असफल रहा था। किंतु मुझे यकीन नहीं है। 1985 में, मेरे पिता ने मुझे गुड़गांव के सेक्टर 17 में रोटरी पब्लिक स्कूल में दाखिला दिलाया। मैंने हिंदी माध्यम के गाँव के स्कूल में पढ़ाई करने के बावजूद पूरी अंग्रेजी माध्यम स्कूल में 10 वीं कक्षा पास की। इसे काफी सराहा गया। मैंने 1988 में मानविकी में CSKM पब्लिक स्कूल दिल्ली से अपनी 12 वीं कक्षा उत्तीर्ण की और उन समय के 72 प्रतिशत के अच्छे प्रतिशत के साथ। इसके बाद, मैंने श्री वेंकटेश्वर कॉलेज दिल्ली विश्वविद्यालय में राजनीति विज्ञान ऑनर्स में प्रवेश लिया और 1991 में उत्तीर्ण हुआ। 1991 में ही, मैंने दिल्ली विश्वविद्यालय के विधि संकाय में 3 साल के एलएलबी पाठ्यक्रम में भी प्रवेश लिया। मैंने 1991 में ही अपनी संयुक्त रक्षा सेवा परीक्षा को मंजूरी दे दी और पहले प्रयास में कर्मचारी चयन बोर्ड के साक्षात्कार को मंजूरी दे दी और जनवरी 1992 में भारतीय सैन्य अकादमी में शामिल हो गया। मुझे 1993 में राजपूताना राइफल्स में कमीशन दिया गया था। कमीशन के बाद, अब मैंने लगभग 26 साल की सेवा पूरी कर ली है। मेरे करियर की मुख्य विशेषताएं हैं कि मैंने एडीसी से लेकर गवर्नर तक की सेवा की है, ऑपरेशन रक्षक में एक राइफल कंपनी की कमान संभाली है, जो जम्मू और कश्मीर राज्य में 13 वर्ष और 6 कार्यकालों में सेवा प्रदान की है। दो इकाइयों की कमान, यूएसए सेना के साथ 6 महीने का लंबा कोर्स किया। मुझे जम्मू और कश्मीर में मेरी सेवाओं के लिए भारत के राष्ट्रपति द्वारा 2003 में वीरता के लिए सेना पदक से सम्मानित किया गया था। वर्तमान में, मैं अरुणाचल प्रदेश में एक आर्मी ट्रांजिट कैंप के कमांडिंग ऑफिसर के रूप में तैनात हूं"

करण सिंह चौहान (ककराली से)

करण सिंह चौहान ने पढाई करने के पश्चात बहुत तरक्की की है। बहुत ही सरल स्वाभाव के व्यक्ति है। ये श्री श्याम सिंह के पुत्र हैं। इनके पिताजी गाँव ककराली और मेघपुर के पूर्व सरपंच हैं। करण सिंह के पिताजी स्वर्गीय श्याम सिंह जी गांव ककराली और मेघपुर के सर्व समिति से चुने हुए सरपंच थे | मेरे गाँव अल्लीका के मूसा पट्टी से निकास हैं इनका। जिनके पूर्वज लोग कबीर के कहलाते हैं। मूसाका पट्टी के चौधरी रघुबीर सिंह मुकदम के कुनबे से संबंध रखते हैं। करण सिंह ने भारतीय वायु सेना के लिए 82 फरवरी से फरवरी 2002 तक, बीएसएनएल में 2002 से अगस्त 2007 तक, संयुक्त राष्ट्र संघ में अगस्त 2007 तक काम किया है। आपने गाँव ककराली में प्राथमिक, हाई स्कूल की और गोस्वामी गणेश दत्ता सनातन धर्म कॉलेज पलवल से (महर्षि

दयानंद विश्वविद्यालय रोहतक से) स्नातक की उपाधि प्राप्त की। आपने अपना निवास फरीदाबाद में सेक्टर 7 में बना लिया गया है। वर्ष 2002 से आप फरीदाबाद में ही निवासित हैं। आजकल सूडान में सेवाएं दे रहे हैं। वह सर्वसम्मति से सरपंच चुने गए थे।

सरूप मुकदम

चौक पट्टी (मोहल्ला) के एक बड़ा घर रहा है सरूप मुकदम का। सरूप पुत्र पृथी अपने समय के जाने माने व्यक्ति थे। पंचायत के मेंबर रहे हैं। उसका पुत्र हेता आगे चल कर सरपंच बना। इस परिवार में शिक्षा के क्षेत्र में विकास नहीं किया। पृथी या उसके पिता जी के पास तो जेलदारी भी आई थी परन्तु किन्ही करने से जेलदारी दुर्गापुर चली गई। कल्लू जेलदार के यहां। ना तो इनके पूर्वज और ना ही इनके आगे आने पीढ़ी में पढ़े लिखे लोग नहीं थे। इसकी बहुत पुरानी हवेली थी । ढाह दी गई वह – उस हवेली का नामो निशान तक नहीं बचा है । बुरे दिन भी देखें हैं इस परिवार ने । अंग्रेजों के जमाने में लगान भरा जाता था । मुकदम को जमा करना होता था। लगान (जिसको जमा भी कहते थे) जमा करने के लिए धन महाजन सालिग राम से (या इसके पिता से) कर्ज लेना पड़ा और जमीन गिरवी रखनी पड़ी । सेठ ने यहाँ तक कि सरूप की हवेली भी गिरवी मेन ले कर कब्जा करने का प्रयास किया । लोग तो यहाँ तक कहते हैं कि महाजन ने कब्जा करने के लिए हवेली में सूअर गुसा दिए थे । बाद में अदालत का दरवाजा खटखटाया, उस समय पंजाब पूरा था, पाकिस्तान भी इसमें था। लाहौर तक अदालत मेन जाना पड़ा। वहाँ से मुकदमा का फैसला सरूप के हक हुआ । तक जा कर जमीन और हवेली वापिस आई । इतने बुरे दिन देखे थे इस परिवार ने ।

चंदी मुकदम

दानिका मोहल्ले के निवासी बड़ा घर चंदी लंबरदार का रहा है। पढ़ाई का शौक इसके परिवार में भी नहीं रहा है और आज भी नहीं है । गाँव की पंचायत में सदस्य रहते आए हैं इस परिवार में। ये सीधे सादे इंसान थे। 2 पुत्र हुए – बड़े का नाम धर्म सिंह और छोटे का नाम हरी सिंह है ।

राधे मुकदम

साधमोहल्ले में से बड़ा घर राधे मुकदम ही आते हैं। 10 - 15 साल के लगभग सरपंच रहे हैं गाँव के। इसका पुत्र गंगा लाल ने पढाई की और गाँव में से पहला इंजीनियर बना। आज कल इसका पुत्र गंगालाल परिवार पलवल शहर में रहता है। राधे की 2 पत्निया थी। पहली पृथला से (इनसे गंगा का जन्म हुआ) - दूसरी सुखिया जाजरू से। राधे का छोटा भाई भी था - नाम : मोहनलाल (नावल्द) । पुरानी हवेली हवेली थी राधे की – आज वह खंडहर हो चुकी है – यहा फोटो भी दिए गए है । इस परिवार का बहुत बड़ा नौहरा भी था ।

वह भी दयनीय दशा में है – स्वरूप बादल गया है । उसमें कई हिस्से बना दिए गए है । बड़ी वेदना होती है जब इन पुरानी हवेली और नौहरे के को देखते हैं । बुजुर्ग बना गई और अगली पीढ़ी उसे संभाल भी नहीं पाती है । मरम्मत तक नहीं कराती है ।

इस परिवार को - मियाँ क्यों कहते हैं

(राधे के इस परिवार को - भूपलाल व सोहनलाल के परिवार को)

इनके पूर्वजों से नजदीकी परिवार वालों ले झगड़ा कर दिया था। और यहां तक कि जान से मारने तक का खतरा हो गया था। अपनी रक्षा करने के बहुत उपाय किए। अंत में इस परिवार के एक पूर्वज ने जिनका नाम गोवर्धन था गाँव छोड़ दिया था। और दूसरे गाँव चले गए थे। इस झगड़े में यहाँ पर गाँव में बसे हुए मुसल मानों के परिवार वालों ने राधे का साथ दिया था।

राधे के पुत्र गंगालाल ने मुझे इस प्रकार बताया। उनके पूर्वजों में गोवर्धन नाम का एक व्यक्ति था। इसके दूसरे परिवार वाले इसको मारना चाहते थे। आयु बहुत छोटी थी। और इसका कारण वही था जो प्राय: होता है - वह कारण है जमीन जायदाद। दूसरे परिवार वाले चाहते थे कि इस बच्चे को मार डाला जाए और ताकि सारी संपत्ति उनके नाम आ जाए। उस परिस्थिति में इस गाँव के मुसलमान निवासियों ने उस बच्चे गोवर्धन को बचाया। बच्चे से पूछा कि आपका कोई रिस्तेदार है। गोवर्धन ने बताया कि उसकी एक भुआ रहती है गाँव दुधौला में। वे मुसलमान लोग बहुत ही दयालु किस्म के लोग थे। उन्होंने बच्चे को दुधौला उसकी भुआ के पास पँहुचा दिया। खुला साथ दिया था उन मियाँ लोगों ने अर्थात उन मुसलामानों ने। मुसलामानों को मियाँ भी कहते हैं।

गंगालाल आगे बताते हैं कि उस समय गाँव के मंदिर में गद्दी पर मुख्य पुजारी और प्रथम पुजारी-महंत बाबा मंसाराम बैठे हुए थे। इस अन्याय को देख कर बाबा मंसाराम ने बद्दुआए निकाली कि - जिन परिवारों के इस बच्चे को मारना चाहा है, उन परिवारी की वंशबेल नहीं चलेगी। और आगे जाकर वे दुश्मन परिवार नावल्द चले गए।

जब गोवर्धन जवान हो गया तब वह गाँव में वापिस आया। और अपनी जमीन जायदाद संभाली। वह अब जवान हो गया था। दुश्मन परिवार का नष्ट होता जा रहा था। प्रकृति का नियम भी हैं - बुरे कृत्य का फल बुरा ही होता है। किसी की हिम्मत नहीं हुई कि अब गोवर्धन से कुछ कह सके। उसने मुसलामानों को बहुत सम्मान दिया और आगे की पीढी के लोगों ने भी अंत तक साथ दिया जब तक 1947 तक मुसलमान गाँव अल्लीका में रहे। ये दुश्मन परिवार और दूसरे लोग उनके सहयोगी भी गोवर्धन परिवार को मियाँ कहने लगे। ये तो मुसलमान के साथ लगते हैं, उनके साथ उठना बैठना हैं और हो सकता जब प्रेम होता हैं तो खाना पीना भी मिया लोगों के साथ हो, इसमें कोई बुराई भी नहीं हैं। कुछ धर्म अंधविश्वासी लोगों ने और दुश्मन परिवार के लोगों ने बदनाम करने के उद्देश्य से, गोवर्धन परिवार को मियाँ अर्थात मुसलमान कहना प्राम्भ कर दिया और आज तक भी इस परिवार को - राधे का परिवार, भूपलाल का परिवार और सोहनलाल के परिवार को मियाँ कहते हैं। ये लोग इसमें बुरा नहीं मानते हैं बल्कि गर्व महसूस करते कि वे लोग जाति से उठ कर भाई चारे को ज्यादा मानते हैं और इसी कारण उनके पूर्वजों को मुसलामानों का साथ मिला और बाद में उन्होंने भी साथ दिया, चाहे उनको इस कारण मियाँ ही सुनने को मिले। लोगों की जुबान को तो कोई रोक नहीं सकता। परन्तु इन दोनों पक्षों ने भाई चारा नहीं छोड़ा। राधे के पुत्र गंगालाल आगे बताते हैं कि वर्ष 1947 में हिन्दू मुसलमान की लड़ाई में एक बार धतीर वाले अल्लीका गाँव आए थे

राधे - पुत्र जहारिया

मुसलामानों को मारने के लिए। उस समय 25- 30 प्रतिशत आबादी मुसलामानों की थी इस गाँव में। रात में ही उनको राधे ने सभी मुसलमानों को पलवल रेलवे स्टेशन पर पहुंचा दिया था ताकि अब वे लोग जहां जाना चाहें जा सकते हैं।

एक मिसाल पैदा कर के चले गए इस परिवार के पूर्वज, चाहे उनको मिया लोगों से मियां सुनना पड़ा।

चन्दन सिंह मुकदम

चंदन सिंह मुकदम के बारे में पहले भी लिख हूँ साहित्यकारों के लेख में। भक्ति रस की कविताएँ लिखी है इनके द्वारा। भजनावली के नाम से प्रकाशन भी करवाई हैं। इनकी लिखी चौफी फागुन की चौपाइयां गाई जाती थी। इसका पुत्र किरण वर्ष 1962 से 1969 तक सरपंच भी रहा है। बहुत ही सम्मानीय व्यक्तित्व था आपका। भक्ति भाव कूट कूट कर भरा था । और उतना भक्ति उनकी धर्मपत्नी में थी । इसका पुत्र किरण सरपंच बना गाँव का । किरण ने 10वी तक पढ़ाई की थी ।

राजनीति क्षेत्र में

पुराने लोग रघुबीर सिंह, राधे, चंदी, चन्दन सिंह के,गंगालाल पुत्र रघुबीर, के अतिरिक्त गिरधर (साधपट्टी से) सरपंच रहे हैं, किरण पुत्र चंदनसिंह सरपंच रहे हैं , चतरी पुत्र जीवनलाल (टोटा के) सरपंच रहा है। झम्मन पहलवान (भंडिआ मोहल्ला) सरपंच रहा है। झमन पढ़ा किखा था। वह भक्ति भाव में ज्यादा रहता था। अंतिम दिनों में उसने संन्यास ले लिया था। वह पूर्ण समर्पित आर्य समाजी बन गया था।

अमीलाल महाशय जी भी सरपंच हैं , इनके बारे में अलग से बहुत लिखा गया है। ये मेरे चाचा थे। (मेरी दादी की दो शादी हुई थी। पहले पति कला उर्फ़ कारे से मेरे पिता जी शिब्बन पैदा हुए। कारे की मृत्यु के पश्चात मेरी दादी (रुमाली - बहीन) ने दूसरी शादी धनमत से की। धनमत से अमीलाल पैदा हुए। इस प्रकार अमीलाल मेरे चाचा हुए।

तोता राम दानिकामोहल्ले में से है वह सरपंच रहे हैं।और अपने समय के बहुत ही सक्रिय रहे हैं।

दानिकामोहल्ले में ही मोहर राम के परिवार में से महिला है और आज भी धीर सिंह (पुत्र भरत) सरपंच है।

ब्लॉक स्तर पर राजवीर सिंह ब्लॉक मेंबर है। हुकुम सेहा (मूसाका मोहल्ला से)के परिवार की महिला ब्लॉक स्तर की चेयरमैन रही है।

डॉक्टर धर्म चाँद विद्यालंकार राजनीति में बहुत ही रूचि रखते हैं। पहले लोकदल पार्टी में काम करते थे, वहां उपखण्ड स्तर के पदाधिकारी भी रहे हैं। आजकल कोंग्रस में पार्टी में इनका रुख है।

सविता चौधरी, डॉक्टर धर्म चाँद विद्यालंकार के छोटे भाई रतन सिंह की पत्नी है। सविता पूर्ण रूप से कांग्रेस को सदस्य है, हरियाणा की महिला की प्रांतीय स्तर की प्रवक्ता है। हथीन क्षेत्र से MLA की प्रत्यासी रूप में कांग्रेस से उम्मीदवार के लिए 2019 बहुत प्रयास कर चुकी है। पलवल जिला की महिला कांग्रेस की अध्यक्ष है।

व्यवसाय में:-

1 **भगत सिंह-** भगत सिंह मेरा भतीजा है, बड़े भैया भीम सिंह का बड़ा पुत्र। दिल्ली नगर निगम में सेवारत है। अपने समय का बॉक्सिंग चैम्पियन रहा है कई वर्षों तक। आप प्रॉपर्टी का काम भी करते हैं, दिल्ली व गुरुग्राम में। अनेकों फ्लॅट अपार्टमेंट हैं इनके। गाँव में अग्रणी हैं अपने काम में।

2 **रतन सिंह** – आप सविता चौधरी के पति हैं। और डॉक्टर धर्मचंद विद्यालंकार के छोटे भाई हैं। प्रॉपर्टी डीलिंग का काम है आपका। एक सफल कारोबार है।

3 खेम चंद – आप कछारिया मोहल्ले के हैं। आपके दो पुत्रों ने मेडिकल डॉक्टर की परीक्षा की है और उनकी पत्नियाँ भी डॉक्टर हैं। इन लोगों ने अपना निजी अस्पताल खोल रखा है।

भगत सिंह का बॉक्सिंग चैंपियन - मेरे गाँव का गौरव

पहली यह पुस्तक मेरी 15 अप्रैल 2020 को पूरी हुई। पढ़ी लोगों ने, बहुत सराहा और बहुत से लोगों ने अच्छे सुझाव दिए। भगत सिंह मेरा भतीजा है (मेरे बड़े भाई का सबसे बड़ा पुत्र है), उसने मुझे बताया कि इस पुस्तक में खेलों के (स्पोर्ट्स) में जो आगे आये हैं हमारे गाँव से उसके बारे में कुछ लिखा ही नहीं है। वह एक स्पोर्ट्स मैन रहा है, उसने अपने वजन ग्रुप में राज्य स्तर हरियाणा में बॉक्सिंग प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त कर चुके हैं। नई दिल्ली नगर निगम की यंत्री शाखा में अपनी सेवाएं दे रहे हैं। बहुत मेहनती हैं भगत सिंह, स्कूल के दिनों से आज भी सुबह पांच बजे दौड़ने जाते हैं पांच छह किलो मीटर प्रीतिदिन। और आज भी अपने खेल बॉक्सिंग से जुड़े हुए हैं। एक जूनून हैं बॉक्सिंग उसका। और जब मैं अपनी पुस्तक में खेलों के बारे में ना लिखूं , यह अन्याय तो हुआ है। इसके लिए सविनय खेद प्रकट करता हूँ। स्पोर्ट्स के बारे में इस संस्करण में देने का प्रयत्न किया गया है। बॉक्सिंग में 1982, 1983, 1984 और 1985 में भगत सिंह हरियाणा स्टेट का बॉक्सिंग चैंपियन रहा है और दो साल जूनियर का रहा , एक साल सीनियर व एक साल सीनियर का रहा। नेशनल में एक बार कांस्य पदक प्राप्त किया। यमका में एक बार कांस्य पदक प्राप्त किया | उसके बाद बिजवासन दिल्ली में बॉक्सिंग क्लब में बॉक्सिंग क्लब खोल रखा है , उसके सचिव हैं भगत सिंह।

बचपन के दिन मुझे अभी भी याद हैं। खेल में रूचि शुरू से ही थी। स्कूल के दिनों में सभी खेल खेलते थे। कॉलेज में जा कर भगत सिंह ने मुक्केबाजी को अपना खेल चुना। कोच थे नया गाँव के चन्द्रे शेखर। ये वही चंद्र शेखर हैं जो जवाहर सिंह, लक्षमण सिंह और भीष्म के छोटे भाई हैं। सभी ये भाई अपने समय के चैंपियन रहे हैं। कोच ने बहुत मेहनत कराई। पलवल से पृथला तक दौड़ते हुए जाना और वहां अपने मामा के घर दूध पीना और फिर वापिस पलवल घर आना - इस तरह रोजाना 24 किलोमीटर की या दौड़ थी। और उसके बाद जो ग्राउंड में पसीने बहाना था - वह अलग थी। आलस्य कभी नहीं रहा भगत सिंह।

जब लगभग 6 - 7 साल की उम्र का था तो एक दिन ऊंटनी को ले कर अकेला अपने खेतों पर ले गया चराने के लिए। और कुछ घंटे बाद घर वापिस आ गया। तो बाबा (मेरे पिता जी) ने पूछा कि ऊंटनी कहाँ है तो उस नन्हे मासूम बालक ने जवाब दिया कि ऊंटनी यो खुजली के खेत में है और मैं उसको वहीँ छोड़ आया। मासूम की बातों को सुन कर हम सब मुस्कराएं और चिंता भी करें कि क्यों और किसने कहा कि खेतों पर ले जाएं ऊंटनी को। प्यार से उसको लाड

किया गोदी में भर कर । और ऊंटनी को लेने कोई बड़ा गया । भगत सिंह को बचपन से ही जोखिम भरे काम करने का शौक था । और अपने समय पर चैम्पियन बना । आज भी मेहनत करते हैं । सुबह सुबह उठ कर रोज - चाहे कोई भी मौसम हो - 8 - 10 किलो मीटर की दौड़ जब तक लहिन लगा लेते हैं, भगत को चैन नहीं ।

भगत सिंह . मुक्केबाजी की एक प्रतियोगिता के अवसर पर

माम चंद मेहरा मेहरा – जज।

आप अनुसूचित जाति – (हरिजन) जाति से संबंध रखे हैं। हमारे गाँव की शान हैं आप। पढ़ाई करने के पश्चात आप जज बने। एडिशनल डिस्ट्रिक्ट जज के पद से रिटायर हुए। एक ग़रीब परिवार में जन्म हुआ, जहां उनके पास गांव में खेती करने जे लिए जमीन नहीं है। दैनिक मजदूरी करने का काम करने वाले परिवार का पुत्र है माम चंद मेहरा। अपनी मेहनत और पढ़ाई की लगन से आप इतने प्रतिष्ठित लक्ष्य को प्राप्त कर मेरे गाँव अल्लीका का गौरव बढ़ाया है, और हमारे पूरे क्षेत्र का नाम रोशन कर एक इतिहास बनाया है। आज इनके परिवार को लोग बड़े ही सम्मान की दृष्टि से देखते हैं। आप का स्वभाव बचपन से ही सरल व सीधा साधा रहा है। स्कूल में मेरे से से एक क्लास पीछे पढ़ते थे आप। इनका बड़ा भाई मूलचंद मेरी क्लास में पढ़ता था।

आप का संक्षिप्त जीवन परिचय इस प्रकार है। आपका परिवार गांव अल्लीका में बाहर से आया था। अल्लीका के रहने वाले नहीं थे।

जज माम चंद मेहरा के अपने शब्दों में –

【ग्राम अलिका की भूमि मेरी मातृ भूमि नहीं है, यह मेरी माता जी श्रीमती रामकली का पैतृक गाँव है। मुझे मेरी माँ ने मामचंद नाम दिया। मुझे अपनी माँ के गाँव में पैदा होने पर गर्व महसूस हो रहा है

जैसा कि मेरी जानकारी में है, मेरे दादा जी स्वर्गीय श्री उमराव सिंह अमरा नाम के स्थान पर, सुपरवाइजर के रूप में मिलिट्री फर्म, दिल्ली कैंट में कार्यरत थे। सेवा पूरी होने के बाद, वे अपने पैतृक गाँव मुरादबास (नूंह जिला हरियाणा में, जो मुस्लिमों के मेव समुदाय के प्रभुत्व में है) चले गए।

1947 के दौरान, जब भारत स्वतंत्र हुआ, हिंदू और मुस्लिमों के बीच एक उथल-पुथल हुई और उनके परिवारों की सुरक्षा के लिए अल्पसंख्यक समुदाय अपने धर्म के अन्य गांवों में स्थानांतरित हो गए। ऐसी परिस्थितियों में मेरे दादाजी ने अपने परिवार को गांव अलिका में स्थानांतरित कर दिया, जो मेरी माता जी का गांव था।

मेरे दादा के तीन बेटे थे - जिनका नाम रामचंद्र (मेरे पिता जी), कन्हैया और प्रभु (मेरे चाचा) थे। मेरे पिता जी का राजनीति के प्रति बहुत झुकाव था, इसलिए वे राजैतिक लोगों के संपर्क में आए। रूप लाल मेहता पलवल के तत्कालीन एमएलसी / विधायक हैं। मेरे पिता जी तत्कालीन भव्य कांग्रेस पार्टी के समर्थक / कार्यकर्ता थे, जिसके कारण कांग्रेस के कई दिग्गज नेता जैसे स्वर्गीय श्री बाबू जगजीवन राम

(केंद्रीय मंत्री), चौधरी बंसी लाल (मुख्य मंत्री), चौधरी चांद राम (केंद्रीय मंत्री), तैय्यब हुसैन (सांसद) और कई अन्य लोग मेरे पिता से मिलने गाँव आते हैं। हालांकि मेरे पिता जी को उर्दू भाषा में केवल 5 वीं कक्षा तक शिक्षा मिली थी।

मेरी शिक्षा विवाह और सेवा -

गांव अल्लीका में प्राथमिक / शिक्षा सरकारी स्कूल से, शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय पलवल से उच्च माध्यमिक शिक्षा प्राप्त की।

स्नातक भाग -1, एस.डी. कॉलेज पलवल से पास करने के पश्चात, फिर मैंने अपनी पढ़ाई छोड़ दी क्योंकि मैंने दिल्ली में सरकारी नौकरी ज्वाइन की। स्नातक भाग II और III मैंने फरीदाबाद में सरकारी नेहरू कोलाज से पास किया (हालांकि नौकरी के कारण सायं की कक्षाएं ही उपयुक्त थी मेरे लिए और सायं को ही कॉलेज जाता था)

ईवनिंग लॉ सेंटर- II, दिल्ली विश्वविद्यालय से एल.एल.बी. (कानून की पढ़ाई में स्नातक) पास किया।

सेवाकाल के दौरान कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय से एल.एल.एम. (कानून की पढ़ाई में स्नातकोत्तर) पास किया।

शादी -

मैंने श्रीमती से शादी की। बसंती जब मैं इस विवाह बंधन से, जब मैं 9 वीं कक्षा का छात्र था, तो मुझे एक बेटी का नाम डॉक्टर कांता चौहान और फिर दो बेटों श्री गजेंदर मेहरा और निशांत मेहरा का जन्म पा कर, मुझे आशीर्वाद प्राप्त हुआ।

सर्विस

अपना B.A भाग -1 पूरा करने के बाद मैंने अपनी नौकरी - जीविका दिल्ली में एक क्लर्क (DESU में) के रूप में शुरू किया और अपनी नौकरी के कार्यकाल में B.A और Law की अपनी आगे की शिक्षा भी पूरी की। इसके बाद मैंने अपनी नौकरी बदल ली और विधायी समिति के सहायक (B.e.d शिक्षक के ग्रेड में) के रूप में लोक सभा सचिवालय में शामिल हो गया। अंत में मैं हरियाणा में न्यायिक मजिस्ट्रेट के रूप में शामिल होते हुए अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए आगे बढ़ा और अपने कार्यकाल के दौरान मैं हरियाणा में विभिन्न स्टेशनों / जिले में तैनात रहा। मैं वहाँ से Additional District Judge के रूप में सेवा निवृत्त हुआ। जिला और सत्र न्यायाधीश और वहां से सेवा निवृत्त होने के बाद मैंने उपभोक्ता अदालत दक्षिणी दिल्ली के अध्यक्ष / जिला न्यायाधीश के रूप में अध्यक्षता की और 2014 में वहां से सेवा निवृत्त होने के बाद, वर्तमान में, मैं दिल्ली और पंजाब और हरियाणा उच्च न्यायालय के तहत मध्यस्थ के रूप में काम कर रहा हूं।

मेरे बच्चे शिक्षा और नौकरी करते हैं

डॉक्टर कांता चौहान (बेटी) पीएचडी। (प्राचीन इतिहास) - डिप्टी रजिस्ट्रार के रूप में कार्यरत है, (लाल बहादुर शास्त्री संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली - केंद्र सरकार विश्वविद्यालय)।

गजेंद्र मेहरा - (बेटा) -

कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय से कानून (एलएलएम) की मास्टर डिग्री - कार्यकारी अधिकारी लोकसभा सचिवालय (संसद भवन) के रूप में कार्यरत हैं।

बदन सिंह चौहान

डॉ. नेलु मेहरा - (बहु) - पीएचडी कानून कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय से - इंद्रप्रस्थ विश्वविद्यालय द्वारका दिल्ली में कानून के सहायक प्रोफेसर के रूप में कार्यरत है।

निशांत मेहरा - (बेटा) - B.B.A, MBA, MA, LLB - उप-संसदीय लोकसभा के रूप में कार्यरत है। डॉ. नीरू मेहरा – पीएचडी "प्रबंधन अध्ययन में' - इंद्रप्रस्थ विश्वविद्यालय के कॉलेज में सहायक रूप में कार्यरत है।

उपलब्धि

यह कहना मेरे लिए गर्व की बात है कि मेरी तीनों बेटी / ससुराल वाले अपने-अपने क्षेत्र में डॉक्टर (PHD) हैं। मुझे अपने गाँव में पहले स्नातक / मास्टर ऑफ लॉ बनने में भी गर्व महसूस होता है और न्यायाधीश हरियाणा और दिल्ली के रूप में भी काम किया है।

माँ (राम काली देवी)

जो कुछ भी मैंने प्राप्त किया, मेरी मां के आशीर्वाद और मेरी पत्नी बसंती मेहरा के अत्यधिक समर्थन के कारण था।

हमारे गाँव का गौरव बढ़ाने वाले, जज साहिब की कड़ी मेहनत और लग्न से हमारे युवा वर्ग प्रेरणा लेवें और आगे बढ़े। सीखें कि कैसे एक निर्धन परिवार, एक भूमिहीन श्रमिक की जीविका चलाने वाले परिवेश में रह कर इतनी ऊंचाइयों को छुआ। गर्व हैं हम सबको जज साहिब पर। एक उदाहरण हैं आप। शिक्षा का महत्व समझ और बच्चों भी पूरा पढ़ाया। मैं आपको सलाम करता हुँ।

Mam Chand in his own words says about his family –

[In a nutshell, let me tell u about my life's struggle. My family migrated to a small village called Alika. It was the native village of my mother Smt. Ram Kali Devi. I was, therefore, named by my mother as Mam Chand (Child Born at his Maternal Uncle's place).

As I came to know, my Grand father Late Sh. Umrao Singh @ Amra had been working in military farm, Delhi Cantt., as Supervisor. After completion of service, they migrated to their native village Muradbas, Nuh District Haryana, which was dominated by Mev Community of Muslims. During 1947, when India became independent, a turmoil between Hindu and Muslims took place and minority communities for the safety of their families got shifted to other villages of their religion. In such circumstances, my Grandfather took the decision to shift family to village Alika, which was native village of my mother.

My grandfather had three sons namely Ramchander (my father), Kanhaiya and Prabhu (my uncles) .

Though, my father, Sh. Ramchander was educated only upto 5th standard in urdu Language but he had fond inclination towards politics. So he came in contact with Sh. Roop Lal Mehta the then MLC/MLA of Palwal. My father was an avid supporter / worker of the then grand Congress party because of which many legendary leaders of congress party like Late Sh. Babu Jagjivan Ram (Centre minister), Ch. Bansi Lal (CM), Ch. Chand Ram (Central Minister), Taiyub Husain (M.P) and many others use to visit my father in village.

Education:

I completed my Primary Education from Government school at village Alika. Thereafter, I went to the Government Higher Secondary

School, Palwal for my higher Secondary Education. Soon after competing my Higher Secondary, I got admission for Graduation in BA Part-I from S.D. College, Palwal. However, I had to leave my studies midway to join Government job in Delhi. Thereafter, I completed my BA Part II & III from Government Nehru Collage, Faridabad through evening classes alongside my job. After getting Graduation Degree through Hindi Medium, it was an uphill task thereon as I was doing job in my morning shift. But that doesn't stopped me from chasing my dream and I got admission in L.L.B from Evening Law Centre-II, Delhi University. It was a challenging task for me, as was a hindi medium student throughout but here Law was being taught in English Medium. But, I overcome all linguistics barriers and completed LLB Degree in English Medium. Thereafter, while I was Chief Judicial Magistrate at Kurukshetra, I decided to pursue LLM (Distant Education) from Kurukshetra University. So I took admission and got the degree with distinction.

Marriage:

At that time child marriage was quite prevalent in the society. I was also married when I was a Child. I got married to Smt. Basanti when I was studying in the 9th standard. Out of this wedlock, I was blessed with a daughter name Dr. Kanta and two sons Mr Gajender Mehra & Nishant Mehra .

Service:

In order to fulfill necessities of life for my family and children, soon after completing my B.A Part-l, I started my job hunt. Fortunately, I got my first job of a clerk (DESU) in Delhi. Thus, alongside my job, I also continued my further education i.e. B.A and LLB. Soon after completing LLB, I appeared in the Lok Sabha Secretariat Examination and got selected as Senior Legislative Committee Assistant in the Lok Sabha Secretariat. It was indeed a matter of pride for me to work for the Premium Institution of the country, which is regarded as temple of Democracy.

Since, my early childhood, my family was caught in a legal quagmire. Every now and they my father use to visit Court to settle the legal dispute. I use to accompany him many times to the Court. This legal battle, which my family was fighting, left an great impact on my psyche and I got determine to be a Judicial Magistrate when I grew up. This goal of my mine was always there in the back of my mind even when I was working as Senior Committee/ Legislative Assistant in Lok Sabha. Thus, while in service I appeared for Haryana Judicial Service Examination and in my first attempt, I qualified the Exam. Finally, I achieved my goal and joined as a Judicial magistrate in Haryana. During my tenure, I remained posted at different stations/ district in Haryana. I retired from there as Addl. District & Session Judge and after retirement from there I also presided over as President/ District Judge of Consumer Court, South Delhi and after getting retired from there in 2014, I got engaged as an Arbitrator under Delhi and Punjab & Haryana High Court which I am continuing till date.

My Children's Education and Job:

1. Dr.Kanta Chauhan (Daughter) Ph.D. (Ancient History)
   Working as - Deputy Registrar, Lal Bahadur Shastri Rashtriya Sanskrit Vidhyapeetha, New Delhi.
2. Gajender Mehra (Elder Son) Master of law (LLM) from Kurukshetra University)
   Working as A. Executive Officer, Lok Sabha Secretariat (Parliament of India).
3. Dr. Neelu Mehra (Daughter in law) Ph.D. Law (K.U University)
   Working as Astt. Professor of Law in Indraprastha University Dwarka Delhi.
4. Nishant Mehra (Younger Son) BBA, MBA, MA & LLB.

बदन सिंह चौहान

Working as Deputy Secretary, Lok Sabha, Parliament of India.

5. Dr. Neeru Mehra Ph.D. in Management Studies.
   Astt. Professor in college of Indraprastha University, New Delhi.

Achievements in brief:

I have many firsts against my name:

The first person to graduate and complete Master of laws (LLM) from my village.
Secondly, again a first person to become a Judge not only from my village but also from neighboring villages too.
It is also a matter of pride for me to say that all my three daughter/ daughter-in-Laws are Doctors (Ph.D) in their respective fields.
I owe my success to my Mother (Smt. Ram Kali Devi). Credit to all my achievements till date goes to her blessings and extreme support of my wife Basanti Mehra.
Regards
M.C.Mehra Village Alika]

लालचंद – साधारण एवं संघर्ष पूर्ण जीवन

भंडिया मोहल्ले के श्री खिल्लन के घर जन्मे लाल चंद एक साधारण व्यक्तित्व एवं आध्यात्मिक दृष्टिकोण रखने वाले व्यक्ति हैं। आपका जन्म 15 अप्रैल 1945 (स्कूल प्रमाण पत्र अनुसार) हुआ। शिक्षा में आपने बी. कॉम, पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा इन पर्सनल मैनेजमेंट एंड इंडस्ट्रियल रिलेशन एवं अन्य कई प्रोग्राम डिप्लोमा किए हैं जैसे – रूरल डेवलपमेंट इस्टीट्यूट से लखनऊ से, हैदराबाद से उद्योग, कार्मिक, ग्रामीण विकास जुड़े अन्य प्रोफेशनल प्रोग्राम किए हैं आपने।

युवा काल से ही आध्यात्मिक गहराईयों की खोज में आपने आर्य समाज को चुना और सत्य प्रकाश का अध्ययन करने की अपनी दिनचर्या बना ली। आज भी प्रति दिन हवन करते हैं आप। आर्य समाज विशेषत: सत्यार्थ प्रकाश पर प्रतियोगिता में भाग ले कर महर्षि दयानंद के संदेशों को जन मानस तक पहचाने का काम करते रहते हैं आप। आप निरंतर पत्रिकाओं में लिखते रहते हैं और अपने उपरोक्त विषय पर तीन पुस्तकें प्रकाशित कर लोगों को निशुल्क वितरित की हैं। जीविका अर्जन के प्रारंभिक दौर में आपने हिसार में 6 वर्षों तक गणित पढ़ाया स्कूल में। डेड वर्ष तक आर्मी मेडिकल कोर में काम किया। अंत में हरियाणा खादी ग्रामोद्योग बोर्ड में 27 साल सेवा करने के पश्चात 30 अप्रैल 2003 में राज्य विकास अधिकारी के रूप में सेवा निवृति प्राप्त की। आज कल पंचकूला रहते हैं।

पंचकूला में 12 सेक्टर में आर्य समाज की स्थापना की। एक मासिक पत्रिका भी निकाली आपने। रोहतक से छपने वाली आर्य प्रतिनिधि पत्रिका में आपके लगभग 150 लेख छप चुके हैं।

बचपन संघर्ष पूर्ण रहा आपका। पांचवीं कक्षा के बाद स्कूल से बैठा लिया, 1 वर्ष तक पशु चराने के काम में लगा दिया घर वालों ने। पंडित जी भगवाना ने जो आपके पड़ोसी थे, स्कूल ले गए, उनके द्वारा फीस भरी गई और पुनः स्कूल की पढ़ाई प्रारम्भ की। कारण तो फीस नहीं भरने का था, घर वालों ने फीस ही नहीं भरी और पढ़ाई रोक दी गई थी।

मैट्रिक पास की, और फिर आर्मी में भर्ती हो गया। परंतु वहां से भी किन्ही कारणों से वापिस आना पड़ा। आजीविका तो करनी थी – बिजली की फिटिंग का कार्य करना प्रारंभ किया और होडल में बिजली की दुकान खोली – 2 साल तक चलाई दुकान। फिर ITI की टर्नर की ट्रेड में। आपका सम्पर्क स्वामी सत्यानंद जी हुआ, उसने हिसार भेज दिया, वहाँ आपको हाई स्कूल में गणित के अध्यापक की नौकरी दे दी गई। वहीं रह कर आपने पढ़ाई को आगे बढ़ाया – इंटर और बी. कॉम. किया। वहीं से खादी ग्रामोद्योग में आवेदन किया और टेक्निकल सुपरवाइजर के पद पर नौकरी मिल गई। तीन वर्ष के पश्चात प्रमोशन भी हो गया – राज्य विकास अधिकारी के पद पर। अच्छे दिन आ गए अंततः।

वर्ष 1980 में आर्मी कोटे से सेक्टर 12 पंचकूला में साडे छह: मरले का प्लाट भी मिल गया। धनराशि का भी इंतजाम हो गया, शुभचिंतकों के सहयोग से। 1983 में मकान भी बना लिया गया, ऋण लेना पड़ा। आय बढ़ाने के लिए प्राइवेट कम्पनियों के एकाउंट का काम किया।

एक फैक्ट्री भी लगाई, उसमें निवार बनाए जाते थे। दुर्भाग्य यहां फिर सामने आ गया। एक वर्कर की मौत हो गई बिजली का करंट लगने से। फैक्ट्री को बंद करना पड़ा। लाखों का नुकसान उठाना पड़ा। संघर्ष भरा जीवन, परंतु हौसला नहीं छोड़ा लाल चंद जी ने। ट्यूशन पढ़ाए, पार्ट टाइम नौकरी की, पढ़ाई अधूरी छूटी, फिर ऊठे, फिर आगे बढ़े और एक के बाद दूसरी छोटी छोटी नौकरी, दुकान --- ये सब लालचंद को मजबूत बनाते चले गए, इरादा जो पक्का था।

आपका परिवार आज सुखद व सफल परिवार है। तीन पुत्री और एक पुत्र के पिता हैं आप। सभी उच्च शिक्षा प्राप्त हैं और सभी सेवारत हैं।

यह आपके दृढ़ संकल्प और अनुशाषित जीवन का फल है जो आध्यात्मिक साधना की शक्ति से संभव हो पाया है।

मेरी कोटिशः शुभकामनाऐं।

श्यामी भगत

आर्य समाजी थे आप। महाशय अमीलाल के बचपन के स्कूल के साथी थे। धार्मिक विचारों से भरपूर आप सत्य के मार्ग पर चलने वसले थे। दानिकामोहल्ले के निवासी, भगत जी एक साधारण व दयालु प्रवृति के इंसान थे। छह पुत्र हैं आपके। बड़ा पुत्र बीरेंद्र सिंह युवक अवस्था में इस दुनिया को छोड़ गया। सभी पुत्र बहुत ही सद्भाव स्वभाव के धनी हैं। आपका पुत्र बीर पाल अंग्रेजी के व्याख्यता हैं। और बीर पाल की धर्मपत्नी प्रेरणा उनकी प्रेरणा है, वह भी अंग्रेजी के व्याख्यता हैं। दोनों को पढ़ाई का और पढ़ाने का जुनून है।

कविताएं भी लिखी हैं भगत जी ने – इनके लेखों को बारह मासी कहते हैं। आर्य समाज के अनुसरण में गुजरा आपका जीवन। और महाशय अमीलाल कहां

छोड़ने वाले थे, उनके सबसे अच्छे मित्र जो ठहरे। हर जगह ले गए जहां जहां भी वे गए, चाहे आर्य समाज का कार्य ही अथवा राजनैतिक कार्यक्रम हो।

महाशय अमीलाल जी की म्रत्यु के समय हवन के दिन भगत जी खड़े हो कर अपना दःख प्रकट करते हुए कहा कि मैं अनाथ ही गया हूँ", महाशय अमीलाल जी मेरे सहपाठी थे, मेरे मित्र थे, मेरे शिक्षक थे, मेरे प्रेरणा थे और मेरे जीवन के आधार ही थे वेत। मैं उस समय वहाँ उस हवन में उपस्थि '' था।

आपका सरल स्वभाव अपने पुत्रों को भी विरासत में शेरल प्रवृति दे गए भगत जी। हमारे परिवार के स्नेही थे आप। पारिवारिक बैठक में भगत जी एक महत्वपूर्ण और सम्मानीय सदस्य स्वरुप थे।

दादा जी की मेरा प्रणाम।

सुख देव महाशय जी - आर्य समाजी

आपने 15 जुलाई वर्ष 1947 को, पिता श्री राम चंद के घर जन्म लिया। वर्ष 1964 में दसवींकी कक्षा पास की। और उसके बाद मोल्डर ट्रेड में ITI पास की। वर्ष 1967 में एक कोपरेटिव मिल्क सप्लाई में नौकरी की। आपकी दो शादियां हुई। पहली शादी गॉव ऐंच गॉव (उत्तर प्रदेश) ने वर्ष वर्ष 1967 में हुई। जिसका जल्दी ही देहांत हो गया। दूसरी शादी वर्ष 1969 में झारसेटली (बल्लभगढ़) में हुई। गाँव में आर्य समाज के संस्थापकों में आप भी एक थे। इनके यहाँ बड़े कद के आर्य समाजी व्यक्ति आए उस समय जिनमें स्वामी अग्निवेश, स्वामी इंद्रवेश, स्वामी आदित्यवेश एवं अनेकों महान विभूतियों का आगमन होता रहता था। गाँव आर्य युवक परिषद् बनी, उसमें पहलवान झम्मन प्रधान थे, अमीलाल महाशय जी मंत्री थे और आप कोषाध्यक्ष थे। वर्ष 1960 में आर्य परिवार यज्ञ मंडल भुडेर बना जिसमें आपने वर्ष 1964 में ही प्रवेश कर लिया। इस मंडल के प्रधान पंडित बीधु ओंकार जी थे (धतीर वाले), मंत्री अमीलाल और कोषाध्यक्ष टहरकी गॉव के लाला जी थे। बाद में आप कोषाध्यक्ष बने। वर्ष 1983 में आप गाँव के पंचायत के चुनाव में पंच बने।आज अल्लीका गांव की आर्य समाज के प्रधान हैं। और आप, आर्य परिवार यज्ञ मंडल भुडेर का भी प्रधान वर्ष 2000 से चले आ रहे हैं।

ग्राम पंचायत अल्लीका

वर्ष 2005 में एलिका पंचायत निर्वाचित

अल्लीका सरपंच - श्री बाबू राम पुत्र तुही राम एस.सी.

पंच 1 श्रीमती किरण सिंह - पत्नी श्री रतन सिंह महिला

पंच 2 श्री सुरेंद्र सिंह - पुत्र शिब्बन सिंह अनारक्षित

पंच 3 श्रीमती रीना देवी - पत्नी शनाजबीर सिंह की

पंच 4 श्री अनंत राम - पुत्र श्री रतन लाल अनारक्षित

पंच 5 श्री थान सिंह - पुत्र श्री कैलाश चंद अनारक्षित

पंच श्री रोहताश - अमर सिंह के पुत्र अनारक्षित
पंच 7 श्रीमती पिंकी - श्री रूप लाल के पुत्र एस.सी.
पंच 8 श्री रतन लाल पुत्र शुलहुली अनारक्षित
पंच 9 श्रीमती संतोष - श्री पीताम्बर महिलाओं की
पंच 10 श्री रतन सिंह पुत्र श्री करण सिंह अनारक्षित
पंच 11 श्रीमती धर्म - नानक चंद पुत्र श्री नानक चंद एस.सी.
पंच 12 श्रीमतीरोहनी - श्री नारायण एस.सी. (महिला) की पत्नी

ग्राम पंचायत अल्लीका - (2011 - 2016)

1. महेन्दर - पुत्र - धन सिंह सरपँच अनारक्षित
2. पंच - घनश्याम - पुत्र - बालू राम पंच अनारक्षित
3. पंच - राजेंदर- पुत्र - काशी राम पंच अनारक्षित
4. पंच - बदन सिंह - पुत्र - याद राम पंच अनारक्षित
5. पंच - धरम वती पत्नी नरेश कुमार पंच महिला
6. पंच - अशोक - पुत्र - जय नारायण पंच अनारक्षित
7. पंच - प्रेम सिंह - पुत्र - हुकम सिंह पंच अनारक्षित
8. पंच - मुकेश पत्नी जय पाल पंच अनुसूचित जाति महिला
9. पंच - माया वती - पत्नी- सुख राम पंच महिला
10. पंच - माम चन्द - पुत्र - हेत लाल पंच अनारक्षित
11. पंच - वेद वती - पत्नी- बिजेन्दर पंच महिला
12. पंच - मोहर पाल - पुत्र - रघुबीर पंच अनुसूचित जाति
13. पंच सुखी राम - पुत्र - कल्लू

पंचायत का नाम: अल्लीका (जिला पंचायत: पलवल राज्य: हरियाणा) ग्राम संहिता: 24455

ग्राम पंचायत - अल्लीका – वर्ष 2016

5 महिला (1 महिला अनुसूचित जाति) + 1 पिछडा + 2 अनुसूचित जाति +7 सामान्य = 14

1 धीर सिंह - सरपंच
2 रोहित पंच
3 नानक चंद – पंच
4 लाल सिंह - पंच
5 सुंदर सिंह – पंच
6 कविता – पंच - सामान्य महिला

7 सुमन – पंच - सामान्य महिला
8 धीरज कुमार – पंच – पिछड़ा
9 गीता देवी महिला – सामान्य
10 रोहित पंच
11 सुषमा देवी पंच – महिला
12 शकुंतला पंच – अनुसूचित – महिला
13 नेम सिंह –पंच अनुसूचित
14 अजित सिंह – पंच – अनुसूचित

लंबरदारों की सूची

1. प्रेम प्रकाश - पंडित - दानी पट्टी से
2. थन सिंह -उर्फ पप्पन - पंडित - भंडिया पट्टी से
3. देवी सिंह चौक पट्टी से
4. बलदेव - दानिका पट्टी से
5. भगत सिंह - साधपाती से
6. हरिचन्द - उर्फ हरचंदा - अनुसूचित जाती

चौकीदार

1. भरत सिंह
2. देवी सिंग

बदन सिंह चौहान

अध्याय- 4

जनसंख्या

जनगणना 2011 - अल्लीका, हरियाणा
अल्लीका गाँव में 0-6 आयु वर्ग के बच्चों की आबादी 555 है जो गाँव की कुल जनसंख्या का
अल्लीका, हरियाणा के पलवल जिले की पलवल तहसील में स्थित एक बड़ा गाँव है जहाँ कुल 699 परिवार रहते हैं। जनसंख्या जनगणना 2011 के अनुसार गाँव की जनसंख्या 4106 है जिसमें 2205 पुरुष हैं जबकि 1901 महिलाएँ हैं।
13.52% है। अल्लीका गाँव का औसत लिंग अनुपात 862 है जो हरियाणा राज्य के औसत 879 से कम है। जनगणना के अनुसार अल्लीका के लिए बाल लिंग अनुपात 888 है, जो हरियाणा के औसत 834 से अधिक है।
हरियाणा की तुलना में अल्लीका गाँव में साक्षरता दर अधिक है। 2011 में, हरियाणा के 75.55% की तुलना में अल्लीका गाँव की साक्षरता दर 75.70% थी। अल्लीका में पुरुष साक्षरता 88.44% है जबकि महिला साक्षरता दर 60.85% थी।
अल्लीका गाँव में अनुसूचित जाति (SC) कुल जनसंख्या का 22.04% है। गाँव अल्लीका में वर्तमान में कोई अनुसूचित जनजाति (एसटी) आबादी नहीं है।

धर्म के आधार पर भारत में जनसंख्या

Religions of India[29][note 1][note 2]

धर्म	जनसंख्या	%
सभी धर्म	1,210,854,977	100.00%
हिन्दू	966,378,868	79.8%
मुस्लिम	172,245,158	14.23%
ईसाई	27,080,016	2.3%
सिख	19,215,730	1.7%
बौद्ध	7,955,207	0.8%
जैन	4,225,053	0.4%
बहाईस	1 953 112	0.18%
अन्य	4,686,588	0.32%
धर्म नहीं बताया	727,588	0.1%

जनसंख्या - अल्लीका, हरियाणा

जनगणना 2011 की जानकारी के अनुसार अल्लीका गाँव का स्थान कोड या गाँव कोड 063660 है। अल्लीका गाँव भारत के हरियाणा में पलवल जिले की पलवल तहसील में स्थित है। यह पलवल से 10 किमी दूर स्थित है, जो कि एलिका गांव का जिला और उप-जिला मुख्यालय दोनों है। 2009 के आंकड़ों के अनुसार, एलिका गाँव एक ग्राम पंचायत भी है।

गाँव का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 987 हेक्टेयर है। एलिका की कुल आबादी 4,106 लोगों की है। अल्लीका गाँव में लगभग 699 घर हैं। 2019 के आंकड़ों के अनुसार, अल्लीका गाँव पलवल विधानसभा और

फरीदाबाद संसदीय क्षेत्र के अंतर्गत आते हैं। पलवल अल्लीका से निकटतम शहर है।

जनगणना के अनुसार 2011 में जनसंख्या - अल्लीका गॉव

जनगणना के अनुसार 2011 में जनसंख्या - अल्लीका गॉव
कुल जनसंख्या 4106
कुल घरों की संख्या 699
पुरुष जनसंख्या 2205 (53.7%)
महिला जनसंख्या 1901 (46.3%)
कुल साक्षरता दर 75.7% (2688)
पुरुष साक्षरता दर 88.44% (998)
महिला साक्षरता दर 60.85% (998)
अनुसूचित जाति की जनसंख्या 22.0% (905)
बच्चों की (0 -6 तक) जनसंख्या 555 (13.52%)
बालक (0 -6 तक) जनसंख्या
बालिका (0 -6 तक) जनसंख्या % 47.0% (261)

जनगणना 2001

परिवारों की संख्या 561
कुल जनसंख्या = 3482, जनसंख्या(0-06 वर्ष) 605
पुरुष जनसंख्या = 1869, जनसंख्या (0-06 पुरुष) 320
महिला जनसंख्या = 1613, जनसंख्या 06 महिला 285 से नीचे
शिक्षित आबादी = 1940 (55.71%) अशिक्षित आबादी = 1542 (44.28%)

पुरुष शिक्षित = 1275 (68.21%) पुरुष निरक्षर जनसंख्या = 594 (31.78%)
महिला शिक्षित = 665 महिला (41.22%) निरक्षर जनसंख्या = 948 (58.77%)
अनुसूचित जाति = 777 (22.31%)
पुरुष अनुसूचित जाति = 404 (51.99%) महिला अनुसूचित जाति = 373 (48.005%)
एसटी की संख्या 0
पुरुष एसटी जनसंख्या 0 महिला एसटी जनसंख्या 0

JURISDICTIONAL CHANGES 2001- 2011, DISTRICT PALWAL

Name of District / Tahsil	Number of villages		Number of Villages Newly Created	Number of Towns		Changes since 2001 and Government Notification Number*
	2001	2011		2001	2011	
1	2	3	4	5	6	7
District Palwal	-	280	-	4	6	Palwal a newly created district out of Faridabad district transferring 282 villages and 4 towns of Palwal Hathin and Hodal tahsils vide Hr. Govt. Notifictaion No. S.O.282/P.A.17/1887/S.5/ 2008 dated 13/08/2008. Two villages treated as Census Towns in Palwal tahsil.
Tahsil Palwal	148	146	-	1	3	2 villages Baghola and Palwal (Rural Part) treated as Census Towns. One village declared as partial out growth.
Tahsil Hathin	86	86	-	1	1	No change.
Tahsil Hodal	48	48	-	2	2	No change.

***Source: Financial Commissioner, Revenue Deptt. Haryana.**

पलवल के गांवों की जनसंख्या

पलवल के गांवों की जनसंख्या		
	नाम	जनसंख्या
1	नगर पालिका पलवल	1,31,926
2	पलवल जनसंख्या शहर	3,072
3	बघौला जनसंख्या शहर	5,413

पलवल तहसील में गाँव		
	गाँव	जनसंख्या
1	आदुपुर	1,522
2	अगवानपुर	1,964
3	अहरवां	3,253
4	अकबरपुर इ़कौरा	1,059
5	आल्हापुर	2,206
6	अलावलपुर	10,093
7	अल्लीका	4,106
8	अमरपुर	1,318
9	अमरौली	2,563
10	अमरू	1,711
11	असावटा	3,857
12	असावटी	5,945
13	अटोन्हा	1,744
14	अतरचता	1,711
15	अट्टबा	1,516
16	बढा	2,924
17	बद्राओं	3,171
18	बागपुर कलाँ	4,515
19	बागपुर खुर्द	752
20	बहरौला	2,234
21	बलाई	1,797
22	बामनी खेरा	8,488
23	बामनीका	145
24	बरौली	11,298
25	बटा	1,996
26	बहरामपुर	132
27	बेला	4,829
28	भोलरा	1,729
29	भूड़	635
30	भुरजा	1,244
31	बिलोचपुर	4,723
32	चाँधट	10,302
33	चाँदपुर	645
34	छज्जुनगर	2,418
35	छपरौला	2,411
36	चिरवाटा	2,352
37	चिरवारी	2,352
38	डाडौता	1,839
39	देहलाका	650
40	देवली	2,958
41	धामाका	1,155
42	धतीर	8,447
43	ढोलागढ़	2,471
44	दोस्तपुर	285
45	दूधौला	4,648
46	डुंडसा	1,543
47	डुंगरपुर	1,736
48	दुर्गापुर	2,378

बदन सिंह चौहान

49	फ़रेजाबाद मीसा	4,259
50	फजलपुर (नया गाँव)	2,365
51	फिरोजपुर	4,122
52	गदपुरी	1,639
53	गेलपुर	1,783
54	घटोत	2,707
55	घोरी	7,287
56	गोपीखेरा	1,639
57	घुघेरा	1,653
58	गुरवारी	679
59	हंसापुर	1,427
60	हरफली	1,762
61	हिदायतपुर	605
62	होसंगाबाद	433
63	जेंदापुर	1,212
64	जलालपुर खालसा	1,580
65	जल्हाका	2,300
66	जनौली	6,752
67	जटौला	1,423
68	झुप्पा	479
69	जोधपुर	1,583
70	जोहरखेरा	631
71	कैराका	547
72	ककरली	948
73	ककरी पुर	1,060
74	कलवाका	3,284
75	कारना	2,441
76	काशीपुर	4,203
77	कटेसरा	2,701
78	खजूरका	1,922

79	खेरला फिजरपुर	1,708
80	खुसरोपुर	3,318
81	किशोरपुर	2,413
82	किठवादी	3,589
83	कोरारा शाहपुर	523
84	कुलीना	1,861
85	कुशक	13, 477
86	लाडियाका	1,663
87	लालगढ़	1,186
88	लालपुर कादिम	948
89	लालवा	1,152
90	लोहागढ़	2,245
91	लुलवारी	2,242
92	महेशपुर	1,975
93	मलिकगनी	653
94	मान्दकौल	2,808
95	मसूदपुर	72
96	मेदापुर	707
97	मेघपुर	824
98	मीरापुर	959
99	मुस्तफा बाद	723
100	नगलिया	660
101	नागल ब्रहामन	1,562
102	नगला भीकू	1,126
103	नगली पंचन की	424
104	पहलाद पुर	662

105	पापरी	89
106	पारोली	999
107	पातली कलाँ	252
108	पातली खुर्द	1,982
109	पेलक	3,565
110	फुलवारी	5,571
111	प्रथला	7,009
112	रहीम पुर	1,925
113	राय दास का	3,370
114	रायपुर	1,163
115	राजौलाका	879
116	रजपुरा	3,213
117 राजुपुर बांगर		82
118	राजुपुर खादर	1,596
119	रखौता	1,142
120	रामपुर खोर	1,302
121	रसूलपुर	4,343
122	रतीपुर	1,828

123	रहराना	2,701
124	रोनिजा	1,439
125	रुंधी	2,624
126	सदरपुर	1,062
127	सैदपुर	45
128	सेलोठी	3,603
129	सेहरला	1,936
130	शेखपुर	1,580
131	सिहौल	4,815
132	सिकंदरपुर	1,767
133	सोफ़ता	1,526
134	सोलरा	4,683
135	सुजवारी	1,986
136	सुल्तानपुर	1,884
137	ताराका	1,322
138	ततारपुर	1,018
139	टहरकी	2,268
140	थंथरी	2,610
141	टीकरी ब्राहमन	6,063
142	टीकरी गूजर	1,979
143	जेबाबाद खेरली	809

हथीन तहसील के गाँव और इनकी जनसंख्या

हठीन तहसील में गाँव		
	गाँव	जनसंख्या
1	हठीन नगर पालिका	14,421

1	आक्बरपुर नाटोल	1,034
2	अली ब्रहामन	1,812
3	अली मेव	10,795
4	आलुका	574

5	अंधोप	4,062
6	अंधरौला	3,262
7	बाबू पुर हथीन	1,429
8	बहीन	7,447
9	बाजदा पहारी	700
10	बामनोला जोगी	1,315
11	भंगूरी	1,599
12	भीमसीका	2,118
13	भोडपुर	994
14	बिचपुरी	952
15	बिघावली	1,135
16	बुरका	1,980
17	छाएन्सा	10,454
18	ढाकलपुर	1,542
19	धीरंका	2,477
20	दुरेंची	1,426
21	फ़िरोज़पुर राजपुर	1,633
22	गहलब	6,366
23	गढ़ी बिनोदा	588
24	घरौंट	3,577
25	घीगरका	1,535
26	घुरावली	4,508
27	गोहपुर	2,404
28	गुलेसरा	483
29	गुराकसार	5,379
30	हुड़ीठाल	1,018
31	हुड़ीठाल	1,412
32	जैनपुर	1,007
33	जलालपुर	2,850
34	जनाचौली	1,699
35	जरारी	2,066

36	कलसरा	2,425
37	कानौली	961
38	खाईका	5,968
39	खंडावाली	337
40	खेरली ब्राह्मण	366
41	खेरली जीता	903
42	खिल्लूका	3,930
43	खोकियाका	827
44	कोंडल	5,809
45	कोट	10,548
46	कुक्कर चटी	923
47	लड़माकीi	1,064
48	लखनाका	3,719
49	महालुका	1,498
50	मलई	7,990
51	मलोकरा	2,699
52	मलुका	5,862
53	मंढनाका	4,513
54	मंडकोला	10,773
55	मंडोरी	1,932
56	मंगोरका	1,806
57	मंकाका	711
58	मानपुर	8,753
59	मीरका	1,850
60	मोहदम का	1,418
61	नागल जाट	4,851
62	नागल सभा	1,655
63	पचंका	3,218
64	पहारी	2,011
65	पहारपुर	1,366
66	पाओसर	1,759

बदन सिंह चौहान

67	पोंदरी	1,124
68	पोठली	1,938
69	रनईला खुर्द	6,228
70	रंसीका	3,663
71	रीबर	2,124
72	रींडका	1,514
73	रूपनगर	3,282
74	रूपराका	12,743

75	सनपाल	1,832
76	सारोली	2,002
77	स्वामीका	3,305
78	टोंका	1,421
79	उटावर	17,650

होडल तहसील में गाँव और उनकी जनसंख्या

होडल तहसील में गाँव और उनकी जनसंख्या		
	गाँव	जनसंख्या
1	होडल नगर पालिका	50,153
2	हसन पुर नगर पालिका	11,569
1	औरंगाबाद	11,610
2	बंचारी	11,555
3	बंसवान	6,331
4	बपटोली	471
5	भंडोली	2,996
6	भिडूकी	11,878
7	भुलवाना	7,081
8	बुराका	828
9	दाधका	2,070
10	ड़कौरा	3,414
11	डराना	1,677
12	दीघौत	10,954
13	फरतास कुनगर	3
14	घासेरा	3,606
15	गोरौता	4,855
16	गूढराना	3,466
17	गुलावड़	10,302
18	हसनपुर	914
19	होडल	11,568
20	ललालपुर फ़ौफ़ी	671
21	जटौली	3,662
22	कंवर का	1,773
23	करवन	2,552
24	खांम्बी	9,769
25	खांटेला सराय	8,830
26	खिरबी	2,382
27	लिखी	6,632
28	लोहीणा	2,789
29	मच्छीपुरा	579
30	महोली	1,632
31	मरोली	3,217
32	मीरपुर करौली	3,547

बदन सिंह चौहान

33	मीत्रोल	4,668
34	मुर्तजाबाद	2,307
35	पालरी	870
36	पिंगलरु	4,315
37	पिंगोर	6,907
38	रामगढ़	2,067
39	सहनोली	2,079

40	सिहोली	4,314
41	शोलाका	2,301
42	सिहा	5,098
43	सौंध	12,048
44	तुमसरा	2,307
45	वली मोहम्मदपुर	1,419

भारत देश की जनसंख्या - एक नज़र

- 300 ईसा पूर्व में प्राचीन भारत की जनसंख्या 100-140 मिलियन थी (10 करोड़ से 14करोड़ के बीच)।
- यह अनुमान लगाया गया है कि जनसंख्या, 1600 में लगभग 100 (10 करोड) मिलियन थी और बनी रही।
- 19 वीं सदी के अंत तक लगभग स्थिर रही। यह पहले के अनुसार 255 (पच्चीस करोड़ पचास लाख) मिलियन तक पहुंच गई।

पहली जनगणना - 1881 में हुई।

- 1881 से भारत की जनसंख्या के अध्ययन ने कुल मिलाकर ऐसे विषयों पर ध्यान केंद्रित किया है।
- जनसंख्या, जन्म और मृत्यु दर, विकास दर, भौगोलिक वितरण, साक्षरता, ग्रामीण और शहरी विभाजन, एक लाख के शहर और आठ मिलियन (80 लाख)से अधिक आबादी वाले तीन शहर मिलियन: दिल्ली, ग्रेटर मुंबई (बॉम्बे), और कोलकाता (कलकत्ता)।
- भारत दुनिया के 2.4% भूमि क्षेत्र पर कब्जा करती है, लेकिन दुनिया की 17.5% से अधिक की जनसंख्या भारत में रहती है।
- 2001 की जनगणना में 72.2% लोग लगभग 638,000 गाँव में रहते थे। और शेष 27.8% जनसख्या 5100से अधिक कस्बों और 380 शहरी क्षेत्रों में रहते हैं।

क्रमांक .	जनगणना वर्ष	जनगणना	जनसंख्या %
1	**1951**	**361,088,000**	**-----**
2	**1961**	**439,235,000**	**21.6%**
3	**1971**	**548,160,000**	**24.8%**
4	**1981**	**683,329,000**	**24.7%**
5	**1991**	**846,387,888**	**23.9%**
6	**2001**	**1,028,737,436**	**21.5%**
7	**2011**	**1,210,726,932**	**17.7%**

भारत देश के राज्यों की जनसंख्या

S.No.	State / Union Territory	Population	%	Area (km²)	Males	Females	Sex Ratio	Literacy	Rural Population	Urban Population
1	Uttar Pradesh	166,197,921	16.50	240,928	87,565,369	78,632,552	912	67.68	131,658,339	34,539,582
2	Maharashtra	96,878,627	9.28	307,713	50,400,596	46,478,031	929	82.34	55,777,647	41,100,980
3	Bihar	82,998,509	8.60	94,163	43,243,795	39,754,714	918	61.80	74,316,709	8,681,800
4	West Bengal	80,176,197	7.54	88,752	41,465,985	38,710,212	950	76.26	57,748,946	22,427,251
5	Madhya Pradesh	60,348,023	6.00	308,245	31,443,652	28,904,371	931	69.32	44,380,878	15,967,145
6	Tamil Nadu	62,405,679	5.96	130,058	31,400,909	31,004,770	996	80.09	34,921,681	27,483,998
7	Rajasthan	56,507,188	5.66	342,239	29,420,011	27,087,177	928	66.11	43,292,813	13,214,375
8	Karnataka	52,850,562	5.05	191,791	26,898,918	25,951,644	973	75.36	34,889,033	17,961,529
9	Gujarat	50,671,017	4.99	196,024	26,385,577	24,285,440	919	78.03	31,740,767	18,930,250
10	Andhra Pradesh	76,210,007	4.08	160,200	38,527,413	37,682,594	996	67.41	34,776,389	14,610,410
11	Odisha	36,804,660	3.47	155,707	18,660,570	18,144,090	979	72.87	31,287,422	5,517,238
12	Telangana	35,193,978	2.9	114,845	42,442,146	42,138,631	990	66.83	20,624,678	6,198,530
13	Kerala	31,841,374	2.76	38,863	15,468,614	16,372,760	1084	95.50	23,574,449	8,266,925
14	Jharkhand	26,945,829	2.72	79,714	13,885,037	13,060,792	948	66.41	20,952,088	5,993,741
15	Assam	26,655,528	2.58	78,438	13,777,037	12,878,491	958	72.19	23,216,288	3,439,240
16	Punjab	24,358,999	2.29	50,362	12,985,045	11,373,954	895	75.84	16,096,488	8,262,511
17	Chhattisgarh	20,833,803	2.11	135,191	10,474,218	10,359,585	991	70.28	16,648,056	4,185,747
18	Haryana	21,144,564	2.09	44,212	11,363,953	9,780,611	879	75.55	15,029,260	6,115,304
19	Delhi	13,850,507	1.39	1484	7,607,234	6,243,273	868	86.21	944,727	12,905,780
20	Jammu and Kashmir	10,143,700	1.04	222,236	5,360,926	4,782,774	889	67.16	7,627,062	2,516,638
21	Uttarakhand	8,489,349	0.83	53,483	4,325,924	4,163,425	963	78.82	6,310,275	2,179,074
22	Himachal Pradesh	6,077,900	0.57	55,673	3,087,940	2,989,960	972	82.80	5,482,319	595,581
23	Tripura	3,199,203	0.30	10,486	1,642,225	1,556,978	960	94.65	2,653,453	545,750
24	Meghalaya	2,318,822	0.25	22,429	1,176,087	1,142,735	989	74.43	1,864,711	454,111
25	Manipur	2,293,896	0.21	22,327	1,161,952	1,131,944	992	79.21	1,590,820	575,968
26	Nagaland	1,990,036	0.16	16,579	1,047,141	942,895	931	79.55	1,647,249	342,787

27	Goa	1,347,668	0.12	3,702	687,248	660,420	973	88.70	677,091	670,577
28	Arunachal Pradesh	1,097,968	0.11	83,743	579,941	518,027	938	65.38	870,087	227,881
29	Pondicherry	974,345	0.10	479	486,961	487,384	1037	85.85	325,726	648,619
30	Mizoram	888,573	0.09	21,081	459,109	429,464	976	91.33	447,567	441,006
31	Chandigarh	900,635	0.09	114	506,938	393,697	818	86.05	92,120	808,515
32	Sikkim	540,851	0.05	7,096	288,484	252,367	890	81.42	480,981	59,870
33	Andaman and Nicobar Islands	356,152	0.03	8,249	192,972	163,180	876	86.63	239,954	116,198
34	Dadra and Nagar Haveli	220,490	0.03	491	121,666	98,824	774	76.24	170,027	50,463
35	Daman and Diu	158,204	0.02	112	92,512	65,692	618	87.10	100,856	57,348
36	Lakshadweep	60,650	0.01	32	31,131	29,519	946	91.85	33,683	26,967
TOTAL	**India**	**1,210,726,932**								

क्रम	राज्य	वर्ष 2001 में जिलों की संख्या	वर्ष 2014 में जिलों की संख्या	भोगोलिक परिवर्तन के बिना – जिलों की संख्या
1	उत्तर प्रदेश	45	71	-
2	मध्य प्रदेश	45	51	-
3	बिहार	37	40	34
4	महारास्ट्र	35	36	31
5	राजस्थान	32	33	18
6	तमिल नाडु	30	32	25
7	कर्नाटक	27	30	24
8	उड़ीसा	30	30	26
9	आसाम	23	27	15
10	गुजरात	25	33	20
11	झारखंड	18	24	9
12	आंध्र प्रदेश	23	13	13

13	जम्मू और कश्मीर	14	22	5
14	हरियाणा	19	21	17
15	पंजाब	17	22	8
16	वेस्ट बेंगाल	18	20	17
17	छत्तीसगढ़	16	27	8
18	केरल	14	14	14
19	अरुणाचल प्रदेश	13	17	10
20	उत्तराखंड	13	13	11
21	हिमाचल प्रदेश	12	12	12
22	नागा लैंड	8	11	3
23	दिल्ली	9	11	9
24	मणिपुर	9	9	9
25	मिज़ोरम	8	8	4
26	मेघालय	7	11	4
27	सिक्किम	4	4	4
28	त्रिपुरा	4	8	2
29	पुण्डुचेरी	4	4	4
30	अंडेमान एवं निकोबार	2	3	1
31	गोवा	2	2	2
2	दमन और डीयू	2	2	2
3	दादर और नगर हवेली	1	1	1
4	चंडीगढ़	1	1	1
5	लक्षदीप	1	1	1
6	तेलंगाना	0	10	10
ल	भारत	593	640	

बदन सिंह चौहान

अध्याय - 5

जमीन और राजस्व संबंधी जानकारी

नापने की इकाई

बन्दोबस्ती से पहले

1 करम = 57.157"
1 बिसवांसी = 1 करम X 1 करम
20 बिसवांसी = 1 बिसवा
20 बिसवा = 1 बिघा
4 बिघा और 16 बिसवा = 1 एकड़

सहकारी बन्दोबस्ती

1 करम = 57.157"
20 बिसवांसी = 1 बिसवा
20 बिसवा = 1 बिघा
4 बिघा = 1 किला (40 करम X 40 करम)

बन्दोबस्ती के बाद

1 करम = 66"
1 सरसाई = 1 करम X 1 करम
9 सरसाई = 1 मरला
20 मरला = 1 कनाल
8 कनाल = 1 एकड़ (घुमन)
1 एकड़ = 36 करम X 40 करम
(उतर से दक्षिण, पुर्व से पश्चिम)

बदन सिंह चौहान

जमीन और राजस्व संबंधी जानकारी

पटवारी के यहां जमीन के बारे में जानकारी होना बहुत लाभकारी होता है। दिन प्रति दिन काम आने वाले नाम है जो पटवारी से किसान अपनी जमीन की जमाबंदी आदि लेते समय काम आते हैं। ये सभी नाम मुग़ल काल से ही अब तक चके आ रहे हैं। हम किसानों के लिए इनके नामो को जानना बहुत जरूरी है। ये सभी नाम उर्दू या फ़ारसी में दिए गए है।

जमीन सम्बन्धि नाम - पटवारी के यहां

	आबादी देह	गॉव का बसा हुआ क्षेत्र ।
	मौजा	ग्राम
	हदबस्त	तहसील में गॉव का सिलसिलावार नम्बर ।
	मौजा बेचिराग	बिना आबादी का गॉव ।
	मिसल हकीयत	बन्दोबस्त के समय विस्तारपूर्वक तैयार की गई जमाबन्दी ।
	जमाबन्दी	भूमि की मलकियत व बोने के अधिकारों की पुस्तक ।
	इन्तकाल	मलकियत की तबदीली का आदेश ।
	खसरा गिरदावरी	खातेवार मलकियत,बोने व लगान का रजिस्टर ।
	लाल किताब	गॉव की भूमि से सम्बन्धित पूर्ण जानकारी देने वाली पुस्तक ।
0	खतौनी पैमाईश	बन्दोबस्त/चकबन्दी में पैमाईश के बाद मलकियत की जोत का विवरण ।
1	शजरा नसब	भूमिदारों की वंशावली ।
2	पैमाईश	भूमि का नापना ।
3	ग्ज	भूमि नापने का पैमाना ।
4	अड्डा	जरीब की पडताल करने के लिए भूमि पर बनाया गया माप ।
5	ज्रीब	भूमि नापने की 10 कर्म लम्बी लोहे की जंजीर ।
6	गठठा	57.157 ईंच जरीब का दसवां भाग ।
7	क्रम	66 ईंच लम्बा जरीब का दसवां भाग ।
8	व्रास	लम्ब डालने के लिए लकडी का यन्त्र ।
9	झण्डी	लाईन की सीधाई के लिए 12 फुट का बांस ।
0	फरेरा	दूर से झण्डी देखने के लिए बांस पर बंधा तिकोना रंग बिरंगा कपडा ।
1	सूए	पैमाईश के लिए एक फुट सरिया ।
2	पैमाना पीतल	म्सावी बनाने के लिए पीतल का बना हुआ ईंच ।
3	मुसावी	मोटे कागज पर खेतों की सीमायें दर्शाने वाला नक्शा ।
4	शजरा	खेतों की सीमायें दिखाने वाला नक्शा ।
5	शजरा किस्तवार	टरैसिंग क्लाथ या टरैसिंग पेपर पर बना हुआ खेतों का नक्शा
	शजरा पार्चा	कपउे पर बना खेतों का नक्शा ।

6		
7	अक्स शजरा	शजरे की नकल (प्रति)
8	फिल्ड बुक	खेतों के क्षेत्रफल की विवरण पुस्तिका ।
9	बीघा	40ग40 वर्ग करम त्र4 बीघे का खेत ।
0	मुरब्बा	25 किलों की समूह यानि 200 कनाल
1	मुस्ततील	25 एकड का समूह यानि 200 कनाल
2	इस्तखराज	नम्बर की चारों भुजाओं की लम्बाई व चौडाई क्षेत्रफल निकालना
3	श्रकबा	खेत का क्षेत्रफल
4	किस्म जमीन	भूमि की किस्म
5	जमीन सफावार	खेतों का पृष्ठवार जोड
6	थ्मजान खातावार	जेतवार जोड
7	मिजान कुलदेह	गॉव के कुल क्षेत्रफल का जोड
8	जोड किस्मवार	गॉव की भूमि का किस्मवार जोड
9	गोशा	खेत का हिस्सा
0	त्तीमा	खेत का बांटा गया भाग
1	व्तर	कर्ण
2	बिसवांसी	57.157 ईंच कर्म का वर्ग
3	बिसवा	20 बिसवांसी
4	बिघा	20 बिसवा
5	म्रला	9 सरसाही बारबर 30–1/4 वर्ग गज त्र1/20
6	क्नाल	20 मरले 605त्र वर्ग गज त्र1/8 एकड
7	एकड	एक किला (40 करमग 36 करम) 4 बीघे– 16 बिसवेत्र(4840 वर्ग गज)
9	शर्क	पूर्व
0	गर्व	पश्चिम
1	जनूब	दक्षिण
2	शुमाल	उत्तर
	खेवट	मलकियत का विवरण

3		
4	खतौनी	काशतकार का विवरण
5	पत्ती तरफ ठोला	गॉव में मालकों का समूह
6	गिरदावर(कानूनगो)	पटवारी के कार्य का निरीक्षण करने वाला
7	दफतर कानूनगो	तहसील कार्यालय का कानूनगो
8	नायब दफतर कानूनगो	सहायक दफतर कानूनगो
9	नायब तटवारी	रिकार्ड रूम तहसील के देखभाल करने वाला पटवारी ।
0	सदर कानूनगो	जिला कार्यालय का कानूनगो ।
1	वासल वाकी नवीस	राजस्व विभाग की वसूली का लेखा रखने वाला कर्मचारी
2	मालिक	भूमि का भू–स्वामी
3	कास्तकार	भूमि को जोतने वाला एवं कास्त करने वाला ।
4	मालक कब्जा	मालिक जिसका शामलात में हिस्सा न हो ।
5	मालक कामिल	मालिक जिसका शामलात में हिस्सा हो
6	शामलात	सांझी भूमि
7	शामलात देह	गॉव की शामलात भूमि
8	शामलात पाना	पाने की शामलात भूमि
9	शामलात पत्ती	पत्ती की शामलात भूमि
0	शामलात ठौला	ठोले की शामलात भूमि
1	मुजारा	भूमि को जोतने वाला जो मालिक को लगान देता हो ।
2	मौरूसी	बेदखल न होने वाला व लगान देने वाला मुजारा
3	गैर मौरूसी	बेदखल होने योग्य कास्तकार
4	छोहलीदार	जिसको भूमि दान दी जावे ।
5	व्सायल आबपासी	सिंचाई के साधन ।
6	नहरी	नहर के पानी से सिंचित भूमि ।
7	चाही नहरी	नहर व कुएं द्वारा सिंचित भूमि
8	चाही	कुएं द्वारा सिंचित भूमि
	चाही मुस्तार	खरीदे हुए पानी द्वारा सिंचित भूमि ।

बदन सिंह चौहान

9		
0	बरानी	वर्षा पर निर्भर भूमि ।
1	आबी	नहर व कुऐं के अलावा अन्य साधनों से सिंचित भूमि ।
2	बंजर जदीद	चार फसलों तक खाली भूमि ।
3	बंजर कदीम	आठ फसलों तक खाली पडी भूमि ।
4	गैर मुमकिन	कास्त के अयोग्य भूमि ।
5	नौतौड	कास्त अयोग्य भूमि को कास्त योग्य बनाना ।
6	क्लर	शोरा या खार युक्त भूमि ।
7	चकौता	नकद लगान ।
8	सालाना	वार्षिक
9	लगाने बिलमुक्ता साल तमाम	कुल वार्षिक तयशुद्वा लगान ।
0	बटाई	पैदावार का भाग ।
1	तिहाई	पैदावार का 1/3 भाग ।
2	निसफी	पैदावार का 1/2 भाग ।
3	पंज दुवंजी	पैदावार का 2/5 भाग ।
4	चहाराम	पैदावार का 1/4 भाग ।
5	तीन चहाराम	पैदावार का 3/4 भाग ।
6	बहिस्सा बराबर	समभाग ।
7	मुन्द्रजा	पूर्वलिखित (उपरोक्त)
8	मजकूर	चालू
9	राहिन	गिरवी देने वाला ।
00	मुर्तहिन	गिरवी लेने वाला ।
01	बाया	भूमि बेचने वाला ।
02	मुस्तरी	भूमि खरीदने वाला ।
03	वाहिब	उपहार देने वाला ।
04	मौहबईला	उपहार लेने वाला ।
	देहिन्दा	देने वाला ।

बदन सिंह चौहान

05		
06	गेरिन्दा	लेने वाला ।
07	लगान	मुजारे से मालिक को मिलने वाली राशी या जिंस
08	पैमाना हकीयत	शामलात भूमि में मालिक का अधिकारी ।
09	सरवर्क	आरम्भिक पृष्ठ ।
10	इण्डैक्स	पृष्ठ वार सूची ।
11	मकव्वा(शजरा नसब)	शजरा नसब वंशावली रखने का लिफाफा ।
12	इन्डैक्स (रदीफवार)	वर्णमाला अनुसार मालिकों की सूची ।
13	इन्डैक्स नम्बरान खसरा	गॉव के पूरे खेतों के नम्बरों की सूची ।
14	मुफ़सल जमाबन्दी	विस्तारपूर्वक जमाबन्दी ।
15	नक्शा कमीबेशी	पिछली जमाबन्दी के मुकाबले में क्षेत्रफल की कमी या वृद्धि
16	नक्शा मुआफीयात व पैन्शनखारान ।	मुआफीदारों व पैंशन भोगियों की सूची ।
17	नक्शा हकूक चाहात	कूएं द्वारा पानी लेने के अधिकार ।
18	वाजिबुलअर्ज	ग्रमवासियों के ग्राम सम्बन्धी रस्में रीति रिवाज ।
19	थ्वरासत	उत्तराधिकार ।
20	लावल्द(बिलाजन)	थ्नसंतान व बिला विधवा ।
21	मुतवफी	मृत्क
22	हिब्बा	उपहार ।
23	बैयहकशुफा	भूमि खरीदने का न्यायालय द्वारा अधिकार ।
24	श्रहन बाकब्जा	कब्जे सहित गिरवी ।
25	आड रहन	बिला कब्जा गिरवी ।
26	बैयवहिफज रहन	रहन होते हुए भूमि अन्य को बेचना ।
27	रहन दर रहन	मुर्तहिन द्वारा कम राशि में गिरवी रखना ।
28	सैंकिण्ड रहन	राहिन द्वारा मुर्तहिन के ईलावा किसी अन्य के पास गिरवी रखना
29	फकुल रहन	गिरवी रखी भूमि को छुडा लेना ।
30	बैयहक मुर्तहिनी	मुर्तहिनी द्वारा अपने अधिकार उतनी ही राशि में बेचना ।
	इन्तकाल	रिकार्ड के इन्द्राज को ठीक करने के लिए इन्तकाल दर्ज करना

बदन सिंह चौहान

31	फकुलरहन(तरतीबी)	
32	फक सैकिण्ड रहन	सैकिण्ड रहन छुडवाना ।
33	तबादला	भूमि के बदले भूमि लेना ।
34	बैय	जमीन बेच देना
35	तकसीम खानगी	भूमि का घरेलू बंटवारा ।
36	तकसीम बहुकम अदालत	भूमि की अदालत द्वारा बंटवारा या तकसीम
37	तबदील मलकियत	न्यायालय के आदेशानुसार मलकियत की तबदीली ।
38	पडत सरकार	राजस्व रिकार्ड रूम में रखी जाने वाली प्रति ।
39	पडत पटवार	रिकार्ड की पटवारी के पास रखी जाने वाली प्रति ।
40	मुसन्ना	असल रिकार्ड के स्थान पर बनाया जाने वाला रिकार्ड ।
41	फर्द	नकल
42	फर्द बदर	राजस्व रिकार्ड में हुई गलती को ठीक करना ।
43	थ्मन	भाग
44	थ्गरदावरी	खेतों का फसलवार निरीक्षण ।
45	थ्जंसवार	फसलवार जिंसों का जोड
46	बन्दोबस्ती झाड पैदावार	बन्दोबस्त के दौरान निर्धारित की गई औसत पैदावार(जमीन की किस्तवार)
47	फसल खरीफ	सावनी की फसल
48	खराबा	प्राकृतिक आपदा से खराब हुई फसल ।
49	फसल रबी	आसाढी की फसल ।
50	पुख्ता	औसत झाड पैदावार के अनुसार पक्की फसल
51	साबिक	भूतपूर्व, पूर्व,पुराना ।
52	ळाल	वर्तमान, मौजूदा ।
53	बदस्तूर	जैसे का तैसा(पूर्ववत)
54	त्कावी	फसल ऋण ।
55	कुर्की	अटैचमैन्ट
56	छसतक	राईट आफ डिमाण्ड
	नैलाम	खुली बोली द्वारा बेचना ।

57		
58	बिला हिस्सा	जिसमें भाग न हो ।
59	मिन जानिब	की ओर से ।
60	ब्नाम	के नाम ।
61	ज्लसाआम	जनसभा ।
62	बशनाखत	की पहचान पर ।
63	पिसर या वल्द	पुत्र
64	दुखतर	सुपुत्री
65	वलिद	पिता
66	वलदा	माता
67	ब्वो	विधवा
68	वल्दीयत	पिता का नाम
69	हमशीरा	बहन
71	पिसल मुतबन्ना	गोद लिया हुआ पुत्र
72	हद	सीमा
73	हदूद	सीमायें
74	सेहहदा	तीन गॉवों की एक स्थान पर मिलने वाली सीमाओं पर पत्थर
75	बखाना कास्त	कास्त के खाने में दर्ज ।
76	सकूनत	निवास स्थान
77	महकूकी	काटकर दोबारा लिखना
78	मसकूकी	बिना काटे पहले लेख पर दोबारा लिखना
79	बुरजी सरवेरी	सर्वेक्षण का पत्थर
80	चक तशखीश	बन्दोबस्त के दौरान भूमि की पैदावार के अनुसार तहसील की भूमि का निरधारण
81	दो फसली	वर्ष में दो फसलें उत्पन्न करने वाली भूमि
82	खाली साल तमाम	सारे साल खाली पडी भूमि
83	मेण्ड	खेत की सीमा
	गोरा देह भूमि	गॉव के साथ लगती भूमि

बदन सिंह चौहान

84		
85	हकदार	मालिक भूमि
86	इकरारनामा	आपसी फैसला
87	मुख्तियारनामा	अधिकार पत्र
88	मुख्तियारनामा खास	विशेष कार्य के लिए दिया गया अधिकार पत्र
89	मुख्तियारनामा आम	सभी कार्यों के लिए दिया गया अधिकार पत्र
90	खुशहैसियत	अच्छी हालत
91	महाल	ग्राम
92	कलां	बडा
93	खुर्द	छोटा
94	जदीद	नया
95	मालगुजारी	भूमिकर
96	तरमीम	बदल देना
97	गोत	वंश का गोत्र
98	जमां	भूमि कर
99	झलार	नदी नाले से पानी देने का साधन
00	कनकूत या कण	पैदावार का अनुमान(खडी फसल का अनुमान)
01	कारगुजारी	प्रगति रिपोर्ट
02	खाका	प्रारूप

भूमि रिकॉर्ड दस्तावेज

जमाबंदी (अधिकारों का रिकॉर्ड)

यह प्रत्येक राजस्व संपत्ति में रिकॉर्ड-ऑफ-राइट के हिस्से के रूप में तैयार किया गया दस्तावेज है। इसमें स्वामित्व, खेती और जमीन में विभिन्न अधिकारों की अप-टू-डेट के बारे में प्रविष्टियां हैं। यह हर पांच साल में संशोधित किया जाता है जब पटवारी द्वारा एक जमाबंदी तैयार की जाती है और राजस्व अधिकारी द्वारा सत्यापित की जाती है। संशोधित जमाबंदी की दो प्रतियां तैयार की जाती हैं। एक प्रति जिला रिकॉर्ड रूम को भेज दी जाती है और दूसरी प्रति निपटान की मुद्रा के लिए पटवारी के पास रहती है, सत्य का अनुमान पंजाब भू राजस्व अधिनियम, 1887 की धारा 44 के तहत जमाबंदी में प्रविष्टियों से जुड़ा हुआ है। भूमि में अधिकारों के सभी परिवर्तन राजस्व एजेंसी के

बदन सिंह चौहान

संज्ञान में आने के बाद राजस्व अधिकारी द्वारा सत्यापित किए जाने के बाद एक निर्धारित प्रक्रिया के अनुसार जमाबंदी में प्रतिबिंबित होते हैं।

म्यूटेशन रजिस्टर

उत्परिवर्तन उन परिवर्तनों को इंगित करता है जिन्हें भूमि के स्वामित्व और शीर्षक में लाया जाना है। इसमें अंतिम जमाबंदी की काबट के बारे में जानकारी है, जिसे ठीक किया जाना प्रस्तावित है (कॉलम नंबर 1 से 7) और कॉलम नंबर 8 से 12 में निहित जानकारी को स्थापित करने का प्रस्ताव है। ये स्तंभ स्वयं व्याख्यात्मक हैं। कुलम संख्या 13 म्यूटेशन के प्रकार और उसके विवरण को इंगित करता है। म्यूटेशन शुल्क कॉलम नंबर 14 में दर्ज किया गया है और संक्षिप्त रिपोर्ट कॉलम नंबर 15 में दी गई है। रीमार्क्स कॉलम में वर्तमान जमाबंदी में म्यूटेशन का संदर्भ दिया गया है। दिए गए समय पर, कॉलम नंबर 8-12 को जमाबंदी के कॉलम के रूप में लिया जा सकता है और भूमि के शीर्षक की पुष्टि कर सकता है।

कई प्रकार के म्यूटेशन हैं लेकिन मुख्य प्रकारों में बिक्री, उपहार, बंधक के साथ बंधक, कब्जे के साथ बंधक, विनिमय, विनिमय के बिना, नागरिक अदालत के आदेशों के आधार पर स्वामित्व में परिवर्तन का म्यूटेशन, वंशानुक्रम का विभाजन, विभाजन, भूमि की अवधि के पट्टे, मोचन का मोचन शामिल हैं।

खसरा गिरदावरी

यह फसल निरीक्षण का एक रजिस्टर है। पटवारी अक्टूबर से मार्च के महीने में हर छह महीने में खेत की कटाई का निरीक्षण करता है। वह फसल उगाए जाने, मिट्टी के वर्गीकरण, खेती करने और खेती करने वालों की क्षमता से संबंधित तथ्यों को दर्ज करता है। यह मूल्यवान डेटा है और निदेशक, भूमि रिकॉर्ड्स, हरियाणा द्वारा तैयार और प्रकाशित कई रिटर्न और पूर्वानुमानों का आधार है। दस्तावेज़ को 12 साल की अवधि के लिए पटवारी की हिरासत में रखा जाता है, जिसके बाद उसे फिर से प्राप्त करना और नष्ट करना भी होता है।

अक्टूबर के पहले से शुरू होने वाले पहले छह मासिक निरीक्षण को खरीफ गिरदावरी कहा जाता है जबकि मार्च के दूसरे से रबी गिरधारी कहा जाता है। यदि परिस्थितियों की आवश्यकता होती है, तो इस संबंध में अलग-अलग तिथियां किसी भी या सभी जिलों के प्रभारियों के आयुक्त द्वारा उनके प्रभार के तहत तय की जा सकती हैं। इसके अलावा, खरबूजे और तंबाकू आदि जैसी अतिरिक्त रबी फसलों के मामले में जो मार्च में नहीं देखी जा सकती हैं, पटवारी ऐसे क्षेत्रों के संबंध में an ज़ैद रबी गिरदावरी 'नामक एक अतिरिक्त निरीक्षण करते हैं। कुछ मामलों में, इसी तरह का जैद खरीफ निरीक्षण भी किया जाता है।

शजरा नसाब

निपटान के समय प्रत्येक संपत्ति में तैयार किया गया और रिकॉर्ड-ऑफ-राइट का एक हिस्सा बनाया गया। शारजा नसाब संपत्ति में समय-समय पर होने वाले स्वामित्व अधिकारों के उत्तराधिकार को दर्शाती हैं। इसे हर पांच साल में संशोधित और अद्यतित किया जाता है और समय-समय पर होने वाले अंतराल में उपयुक्त संदर्भों के माध्यम से पटवारी की प्रति में परिलक्षित होता है।

निपटान के समय तैयार किया गया शारजाहब, पिछले मालिकाना हक, संपत्ति का इतिहास और समय-समय पर मालिकाना अधिकारों के विचलन के बारे में जानकारी का एक स्रोत है। बस्ती में तैयार जमाबंदी के साथ इसकी

एक प्रति जिला रिकॉर्ड को सौंपी जाती है। दूसरी प्रति पटवारी के पास रहती है और नई बस्ती के बल में आने के बाद उसे फिर से प्राप्त किया जाता है, जब इसे तहसील या जिला रिकॉर्ड रूम में स्थायी रूप से रखा जाता है।

जिसे लोकप्रिय रूप से शजरा नाम दिया गया है। पटवारी a लट्ठा 'नामक कपड़े पर शजरा की एक प्रति रखता है। यह सर्वेक्षण संख्या और एक क्षेत्र का आयाम देता है, अब एक दिन में आमतौर पर 40 करम से एक इंच तक तैयार किया जाता है। यह निपटान या संरक्षण के समय तैयार किया जाता है। मूल प्रति तहसील रिकॉर्ड रूम में रखी गई है और हर पांच साल में अपडेट की जाती है। पटवारी की प्रति क्षेत्र के निरीक्षण के माध्यम से अप-टू-डेट रखी जाती है और समय-समय पर अनुप्रमाणित सभी स्थानांतरणों को शामिल किया जाता है।

रोजनामचा वकती

यह पटवारी द्वारा समय-समय पर जारी कार्यकारी निर्देशों के तहत रखी गई दैनिक घटनाओं की एक डायरी है। पटवारी प्रत्येक दिन बारिश, ओलावृष्टि और अन्य प्राकृतिक आपदाओं, भूमि या अन्य अधिकारों में लेन-देन, सुपीरियर अधिकारियों द्वारा दौरा और उनके द्वारा दिए गए आदेशों, उनके द्वारा प्राप्त नागरिक और आपराधिक न्यायालयों के आदेशों और उनके द्वारा निष्पादित किए गए तथ्यों का संक्षेप में उल्लेख करने के लिए एक प्रविष्टि करता है। उसे, फसल और मवेशियों की स्थिति, उसके द्वारा किए गए विभिन्न सर्वेक्षण और निरीक्षण और उसके ध्यान में आने वाले महत्व के कोई अन्य तथ्य या उसके बारे में सूचना दी गई। वर्ष के लिए डायरी हर साल सितंबर / अक्टूबर के महीने में शुरू की जाती है। इसके पन्नों को कार्यालय कन्नू द्वारा क्रमांकित और प्रमाणित किया जाता है ताकि रिकॉर्ड के साथ कोई भी तड़का संभव न हो। चूंकि दस्तावेजों में प्रविष्टियां एक मूल्यवान साक्ष्य हैं, यह निपटान के संचालन के दौरान पटवारी की हिरासत में रहता है और नियमों के तहत निर्धारित भुगतान के आधार पर संबंधित प्रविष्टियों की प्रतियां उनसे प्राप्त की जा सकती हैं।

लाल क़ताब (गाँव नोट बुक)

प्रत्येक राजस्व संपत्ति के लिए एक अलग नोट बुक रखी जाती है, जिसमें किसी गांव के आंकड़े बनाए जाते हैं। इसमें एस्टेट में उगाई गई फसल, मिट्टी के वर्गीकरण, फसलों के नीचे का क्षेत्र, भूमि का उपयोग, भूमि में हस्तांतरण और कुओं और गांव में सिंचाई के अन्य साधन और लाइव स्टॉक और मवेशी जनगणना के सार सहित कई कथन शामिल हैं। बयानों को समय-समय पर कटाई के निरीक्षण और अन्य अभिलेखों के संशोधन के माध्यम से अद्यतन किया जाता है जो इन बयानों के लिए एक फ़ीड स्रोत है।

वर्षा रजिस्टर

रजिस्टर में तहसील मुख्यालय पर वर्षा गेज से कार्यालय kanungo द्वारा देखी गई बारिश की प्रविष्टियाँ हैं। यह एक अवधि में वर्षा के आंकड़ों के बारे में जानकारी का एक मूल्यवान स्रोत है। यह जिला मुख्यालय पर तहसील में तीन वर्षों की अवधि के लिए रखा गया है।

वर्तमान मूल्य रजिस्टर

इस रजिस्टर में प्रमुख खाद्य-अनाजों की पाक्षिक खुदरा कीमतों का विवरण है और तहसील और जिले में इसका विपणन किया जाता है। यह एक अवधि में प्रचलित कीमतों के बारे में आंकड़ों के लिए जानकारी का मूल्यवान स्रोत है। इसे तीन साल तक बरकरार रखा जाता है और फिर नष्ट कर दिया जाता है।

शजरा किश्तवाड़

समेकन के निपटान के समय तैयार किए गए क्षेत्र के नक्शे की मूल प्रति तहसील रिकॉर्ड रूम में रखी गई है। पंवारी के पास उसके साथ नक्शे की एक और प्रति है, जिसे काम के लिए कपड़े पर तैयार किया जाता है। खेतों में बदलाव आमतौर पर परिस्थितियों के दो सेटों में होता है। कब्जे, बिक्री, उपहार या विनिमय आदि के साथ बंधक के माध्यम से स्थानांतरण, जिसके लिए उत्परिवर्तन प्रविष्टि की जाती है और सक्षम प्राधिकारी का निपटान किया जाता है और दूसरा संयुक्त होल्डिंग्स में भूमि धारकों के अलग-अलग साधनों के माध्यम से या भूमि के वर्गीकरण में एक स्थायी परिवर्तन के माध्यम से। फ़ील्ड मानचित्र में परिवर्तन का पूर्व सेट तातिमा शजरा या पूरक मानचित्रों के माध्यम से प्रासंगिक म्यूटेशन शीट के पीछे परिलक्षित होता है। परिवर्तनों का बाद वाला सेट आमतौर पर आवधिक फसल निरीक्षण के माध्यम से ध्यान में आता है।

पंजाब भूमि अभिलेख नियमावली के पैरा 4.24 में दिए गए निर्देशों में कहा गया है कि जिस वर्ष संबंधित संपत्ति के खरीफ और रबी गिरदावरी करते समय एक नई जमाबंदी को पटवारी को तैयार करना होगा, वह बाद के प्रकारों का ध्यानपूर्वक निरीक्षण करेगा और नोट करेगा। जिन क्षेत्रों में परिवर्तनशील प्रकृति का परिवर्तन हुआ है, उनके द्वारा Girdwari में स्तंभ द्वारा X अंकित किया जाएगा जैसा कि मामला हो सकता है। गिरदावरी के अंत में, चिह्नित किए गए खेतों की संख्या की सूची तैयार की जाती है और पटवारियों को जमाबंदी के आकार के मानचित्रण पत्रक पर नए मानचित्रों की माप और तैयारी के लिए पारित किया जाता है। नए क्षेत्र के आयाम और क्षेत्र को मैपिंग फ़ील्ड के पीछे बनाया गया है।

नई फ़ील्ड संख्याओं को प्रक्रिया के एक सेट के अनुसार एक सर्वेक्षण संख्या दी जाती है। उदाहरण के लिए, एक सर्वेक्षण संख्या को आयत संख्या और किला संख्या द्वारा दर्शाया जाता है। एक आयत में प्रत्येक एक एकड़ के 25 हत्यारे शामिल हैं। आयत संख्या को लाल स्याही में और किला संख्या को रिक्त स्याही में इंगित किया गया है। इस प्रकार फ़ील्ड नंबर को 2 // 4 के रूप में लिखा जाता है। किल नंबर 4 आयत संख्या 2 में निहित है। यदि कुछ स्थानांतरण के कारण, किला संख्या 4 दो क्षेत्रों में विभाजित है, तो नए फ़ील्ड नंबर 2 // 4/1 और 2 होंगे। // 4/2। यदि फ़ील्ड नंबर 2 // 4/1 आगे एक परिवर्तन से गुजरता है और दो नए क्षेत्रों में विभाजित होता है, तो इसे 2 // 4/1/1 और 2 // 4/1/2 के रूप में गिना जाएगा। पटवारी इन परिवर्तनों को एक साथ अपने मानचित्र की प्रतिलिपि में शामिल करता है। मैपिंग शीट्स पर दी गई टाटीमा नई जमाबंदी के साथ बंधी हुई है। जमाबंदी की खेप के समय, पटवारी नक्शे की अपनी प्रति लाता है, तहसील में पड़े नक्शे की मूल प्रति में संशोधन करता है। हालांकि, बंधक, मोचन और खेती की व्यवस्था से संबंधित अस्थायी परिवर्तन मूल प्रति को प्रत्यारोपित नहीं किए जाते हैं। इस प्रकार, किसी विशेष समय में, तहसील रिकॉर्ड में पड़ी मूल प्रति अंतिम जमाबंदी की तारीख के अनुसार स्थिति को दर्शाएगी, जबकि पटवारी की प्रति सामान्य रूप से वर्तमान स्थिति को दर्शाएगी।

मुन्तखिब असामवीर खेतों का विवरण और प्रत्येक को दिए गए किराए के नोट के साथ मालिक और किरायेदारों का एक बयान।

अध्याय - 6

स्कूल एवं अस्पताल

Schools in Allika, Palwal district of Haryana

- **GPS ALLIKA School**
  GPS ALLIKA School is located at Palwal district of Haryana.
  School Code: 6211011202
  Block: Palwal
  Panchayat/Village: Allika
  Rural/Urban: Rural
  School Category: Primary Only
  School Management: Dept. of Education
  School Type: Co-educational
- **GSSS ALLIKA School**
  GSSS ALLIKA School is located at Palwal district of Haryana.
  School Code: 6211011203
  Block: Palwal
  Panchayat/Village: Allika
  Rural/Urban: Rural
  School Category: Upper Pri.+ Sec. And H.Sec.
  School Management: Dept. of Education
  School Type: Co-educational
- **C.S. HIGH SCHOOL ALLIKA**
  C.S. HIGH SCHOOL ALLIKA is located at Palwal district of Haryana.
  School Code: 6211011204
  Block: Palwal
  Panchayat/Village: Allika
  Rural/Urban: Rural
  School Category: Pri. + U.Pri And Secondary
  School Management: Private Unaided
  School Type: Co-educational

- **A.M. PUBLIC SCHOOL ALLIKA**
  A.M. PUBLIC SCHOOL ALLIKA is located at Palwal district of Haryana.
  School Code: 6211011205
  Block: Palwal
  Panchayat/Village: Allika
  Rural/Urban: Rural
  School Category: Pri. + U.Pri And Secondary
  School Management: Private Unaided
  School Type: Co-educati

NATIONAL HAPPY HIGH SCHOOL ALLIKA
is located at Palwal district of Haryana.
School Code: 6211011207
Block: Palwal
Panchayat/Village: Allika
Rural/Urban: Rural
School Category: Pri. + U.Pri And Secondary

School Management: Private Unaided
School Type: Co-educational

B R MEMORIAL MIDDLE SCHOOL ALLIKA

B R MEMORIAL MIDDLE SCHOOL ALLIKA is located at Palwal district of Haryana.

School Code: 6211011208
Block: Palwal
Panchayat/Village: Allika
Rural/Urban: Rural
School Category: Primary with U.Primary
School Management: Private Unaided
School Type: Co-educational

Atal Sewa Kendra – Allika

Village Allika Distt. Palwal
Email : manojallika@gmail.com , **Phone :** 9671065218

Saheed bhagat singh I.T.I allika palwal

was established in 2011. The campus of the ITI is situated in VILL-ALLIKA, Palwal, Haryana. It is approved by Government of Haryana.

Highlights

Established In:- 2011
Institute Type:- ITI, Approvals:- DGET, NCVT, Affiliated:- PR06000240, State:- Haryana,
City:- Palwal Pincode:- 121102

Saheed Bhagat Singh Pvt Iti

is situated in Palwal Haryana. Saheed Bhagat Singh Pvt Iti is Industrial Training Institute under NCVT Saheed Bhagat Singh Pvt Iti.

VILL-ALLIKA, **Haryana District:** Palwal, **State:** Haryana, http://itiharyana.gov.in/en

The Department of Skill Development and Industrial Training, Haryana is imparting skill based training to the unemployed youth of state through the network of **172** Govt. Industrial Training Institutes **(139 (Co-Ed.) GITIs and 33 GITIs for Women)** and **246 Private** ITIs under Craftsman Training Scheme. Engineering & Non-Engineering trade courses of one and two years duration are being run in these institutes. During the current academic year **2019-20, 57328** sanctioned seats in **2610** trade units have been released for admission in GITIs and **34388** sanctioned se

अध्याय 7

कुछ लेख टिप्पणियाँ

ग्राम पंचायत – कृपया ध्यान देवें:-

ग्राम पंचायत – कृपया ध्यान देवें:-

बदन सिंह चौहान मोबाइल नंबर 9468124228 –
सेवानिवृत्त महा प्रबन्धक महा प्रबन्धक
मध्य प्रदेश पर्यटन विकास निगम
निवासी – अल्लीका मंगलवार, 23 जून 2020

विषय: **गाँव के विकास संबन्धित कुछ महत्वपूर्ण बिन्दु की ओर ध्यान आकर्षण।**

प्रिय धीर सिंह,

आप हमारे गांव के अभी तक हुए नवयुवक सरपंचों में से एक है। युवा वर्ग को आगे आना होगा और गांव के विकास के लिए काम करने होंगे। अनुभव नहीं होते हुए भी आप अच्छा काम करने का प्रयास कर रहें हैं। मैं आपके प्रत्येक अच्छे काम के लिए सरहाना करता हूँ। मेरी शुभकामनाएं हैं कि आप अपने काम में सफल रहें। मैं चाहूंगा कि अनावश्यक कामों से बचें। सरपंच की जिम्मेदारी एक चुनौती भरा काम है। संयम और समझदारी से आप अपने काम में लगे रहें। ।

यह पत्र लिखने का मेरा उद्देश्य कुछ महत्वपूर्ण बिंदुओं की ओर ध्यान दिलाने का एक प्रयास है। यह शिकायत पत्र नहीं है।

1.**गाँव के पुराने स्कूल का भवन:-**

वर्ष 1910 के दशक में बना यह गाँव का पहला स्कूल का भवन था। इसमें हमारे बुजुर्गों ने शिक्षा प्राप्त की थी। और 1970 के दशक तक यह स्कूल चलता रहा। हम गाँव वालों के दिलों में इसकी यादें अभी भी बसी हुई हैं। परन्तु आज इस भवन की जर्जर होती हुई स्थिति एक खंडहर में बदल गई है। ये खंडहर बताते

बदन सिंह चौहान

हैं कि इमारत कभी बुलंद थी। यहाँ अंत में इन खंडहरों के फोटो भी संलग्न कर रहा हूँ। पहले के किसी भी सरपंच ने इस ओर ध्यान नहीं दिया। और शिक्षा विभाग ने इसके छोटे से आंगन में दो नए कमरे बनवा दिए, जिनका आंगन वाड़ी के लिए उपयोग होता है। यह नहीं सोचा कि इस पुराने भवन का क्या किया जावे। गिरते हुए ये खँडहर, कमरों में भरा हुआ आस पास की नालियों - सीवर का गंदा पानी, और इसमें पड़ा हुआ कुढा - कचरा बीमारियों निमंत्रण दे रहा है। सांप- बिच्छु जैसे जहरीले कीड़े मच्छर आदि का निवास है या गन्दगी। चिंता का विषय है कि किन परिस्थियों में ये आँगन वादी कि कार्यकर्ता काम करती हैं इन दो कमरों जहा आस पास जीवन को ख़तरा बना रहता है।

- कमरों के अंदर और बाहर गाँव की नालियों का / सीवर का पानी इकट्ठा हो गया है और निरंतर हो रहा है। आस पास का कुढ़ा करकट भी इसी में डाल दिया जाता है। इस कारण वहां बहुत ही ज्यादा बदबू बनी हुई हुई है। रात दिन इस बदबू के कारण आस पास के लोगों का रहना मुश्किल हो रहा है। राह चलते लोग इसी बदबू में से ही आते जाते हैं। आंगन वाड़ी के कार्यकर्ता किस परिस्थिति में काम करते हैं, इसका अंदाजा लगाया जा सकता है।
- यह स्कूल के खंडहर की वही जगह है जहां पिछले वर्ष एक महिला का शव मिला था। यह स्कूल आस पास के निवासी घरों से घिरा हुआ है। और निरंतर बदबू फैला रहा है और निश्चित ही लोग बीमार होंगे।
- इस भवन के खंडहर की ईंटें भी धीरे धीरे गायब हो रही हैं। दरवाजे, खिड़की तो गायब हो चुकी हैं और इसी तरह रहा तो इसमें लगा सभी सामान गायब हो जाएगा। अथवा शिक्षा विभाग व ग्राम पंचायत अन्य कोई सुझाव दे कर इस भूमि का सदुपयोग किया जा सकता है।

a. अब इसमें इसकी दीवारों का जीर्णोद्धार भी संवभ नहीं हैं। और इसके फर्स को भी कुढ़ा करकट हटवा कर समतल करा कर इस भवन को नया जीवन देना भी कठिन है।

इसको तो अब गिरा कर, एक सार करके, इसकी चारदीवारी कर दी जावे, ताकि नए बने आंगन वाड़ी कर कमरों के परिसर का विस्तार कर दिया जावे।

- इस कार्य को अतिआवश्यक समझ कर शीघ्रतम कार्यवाही करना चाहेंगे। डर यह भी है कि लावारिस पड़ी उस तरह की जमीन को कोई अतिक्रमण नहीं ले।

2. प्राईमरी स्कूल और हायर सेकेंडरी स्कूल के पुराने फर्नीचर को नष्ट (write off) करने बाबत:-

- दोनो सरकारी स्कूलों में लगभग 15 – 20 वर्षो से पुराना फर्नीचर पड़ा हुआ है। और यह फर्नीचर भवन के 2 से चार कमरों को घेरे हुए है। इन कमरों का कोई उपयोग नहीं हो रहा है। बड़े स्कूल में तो यह स्थिति है कि कभी इस टूटे हुए फर्नीचर को कमरों में, कभी बाहर तो कभी छत पर रख दिया जाता है।
- वर्ष 2015 में मेरे द्वारा 17अक्टूबर 2015 को शिक्षा अधिकारी को पत्र भी लिखा था। मेरे पत्र को शिकायत समझ कर विभाग द्वारा स्कूल प्रिंसिपल का स्पस्टीकरण मांगा गया और जवाब ले

कर पत्र को नस्ती कर दिया गया। परंतु इस कवाड़ फर्नीचर का कुछ भी नही किया । आज भी वहीं पड़ा हुआ है और 3- 4 कमरे घेरे हुए हुए है ।

निवेदन:- कृपया उचित कार्यवाही करना चाहेंगे ।

3. **गाँव की नालियों का प्रबन्ध**:-

- गांव की नालियों का निर्माण बहुत ही अनुचित है ।
- ऊंचे स्थानों से आने वाले रास्ते में या तो नाली बनाई ही नहीं गई हैं और जहां हैं भी तो आपत्ति जनक हैं । बहुत से लोगों के घर की दीवार से 2- 3 फिट दूर से नाली बना दी गई है । इसका औचित्य समझ से परे है । बहुत से लोग चाहते ही नहीं कि उनकी दीवार के साथ नाली बहे ।
- कई लोग नहीं चाहते कि पड़ोस के घर की नाली का पानी उसकी दीवार की नाली में आए । तो बीचों बीच गली में नाली बना दी गई । और पड़ोसी के दरवाजे के सामने नाली बना कर सामने की नाली में जोड़ दिया गया । यह मेरे घर के सामने है । यहां एक नाली से काम चल सकता था । परंतु छोटी गली में दो नाली बना दी गई ।

a. कई बार नाली का काम रात को 10– 11 बजे कराया गया । उस समय ना तो इंजीनयर, ना कोई पंचायत का प्रतिनिधि और ना कोई लंबरदार वहां उपस्थित रहा । रहे तो मात्र ठेकेदार के मजदूर और कुछ घरवाले जिन्होंने अपने घर की दीवार से नाली को दूर कर दिया । और जो लोग वहां उपस्थित नहीं थे, नाली उसके घर की दीवार के साथ कर दी गई ।

b. जब गली का पक्कीकरण होता है तो गली समतल होनी होती है । परंतु ऐसा नही है मेरे घर के सामने । मेरे परिवार के जितने भी घर हैं, पूरी गली में 3 घर हैं, नाली इन सभी घरों से सटी हुई है क्योंकि हमारी तरफ ढलान बना दी गई है । गली समतल नही है । सामने ऊंचा और मेरी तरफ से नीचा । क्योंकि गली बनाते समय हम उपस्थित नहीं थे ।

कैसा प्रबंध है यह !

c. बीच गली में और घेरी की सड़क में अनेकों जगहों पर बड़ी नाली वर्षों वर्षो से टूटी पड़ी हैं । उनको अभी तक भी ठीक नहीं कराया गया है । और जो भी कुछ थोड़ा बहुत हुआ वह भी कछुआ की चाल से ।

d. बाहर बड़ी घेरी सड़क पर नालियां पाट दी गई है कई लोगों द्वारा, इसके बारे में पंचायत मौन है । पानी आगे बढ़ता ही नहीं, पास के खेत में चला जाता है – जैसे राजपाल महाशय जी के घर के पास ।

e. इसी प्रकार चारों तरफ भी ये ही स्थिति है । हत्तलाब तक जाने के लिए नाली रुकी पड़ी है । खौटा में नाली का पानी गिरता ही नहीं ।

4. खौटा पोखर और दीवाले वाली पोखर में गंदगी:-

- दोनो पोखरों के किनारों पर गंदगी व कुढ़े के ढेर लगे हुए हैं । बदबू निरन्तर फैली रहती है । बीमारियों को निमंत्रण दे है, निरंतर । यह बहुत ही चिंता का विषय है । कृपया इस विषय को गंभीरता से लिया जाए ।

5. अतिक्रमण की समस्या:-

- यह पुरानी समस्या है। बहुत से लोग पंचायत की जगह पर, पोखर की पार पर, गली में अतिक्रमण करने का प्रयत्न करते रहे हैं। जब भी, ऎसी प्रवृति के लोग, मकान की नींव रखते हैं तो पहले तो गली में जगह बढ़ा लेते हैं जितना भी वे बढ़ा सकते हैं। और फिर दरवाजे के सामने ढ़लान बनाएंगे जो गली को छोटी कर देती है। मैंने बल्कि सबने देखा है – चौड़ी चौड़ी गलियां थी, चबूतरे थे, गायब हो गए सब। मेरे घर के सामने कार आ जाती थी, ट्रेक्टर निकल जाया करता था ऊपर से नीचे के रास्ते तक, सब तंग हो गई। गली में घर की नींव बढ़ा बढ़ा कर। और आगे, नींव तो बढ़ाई ही, फिर घर के दरवाजे के सामने 3 फिट के ढलान बना दिए दिए। गली कहां बचेगी !

6. **आज का नज़ारा देखिए – बुग्गियों की पार्किंग का।**

- एक तो गली छोटी गई और उसमें भी लोगों की बुग्गी खड़ी रहती हैं एक के बाद एक। ज्यादा तर गोबर भरा रहता है इन बुग्गियों में। कोई अपनी कार निकलना चाहे तो बड़ी मुश्किल होती है। किसी से कहो तो और भी मुश्किल। यह भी एक प्रकार का अतिक्रमण ही है। गली किसी की निजी संपत्ति नहीं है जो बुग्गी पार्किंग के लिए कब्जा किया जा सके। और बुग्गियों में गोबर भरा हुआ - लोगों को आते जाते हुए बहुत परेशानी होती है। कृपया इस बारे में आवश्यक कार्यवाही करने की कृपा करें। इस प्रवृत्ति को रोका नहीं गया तो आगे जा कर लोग और भी मनमानी करेंगे।

7. **पेड़ों की कटाई** –

- गाँव से राजौलाका को जाने वाली, घुघेरा को जाने वाली और आमरु-दूधौला जाने वाली सड़क पर बहुत पेड़ खड़े रहते थे। अब खाली खाली हो गया है दोनों तरफ। पेड़ काट दिए गए हैं। अपने खेतों से भी लोग पेड़ों को काट देते हैं। किसने काटे ये पेड़, पंचायत के लिए पता लगाना मुश्किल नहीं है। पेड़ काटना नियमानुसार अपराध भी है। और पर्यावरण के लिए ठीक नहीं है पेड़ काटना।

8. कृषि भूमि पर प्लाट काटना:-

a. हत्तलाब के पास और गाँव से बनियाकी की तरफ सड़क के पास ही प्लाट जैसे कटे हुए है, अंदर की सड़क भी बनी हुई है। क्या इसकी अनुमति है ? यह भी सुनिश्चित करने की आवश्यकता है। अब ना तो इन प्लाटों पर मकान ही बने हैं और ना ही खेती होती है। यह सीधा नुकसान है।

9. **सोलर लाइट -**

सोलर लाइट का काम जो अधूरा रह गया है , उसको पूरा कराए जाने की कृपा करना चाहेंगे। सुनिचित करेंगे कि किसी के निजी आवास व खेतों पर ये सोलर लाइट नहीं लगाई जावे। कई जगह फ़ाउंडेशन तो बना दिया गया है परंतु उसके बाद कुछ नहीं हुआ है।

10. **पानी की सप्लाई-**

- पानी की सप्लाई बिलकुल भी संतोषजनक नहीं है। गाँव की ऊंची जगह पर पानी की मुख्य पाईप नहीं पहुँचाई गई है। और कई जगह गाँव की पुरानी घेरी पर भी पानी की पाईप नहीं डाली गई हैं। वहाँ पर रह रहे लोगों को पानी लेने के लिए सेकड़ों फिट अलग से पाईप डाल कर मोटर से पानी खींचना पड़ता है। कई कई घंटे मोटर चलती और हजारों रुपयों का बिजली का बिल भर रहें हैं लोग। दूसरी तरफ एक विशेष मोहल्ले में ऊंचे स्थान पर भी मुख्य पाईप बिछा दी गई हैं।
- अनेकों लोगों के यहाँ पर नल की टोंटी भी नहीं है। पानी व्यर्थ बहता रहता है।
- दूर वाले मकानों मे मोटर से पानी खींचना पड़ता है और हजारों रुपयों का बिजली का बिल आता है। और बहुत जगहों पर पानी व्यर्थ बह रहा है और वहाँ टोंटी भी नहीं लगाई गई हैं।

11. BSNL दूरभाष सेवा-

- दशकों से, बल्कि प्रारम्भ से ही दूरभाष की सेवाएँ ठीक नहीं हैं और आज दिनांक को तो बिलकुल ठप्प हैं। लैंडलाइन फोन तो खत्म हो गए हैं क्योंकि चलते ही नहीं हैं। मोबाइल भी कोई नहीं लेना चाहता BSNL का। इस बारे में आवश्यक कार्यवाही करना चाहेंगे।

12. ग्राम सभा की की मीटिंग-

नियमानुसार ग्राम सभा की मीटिंग बुलाई जाती रहना चाहिए। मैंने नहीं देखा कि कभी कोई यह मीटिंग बुलाई गई हो। यदि मात्र औपचारिकता पूर्ण कर ली जाती हो तो यह कागजी कार्यवाही हो सकती है। यह मीटिंग बुलाई जानी चाहिए और लोगों के सुझाव व समस्यों का निदान किया जाना चाहिए। पंचायत के काम में पारदर्शिता रखी जावे। आय-व्यय का विवरण भी ग्राम सभा में रखा जावे।

13. ग्राम पंचायत-

ग्राम पंचायत के पंचों को काम का बटवारा कर उनको ज़िम्मेदारी दी जा सकती है। महिला पंचों को सीधे कार्य करने का अवसर दिया जाए। उनके पति या ससुर का दखल बिलकुल भी ना होवे। प्राय: यह देखा जाता रहा हैं कि महिला पंच आज तक पंचायत में जाती ही नहीं है। उसको पता ही नहीं है कि क्या हो रहा है। सरपंच और पंच गाँव के विकास के लिए चुने जाते है। पद प्रतिष्ठा व अहम के लिए ये पद नहीं हैं।

14. बिजली के तारों और खंबों की हालत-

हर जगह बिजली के तार बुरी तरह से लटके हुए हैं। मकानों के साथ भी अनेकों जगह ये तार लटके हुए हैं। इन लटकते हुए तारों से घरों में कनैक्शन लिए गए हैं। और प्राय: देखा जा सकता है कि लोग खुद ही इन तारों को छेड़ते रहते हैं और मनमाने ढंग से तार जोड़ते रहते हैं। इन लटकते हुए ताओरोन से हमेशा खतरा बना रहता है कि कहीं कोई दुर्घटना नहीं हो जाए।

15. बिजली की चोरी-की आशंका

लटकते हुए तारों से हमेशा आशंका बनी रहती है कि बिजली की चोरी हो जाएगी। जो लोग ईमानदारी से मीटर में कनैक्शन ले कर बिजली जला रहे हैं वे भारी बिल चुका रहे हैं। मेरा खुद का हजारों

बदन सिंह चौहान

रुपयों का बिल आता है। जबकि मैं ना तो AC और ना ही हीटर चलता हूँ। और अधिकांश लोगों के बिल 200,300 , 400 ही बिल आते रहे हैं। बहुत लोगों के पास कई कई AC भी हैं व हीटर भी चलते होंगे और यहाँ तक चक्की भी चलती हैं। यह चेक करने वाली बात है कि क्या उन्होने उचित कनैक्शन ले रखे हैं और उनके कितने बिल आते हैं।

16. भाई चारा-

पंचायत में भगवान का न्याय बसता है। यह पुराने जमाने की आस्था थी। यदि भाई चारा अच्छा रहे तो सभी लोग सुखी जीवन व्यतीत करेंगे। गुट बाजी खत्म हो जानी चाहिए, यदि गुट बाजी है तो। इससे समाज का विकास नहीं होता है बल्कि दुश्मनी बढ़ती है। गुटबाजी से अपराध भी बढ़ते हैं। हमें इससे बचना चाहिए। इसमें पंचायत साकारात्मक कार्य कर सकती है।

17. रख्या से मिट्टी उठवाना-

मनरेगा की योजना के तहत रख्या से कई एकड़ों से मिट्टी उठवा ली गई। यहाँ 8 – 10 फिट गहरे गड्ढे बन गए हैं। यह जमीन व्यर्थ हो गई है। समतल जमीन से मिट्टी उठवाना उचित निर्णय नहीं था। उचित तो यह होता कि किसी पोखर मिट्टी उठवाई जाती और उस मिट्टी कि स्कूल के मैदान मे डाल कर एक सार कर दिया जाता। इस रख्या के गड्ढे को समतल करने का कुछ किया जावे। और भविष्य में अन्य कोई इस तरह का गड्ढा नहीं किया जावे।

18. गाँव में साफ सफाई बिकुल नहीं है-

- **a.** नालियाँ उचित नहीं होने के कारण जगह जगह गलियों के बीचों बीच तक पानी फैला रहता है। नालीयां रुकी पड़ी हुई हैं जगह जगह।
- **b.** कुढ़े करकट के ढेर लगे हुए मिलते हैं, गाँव के भीतर भी और बाहरी घेरी के चौराहों पर। आस पास के लोग गोबर भी डालते हैं और रास्ते को भी रोकते हैं और गंदगी भी फैलाते हैं। इसका कुछ किया जावे।

अच्छा काम करने के लिए लोगों को समझाना होगा और कुछ कठोर कदम भी उठाने भी पड़ेंगे। और कुछ लोगों कि नाराजगी भी लेनी पद सकती है।

उपरोक्त लिखा हुआ - मेरी और से यह कोई शिकायत नहीं है। और कृपया इसको शिकायत के रूप में नहीं लिया जावे। मेरे तो ये सुझाव हैं जिन की ओर आपका ध्यान आकर्षित कराना उचित समझता हूँ।

सप्रेम धन्यवाद।

प्रति

बदन सिंह चौहान

धीर सिंह सरपंच

ग्राम पंचायत अल्लीका

Monday, April 25, 2016

Visit of Deputy Commissioner Palwal in our village

Day before yesterday on 23rd April 2016, Deputy Commissioner Mr Ashok Sharma came in my village, I think this the first time a DC the District Administrator visited the village and participated in a government function. It's a great event to the simple villagers everywhere in India. District other authorities also were there. It was a function releting to the rural development named "Gram Uday Se Bharat Uday" meaning From village development to India development. This was a mission from the Prime Minister connecting Panchayat day on 24th April that was organized this year in Jharkhand state, I watched live on television started since 3.30 pm.

This day was connected with the Gram Sabha meeting also on same venue and banner contained both the slogans "Gram Uday Se Bharat Uday and Gram Shabha meeting of Allika." It was a great honour nd opportunity for the villagers and gram panvchayat to see the DC and others district officers on this day. SDM Mr Satish Maan also was along. Concerned departmental authorities also was there.

At 9 O'clock in the morning, Tinki my nephew informed me their coming and asked me to be there in school premises where the ceremony is to be held. I reached there at 10 O'clock. Gathering were there waiting the DC to come. People were waiting with garlands in hand to offer welcome the chief guest. Slowly after judging the show status I approached the side pathway of the sitting crowds and walking, Tinki came and asked me to go there in the line of garland people waiting there, I said him to be at ease and let me comfortable, then Lakhmi a friend and my mohalla colleague came fast and insisted me to be in the garland men's line. He tried pressing to take me there and gave a flower garland in my hand. I convinced him to be normal and not to make me uncomfortable, took garland in my hand I made him cool that I will welcome the DC at my own way, at last with a little struggle he went back in the line. There were at least 20 people standing and very curiously and happy feeling a honour for them garlanding an important person.

I was not aware of the function's introductory how know, only could know there only after some time when it forwarding on. Sarpanch did not tell me and even did not feel the necessity of mine in the issue. I do not mind it because I have no relation with the subject, how Tinki told me I can't guess, but I expect from Sarpanch at least a courtesy we have good relations with him and we supported him in election, no doubt he honours me. It is normal if not informed earlier point does not stand anywhere. Sarpanch is Dheer Singh but in real field de facto is his father Mr Bharat Singh s/o late Mohar Ram from Daani Mohalla. Bharat Singh had been convicted for many years Jail in a murder case in his family relations. After coming out he got the confidence of all in outs of local politics and police department. Now he is doing the politics, making relations with political persons locally and success. Not much education he hardly passed 8th class. He experienced the way of welcoming the people, making the relations, attending the times of those persons of importance. In my village he is doing good.

DC reached, came out of his car, everybody was willing see and offer as soon as possible, approached the start of the line and garlanding stated by one, second, third, fourth and on. Maximum were silent smiling and facing with flowers around his neck. DC was very happy as usual in a routine. I was the last and met him with shake hand with an introduction, looking at me DC became more attentive to me looking and educated personality in this village crowd. I gave my introduction that I am a retired officer from Madhya Pradesh; I took him to the dice. Now he asked me to sit and share the dice and I sat, also other insisted to be there. It is easy work for me, in the service period I was day to day work. Looking me at dice and associating with DC audiences all were feeling different, happy I think, above their expectations. I was asked to offer first bouquet to the chief guest DC, he was impressed by my executive posture. Many others welcomed the guest with flowers and turban and shawls.

Cultural programs, girls race and prize distribution were held. Government's message and agenda of "Gram Uday Se Bharat Uday" was read. Also few guidelines for agriculture was read by an official from agriculture department. From panchayat side a paper was read where few proposals were written the work to be done. After reading that I raised my finger to have my suggestions, announcer and concerned person was surprised, could not do anything but not willing to welcome any suggestion. After all it was gram shabha also of panchayat with this base I asked to speak. Then I was asked to wait and called me on the podium after somebody's speech. My name was called I reached the mike and started. To see me at the dice my villagers were watching me in a new person but happy almost. I submitted my few points after introductory welcome words. I asked to see the damaged condition of old school building that has been treated as wasted used and thrown like. I reminded to be normal services of Primary Health Centre, requested to dispose off the old broken furniture and others like street electric wire, school boundary wall etc were already included in panchayat's agenda.

बदन सिंह चौहान

To write this note here my purpose is only that my village men are very far back still in this fast going life, needs the education, they could not get the confidence to face the authorities in normal way. They feel uncomfortable and also a great luck to meet the officers like them. They saw a confidence in me and feeling a more regards to me after this function and my action.

There needs the education to teach them the goodness and positive attitude. I expect the development, yes. Day will come. They will be all assets as Shiv Khera a management guru motivator says, “ Only Good people are Assets rest are Liabilities ……. Goodness is always cultivated.”

…xx….

Date: 17/12/2019

निवासी गण गांव अल्लीका (ब्लाक - पलवल)

सेवा में,

उपायुक्त

जिला – पलवल

विषय: **प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र अल्लीका में नेत्र जाँच की ओपीडी सेवा बहाल करने के बारे में |**

आदरणीय महोदय,

पिछले कई वर्षों से, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र अल्लीका (ब्लॉक- पलवल) बहुत ही अच्छी सेवाएं दे रहा है | इस इकाई के अन्तर्गत लगभग 50,000 आबादी के 29 गांवों आते हैं | वर्ष 2017 से प्रत्येक वर्ष निरंतर, यह इकाई अपनी समर्पित सेवाओं के लिए, पिछले तीन वर्षो से, 2017 से, निरंतर राज्य स्तरीय पुरस्कार प्राप्त करता आ रहा है | वर्ष 2019 में अपनी उत्कृष्टता के लिए राष्ट्रीय स्तरीय पर भी "राष्ट्रीय गुणवत्ता मानक" का पुरस्कार भी मिल चुका है, जो महोदय आपके कर कमलों द्वारा दिनांक 24 सितम्बर 2019 को इस इकाई को गांव वालों की उपस्थिति मे प्रदाय किया गया था |

निवेदन

महत्वपूर्ण

(1) पिछले 10-15 दिनों से इस केंद्र से नेत्र जांच की सुविधा वापस ले ली गई है | पूर्व में नेत्र सहायक श्री राम प्रसाधशुक्रवार को सप्ताह में एक बार आते थे | अब उन्होंने आना बंद कर दिया है । पता चला है कि इनको इनको जिला सामान्य अस्पताल पलवल में 3 दिन और स्वास्थ्य केंद्र दुधौला में 3 दिन, तैनात किया गया है

हमारा विनम्र निवेदन है, महोदय, कृपया, नेत्र जांच की सेवा को पहले की भांति फिर से बहाल किया जावे | इस स्वास्थ्य केंद्र की ओपीडी में लगभग 20 से अधिक मरीज केवल नेत्र जांच के लिए आते रहे हैं | और इस केंद्र के माध्यम से लगभग 100 नेत्र ऑपरेशन भी किए गए हैं । इस सुविधा को वापिस लेने के कारण, मरीजों को बहुत परेशानी हो रही है और विशेष रूप से वरिष्ठ नागरिकों को जो दुधौला एवं पलवल के स्वास्थ्य केंद्र में नहीं जा पाते हैं

इसके अतिरिक्त, महोदय,

(2) यह कि - लैब तकनीशियन और फार्मासिस्ट को अभी तक भी यहां पर पदस्थ नहीं किया गया है, जब कि दिनांक 24 सितंबर 2019 को, महोदय की उपस्थिति में अवार्ड समारोह के समय, सीएमओ द्वारा आश्वासन दिया गया था कि ये दोनों पद शीघ्र ही पदस्थ कर दिए जांएंगे।

कृपया, आवश्यक आदेशार्थ महोदय को निवेदन है।

प्रार्थीगण

(Badan Singh Chauhan) with others

निवासी गण गांव अल्लीका

बदन सिंह चौहान

प्रतिलिपि : सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाई हेतु |

1. मुख्य चिकित्सा अधिकारी - सामान्य अस्पताल पलवल को प्रतिबंधित करें।

2. चिकित्सा अधिकारी प्रभारी - प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र अल्लीका (रोग-पलवल)

प्रार्थीगण

(Badan Singh Chauhan) with others

निवासी गण गांव अल्लीका

Note

Subject: Painful status of Govt Hr. Sec. School Allika (Teh/Distt-Palwal)

I have personally seen the present physical condition of our village school that is as under :- This beautiful school is our pride a big building having all faculties with required science labs also computer lab. It has 26 big rooms; play grounds spread in acres, a peace environment away from any noise. Being an alumni I have my deep sentiments remembering all my 8 years since 1954 I got admitted in class 1 then in old building.

Today this school is in very poor condition, looking no good in this present going on. Please, may like to see as follows :-

1. Rooms are lying open 24 hours–
    a. All rooms are 24 hours open, no locks except few ones like office and science labs.
    b. Computer lab is all the time open, no lock, doors not proper working.
    c. Also other doors are not working proper, not able to shut and bolt.
2. Rooms are dirty.
    a. 80 % of Rooms are very dirty, full of filth smelling bad and seems never cleaned and broomed even since last long past.
    b. Heavy deposits of sands and leftovers are gathered in the rooms.
3. Toilets:-
    a. All toilets are broken, no pipe fitting, water never sent there, all toilets are converted in dumped garbage corners.
    b. All students are going in open for toilets.
4. Computers:-
    a. 9 computers are displayed on scattered tables. These were never used and installed, now depositing deep dust over.
    b. Few 5-6 computers are lying in packets not opened yet.
    c. I doubt at least 10 computers have been stolen.
5. Furniture in-use in the rooms is scattered and half broken needs minor repair.
6. Furniture old and broken:- this is in very bad shape, dumped here & there in corridors, in the rooms and in open area even being easily damaged by rain, sun and cold.
7. Play Ground wall was fallen down few months before, no care being taken. How a wall can fall easily by air… needs to enquire.
8. No Electricity since last more than 6 months.
9. No sweeper since long time so no regular cleaning that is why school is dirty.
10. No chowkidar neither in the day nor proper arrangement in the night.
11. Play ground:-

बदन सिंह चौहान

a. Ground with many acres of land is not maintained. Care badly needed.
b. No sports activity is being initiated for the students.
c. No security guard is there to make the unwanted drinkers go away from the ground in the evening.

12. Education committee is there whose name are displayed on wall, there is no use of it. Nothing is done by it. It should be of qualified and interested people in concern.

Being a very old Alumni for 8 years (1955 to 1962) I am in great shock to see damaging physic of my school. I wish it a model all around with a pleasant atmosphere of cleanliness and well maintained so my children can get good education.

Submitted for needful, please, looking forward.

Badan Singh Chauhan Date: 17 October 2015
Resident of village Allika. Place- Allika

(Above note I have sent to the concerned authorities.)

---क्ष----

Sunday, March 13, 2016, Allika

Bhandara by Bharat

Today is Bhandara organizing by Bharat. Bharat is te father of present Sarpanch of my village. He is doing all activities and proxy Sarpanch, his son Dheer Singh is only sleeping post holder. And votes collected in the name of Bharat only. Bharat is the son of late Mohar Ram from Daani patti. His background is not clean. He has been in jail for many years, may be 20 years in a murder case. He and his brothers in a dispute murdered a man in his neighbor and were sentenced for many years' jail. After release he became experienced in all these in outs of the police and local political activities. He started to take active part in village politics and day to day police concerned actions. They are 6 brothers. All are illiterates and with no common worth to be pleased any one. They have started to give education to their children but no curiosity for higher education. All are indulging in local politics. Creating disputes, making groups, harassment, a fear in others are their nature and main indulgence.

In 2016 elections of gram panchayat Bharat made stood his son as a candidate and he won. Earlier also once a lady has been the sarpanch from his family. But de facto Sarpanch was Bharat only and today even he is the active sarpanch. He has good relations with local people in politics. He has already made his contact and associated with Chautala Party. He is much near to a district level leader Mr Devendra Chauhan. He has often free talks with him, used to mix in his family and does all formal to establish his presence.

In the pleasure of winning sarpanch seat Bharat is organizing a feast in Baba Mansa Ram Mandir. On my morning walk I reached the temple and seen the preparations are going on, vegetable are being cooked. Last evening village chowkidar announced in every street for the invitation that there is Bhandara on Sunday and all are invited with all family members that is *'Chulhey Nyot',* called in local tradition. 'Tagri Band' is invitation for male members only, and *Chulhey Nyot'* for all family members. I will go to eat there at noon. Here in village as per practice/tradition feast starts early at 11 morning or before even.

I voted for this person. He has good relations with us also our other family. He has done his best part in the needs and social behavior. At the time of my son-in-law Vir Singh's death Bharat did the utmost the best what he could in hospital and in social gathering in that village. Earlier I was not happy with him due to his conviction by court and by his different

environmental nature. But seeing helping attitude and social mixing I found him a positive approach. However he is quite different to his rivals. He has his own group and also is arrival group. Rival group is called D-Party by villagers. D means Dalal, Dalal Party in the back of Karan Dalal MLA group. These people dedicated to this MLA and protected by him, this was created by him for his own self moto to get the vote bank. Result became in later that this D Party did all wrong doings as they could do, I don't have correct information but they Gunda image doing theft, loot, murder, quarrel and other unwanted. Once D Party got a chance to become Sarpanch name Mahendra a new boy, bad luck to the village having a Gunda her Sarpanch. It was in the year 2010. For 5 years he gave a bad image of his own and of the village. This D Party use to give its presence to Karan Dalal and feel a power in her hand. In Dalal's name Sarpanch did all his wishes in the village. No gentle person was happy with him by his and his gange's activities. Even then in this 2016's election this D Party got third position in votes, it shows that it has her presence in collecting the votes. Bharat by his relations and with his helping nature he got first position.

I have suggested few works for the development of the village like cleanliness on first priority, education support and promotion, tolerance feeling in social atmosphere and fair work with no corruption. I expect few ones of the above.

Bhandara is also mixer of religious feeling also that Bharat is making full use of it. I approve it. He has also done earlier also on some occasion I do not remember. Bharat knows the tactics to attract the people for future collections.

God bless him. I am with him for his good work. I will go to eat at 11 AM. Also I will give my attendance in a Stya Narayan Katha in Yadupur being organized by Bhagimal brother of my friend late Hoshiyar Singh.

--xx--

लोगों से काम कराना बहुत कठिन होता है

पिछले महीने अगस्त 2018, में मेरी बेटी एकता ने, जो गुजरात के गांधीनगर मैं रहती है, मुझ से फोन किया कि उसको हांगकांग में नौकरी के लिए आवेदन करना है उसके लिए यूनिवर्सिटी से जहां जहां से भी उसने पढ़ाई की है वहां से उसके सर्टिफिकेट (जिसको ट्रांसक्रिप्ट कहते हैं) चाहिए ताकि वह एंबेसी में संबंधित को दिखाए जा सके। एकता ने ग्वालियर से BPED और MPED किया है, जीवाजी यूनिवर्सिटी से और जबलपुर से रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय से BSC किया है और भोपाल से M.A. किया है इन तीनों विश्वविद्यालयों से उसके ट्रांसक्रिप्ट चाहिए। अब इतना आसान काम नहीं है। वैसे भी इस काम में देर लगती है। फिर भी मैंने कोशिश की कि मैं अपने संपर्क वालों से बात करूँ, वहां बैठे हुए लोगों से कहा जाए कि ये सर्टिफिकेट उपलब्ध करा देवें. भोपाल में मैंने होडल सिंह से कहा जो भोपाल यूनिवर्सिटी में कार्यरत है, वह जाट है, मेरा उससे संपर्क रहा है। उसने कहा मैं करा दूंगा। जबलपुर में मैंने मध्य प्रदेश पर्यटन निगम के होटल में कलचुरी होटल में कार्यरत अपने संपर्क वाले व्यक्ति श्रीमती डॉली मैडम से कहा। उसने बड़े शौक से ही, बड़े रूचि लेकर कहा कि "सर मैं इस काम को जरूर करा दूंगी और उसने 4- 6 दिन में वह काम करा दिया। इसमें हमें कोई परेशानी नहीं है और बहुत ही रुचि ले कर उसने काम करा दिया। उसमें जितना खर्चा लगा मैंने उनसे उसका अकाउंट नंबर लिया और एकता को भेज दिया, एकता ने उसके पैसे भेज दिए कुल 1000 से भी कम खर्चा आया, उसको 1000 पूरा भेज दिया गया। उसका बहुत ही एहसान मानता हूं और वह इस काम को करने में बिल्कुल भी परेशान नहीं हुई। अब बात करते हैं होडल सिंह की। उसने पहले तो हां कर दी, फिर ध्यान नहीं दिया तो मैंने बार-बार कहा कि मैं दो-चार दिन में करा दूंगा मैं 'आज जाट सभा के चुनाव में लग रहा हूं, आज वह काम है, आज

यह काम इस तरह उसने कई एक सप्ताह से ज्यादा इसी में काम में लगा दिए। मैंने सोचा काम जल्दी हो जाएगा तो मैबे सोचा कि किसी और व्यक्ति को बोलता हूं ताकि वह होडल सिंह से मिल ले। मैंने समर पाल चौहान से कहा।समर पाल चौहान मेरे संपर्क वाले हैं, वह भी मेरे साथ में मध्य प्रदेश टूरिज्म में काम करते थे। उसने होडल सिंह को फोन किया और कहा कि कितने पैसे जमा करने हैं मैं आ जाता हूं। उसने बताया कि Rs.1500 लगेंगे। इधर एकता ने अपने साथ पढ़े हुए एक व्यक्ति को कहा जिसका नाम अमित रिछारिया है उसको भी कह रखा था। उसको होडल सिंह का नंबर दे दिया और वह होडल सिंह से संपर्क कर ले ताकि काम जल्दी हो जाए और कहा कि पैसे भर देना। अमित ने भी होडल सिंह से बात की। होटल सिंह नाराज हो गया की दो-दो लोगों को भी बोल दिया है और वह कह रहे हैं कि कितने पैसे भेजे हैं, कब आ जाएं, तो उसको लगा कि मैं उसके ऊपर विश्वास नहीं कर रहा हूं और लोगों को भी भेज रहे हैं, तो होडल ने मेरे को फोन किया और यह सब बातें बताई कि उसे अच्छा नहीं लगा कि मैंने अन्य दो लोगों को भी बोल दिया है, वे पूछ रहे हैं कि कितने पैसे लगेंगे, ऐसा समझा जा रहा है कि मैं पैसा ले कर काम करता हूँ। बड़ी मुश्किल से मैंने उसको मनाया और अपनी बात कही कि मैंने जल्दी करने के लिए इन लोगों से कह दिया था। तो बड़ी मुश्किल से उसको मना लिया। एक बार तो ऐसा लगा कि अब काम नहीं होगा। अंततः उसने कहा ठीक है मैं करा देता हूँ।उसने काम करा दिया मगर बहुत समय लिया। अब बात आती है ग्वालियर के काम की। ग्वालियर में सबसे पहले एकता ने बात की थी यूनिवर्सिटी में फिजिकल डिपार्टमेंट में प्रोफेसर डॉ केसर सिंह जी गुर्जर से। उसने कहा मैं करा देता हूँ। इसमें कोई समस्या नहीं है। एकता ने उसको व्हाट्सएप्प पर सारे डॉक्यूमेंट बीपीएड व एमपीएड के भेज दिए। उसके बाद एकता ने बार बार फोन किया तो डॉक्टर केशव सिंह जी ने फोन ही नहीं उठाया। इसके बाद मैंने एकता से पूछा कि डॉक्टर राजेंद्र सिंह गुर्जर से बात की जाए। एकता तो नहीं चाह रही थी कि उससे बात की जाए, पर मैंने कहा मैं उसको WhatsApp पर मैसेज देता हूँ, एकता ने कहा ठीक है। मैंने उनको मैसेज दिया, उसने मेरे को जवाब दिया कि कोई यहां आ जाए और यह पैसे भर दे तो यहां से काम करा कर ले जाए। एक बार तो उसने यह कह दिया था कि यह ऑनलाइन होता है जबकि मैंने चेक किया यह ऑनलाइन नहीं होता है। मैंने उसको यह बता दिया। तो उसका अर्थ मेरी समझ में आ गया कि वह नहीं कराएगा, जबकि उसके पास में बहुत स्टाफ है, छात्र हैं किसी को भी भेजकर यह काम करा सकता था, मगर नहीं कराया। इसके बाद मैंने एकता को बताया कि इस तरह का जवाब राजेंद्र सिंह ने दे दिया है। एकता ने कहा कि उसे डॉक्टर राजेन्द्र सिंह से ऐसी ही उम्मीद थी। फिर एकता ने अपने एक साथी श्री मोगे को बोला कि वह केशव सिंह से संपर्क करके यह काम करा ले। वह 2 दिन लगातार जाकर केशव सिंह क्या ऑफिस में जाकर बैठे रहे पर वह मिले ही नहीं। और इस प्रकार फिर कोई भी उम्मीद नहीं। फिर मैंने विश्वविद्यालय में अपने एक जानने वाले मित्र तेवतिया से बात की जो वहां असिस्टेंट रजिस्ट्रार है। उसने कहा आप एक दिन आ जाइए और हाथो हाथ लेकर चले जाइए। मैंने उनसे कहा मैं किसी को भेज देता हूं यहीं ग्वालियर से ही, उसने कहा ठीक है फिर जो मैंने एकता को कहा कि आप किसी को भेज दो। जो मोगे था वह तो बाहर गया हुआ था, एकता ने फिर एक दूसरे साथी श्री पांडे को कहा जो एकता का जूनियर था, उसने कहा मैं करा दूंगा। उसने जाकर तेवतिया से संपर्क किया। चालान बनवा कर पैसे भी भर दिए। विश्वविद्यालय से कुछ डॉक्यूमेंट लिए जो कि बाहर से टाइप कराना था उसे टाइप करा दिए।अब टाइप करा कर उसको विश्वविद्यालय जाना था, फो तीन दिन वहां जाकर लौट आया, फिर उसको बाहर जाना था और इस प्रकार देर हो रही थी और सबसे बड़ी बात यह थी वह स्कूल में नौकरी करता था और स्कूल बंद होने के बाद 3:00 बजे के बाद ही विश्वविद्यालय जा सकता था। फिर मैंने किसी संपर्क वालों से कहा ग्वालियर में तानसेन होटल के मैनेजर श्री दंडोतिया से कहा कि मेरा काम करा दीजिए, उसने ना तो ना किया परंतु हां भी नहीं किया। उसने कोई ना कोई बहाना बनाया और चुप हो गया, उसने कोई रुचि नहीं ली। इसके बाद में डॉली मैडम ने जबलपुर से ग्वालियर फोन

किया अंजू त्यागी को। उसने कहा मैं यह काम करा देती हूं तो त्यागी ने क्षेत्रीय कार्यालय में पदस्थ क्लर्क श्री इरसाधखान को बोला कि आप चौहान साहब का काम करा दीजिए। इसरार खान ने मुझे फोन किया, मुझे बहुत अच्छा लगा। मैंने उसको सब बता दिया कि आप पांडे जी से सारे पेपर ले लीजिए, एकता ने पांडे जी को भी बात कर ली थी और मैंने भी पांडे जी से बात कर ली थी, तो खान साहब ने सारे पेपर पांडे जी से ले लिए। पिछले 10 दिन से अब यह काम इसरार खान करा रहे हैं।उसने सारे काम करा लिए हैं बीच-बीच में चुप हो गया था, मेरा फोन भी नहीं उठाता था, मैसेज का जवाब भी नहीं देता था। एक बार फोन उठाया तो कभी कहा मैं बाहर गया हुआ था, कभी कहा कि यूनिवर्सिटी बंद है, अन्य कई बहाने।यह हालत हो गई कि क्या किया जाए, इसरार खान काम करा नहीं रहा है, वह गया जरूर था यूनिवर्सिटी, बीच-बीच में छुट्टी भी हो गई, मुझे पहले तो बताया था उसने कि मैंने तेवतिया से बात कर ली है, तेवतिया ने यह सब काम कराने के लिए वहां संबंधित से कहा, कभी रिकॉर्ड ही नहीं मिल रहा है, उसने स्वयं रिकॉर्ड रूम में जा कर देखा जो मिल गया था। भागदौड़ तो खान ने बहुत की है मगर काम तो पूरा नहीं हुआ। बीच में वह चुप ही हो गया। एक हफ्ते तक चुप हो गया, मुझे बहुत चिंता हुई। होटल तानसेन का जो मैनेजर है श्री दंडोतिया उसने काम किया ही नहीं। वह मेरी बात नहीं मानता है और वहां का रीजनल मैनेजर है वीरेंद्र राणा वह मेरे नाम से वैसे ही काम कराना नहीं चाहेगा, मेरा फोन भी नहीं उठाता है। फिट 3 सितंबर को जन्माष्टमी के दिन श्री ओपी कपूर से बात की। श्री कपूर हमारे मध्य प्रदेश टूरिज्म में बॉस रहे हैं जबकि मेरा उनसे कोई अच्छा संबंध नहीं रहा, हमेशा बिगाड़ ही रहा है। उससे मैंने बात की, उसने कहा मैं राणा को बोल देता हूं। मुझे ऐसा लगता है उसने ने राणा से बात की होगी। 4 सितंबर को फिर खान साहब से बात हुई उसने फोन उठा लिया था। उसने कहा 'मैं कल जा रहा हूं, कल वह गया भी था यूनिवर्सिटी।और आज 5 तारीख को भी वह गया था और जितने भी औपचारिकताएं है उसने पूरी की है। उसने आज मेरे को बताया कि वह तेवतिया से बात कर चुका है और संबंधित लिपिक से भी बात की है उसको लिफाफे दे दिए हैं। सब दस्तावेज दे दिए हैं और वह कल मुझे दे देगा, मगर कल ऐसा हो सकता है कि पूरे मध्यप्रदेश में पूरा प्रदेश बंद है, हड़ताल है, इसलिए कोई भी ऑफिस, दुकान कुछ नहीं खुलेगी, 144 धारा भी लगी हुई है। फिर भी खान ने कहा कि मैं फोन करूंगा उस संबंधित व्यक्ति को यूनिवर्सिटी में अगर वह ऑफिस आता है तो मैं कल उनसे यह संबंधित सर्टिफिकेट ले लूंगा। अगर मुझे नहीं लगता है कि वह कल ऑफिस आ पाएगा और कल हमारा काम हो पाएगा। मैंने कई लोगों को देखा है इस समय एक विजय अग्रवाल से भी मैंने बात करी थी ग्वालियर में वह हमारे साथ में अकाउंटेंट थे और बाद में ग्वालियर से रीजनल मैनेजर के पद पर रिटायर हुए हैं, उनसे भी मैंने बात की थी उसने हाँ हाँ करते हुए कहा 'कि मैं बीमार हूं, मैं करूंगा काम को, जाऊंगा यूनिवर्सिटी। फिर मैंने उनको बताया कि मेरा काम इसरार खान के पास में है, उसको आप कहते हैं, उसने कहा कि उस पर क्या भरोसा किया जा सकता है ! अग्रवाल ने खान को फोन किया और उसे कहा कि चौहान साहब का काम करा दीजिए। तो इस तरह परेशानी का सामना करना पड़ रहा है ग्वालियर में और किस तरह का संघर्ष मुझे भोपाल में करना पड़ा। एक बात तो है जब व्यक्ति नौकरी में रहता है अपने पद पर रहता है तो उस समय सारे काम दूर बैठे भी हो जाते हैं और नौकरी के बाद में फिर बहुत परेशानी होती है जहां अच्छे संपर्क भी होते हैं वह भी बहुत कठिनाई का सामना करना पड़ता है। तो इस प्रकार यह अनुभव हैं कि काम कराना बहुत मुश्किल है। बीच-बीच में तो मैं यह सोच रहा था कि मैं खुद चला जाऊं। यदि 1 दिन में काम हो जाएगा यह मुझे मालूम था कि नहीं होगा, इसलिए मैं नहीं गया। दूसरा होटल में ठहरा वहां तो बहुत खर्चा होगा, कई दिन रहना पड़ सकता है। 4 सितंबर को खान से बात भी की, उसने फोन उठा लिया था, उसने कहा लगभग सारा काम गया था और आज 5 तारीख को भी हो गया था। कल ऐसा हो सकता है कि पूरे मध्यप्रदेश में पूरा प्रदेश बंद है, हड़ताल है, इसलिए कोई भी ऑफिस दुकान कुछ नहीं खुलेंगे। 4 सितंबर को खान से बात भी की, उसने फोन उठा

लिया था। मुझे नहीं लगता कि 6 तारीख को काम हो पाएगा क्योकि जब यूनिवर्सिटी खुलेगी ही नहीं तो कैसे काम होगा ! अब प्रतीक्षा है यूनिवर्सिटी खुलने की 7 सितंबर को और काम पूरे होने की आशा। धैर्य की भी एक सीमा होती है, परंतु रखना तो पड़ेगा ही।

---xx----

सफलता

शिव खेड़ा ने अपनी किताब 'जीत आपकी' में लिखा है "जीतने वाले कोई अलग काम नहीं करते वे हर काम अलग ढंग से करते हैं'

हम ऐसे लोगों को मिलते हैं अपनी जिंदगी में किस्मत के सहारे ही रहते हैं और कहते हैं कि जो मिलेगा वह किस्मत में है तो वह मिल जाएगा और उसको वह मान भी और कुछ लोग ऐसे होते हैं जिन्हें कामयाबी तुक्के से मिल जाती है और ज्यादातर लोग ना खुशी होते हैं और हताशा में ही जिंदगी गुजार देते हैं।

अपने जीवन में कुछ योजना बना बना कर रखिए और उन पर आपको तीन बातों का ख्याल रखना पड़ेगा:

1 आप क्या हासिल करना चाहते हैं।

2 किस तरह से उसे हासिल करना चाहते है।

3 कब तक हासिल करना है।

यह तीन बातें जीवन का मूल है और बहुत महत्वपूर्ण है जीवन में सफलता पाने के लिए निश्चित रूप से जीत आपकी ही होगी।

सफल होने के लिए आपको अपना नजरिया सकारात्मक बनाना होगा। प्रतिदिन खुद को और दूसरों को भी प्रेरित करना होगा। अपने स्वाभिमान को सकारात्मक बनाना होगा।आपसी मेलजोल पर बढ़ावा देना होगा अच्छी आदतें बनानी होगी। अच्छा चरित्र बनाना होगा इस प्रकार अपना लक्ष्य बनाइए और उसको हासिल कीजिए।

हम सकारात्मक सोच की बात करते हैं। आपको ताज्जुब होता ही होगा कि दिन-प्रतिदिन कुछ व्यक्ति, कुछ कंपनियां, कुछ देश दूसरे के मुकाबले में ज्यादा कामयाब हो जाते हैं। ऐसा क्यों है यह कोई राज नहीं है। यह स्पष्ट है, खुली बात है। ऐसे लोगों के सोचने का नजरिया अलग होता है काम करने का तरीका अलग होता है और वह विजय होते हैं। जीतने वाले कोई अलग काम नहीं करते वे हर काम अलग ढंग से करते हैं, यह सच है।

अनुभव के आधार पर यह है पता चलता है कि व्यवसाय में सबसे जरूरी और कीमती संसाधन क्या होता है ? वह होता है - इंसान और इसकी कीमत तो पूंजी और मशीनों से भी ज्यादा होती है। इसकी महत्ता दूसरे संसाधनों से भी अधिक होती है। परंतु दुर्भाग्यवश यह संसाधन जिसका नाम इंसान है वह व्यर्थ चला जाता है। आदमी ही आप की सबसे बड़ी पूंजी है और सबसे बड़ा बड़ा बोझ भी हो सकता है।

फ्रांस के एक चिंतक ने जिसका नाम ब्लेज पास्कल है। उसके पास एक आदमी आया और कहने लगा कि " अगर मेरे पास आपका जैसा दिमाग होता तो मैं एक बेहतर इंसान बन सकता हूं।" तब पास्कल ने उसको जवाब दिया "एक बेहतर इंसान बनो तुम्हारा दिमाग खुद पर खुद मेरे जैसा हो जाएगा।"

हार्वर्ड यूनिवर्सिटी के द्वारा एक अध्ययन के दौरान पाया गया है कि जब कोई व्यक्ति नौकरी पाता है तो इसमें 85% हिस्सेदारी उसके नजरिए की होती है, उसकी सोच की होती है और बाकी 15% उस व्यक्ति की स्मार्टनेस और काम की जानकारी शामिल होती है। आश्चर्य की बात तो यह है कि पढ़ाई पर खर्च होने वाली पूरी की पूरी सौ प्रतिशत राशि धन इसी स्मार्टनेस पर खर्च हो जाती है जबकि सफलता में उस की सिफारिश में 15% होती है।

स्वच्छ भारत अभियान

"स्वच्छ भारत अभियान और और गांधी जी के रचनात्मक कार्यक्रम" इस शीर्षक पर गांधी गांधी शांति अभियान के अध्यक्ष प्रोफेसर एन राधाकृष्णन ने अपने लेख में स्वच्छता के बारे में इसको एक महत्वपूर्ण आवश्यकता को मानते हुए इसको अग्रसर बढ़ाने में जोर दिया है।

यह सामान्यतय विश्वास किया जाता है कि गांधीजी के दर्शन और दृष्टिकोण की ताकत, जीवन शक्ति और प्रासंगिकता इस आधार पर मापी जाती है जो कि उसका दर्शन इस प्रकार स्पष्ट किया गया है कि वह आध्यात्मिकता को शक्ति देता है और जो सामाजिक परिवर्तन की ओर ले जाता है।

अरिस्टोल- प्लेटो का एक नया विचार, श्री रामकृष्ण- विवेकानंद का आध्यात्मिक बंधुत्व, कार्ल मार्क्स - लेनिन की राजनीतिक एकजुटता आदि ...ये बहुत ही साहसिक और उच्च कोटि के उदाहरण है जिसने सस्मसज में परिवर्तन लाने का कार्य किया। भारत में भूदान आंदोलन के माध्यम से विनोबा भावे के प्रयत्न गांधीजी के क्रांतिकारी अभियान को बढ़ाने में बहुत महत्वपूर्ण है चाहे वह थोड़े समय के लिए ही हो। आज यह माना जाता है कि गांधी जी का दर्शन अब एक शैक्षणिक संस्थाओं में एक विषय के रूप में ही रह गया है। और एक विशिष्ट व्यक्तित्व के रूप में उनकी स्तुति योग्य रह गई है परंतु दैनिक जीवन में उनका अनुसरण करना कठिन है।

गांधीजी के 150 वर्ष की जन्म शताब्दी ऐसी होनी चाहिए कि हम अपने अंदर गांधी जी को खोजें और समझे कि उनकी हमारे राष्ट्र को क्या विरासत दे गए हैं।

स्वच्छ भारत अभियान गांधीजी का एक स्वस्थ राष्ट्र के रूप में देखना था। हमारे देश में समय-समय पर इस अति महत्वपूर्ण विषय को अभियान के रूप में उठाया भी गया है। अब यह राष्ट्र के लिए जन आंदोलन के रूप में पूर्ण अभियान का रूप ले चुका है जो निचले स्तर से प्रारंभ करके भारत को स्वच्छ और स्वस्थ भारत बनाना है। हम भारतीयों ने गांधीजी के इस सपने को साकार करने के लिए शपथ भी ले चुके हैं। बापू गांधी जी के लिए सच्ची श्रद्धांजलि होगी कि हम भारत को एक स्वच्छ भारत बनाए और इसके सफल बनाने हेतु समाज के हर वर्ग ने आगे बढ़कर निष्ठा से इस अभियान को अपने हाथों में लेकर बहुत ही अद्भुत कार्य करने का संकल्प लिया है।

गांधी जी ने कहा था मेरा जीवन ही मेरा संदेश है ।।

गांधीजी के विचार जैसे सर्व धर्म समानता, खादी का उपयोग, नशा मुक्ति, ग्रामीण उद्योगों को बढ़ावा, शिक्षा की अनिवार्यता, नारी का 'सम्मान, न्याय, स्वतंत्रता', स्वस्थ एवं स्वच्छ भारत, शिक्षित भारत, राष्ट्रीय भाषाओं को महत्व देना, आर्थिक समानता का विचार, ग्रामीण विकास, श्रमिकों का विकास, आदिवासियों का विकास, कुष्ठ रोग से मुक्ति और युवकों व छात्रों को जिम्मेदारी लेना .. ये मात्र दर्शन ही नहीं अपितु जीवन की एवम राष्ट्र को सुदृढ़ बनाने की मूल आवश्यकताएँ है।

हमें अपनी आदतें बदलनी होंगी कि हम साफ सफाई से रहें। देश को स्वच्छ रखे।

आओ हम स्वच्छ भारत बनाएं।

जय हिंद।

हमारी सोच और उसको तय करने वाले कारण

हमारी सोच उम्र के साथ विकसित होती है। जन्म से लेकर नहीं आती है। यह कौन कौन से कारण है जो हमारी सोच को बनाते हैं। अगर अपने माहौल की वजह से जिंदगी के प्रति अपना हम नजरिया नकारात्मक बना लेते हैं

तो क्या इसे बदल भी सकते हैं ? और हमारी सोच को सकारात्मक है या नकारात्मक है ज्यादातर हमारी कच्ची उम्र के द्वारा ही रूप ले लेता है। मुख्य रूप से हमारी सोच के तीन कारण होते हैं

1 माहौल

2 तजुर्बा

3 शिक्षा।

माहौल का हमारे ऊपर कितना असर पड़ता है और कहां-कहां से हमारी सोच पर असर होता है कुछ बातें इस प्रकार है:

घर में सकारात्मक और नकारात्मक असर। स्कूल में साथियों का दबाव। दफ्तर में मदद करने वाले ज्यादा कमी निकालने वाले या आलोचक सुपरवाइजर। मीडिया टेलीविजन अखबार मैगजीन वीडियो फिल्में सांस्कृतिक पृष्ठभूमि इस तरह की संस्कृति संबंध से रखते हैं। धार्मिक पृष्ठभूमि कैसी है परंपराएं और आस्था है कैसी है जिसके बीच में रहते हैं, सामाजिक माहौल कैसा है, राजनीतिक माहौल कैसा है, यह सारे माहौल मिलकर एक एक सोच और आदत बनाते हैं इंसान के अंदर, चाहे घर हो चाहे दफ्तर हो, चाहे देश हो या कहीं भी हो। हर किसी को अपनी इसी बनी हुई पकड़ी हुई आदतों के वशीभूत ही चलना होता है। आपने देखा होगा जब आप बाजार में कुछ सामान खरीदने के लिए जाते हैं तो वहां सेल्समैन मिलते हैं, वहां के बालिक लोगों से मिलते हैं, वहां के सुपरवाइजर लोगों से मिलते हैं, उनमें कभी बहुत ही अच्छी तरह का सम्मान भाव वाला उनका व्यवहार होता है और कहीं दूसरी जगह देखते हैं कि यह लोग दुकानदार लोग सेल्समेन मैनेजर लोग ग्राहक से अच्छी तरह से बात भी नहीं करते बल्कि बड़ा अपमानजनक व्यवहार करते हैं। अब आप देखिए जब आप किसी के घर जाते हैं तो आपको बच्चों का, उनके मां-बाप का आपके प्रति बहुत ही अच्छा व्यवहार मिलता है और सही जब आप किसी दूसरे घर में जाते हैं तो आप ऐसा नहीं पाते हैं। तो वह आपस में वहां के लोग लड़ते रहते हैं, व्यवहार भी आपके साथ में अच्छा नहीं मिलेगा। जिस देश की सरकार और राजनीति में और उसके माहौल में सभ्यता होगी तो वहां के लोग आमतौर पर इमानदार और सहायता करने वाले और अनुशासन का पालन करने वाले होंगे। जिस प्रकार भ्रष्ट वातावरण में एक इमानदार आदमी का जीना मुश्किल हो जाता है उसी प्रकार ईमानदारों से भरे हुए समाज में बीमार लोगों का जीना भी मुश्किल हो जाता है। अच्छे माहौल में मामूली कर्मचारी का भी काम करने की शक्ति बढ़ जाती है और घटिया माहौल में अच्छा काम करने वाला आदमी भी काम नहीं कर पाता है उसकी कार्य क्षमता गिर जाती है।

अनुभव : अनुभव का भी हमारी जिंदगी पर बहुत असर पड़ता है और उसके अनुसार ही हमारा व्यवहार ही बदल जाता है। अगर किसी व्यक्ति का व्यवहार अच्छा होगा तो उसमें उसके अनुभव का बहुत ही योगदान होगा। अनुभव अच्छा है तो अच्छा व्यवहार होगा और अनुभव खराब है तो उस आदमी के बारे में हमारी सोच भी बदल जाती है।

शिक्षा: शिक्षा सिर्फ अक्षर ज्ञान या डिग्री पा लेने की बात नहीं है परंतु जब ज्ञान को एक योजना बनाकर उसको व्यवहार में लाया जाए तो वह बुद्धिमता में बदल जाती है और कामयाबी एक तरह से पक्की हो जाती है। शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो हमें ना केवल रोजी रोटी कमाने सिखाएं अपितु हमें जीना भी सिखाएं।

अच्छी सोच वाले लोग इस तरह से पहचाने जा सकते हैं। वह विनम्र हो धन्यवाद हो, आत्मविश्वासी हो और दूसरों का ख्याल रखने वाले हों। ऐसे लोगों को खुद से और दूसरों से बड़ी उम्मीदें रहती और हमेशा अच्छे परिणामों की ही आशा होती है।

सकारात्मक नजरिया रखने वाले लोगों को लोगों को बहुत लाभ होता है। मिलजुल कर काम करने की प्रेरणा मिलती है, जिस काम को व्यवसाय को कर कर रहे हैं उसमें उत्पादकता बढ़ती है, मुश्किले सुलझाता है और उच्च स्तर का उत्पादन मिलता है। भाईचारे का माहौल बनता है, वफादार बनाता है, बिजनेस में लाभ पड़ता है। मालिक, कर्मचारी, खरीदारों के बीच अच्छे संबंध बनते हैं। तनाव कम होता है। व्यक्ति को समाज में योगदान देने वाला बनाता है और वह देश के लिए बहुत महत्वपूर्ण पूजी बन जाता है और एक अच्छा व्यक्तित्व बनाता है।

इसके विपरीत घटिया नजरिया रखने वाले लोग में पाया जाती है कड़वाहट, नाराजगी, बिना मकसद की जिंदगी, खराब सेहत और खुद व दूसरों के लिए तनाव वाली जिंदगी।

इसलिए अपने घटिया नजरिए को बदलिए और अच्छा नजरिया अपनाइए। और इसके लिए हम स्वयं ही जिम्मेदार हैं और स्वयं ही हम नजरिया बदल सकते हैं।

अनुसूचित जाति (कोली व बाल्मीकि समाज)

वर्ष 1933 में अछूतों की पहचान करने के लिए महात्मा गांधी ने हरिजन शब्द दिया, जिसका अर्थ है ईश्वर के लोग। यह नाम अम्बेडकर को नापसंद था क्योंकि इसने मुसलमानों की तरह एक स्वतंत्र समुदाय होने के बजाय दलितों को अधिक से अधिक हिंदू राष्ट्र से जोड़ा।पारंपरिक हिंदू सामाजिक संरचना में दलितों की सामाजिक स्थिति सबसे कम थी। 2002 में धर्म और एशियाई अध्ययन के एक प्रोफेसर जेम्स लोट्टेफेल्ड ने कहा कि "दलित शब्द को अपनाने और लोकप्रिय बनाने से स्थिति के बारे में उनकी बढ़ती जागरूकता और उनके कानूनी और संवैधानिक अधिकारों की मांग में उनकी अधिक मुखरता को दर्शाता है"।

अतीत में, उन्हें इतना अशुद्ध माना जाता था कि जाति के हिंदू उनकी उपस्थिति को प्रदूषणकारी मानते थे। अशुद्ध स्थिति उनके ऐतिहासिक वंशानुगत व्यवसायों से संबंधित थी जो जाति के हिंदुओं को "प्रदूषणकारी" या विवादास्पद माना जाता था, जैसे कि चमड़े के साथ काम करना, मल के साथ काम करना और अन्य गंदे काम।

अंबेडकर ने कहा था कि बौद्ध और ब्राह्मणवाद (ब्राह्मणवादी हिंदू धर्म के लिए एक प्राचीन शब्द) के बीच वर्चस्व के संघर्ष के कारण, 400 ईस्वी के आसपास भारतीय समाज में अस्पृश्यता आ गई। कुछ हिंदू पुजारियों ने दलितों के साथ मित्रता की और उन्हें नीच जाति के पद पर आसीन किया गया। एकनाथ, एक अन्य ब्राह्मण, ने भक्ति काल के दौरान अछूतों के अधिकारों के लिए लड़ाई लड़ी। दलित पुजारियों के ऐतिहासिक उदाहरणों में 14 वीं शताब्दी में चोखामेला शामिल हैं, जो भारत के पहले दर्ज दलित कवि थे। रैदास (रविदास), कोबालरों के परिवार में पैदा हुए, जिन्हें दलितों द्वारा गुरु माना जाता है और उनका सम्मान किया जाता है। उनकी शिक्षाएं और लेखन सिख पवित्र ग्रंथ, गुरु ग्रंथ साहिब का हिस्सा हैं। 15 वीं शताब्दी के संत रामानंद रे ने अछूतों समेत सभी जातियों को अपने पाले में कर लिया।

19 वीं शताब्दी में, ब्रह्म समाज, आर्य समाज और रामकृष्ण मिशन ने दलित मुक्ति में सक्रिय रूप से भाग लिया। जबकि दलितों को पूजा करने के लिए स्थान था, 1928 में वर्धा में दलितों का खुले तौर पर स्वागत करने के लिए पहला उच्च-जाति का मंदिर लक्ष्मीनारायण मंदिर था। इसके बाद 1936 में भारतीय राज्य केरल में त्रावणकोर के अंतिम राजा द्वारा जारी मंदिर प्रवेश की घोषणा की गई।

पंजाबी सुधारवादी सतनामी आंदोलन की स्थापना दलित गुरु घासीदास ने की थी। गुरु रविदास भी दलित थे। दलित सिख सुधारक ज्ञानी दित सिंह ने दलितों को बदलने के लिए सिंह सभा आंदोलन शुरू किया। अन्य सुधारक, जैसे कि ज्योतिराव फुले, केरल के अय्यनकाली और तमिलनाडु के इयोते थेस ने दलित मुक्ति के लिए काम किया।

1930 के दशक में, गांधी और अंबेडकर जाति व्यवस्था के प्रतिधारण से असहमत थे। जब कि अंबेडकर इसे नष्ट होते देखना चाहते थे। गांधी ने सोचा कि इसे हिंदू ग्रंथों की पुनर्व्याख्या करके संशोधित किया जा सकता है ताकि अछूतों को शूद्र वर्ण में समाहित कर लिया जाए। यही वह असहमति थी जिसके कारण पूना समझौता हुआ। असहमति के बावजूद, गांधी ने दलितों की मदद के लिए हरिजन यात्रा शुरू की।

गांधी (1869-1948) और भीमजीराव अंबेडकर (1891-1956) आधुनिक भारत के प्रमुख निर्माताओं में से एक हैं। उन्नीसवीं सदी और बीसवीं सदी के शुरुआती दौर के धार्मिक और सामाजिक सुधारक जैसे राम मोहन रॉय (1772-1833), महादेव गोविंद रानाडे (1842-1901), स्वामी विवेकानंद (1863-1902), गोपाल कृष्ण गोखले (1866-1915), स्वामी दयानंद (1824-1883), और जोतिबा फुले (1827-1890) का आज के भारत को बनाने में बहुत योगदान है। उन्होंने अपने जीवन के अंत तक न्याय और समानता के लिए अपने संघर्षों में गति बनाए रखी।

जाति व्यवस्था की उत्पत्ति: जिस जाति व्यवस्था को हम आज देखते हैं, उसका केवल एक पुस्तक में उच्चारण नहीं किया गया है; इसे कई ग्रंथों द्वारा आकार दिया गया है। जाति व्यवस्था का सबसे प्राचीन उल्लेख ऋग्वेद में मिलता है, माना जाता है कि इसे 1500-800 ईसा पूर्व के बीच विकसित किया गया था, जहाँ इसे वर्ण व्यवस्था कहा जाता था। इसने समाज को चार वर्णों में वर्गीकृत किया: ब्राह्मण: (पुजारी, विद्वान और शिक्षक); क्षत्रिय: (शासक, योद्धा और प्रशासक); वैश्य: (पशु चरवाहा, कृषक, कारीगर और व्यापारी); और शूद्र: (मजदूर और सेवा प्रदाता)। इन भेदों का उल्लेख वेद के पुरुष सूक्त वचन में किया गया था, हालांकि कुछ विद्वानों का मानना है कि इस खंड को वैदिक काल की तुलना में बहुत बाद में जोड़ा गया था। इसी तरह के कानून मनु स्मृति में व्यक्त किए गए थे, जो माना जाता है कि 200 ईसा पूर्व -200 ईस्वी के बीच लिखा गया था और जिसे ब्रिटिश सरकार द्वारा हिंदू कानूनों को तैयार करने के लिए मार्गदर्शक पाठ के रूप में कार्य किया गया था। यहां तक कि महाभारत, जिसका पाठ 4 वीं शताब्दी ईस्वी तक पूरा हो गया था, में चार स्तरीय वर्ण व्यवस्था का उल्लेख था।

इन सभी ग्रंथों में प्रत्येक वर्ग के साथ विशेष लक्षण जुड़े हुए हैं: ब्राह्मणों को शुद्ध, बुद्धिमान और कोमल माना जाता था; क्षत्रिय क्रोध, सुख और निर्भीकता से जुड़े थे; वैश्यों को पशु चरवाहा, कृषक, कारीगर और वर्ण के रूप में परिश्रमी समझा जाता था; और शूद्र हिंसा और अशुद्धता, अवमानना के योग्य थे। जैसे, उनकी सामाजिक स्थिति में गिरावट क्रम में माना जाने लगा - ब्राह्मणों का बहुत सम्मान और पालन किया गया, जबकि शूद्रों को तिरस्कृत और आदेश दिया गया। समय के साथ, विशेष जातियों को शूद्रों से भी नीचे रखा गया था और उन्हें अवतार कहा जाता था - किसी भी वर्ग से संबंधित नहीं। उन्हें स्वीपर, गटर क्लीनर, मैला ढोने वाले, चौकीदार, खेत मजदूर, सूअर जैसे अशुद्ध जानवरों के पालन-पोषण और खाल छुपाने जैसे काम करने थे। ऐसी जातियों के लोगों को आधुनिक समय में दलित (उत्पीड़ित) कहा जाता है। यद्यपि उनमें से अधिकांश पढ़े लिखे व्यक्ति समय के साथ अन्य व्यवसायों में चले गए हैं, फिर भी उनके विरुद्ध समाज में अछूत की भावना प्राय: देखी जा सकती है।

------xxx-----

Wednesday, April 08, 2020

गाँव में अपराध, हिंसा, लोभ लालच और गुट बाजी

बड़ा दुःख होता है जब मैं यह देखता हूँ कि गाँव में और इलाके में भाई चारे व सदभाव में गिरावट आती जा रही है | आपस में प्रेम नहीं रहा है। लोगों में अहंकार भरा हुआ हैं। और लोभ, लालच और खींचतान बढ़ती जा रही है। भाई भाई का नहीं रह गया है, रिश्ते नाते सब मात्र औपचारिकता रह गई है। माँ बाप की कोई इज्जन नहीं रह गई है। और और माँ बाप भी अपने बेटियों में भेद भाव करते हैं। आपस में मुकदमें भी चलते हैं। समाज का बुरा हाल हो गया है। गुटबाजी, ओछी राजनीति, बेईमानी और झूट बोलना ये सब आम बात हो गई है। आए दिन हत्याएं हो जाती है, गोलियां चल जाती है। यह सब देख कर अंदर से रोता हूँ मैं। कोई भी अच्छा इंसान रोएगा ही। पिछले 8 - 10 साल से तो एक नया रूप देखने को मिलता है में। गुट बाजी का रूप , यह उसका गुट है तो वह दुसरे का गुट है। शान समझते है इसको अपनी। और इस गुट बाजी को राजनीति से जोड़ेंगे। राजनीती शास्त्र का कोई अध्ययन नहीं है परन्तु ऐसे लोग अपने आपको नेता समझने लगते हैं। किसी राजनैतिक व्यक्ति से संबंध बनाने की कोशिश करेंगे, एक दो बार उससे मिल लिए या उसके कार्यक्रम में चले गए तो बस ये लोग अपने आपको भी नेता समझने लगते हैं। नेता बनें काम लिए, सेवा करने लिए, इसमें कोई बुराई नहीं है। परन्तु ये लोग अपनी शक्ति दिखाने के लिए, दूसरों को को नीचा दिखाने के लिए और दूसरों को दबाने के लिए ही दिन रात इसी में ही लगे रहते हैं। और कहते हैं - यह मेरी पार्टी है और वह उसकी पार्टी है।

हत्याएं हो जाती हैं, गोलियां चल जाती हैं और फिर मुकदमे वाजी चलती है. यह सब समाज का विनाश का कारन बनती है। कुछ उदाहरण अखवार में निकले हैं जिन्हें पढ़ कर आत्मा भी रोने लगती है

…xx…

Amar Ujala Mon, 12 Aug 2019 10:51 PM

हत्या कर बुजुर्ग महिला का अधजला शव मिट्टी में गाड़ा

पलवल। सदर थाना क्षेत्र के गांव अल्लीका में सोमवार सुबह उस समय सनसनी मच गई जब लोगों ने बुजुर्ग महिला का अधजला शव मिट्टी के नीचे दबा हुआ देखा। मामले का खुलासा उस समय हुआ जब हर दिन की तरह खंडहर पड़े स्कूल में मवेशी बांधने के लिए एक व्यक्ति गया तो उसे मिट्टी के नीचे से निकला हाथ दिखाई दिया। मामले की सूचना पर पुलिस एफएसएल टीम को लेकर मौके पर पहुंची और मिट्टी में दबे महिला के शव को बाहर निकालकर जांच शुरू कर दी। पोस्टमार्टम करवाने के लिए शव को जिला नूंह स्थित मेडिकल कालेज भेज दिया है। परिजनों द्वारा दी गई शिकायत के आधार पर पुलिस ने अज्ञात के खिलाफ हत्या का केस दर्ज कर लिया है।

जांच अधिकारी सब इंस्पेक्टर दुर्गा प्रसाधने बताया कि पलवल के गांव अल्लीका निवासी बीर सिंह ने पुलिस को दी शिकायत में बताया कि रविवार रात वह घर में पूरे परिवार के साथ सोया हुआ था। घर में उसके दो बेटे और दोनों बहुएं सोई हुई थीं। बड़े बेटे की पत्नी और उसकी पत्नी बिसन देवी पास ही चारपाई पर सोई हुई थी। सुबह करीब चार बजे जब घर के सदस्य जागे तो उन्हें वह चारपाई पर नहीं मिली। इसके बाद उसे काफी तलाश किया लेकिन कहीं सुराग नहीं लग सका। पुलिस के मुताबिक, पीड़ित के घर के पीछे काफी पुराना सरकारी स्कूल है जो खंडहर पड़ा हुआ है। इस खंडहर पड़े स्कूल में गांव के कुछ लोग अपनी मवेशियों को बांधते हैं। सोमवार सुबह करीब नौ बजे पडोसी अपनी मवेशी को बांधने के लिए स्कूल में गया तो उसे मिट्टी से बाहर किसी इंसान का हाथ निकला हुआ दिखा। उसने

मामले की सूचना तुरंत गांव के लोगों को दी तो ग्रामीण मौके पर पहुंचे। ग्रामीणों द्वारा मामले की सूचना मिलने पर एफएसएल की टीम के साथ मौके पर पहुंची पुलिस ने मिट्टी में दबे हुए शव को बाहर निकाला। शव के बाहर निकाले जाने पर ग्रामीणों के बीच तब अफरातफरी मच गई जब उसकी पहचान गांव की महिला बिसन देवी के रूप में हुई। पुलिस का कहना है कि मृतक महिला बिसन देवी के गले में फंदा पाया गया और उसके शव को जलाकर मिट्टी में दबा दिया गया था। पुलिस ने जब शव को बाहर निकाला तो ये सारे खुलासे हुए।

----xx—

दो गुटों में फोन पर हुए चैलेंज के बाद कई राउंड फायरिंग, तीन को लगी गोली

दैनिक भास्कर Jul 03, 2019, 07:15 AM IST

Faridabad News - वर्चस्व की लड़ाई में अल्लीका गांव में सोमवार को देर शाम दो गुटों में फोन पर हुए चैलेंज के चलते आमने-सामने कई राउंड...

वर्चस्व की लड़ाई में अल्लीका गांव में सोमवार को देर शाम दो गुटों में फोन पर हुए चैलेंज के चलते आमने-सामने कई राउंड फायरिंग हुई। झगड़े में एक पक्ष के तीन युवक गोली लगने से घायल हो गए, जिनमें एक की हालत नाजुक बताई जा रही है, जिसे उपचार के लिए फरीदाबाद निजी अस्पताल में दाखिल कराया गया है। सदर थाना प्रभारी सुमन कुमार ने बताया कि एक घायल की शिकायत पर गांव के ही पांच नामजद सहित तीन-चार अन्य के खिलाफ हत्या के प्रयास सहित विभिन्न धाराओं में मामला दर्ज कर आरोपियों की तलाश शुरू कर दी है। खबर लिखे जाने तक पुलिस किसी भी आरोपी को गिरफ्तार नहीं कर सकी थी। अल्लीका गांव निवासी घायल राहुल ने पुलिस को दिए अपने बयान में कहा है कि सोमवार को वह फरीदाबाद से गांव में पहुंचा तो गांव के ही निवासी उसके साथी कृष्ण ने बताया कि उसकी फोन पर धीर सिंह से गाली-गलौच हो गई है और गाली-गलौच के दौरान दोनों के बीच चैलेंज भी हो गया है। इसके कुछ देर बाद गांव के निकट भडया चौक पुलिया पर जहां वे खड़े हुए थे गांव के ही निवासी जसबीर व डिग्गल बाइक पर सवार होकर आए। जसबीर के हाथ में रिवाल्वर थी, जो हमें देखकर गाली-गलौच करने लगा। गालियों का शोर सुनकर कृष्ण की मां घर से बाहर आ गई और हमें झगड़ा न करने की बात समझाकर अंदर ले जाने लगी। इसी दौरान वहां गांव के ही निवासी धीर सिंह, नारायण, नेपाल व तीन-चार अन्य युवक जिन्होंने मुंह पर कपड़ा बांधा हुआ था पहुंच गए।पीड़ित का आरोप है कि आरोपियों ने उन्हें जान से मारने की नीयत से गोलियां चलानी शुरू कर दी। राहुल के अनुसार एक गोली उसके दाहिने बाजू में लगी, एक गोली उसके साथी कृष्ण की ठोड़ी पर लगी, जबकि दूसरे साथी उमेश के सीने में गोली लगी है। जिला अस्पताल से तीनों घायलों की हालत नाजुक देखते हुए हायर सेंटर के लिए रेफर कर दिया।पलवल. गोली लगने से घायल उमेश फरीदाबाद अस्पताल में उपचाराधीन। **गांव में कई बार दोनों गुटों में चल चुकी हैं गोलियां** अल्लीका गांव में दो गुटों के बीच वर्चस्व की लड़ाई पिछले लंबे समय से चल रही है। जिसके चलते हत्या व हत्या के प्रयास सहित कई मामले हरियाणा व यूपी पुलिस में दर्ज हैं और कई व्यक्ति इस समय जेल में सजा भी काट रहे हैं। इसी वर्चस्व की लड़ाई के चलते अब तक गांव में कई बार दोनों गुटों में गोलियां चल चुकी हैं। कुछ समय पहले गंगा स्नान से वापस लौटते समय एक व्यक्ति की यूपी में गोली मारकर हत्या भी कर दी गई थी, जिसके आरोप में एक युवक अभी जेल में बंद है। **सभी आरोपी फरार, हत्या के प्रयास का मामला दर्ज** सदर थाना प्रभारी सुमन कुमार ने बताया कि घायल राहुल की शिकायत पर गांव के ही डिग्गल, जसबीर, धीर सिंह, नारायण, नेपाल व तीन-चार अन्य के खिलाफ हत्या के प्रयास का मामला दर्ज कर आरोपियों की तलाश के लिए पुलिस की टीम गठित कर दी है। थाना प्रभारी ने कहा कि जल्द ही आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया जाएगा।

---xx----

Ex-sarpanch of Palwal village shot dead in UP

The Tribune Bulandshahr, November 14

BULANDSHAHR: Former sarpanch of Allika village in Palwal district of Haryana was gunned down by three assailants who came in a car at Baroli in the district this evening, the police said. Former sarpanch of Allika village in Palwal district of Haryana was gunned down by three assailants who came in a car at Baroli in the district this evening, the police said.Bharat Singh (52) was on his way back to Allika in a car with one Digambar after having a dip in the Ganga river at Garhmukteshwar nearby when the incident happened. RK Sharma, SHO, Syana police station, under whose jurisdiction the incident occurred, said enmity during panchayat elections was believed to be reason behind the attack.Digambar, too, was injured in the attack and was being treated at the Community Health Centre at Syana Town. — PTI

…xx..

गंगा स्नान के बाद पलवल जा रहे सरपंच के पिता की गोली मारकर हत्या, एक घायल

Samachar Jagat | Tuesday, 15 Nov 2016 09:25:05 AM

बुलंदशहर। उत्तर प्रदेश में बुलंदशहर जिले के स्याना क्षेत्र में वाहन सवार कुछ लोगों ने पलवल (हरियाणा) के अलीका गांव के सरपंच के पिता की गोली मारकर हत्या कर दी और उसके साथी को घायल कर दिया। पुलिस सूत्रों ने आज यहां बताया कि पलवल कोतवाली इलाके के अलीका गांव के सरपंच के पिता भरतसिंह अपने साथी दिगम्बर के साथ कार से गढ़ गंगा स्नान करने गए थे। गंगा स्नान के बाद जब वे लोग वापस पलवल जा रहे थे तो शाम के समय स्याना-बुलदंशहर मार्ग पर उनके गांव के वाहन सवार पूर्व सरपंच महेन्द्र सिंह ने भरत सिंह और उसके साथी को गोली मार दी।

अल्लीका गांव में मतदान के दौरान झगड़ा

---

30 मिनट तक नहीं हुई पोलिंग बीच-बचाव में पोलिंग आफिसर को लगी हल्की चोटएस, पलवल : गुरुवार को पलवल विधानसभा क्षेत्र के गांव अल्लीका में मतदान के दौरान...

नव भारत टाइम्स फरीदाबाद 11 Apr 2014, 08:00:00 AM IST

30 मिनट तक नहीं हुई पोलिंगबीच-बचाव में पोलिंग आफिसर को लगी हल्की चोट एस, पलवल : गुरुवार को पलवल विधानसभा क्षेत्र के गांव अल्लीका में मतदान के दौरान वोट डालने को लेकर पोलिंग बूथ पर दो गुटों के बीच झगड़ा हो गया। बीच-बचाव के दौरान पोलिंग अधिकारी को भी हल्की फुल्की चोट आई। इसकी वजह से करीब 30 मिनट तक पोलिंग रूक गई। झगड़े की सूचना मिलते ही मौके पर जिला निर्वाचन अधिकारी एवं डीसी के. मकरंद पांडूरंग, एसपी राकेश आर्य, सहायक रिटर्निंग अधिकारी व एसडीएम जगनिवास, डीएसपी हेडक्वार्टर पुलिस बल के साथ पहुंच गए। पुलिस को आता देख दोनों गुटों के लोग मौके से फरार हो गए। पुलिस के पहुंचने के बाद शांति पूर्वक तरीके से मतदान फिर से शुरू कराया गया। सहायक रिटर्निंग अधिकारी जगनिवास ने बताया कि अल्लीका गांव में बूथ नंबर-10 पर दो गुटों में झगड़े की सूचना मिली थी। यहां एक युवक अपने किसी बुजुर्ग को वोट डलवाने के लिए

लाया था। वह वोट डालने की स्थिति में नहीं थी। युवक खुद वोट डलवाने की बात पर अड़ा था। इस बीच मतदान के लिए बाहर खड़े किसी व्यक्ति ने इसका विरोध कर दिया इसी बात पर दोनों गुटों में झगड़ा हो गया। सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंच गई। पुलिस को आता देख दोनों पक्ष के लोग मौके से फरार हो गए।

इस घटना में भरत की मृत्यु हो गई जबकि दिगम्बर को अस्पताल में भर्ती कराया गया है। हत्या का कारण रंजिश बताया गया है। पुलिस हत्यारों की तलाश कर रही है। सदर थाना क्षेत्र के गांव अल्लीका में घर में सोई महिला की बडी बेरहमी से हत्या कर शव को घर के पीछे पुराने खंडर पडे सरकारी स्कूल में गड्ढा खोदकर मिट्टी में दबा दिया। महिला की पहले हत्या कर शव को आधा जलाने के बाद मिट्टी में दबा दिया गया। मिट्टी में दबी महिला का हाथ दिखाई देने पर पडोसियों ने मामले की सूचना परिजनों को दी। सूचना मिलते ही परिजन मौके पर पहुँचे और पुलिस को सूचीत किया। सूचना मिलते ही पुलिस एफएसएल टीम को लेकर मौके पर पहुँची और मिट्टी में दबी महिला के शव को बाहर निकाल कर जांच शुरू कर दी। परिजनों ने पुलिस को शिकायत दी। जिसके आधार पर अज्ञात के खिलाफ हत्या का केस दर्ज कर लिया है।

जाँच अधिकारी सब इंस्पेक्टर दुर्गा प्रसाद ने बताया कि पलवल के गांव अल्लीका निवासी बीर सिंह ने पुलिस को दी शिकायत बताया कि वह घर में पूरे परिवार के साथ सोया हुआ था। घर में उसके दो बेटे और उनकी दोनों बहूएं सोई हुई थीं। बडे बेटे की बहू और उसकी पत्नी बिसन देवी के पास चारपाई पर सोई हुई थी। सुबह करीब चार बजे जब घर के सदस्य जागे तो उन्हें वह चारपाई पर नहीं मिली। इसके बाद उसे काफी तलाश किया। लेकिन कहीं सुराग नहीं लग सका। उनके घर के पीछे काफी पुराना सरकारी स्कूल है। जो खंडर पडा हुआ है। इस खंडर पडे स्कूल में गांव के कुछ लोग अपनी मवेसियों को बांधते हैं। सोमवार सुबह करीब 9 बजे पडोसी अपनी मवेशी को बांधने के लिए स्कूल में गया। तो उसने देखा कि मिट्टी से बाहर किसी इंसान का हाथ निकला हुआ था और उसका पूरा शरीर अंदर मिट्टी में दबा हुआ था। उसने मामले की सूचना तुरंत गांव में दी। तो पूरा गांव मौके पर पहुंचा। ग्रामीणों ने मामले की सूचना पुलिस को दी। तो पुलिस एफएसएल की टीम के साथ मौके पर पहुंची और मिट्टी में दबे हुए शव को बाहर निकाला, जैसे ही शव को बाहर निकाला। तो वहां मौजूद ग्रामीण चौंक पडे। क्योंकि वह शव गांव की महिला बिसन देवी का था। वहां मौजूद मृतक महिला के परिजनों के पैरों तले जमीन खिसक गई। पुलिस ने शिकायत के आधार पर अज्ञात के खिलाफ मामला दर्ज कर लिया है। पुलिस का कहना है कि मृतक महिला बिसनदेवी के शव के गले में फांसी का फंदा पाया गया और उसके शव को जलाकर मिट्टी में दबा दिया गया। पुलिस ने जब शव को बाहर निकाला। तो ये सारे खुलासे हुए। पुलिस ने शव का पोस्टमार्टम करवाने के लिए शव को जिला नूंह स्थित मेडिकल कालेज भेज दिया है।

ऊपर दिए हुए अखवार में दिए हुए समाचार हैं। ऐसा ही चलता रहेगा तो कैसे समाज का विकास होगा। और एक हत्या हो गई तो दुश्मनी तो अब आगे बढ़ेगी ही। समाप्त नहीं होगी।

पहले भी 1960 के दशक में भी लड़ाइयां हुई हैं आपसी गुटों बीच में। लाठियॉ चली आपस में और उसमें मौतें भी हुई हैं। हे प्रभुः! क्या हो रहा है यह, कहाँ जा रहा है मेरा समाज! बहुत वेदना होती है यह सब सुन कर।

इस वातावरण का उत्तरदायी कौन है - या एक प्रश्न है। क्या ये बुराइयां दूर हो सकती है - या दूसरा है। मुझे लगता है कि इस बुराइयों का उत्तरदायी पीढ़ियॉ से चली आ रही वह सोच है जो पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ती चली आ रही है। शिक्षा के विकास ने इसको बहुत सीमा तक समाप्त भी किया है। लोगों ने पढ़ाई में रूचि दिखाई और नैतिक मूल्यों का अपने संस्कारों में अपनाया। लोग गाँव से बहार निकले, रोजगार किया, दूसरे स्थानों के परिवेश में रह कर

वहां की अच्छाइयों व बुराइयों को देखा। जो समझदार थे इन्होने समाज की बुराइयों को त्याग दिया । और बदलते हुए आधुनिकता को अपनाना प्रारम्भ कर दिया । हिंसा, हत्या, धोखा, अपराध आदि से बहुत दूर रहते हैं ये लोग। ना तो बुराई कभी समाप्त होती है और न ही कभी अच्छाई ।

मुझे यह सब देख कर बहुत पीड़ा होती है । प्रभु से प्रार्थना ही कर सकता हूँ कि समाज की सभी बुराइयां समाप्त हो जावें ।

Advocate Satish Mishra
Punjab and Haryana High Court, Chandigarh
CEO at Legalseva

Legal Education in India: My View

The Latin Maxim Ignorantia juris non excusat or Ignorantia neminem excusat. In most simple words, ignorance of Law is no excuse and one cannot escape the liability on the sole ground of ignorance of Law.

From the above said Latin maxim, we could easily make out, why Legal Education is so important today. Legal Education is the most sought after destination of young students after engineering and medicine but quality still remains a challenge.

Just because of this now ‘Legal Studies” as a subject finds mention after 10th class academic curriculum as elective/vocational subject.

Today students pursuing Law are on all time high seeing the rise in number of colleges every year. Students in the early age should be given face-off with the law of the country so that we could easily know how judiciary functions in this country and does a balancing Act.

Moreover, when their time would come to make contribution towards growth and progress of this country, students would pose a constructive and solution oriented approach.

The sudden surge of judiciary coaching centers across India is evident of the fact that more students opt for Law each year. Well, Legal Education can be acquired by anyone who has interest in Law but the ones who wish to practice law at bar must only go for Regular Law courses duly recognized by Bar Council of India.

So there lies a difference when you pursue Legal Education in India.

Recognized colleges offer Law courses at 2 levels:

(i) After +2 [5 year integrated Law course with BA B.com B.sc etc]
Entrance – through CLAT, college/ University Level Entry Test

(ii) After Graduation – 3-year law course (LLB)
College/University Level Entrance Test

Once the student acquires Law degree then he/she has to get the Bar Council Registration of the state where he/she wishes to Practice.

Also, applicant has to clear All India Bar Examination (AIBE) within 2 years to Practice Law throughout India.

Like we say for Education, it is the way of Living life, similarly for law, we can say, it is about understanding the working of government amidst different rules, regulations and statutes.

Education never goes into waste and having Legal Knowledge gives edge to student in discovering the best work and hidden talents for an individual.

My advice for all: Live One day at a time. Learn concepts with goals; think about Application before acquiring knowledge. Law is so vast that only being relevant and precise does the work. Think of Law as means to be more confident and strong in this great country called India.

Satish Mishra
9988817966
Bar Council ID is: P/3265/2015
Practice area:-
Divorce, RERA Punjab Panchkula, Criminal, AFT CAT, NCLT, DRT. State Consumer Commission / Education Tribunal / FIR Quashing High Court Bail Directions / Maintenance / POSH / 498A FIR / Legal Notice / Cheque Bounce / Real Estate/Service Law / Matrimonial / Injunction / Property / Rent / Marriage Protection, Domestic Violence Family, Landlord /Tenant, Recovery

Office: SCO: 35-36, 3rd Floor, Near Post Office, Sect- 17, Chandigarh- 160017

Resi: M-402, Jaipuriya's Sunrise Greens, Entry 1, VIP Road, Zirakpur, District: Mohali – 140603 Mobile No: 9988817966 advocatesatish7@gmail.com www.legalseva.net

देवी सिंह चौहान
ब्रांच मैनेजर पंजाब नेशनल बैंक (रिटायर्ड)

Thursday, May 14, 2020

मेरा गांव मेरी दास्तान

मेरा जन्म 18 अक्टूबर 1948 को गाँव अल्लीका (गारेका) में हुआ। अपने मां-बाप की पहली संतान था। दादा और माता-पिता बेहद प्रसन्न। दादा ने मेरा नाम रखा देवी सिंह। इलाके के गाँव कौंडल, तहसील हथीन, की महान हस्ती के नाम पर, जिनका नाम था देवी सिंह टेवतिया। वे इलाके के पहले बैरिस्टर थे जो बाद में कोलकोता हाई कोर्ट के मुख्य न्यायधीश के पद पर पँहुचे। साधनों के अभाव में झूलता हुआ परिवार। फिर भी दादा ने मुझे उन्ही पोतरों (मुलायम) कपड़ों) जिनमें नवजात शिशु को रखा जाता था, रखा। हमारे नौहरे की पहली ईंट भी मेरे हाथ छुआ कर रखी गई। मेरे पिता कोई खास पढे लिखे नहीं थे। मगर उनका भी सपना था कि मैं जज बनू। इस बारे में पहला झटका मैंने ही दिया। 1955 में गाँव के स्कूल में दाखिला हो गया। मगर पढ़ाई के साथ मेरा 36 का आंकड़ा था। पिता जी के दर से स्कूल जाना और अध्यापकों के डर से स्कूल से भाग कर खेतों में दुबक जाना। सारे साल यही सिलसिला रहा। मरना तो मंजूर था मगर पढ़ना नहीं। दादा जी गाँव में अच्छी हैसियत थी। उनके प्रभाव से अगली क्लास में बिना टेस्ट ही पास होता रहा। अब तीसरी क्लास पास करली तो 2 और 3 कितने होते हैं पता ही नहीं था।

(1) कठिन परिश्रम और सख्त अनुशासन-

1958 में गांव में भयंकर बाढ़ आई। गांव और खेत सब जल मग्न। हथीन के पास एक छोटा सा गांव है खोकयाका, जहां मेरे दादा जी की बहन ब्याही थी। हम पशुओं और सामान के साथ वहां जा बसे। मेरे पिताजी कबड्डी के खिलाड़ी थे और उनके साथ एक खिलाड़ी थे पंडित श्रीराम शर्मा - खोकीयका के प्राइमरी स्कूल के हेडमास्टर। सांवला रंग, मुंह पर चेचक के दाग, मगर एक सख्त और प्रभावशाली व्यक्तित्व। मेरे पिताजी ने मेरी पढ़ाई का दुखड़ा उनके सामने रोया। मुझे वहां चौथी क्लास में दाखिल कर दिया गया और पांचवी क्लास तक मैं वहां पढ़ा। शर्मा जी ने मुझे कठिन परिश्रम और सख्त अनुशासन के मायने बताए, प्यार और दुलार के साथ। उन्होंने कहा था कि खाना खाने में भी परिश्रम होता है और दूध पीने में भी। मगर कठिन परिश्रम का मतलब है पसीना चोटी से शुरू होकर ऐड़ी तक पहुंचे। कठिन परिश्रम का कब, कहां, कितना और किस प्रकार प्रयोग हो, इसी का नाम सख्त अनुशासन है।

खुशबु को फैलने का बहुत शौक है लेकिन,
मुमकिन नहीं हवाओं से रिस्ता किए बगैर॥

छटी क्लास में लौट कर गाँव आया। आत्मविश्वास हिलोरे लेने लगा। सारे सहपाठी और शिक्षक मेरी योग्यता तो देख कर चकित। अंग्रेजी में कमाल की कमांड। हमारे नए हेड मास्टर आए फ़क़ीर चंद। लाला जी के नाम से मशहूर। वे मेरी पढ़ाई से बेहद खुश। मैं अकेला छात्र था जिसे वे अपने घर बुला कर पढ़ाते थे। करीब सारे सहपाठी मेरे खिलाफ हो गए। तरह तरह की अड़चनें मेरे रास्ते में पैदा की जाने लगी। हमारे क्लास के मॉनिटर होते थे आदुपुर गाँव के भरती। उसने तो दुश्मनी की हदें पार कर दी। आठवीं क्लास की परिक्षा गुड़गाँवा बोर्ड से हुआ करती थी। परीक्षा के 15 दिन पहले उसने मेरे बस्ते से साइंस के नोट्स ही चुरा लिए। मेरे दूसरे प्रतिद्वंदी थे श्याम पालीवाल। फिर भी आठवीं क्लास में मैं सारे स्कूल में फर्स्ट आया, दूसरे नंबर पर श्याम रहे और भरती बहुत पीछे। लोगों की रुकावटें बेअसर रही।

खुद अपने अपने पाँव लोगों ने कर लिए जख्मी,
हमारी रहा में कांटे वहां बिछाते हुए।
हुआ उजाला तो हम उनके नाम भूल गए,
जो बुझ गए खुद, मेरे चिरागों की लौ घटाते हुए।
कई बार लगा मंजिल तक पहुंचना बहुत दुस्वार है,
कदम लड़खड़ा रहे हैं। गिर गिर कर उठा हूँ।
मैं ही था बचा के खुद को ले आया किनारे तक,
समुन्दर ने बहुत मौके दिए थे डूब जाने के।

चौधरी रघुबीर सिंह के पोते - देवी सिंह अपनी पत्नी के बीरवती के साथ

पंडित श्रीराम जी का मन्त्र सदैव याद रहा। दिक्क्तों में भी मन कहता था -

इस तपती रेत में मुझे एड़िया रगड़ने दो,
मुझे यकीन है पानी यहीं से निकलेगा।

कठिन मेहनत और सख्त अनुशासन के सिवाय दाएं बाएं देखा ही नहीं।

कांटे फूल मिले जितने भी स्वीकार करे पूरे मन से,
मान और अपमान हमें सब दौर लगे पागलपन के।
सबसे पीछे भी रह कर हम सबसे आगे रहे सदा,

बदन सिंह चौहान

बड़े बड़े आघात समय के बड़े मजे से सही सदा,
दुनिया की चालों से बिलकुल अपनी उलटी चाल रही।
जो सबका सिरहाना था, वो अपनी पातान रही।
भीषण गर्मी से गुजर कर पसीने को सुखाने को ठंडी हवा का झौंका,
मिले तो लगता है जन्नत मिल गई है।
ना रहा चाँद सितारों का मैं मोहताज कभी,
अपनी मेहनत के सदा मैंने उजाले देखे।
जिक्र उसने लकीरों का वहीँ छोड़ दिया,
जब ज्योत्षी ने मेरे हाथों के छाले देखे।

अपने 71 साल के सफर में पाया है कि जिनके पास मजबूत इच्छा शक्ति है उनके लिए कुछ भी असंभव नहीं - के लिए गीतकार प्रेम धवन के लिखे इस गाने ने मुझे हमेशा प्रेरित किया है।

मेहनत से मत डर बन्दे हिम्मत से काम ले।
इन हाथों में सबकी किस्मत, इन हाथों को जान ले।
माना जीवन पत्थर है और तुझमें दम नहीं है,
इन हाथों को पत्थर कर ले फिर तू भी कम नहीं है।
पत्थर से पत्थर टूटेगा, बस तू इतना जान ले। .... हिम्मत से (1)
आगे बढ़ा हिम्मत से कदम, तू आज मर्द बनके,
तेरे पाँव पड़ेंगीं चट्टानें ठोकर की गर्द बन के।
मेहनत से है शान हमारी प्यारे इतना जान ले। ....हिम्मत से (2)
ढलता सूरज कहता है कि जिंदगी सफर है,
जो कल करना है अब करले कल की किसे खबर है।
जीवन आज का नाम है, प्यारे तू इसको पहचान ले। हिम्मत से(3)

(2) सब्र का फल सदैव मीठा -

मेरे भारी विरोध के बावजूद, मेरे पिता जी ने मेरी शादी 1966 में कर डाली। गाँव में व्याप्त सोच के मुताबिक़, उनकी लालसा थी - शीघ्र अति शीघ्र समाधी बनने की और बेटे की बरात ले जाने की। उनकी यह आकांक्षा सारे परिवार के लिए भारी पड़ी। मुझे मजबूरन शादी करनी पड़ी। मगर गौने की शर्त रखी गई कि यह मेरी पूरी पढ़ाई के बाद ही संभव हो पाएगा। बीरो, मेरी पत्नी, अपने मायके गाँव खेरी कलां चली गई और मैं आगे पांच वर्षों के लिए कुरुक्षेत्र यूनिवर्सिटी चला गया। वास्तव में शादी के बारे में मेरे साथ ज्यादती हुई, वो मेरे जहन में जंगली आग की तरह जलती रही। यूनिवर्सिटी में वजीफा मिल जाने पर मेरे हौसले बुलंद हुए और मैंने ये सन्देश भेजने शुरू कर दिए कि बीरो का लाना मेरे लिए सभव नहीं है। इस कशमकश में 9 वर्षों तक बीरो अपने गाँव में ही रही। उस पर खूब दवाब पड़े कि वह दूसरी शादी कर ले मगर वह अपने दृढ संकल्प पर अटल रही। मेरे दादा द्वारा दिया गया आर्थिक सहायता का ऑफर उसने अस्वीकार कर दिया। उसने ये रजामंदी भी दे दी कि मैं दूसरी शादी करने के लिए आजाद हूँ। मैं भी कहाँ दूसरी शादी करने वाला था। मुझे तो केवल शादी में अपने ऊपर हुई ज्यादती का बदला लेना था। मेरे दादा इलाके के

माने हुए पंच ही नहीं थे, एक विख्यात कवि भी थे। वे एक दिन मेरे सामने बिलख बिलख कर रो पड़े। कहने लगे वे समाज में मुंह दिखाने लायक नहीं रहेंगे अगर मैं बीरो को नहीं अपनाता हूँ। हमारे इलावा उस समय तोता सरपंच भी थे। मेरा मन आत्म गिलानी और अपराध बोध से रुंध सा गया। मैं भी दादा जी के चरणों में सर रख कर रोने लगा। अगली सुबह होते ही मैं खेरी कलां गया और बीरो को ले आया। दो बातें यही स्पस्ट करनी जरूरी हैं - एक तो ये कि बहुत से लोगों के वे दावे सरासर बेबुनियाद और झूठे हैं कि मैं बीरो को उनके कहने से लाया, दूसरी ये कि मेरे पिता जी या माँ ने कभी मेरे से ये नहीं कहा कि मैं बीरो को छोड़ दूँ। त्याग दूँ। इसे नहीं लाने का निर्णय सिर्फ मेरा था। और नहीं लाने का भी

मैंने बीरो को हँस कर पूछा कि वह किस आस पर मेरा इन्तजार कर रही थी। उसका जवाब था कि ऊपर वाले से की गई दुआएं कभी बेअसर नहीं जाती और सब्र का फल हमेशा मीठा होता है। परवरदिगार के यहां देर है - अंधेर नहीं।

आंसुओं के सामने पत्थर दिली की क्या बिसात,
अच्छे अच्छे घर तरक जाते हैं बरसातों के बाद।

इस शादी से हमें एक बेटी और दो बेटे मिले। दोनों बेटों ने अमेरिका से इंजीनियरिंग की पढ़ाई की और उनकी पत्नियों ने भी विदेशों में ही शिक्षा प्राप्त की। चारों पति-पत्निया अमेरिका में ही सेवारत है। बेटों से मिलने हम पहली बार अमेरिका गए। वहां न्यूजर्सी के नीवार्क हवाई अड्डे से प्लेन से बहार आए तो मैंने अपनी बाहों को आसमान की तरफ फैला कर कहा: बीरो देखो मैंने तुम्हें अमेरिका घुमा दिया है। वह तपाक से बोली: बाबू जी, तुमने नहीं, मैंने तुम्हें अमेरिका घुमा दिया है। अगर मुझे छोड़ कर आपने किसी और से शादी कर ली होती तो आपको यह आज का दिन कभी नसीब नहीं होता। मैं शतब्ध रह गया। काटो तो खून नहीं। चेहरे की हवाएं उड़ गई। मानो वो कह रही हो :

किसी के दिल की मायूसी जहां से हो के गुजरी हैं,
तुम्हारी सारी चालाकी वहां से खो के गुजरी है।
तुम्हारी और हमारी रात में बस फर्क इतना है,
तुम्हारी सो के गुजरी है, हमारी रो के गुजरी है।

(3) **बलख ना बुखारे में, जो मज़ा छज्जू के चौबारे में।**

बैंक की नौकरी ने मुझे देश के विभिन्न हिस्सों को देखने का दिया। उत्तर प्रदेश, हरियाणा, दिल्ली, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ और केरल में खूब घूमा हूँ। अमेरिका भी कई बार लम्बे समय तक देखा है। इस सन्दर्भ में हवाई अड्डों को देखने, हवाई सफर करने और पांच सितारा होटलों में ठहरने के अवसर मिले हैं।

जब मैं अपनी फ्लाइट के बारे में किसी से बात कर रहा होता हूँ तो पास खड़े व्यक्ति के हाव भाव को देख कर लगता है कि मैं जन्नत की बात कर रहा हूँ। हवाई जहाज के अंदर कान भेदी आवाज और टांगों को सिकोड़ कर घंटों बैठे रहने पर लगता है कि पता नहीं कितनी देर और लगेगी प्लेन को लैंड करने में। इससे ज्यादा सुखद यात्रा तो गाँव में बैल गाडी कि हुआ करती या भूसे से लदे ट्रैक के पीछे लटक कर चिड्ढी खाने में ज्यादा मज़ा आया करता था।

एक मर्तबा जर्मनी के फ्रैंकफ्रंट हवाई अड्डे पर बैठा, मैं अमेरिका की फ्लाइट का इन्तजार कर रहा था। अचानक सामने आ रहे शक्श को देख कर लगा, उठ कर पूछूं कि तुम आदुपुर के शिव राम तो नहीं हो ? फिर सोचा, वह यहां कैसे हो सकता है। और मैगज़ीन पढ़ने में लग गया। अचानक पीछे से किसी ने मेरी दोनों आँखों को हथेलियों से ढक कर पूछा: भाई देवी सिंह ही हो ना ? वह वह शिवराम ही था। लगा रेगिस्तान में बारिस होने लगी है।

बहार सब कुछ अच्छा - अच्छा देखने के बाद भी, मुझे सबसे ज्यादा आनंद और सुकून की अनुभूति जब होती है जब मैं अपने गाँव में अपने नौहरे / बैठक में कदम रखता हूँ। लगता है बहुत सारा गंगाजल पीने को मिल गया है। उन दीवारों को छू कर देखता हूँ - जिनकी नींव मेरे नही हाथों से 71 वर्ष पहले रखी थी। जिंदगी में मैंने ख्वाइसे पालने से परहेज किया है। मगर एक फ़रियाद मेरे दिल में अब भी छुपी है कि मेरी मौत के बाद, शरीर को अग्नि मेरे गाँव में ही दी जाए ताकि मेरी ख़ाक उसी मिट्टी में मिलजाए जहां से वह उठी थी।

मेरे दिल का एक कोना ये भी कहता है कि मेरे सपनों का गाँव अब है कहाँ ?
तुम अपने गाँव में जा कर देखो, वहां भी अब शहर ही बसे हैं।
जिस जिंदगी को तुम ढूंडते हो वो जिंदगी अब वहां नहीं है।
बहुत दिनों बाद पाई फुर्सत तो मैंने गलियों को जा कर देखा,
मगर मैं पहचानता था जिनको, वो गलिया अब वहां नहीं हैं।

(4) जितना कम सामान रहेगा, उतना सफर आसान रहेगा।

घटना है वर्ष 1982 की। उस समय मैं हिन्दुस्तान कमर्शियल बैंक की फरीदाबाद शाखा का मैनेजर था। बैंक के माध्यम से मेरा परिचय हुआ एक दक्षिण भारतीय सज्जन से। नाम था कृष्णन- पेशे से चार्टेड अकाउंटेंट। एक रविवार के दिन उन्होंने मुझे गोल्फ लिंक दिल्ली के किसी मित्र से मिलाने का सुझाव रखा। गोल्फ लिंक दिल्ली का वह इलाका है जहां उस समय भी जमीन सोने के भाव मिला करती थी। कृषणन ने अपनी फ़िएट कार बहार ही पार्क की और हम करीब दो एकड़ में फैले उसके मित्र के बंगले में दाखिल हुए। वहां कई कीमती कारें, हरी घास से ढके लॉन और पारदर्शी पानी से भरे स्विमिंग पूल देखने को मिले। सम्पूर्ण सन्नाटा। मैंने झिझकते हुए कृष्णन से पूछा: क्या जूते यहां उतार दूँ ? जवाब आया - नहीं, चले आओ। हम उस कमरे पहुंचे जिसमे सज्जन एक गायक अयातुल्ला खान की कोई ग़ज़ल सुन रहे थे। देखते ही वे उठे और कृष्णन को गले से लगा लिया। मेरा भी परिचय कराया गया। उन्होंने बताया की परिवार के अन्य सदस्य शॉपिंग के लिए बाज़ार गए हैं। ऐसे हालात में हमने चाय पानी के प्रस्ताव को सिरे से खारिज कर दिया। मगर वे कहाँ मानाने वाले थे। कहा कि चौहान जी तो मेरे घर पहली बार आए हैं। मैं आपको वो बना कर खिलाऊंगा जिसमें मैं एक्सपर्ट हूँ। थोड़ी देर में वे किचन से 2 प्लाटों में गरम गरम बादाम का हलवा ले आए। मैंने तीसरी प्लेट के ना होने के बारे में पूछा तो बोले: मुझे मीठे और चिकनाई के लिए डॉक्टरों ने सख्त मना कर रखा है। और गेंहू से मुझे एलर्जी है। आप लोगों को खाता देख ही मैं आनंदित हो जाऊँगा। मैं हैरत में। सोचने लगा कि किस काम का यह वैभव और शान - शौकत। उनके पूरे भारत में फैले कारोबार के बारे में चर्चा होती रही। जब हम चलने लगे तो वे हमें बाहर तक छोड़ने आए। अलविदा करते समय उन्होंने मेरा हाथ थाम कर कहा: चौहान जी, यहां सब कुछ देख कर आपको अवश्य ही भ्रम हुआ होगा कि मैं कितना सुखी और संपन्न हूँ। मगर आपको धधकती भट्टियां दिखाई नहीं दे रही हैं जो मेरे सिर पर लावा पिघलाती रहती हैं। अपनी फैक्ट्री के लंच टाइम में जब मजदूरों को हाथों में थामी 5 - 6 मोटी मोटी रोटियों, मुक्के से फोड़ी प्याज, लाल मिर्च और लहसुन की चटनी और एक गिलास पानी के साथ भोजन समाप्त करने के बाद, जमीन पर गमछा बिछा कर लेटे हुए देखता हूँ तो दिल उदास दिल कहता है कि काश: ऐसा जीवन मेरा होता। असली मायनों में सुखी वही है जिसका हमेसा सिर ठंडा और दिल गर्म रहता हो। उद्योगपति सेठ गूरजमल मोदी और उनके परिजन क्रिकेट जगत के बेताज बादशाह ललित मोदी को कौन नहीं जानता।

बदन सिंह चौहान

उनके नाम पर तो यू पी में मोदीनगर के नाम का पूरा औद्योगिक शहर ही बसा हुआ है। सारा साम्राज्य आपसी कलह की भेंट चढ़ गया।

हिंदुस्तान ही नहीं विश्व के उच्च कोटि के अमीरों में एक नाम आता है मुकेश अम्बानी का - रिलायंस ग्रुप समूह के सर्वे सर्वा। पिछले दिनों अपने छोटे भाई अनिल अम्बानी के साथ तलवारबाजी करते देखे गए। अथाह संपत्ति के बटवारे को ले कर। माँ कोकिला बेन बेटों के झगड़ों में मध्यस्ता करती दिखाई पड़ी।

मेरे दादा और पिता जी की पीढ़ियों में परिवारों में एक दर्जन बहन भाइयों का पैदा होना तो सामान्य बात थी। बाद में रिवाज आया, हम दो हमारे दो। फिर हम दो हमारा एक। आजकल कई परिवार खुशियां मना रहे हैं ये कह कर हम और केवल हम।

वर्षों से सुनते आए हैं - "Small is beautiful" (कम ही सुन्दर है)। Big is beautiful (ज्यादा सुन्दर है) कभी सुनने को नहीं मिला। 'कम' खो कर और टूट कर भी आनंदित होता है।

ज्यादा पा कर भी दुखी होता है। 'कम' जब भी कुछ देता है, तब खुश हो जाता है। 'ज्यादा' जब भी कुछ ले पाता है, तभी खुश होता है।

बुलंदी देर तक किस शख्स के हिस्से में रहती है।
बहुत ऊंची इमारत हर घडी खतरे में रहती है।

कवी गोपाल दस नीरज के शब्दों में:

जितना कम सामान रहेगा, उतना सफर आसान रहेगा।
जतनी भारी गठड़ी होगी, मुश्किल में इंसान रहेगा।

(9) फिर भी कोई कमी सी है क्यूँ जिंदगी के साथ-

आदमी का जीवन सफर भी अजीब सा है। जवानी के खुमार में उसे लगता है कि उस जैसा पराक्रमी व बलशाली कोई नहीं। दुनिया की तीन चौथाई अक्ल उसके पास है और एक चौथाई में सारी दुनिया। जीवन के आखरी राउंड में उसे अपनी औकात समझ आने लगाती है।

पर्दा गिरने के करीब आ जाता है,
तब जा कर कुछ खेल समझ में आता है।
दुनिया समझ में आई, मगर आई देर से।
कच्चे बहुत थे रंग उतरते चले गए।

मन मान लेता कि:

कहाँ की दोस्ती किन दोस्तों की बात करते हो,
मियाँ दुश्मन नहीं मिलता अब तो ठिकाने का।
और आगे देखिए हतासा की पराकाष्ठा
सब जख्म खुद भरेंगे, भरेगा कोई नहीं।
मरने से पहले कद्र करेगा कोई नहीं।
तलवार गर हवाओं में चलाओगे खामाखां,
बाजू थकेंगे और मरेगा कोई नहीं ।

कुछ तो जगजीत सिंह की गजल के इस हिस्से को याद कर तसल्ली कर लेते हैं।

कौन आएगा यहां कोई ना आया होगा,
मेरा दरवाजा हवाओं ने हिलाया होगा।
दिल नादां नां मचल, दिल नादां ना मचल,
कोई खत ले कर पड़ोसी के घर आया होगा।

मगर सारा मंजर इतना भयावह और निराशाजनक भी नहीं है। जो लोग नीयत, मेहनत और सेहत को संभाल कर अपनी जमीर में अपनी खुद्दारी को ज़िंदा रख पाते हैं और किसी और से गिला करने से पहले अपने सामने आइना रख लेते हैं, उनका जीवन अंत तक खुश हाल और आनंदमय रहना तय है। ऐसे लोगों को 1965 की हिंदी फिल्म: वक्त के लिए साहिर लुधियानवी की लिखी ये पंक्तियाँ रास्ता दिखाती रहती हैं।

वक्त की गर्दिश से है, चाँद तारों की निजाद,
वक्त की ठोकर में है, क्या हुकूमत क्या समाज।
आदमी को चाहिए वक्त से डर कर रहे,
कौन जाने किस घडी, वक्त का बिगड़े मिजाज।

ऐसे लोगों की मानसिकता का चित्रण ये पक्तिया करती हैं :-

गलत बातों को खामोशी से सुनना, हामी भर लेना,
बहुत है फायदे इसमें, मगर अच्छा नहीं लगता।
मुझे दुश्मनों से भी खुद्दारी की उम्मीद रहती है,
किसी का भी हो सर, क़दमों में सर अच्छा नहीं लगता।

और आगे भी है:-

खैरात में मिली ख़ुशी मुझे अच्छी नहीं लगती,
मैं अपने दुखों से भी रहता हूँ नवाबों की तरह।

जिंदगी चकित भी करती है:-

शाखों को छोड़ कर जो उड़े उनका जिक्र क्या,
पाले हुए भी गैर की छत पर उतर गए।

जिंदगी लुका लुका छिपी का खेल भी खेलती है:-

खफा खफा सी हर ख़ुशी मिली है हर दफा,
ज़रा ज़रा सी बात पर ये रूठी हर दफा।
ना जाने रव्वाईयों को क्यूँ मलाल सा रहा,
मनाया जिंदगी हमने यूँ तो हर दफा।

प्रकृति का दस्तूर है सब कुछ मिल जाने के बावजूद, सम्पूर्ण सन्तुस्टि नामुमकिन है:-

यूँ तो गुजर रहा है हर एक पल खुसी के साथ,
फिर भी कोई कमी सी है क्यूँ जिंदगी के साथ।

बदन सिंह चौहान

रिश्ते वफ़ाएं, दोस्ती सब कुछ तो पास है,
क्या बात है दिल क्यों उदास है।
चाहत भी है सुकून भी है डिलवरी भी है,
आँखों में ख्वाब भी है, लवों पर हंसी भी है।
दिल को नहीं है कोई शिकायत किसी के साथ,
फिर भी कोई कमी सी हैं जिन्दगी के साथ।
सोचा था जैसा वैसा जीवन तो है मगर,
इस बार किस तलाश में बेचैन है नजर।
कुदरत तो मेहरबान है, दरिया दिली के साथ,
फिर भी कमी सी है जिंदगी के साथ।

--xx--

भारत चौहान की कलम से;-

मैं चधारी रघुबीर सिंह का पौत्र भारत चौहान पुत्र गंगालाल, बदन सिंह को बचपन से जानता हूँ। हमारा मोहल्ला मूसाका है। आप जब आठवीं कक्षा में पढ़ते थे तो मैं उसी स्कूल में पाँचवी कक्षा का छात्र था। हमारे मोहल्ले के छात्र शरारती तत्व समझे जाते थे, परंतु आप एक हंसमुख और शालीन व्यक्तित्व के छात्र थे।

मुझे कुछ दिन पहले ज्ञात हुआ कि आपकी एक पुस्तक 'मेरा गाँव अल्लीका' शीघ्र प्रकाशित होने वाली है। इस पुस्तक की मुख्य जांकारीयां मैंने प्राप्त की। मुझे या लिख कर बड़ा ही हर्ष का अनुभव हो रहा है कि मई इस पुस्तक से बहुत प्रभावित हूँ और लगता है जैसे चेतना शून्य हो गया हूँ। गाँव की संस्कृती का उल्लेख जिसमें महिलाओं की तीहर, कानों की बूचनी पहनना, चुटीला और हसली भला किसे प्रभावित नहीं करेगा। लड़कियों का झाँझी रखना और जोहड़ में बहाना मुझे 60 साल पहले के परिवेश में खींच ले गया। किसानों के छोटे हुक्के 'कली' गुड़गड़ाने का ज़िकर मुझे रोमांचित कर गया।

मैं नहीं जानता था कि मेरे दादा जी के पिता जी का क्या नाम था। परंतु आपने पुस्तक में जो वंशावली का उल्लेख किया है तो मुझे ऐसा लगता है कि मानो 200 साल पहले गाँव के बूढ़ी तीजों के मेले में दंगल देख रहा हूँ। आपने इस पुस्तक को लिखने के लिए कितनी महनत की होगी उसकी परिकल्पना ही की जा सकती है। मेरे आपसे लगभग 40 वर्ष पहले ही गाँव में व्यक्तिगत मुलाक़ात हुई होगी। लगभग तीन-चार साल पहले आपका मुझे टेलफोन आया। उस समय मैं अपने बेटे के पास गुरुग्राम में था। आपने मुझे बताया कि आप गाँव में ही रहने लगे हैं। आपने प्यार से मुझे मेरे नौकरी और हाल चाल के बारे में पूछा। मैंने आपको बताया कि मई केन्द्रीय विद्यालय संगठन मे पुस्तकालय अध्यक्ष था और अब रिटायर हो चुका हूँ। उसके बाद आपने मुझे बताया कि दादी (मेरे माँ) ने आपकी नाली का पानी रोक दिया है और इससे आपको परेशानी हो रही है। आपकी बात दूर कर दी जाएगी और परेशानी का कारण माता जी की उम्र का तगाजा है, तो आपने साफ सबदों मैं कहा कि "भारत ये तुम्हारी व्यक्तीगत समस्या है"।

उस क्षण मुझे ये अच्छा नहीं लगा क्योंकि आपकी भसा में मिठास रहता है। बाद में मैंने महसूस किया कि आप शुरू से ही स्पष्ट व्याकता हैं। आपके मन में पेट पाप नहीं है। पुस्तक में सरलता और निष्पक्षता साफ झलकती है। पुस्तक में सकारात्मक और नकारात्मक सोच पर आपके विचार अच्छे लगे।

कल आपसे जअब बात हुई और जब आपको जब पता चला कि चौधरी रघुबीर सिंह का रंगीन फोटो उपलब्ध करा दिया जाएगा, लगा आपको खजाना मिल गया। आपने सच कहा कि चौधरी रघुबीर सिंह सभी के दादा थे। आपकी स्पष्ट वादिता के कारण मई आपको अल्लीका का विदुर मानता हूँ। आपकी पुस्तक आने वाली पीढ़ी के लिए धरोहर है।

भवदीय

हस्ताक्षरित
14.05.2020
भारत चौहान
647, सैक्टर- 09,फरीदाबाद
मोबाइल नंबर: 9711195520

भूली बिसरी यादें:

गाँव अल्लीका के बारे में:

हमारे गाँव में दो पोखर हुआ करती थी। एक का नाम था खौटा और दूसरी का नाम नई पोखर है। नाले से पूर्व में खौटा है और पश्चिम में नई पोखर है। मुझे अच्छी तरह याद है कि गाँव के लोग पशुओं को खौटा में पानी पिलाते थे। अपनी भेंसों को पानी में तैराते थे। और तैरती भैंस की पीठ का सहारा ले कर बच्चे तैरना सीख जाते थे। इसी कारण से मेरे गाँव के लोगों को (ज़्यादातर) तैरना आता था। खौटा में ही गाँव की लड़किया मल्लहो तैराती थी और झांजीयों को विसर्जित करती थी।

गाँव में बहुत पहले एक धनाड्य परिवार का पूर्वज बोहरे (साहूकार) के नाम से जाना जाता है। वह भंडिया पट्टी के राधे स्याम, जयनारायण और कन्हैया के परिवार के पूर्वज था। बोहरे के पास बही खाता था व गाँव के लोगों को ब्याज पर पैसे देता था। गाँव के किसानों की ज्यादातर फसल बोहरे का ही हक होता था इस क कर्ज के कारण। बोहरे जी ने नई पोखर पर एक पक्का घाट बनवाया था जिस पर गाँव के लोग स्नान करते थे। बोहरे जी पूरी नई पोखर पर चार दीवारी करने को तत्पर थे। गाँव के मौजिज लोगों के विरोध के कारण यह कार्य पूरा नहीं हुआ। गाँव वालों को आशंका थी कि कहीं बोहरे जी पूरी पोखर पर कब्जा नहीं कर लें। बोहरे जी ने घुघेरा से धतीर जाने वाली सड़क के किनारे एक पक्का तालाब बनवाया। अल्लीका को सोहना सड़क से जोड़ने वाले टी पॉइंट पर यह खंडहर तालाब मौजूद है। आजादी से पहले बही खाते की प्रथा और किसानों का शोषण मेरे गाँव की तरह ही पूरे पंजाब में प्रचलित था। किसानों के मसीहा सर छोटूराम जो कि संयुक्त पंजाब के राजस्व मंत्री थे, के आदेश पर बही खाता प्रथा को समाप्त कर दिया गया। इस आदेश के परिणाम स्वरूप मेरे गाँव के किसान भी कर्ज से मुक्त हुए। उन्ही दिनों बोहरे जी की हवेली में आग लग गई। सारा बही खाता जल कर राख़ हो गया। बोहरे जी बही खाता बचाने के लिए आग में घुस गए। जब वो खुद जलती हुई हवेली से भार निकले गाँव वालों ने पानी की बाल्टियाँ उन पर डाली उन्हे बचाने के लिए। फलस्वरूप उनके शरीर पर बड़े बड़े फफ़ौले हो गए और इसी दुख में उनका देहांत हो गया।

फूलडोल का मेला क्यों बंद हुआ ? –

दुल्हेण्डी वाले दिन पांचों गांवों के लोग गाँव के मंदिर मेँ बतासे लेने जाते थे, ढ़ोल नगाड़ा बजाते हुए। सन 1967-68 मेँ दुल्हेण्डी के एक सप्ताह पूर्व मंदिर के बाबाजी रामटहल दास दादाजी चौधरी रघुबीर सिंह के नौहरे मेँ आए और कहने लगे कि मुकदम मैं बतासे का खर्च उठाने मेँ असमर्थ हूँ। दादाजी के यह पूछने पर कि 60 कीलों की पैदावार लेते हुए और मंदिर मेँ चढ़ावा आने के बावजूद ऐसा क्यों ? बाबा जी के शब्दों मेँ "लोग चव्वनी चढ़ाते हैं और एक रुपया का बतासे ले जाते हैं।" उन्होने बताया कि मंदिर की सारी जमीन कुछ लोगों को मौखिक तौर पर गिरवी रख दी गई है। दादाजी ने बाबाजी रामटहल दास को सलाह दी कि इस बार किसी तरह से काम चलाओ। अगले वर्ष कुछ किया जाएगा। मई खुद मौजूद था इस पांचों गांवों की पंचायत मंदिर मेँ, जो दादाजी की अध्यक्षता मेँ हुई। इस पंचायत मेँ मंदिर की जमीन को कर्जमुक्त कर दिया गया। भविष्य मेँ मंदिर की देखरेख के लिए एक कमेटी बनाई गई। लेखक सरी बदन सिंह के चाचा अमीलाल इस कमेटी के प्रधान थे। और दूसरे सदस्यों मेँ टोताराम दानीका और पहलवान झम्मन सिंह प्रमुख थे।

नई पोखर से लगी एक बनी थी जिसे गाँव के लोग रख्या कहते थे। रख्या के एक कोने जो नगरा यादुपुर की तरफ है कुवेलकी के नाम से जाना जाता है। कुवेलकी मेँ भी एक छोटी सी पोखर है। हमारे गाँव के लोग बहुत धार्मिक हैं। मैं अपने बचपन से देखता आ रहा हूँ कि गाँव की अलवान औरत – मर्द कुवेलकी की पोखर से हानतों से मिट्टी निकालते हैं। सरकार पानी के स्रोतों को पुनर्जीवित करने का प्रयास कर रही है। कुवेलकी मेँ एक नया मंदिर बना दिया है जहां पर बाबा मंसाराम बाबा की मूर्ती स्थापित कर दी गई है। हमारए गाँव मेँ शुरू से ही बाबा मंसाराम की पूजा होती रही है।

<u>गाँव मेँ हाई स्कूल का निर्माण</u>

गाँव की रख्या मेँ कीकर के पेड़ काफी मात्रा मेँ थे। कीकरों से दातुन तोड़ना भी मना था। सन 1967- 68 मेँ गाँव के कुछ लोग विशेषकर चौधरी रघुबीर सिंह, चौधरी राधेलाल, पहलवान शिब्बन सिंह के अनुरोध पर हरियाणा के शिक्षा मंत्री के सामने मांग पत्र पढ़ा और गाँव मेँ हाई स्कूल खुलवाने की की प्रार्थना की। शिक्षामंत्री ने कहा कि अगर स्कूल के लिए जमीन उपलब्ध करा दी जाए तो और गाँव वाले स्कूल की इमारत बनवा दें तो वे उसे मान्यता दिलवा देंगे। गाँव वालों ने रखया का कुछ भाग स्कूल के लिए दिया और सर्वसम्मति से रख्या की कीकरों को चरण सिंह घुघेरा वाले को 70,000 रुपये मेँ बेच कर स्कूल की चार दीवारी बनवाने मेँ सरकार का सहयोग किया। तुरंत हाई स्कूल की मान्यता मिल गई।

भारत चौहान

कविता

गाँव की परिक्रमा

डॉक्टर धर्म चंद विद्यालंकार
मोबाइल नंबर 9991816926, (अल्लीका)

(1)

देखो, पुरखे हमारे कितने असरदार थे !
कैसे कैसे सूरमा वे बड़े सरदार थे।
चौधरी रघुबीर सिंह से कवि और पंच थे यहां,
तो सरूप सिंह जैसे सादा सुन्दर लम्बरदार थे।
चन्दन सिंह जैसे भगत थे तो धनमत जैसे मल्ह भी थे,
घंसी जैसे सांगी थे तो गायक पल्टू सिंह चमार थे।
शिब्बन जैसे पहलवान थे तो हुकम लाल जैसे बलवान भी थे,
बीरबल से धनी सेठ बोहरे सूदखोर और साहूकार थे।

(2)

ग्यासी जैसे ठोंडा सेवक सज्जन भी यहां हमने देखे,
लगे रहते सदा सदावर्त जिनके यहाँ दरवार थे।
चंदीराम मुकदम और राधे पहले यहां सरपंच हुए,
मानौ जैसे वही यहां चुनी हुई बेशक सरकार थे।
गिरधर जैसे मधुर गायक, उनका साज-बाज देखा,
चौपईयों के गवईया सस्वर वे सदा तो बहार थे।
गंगालाल जैसे प्रखर पंच देखे और सत्यवादी अमीलाल,
गोविंदा जैसे वकील देखे कर में लिए कानूनी कटार थे।

(3)

सूरजमल जैसे नामी मल्ह देखे, सरनामी जो देश भर में,
मोटर-साइकिल के भी वही बाँके वीर सवार थे।
भगवान सहाय पंडित देखे, पहले पहले वैद्य थे यां,
पंडित बुधराम पुरोहित करते मन्त्रों का उच्चार थे।
देवदत्त शास्त्री जैसे सुरीले कोकिल के से कंठ देखे,
अक्षर भी मोती जैसे जिनके कितने चमकदार थे।
भगत श्याम लाल की-सी पगड़ी हमने देखी नहीं,
बारहमासी के कवि गायक वे तो अलम्बरदार थे।

(4)

दादा इंद्राज जैसा हँसमुख चेहरा हमने देखा नहीं,
वे तो मानों जैसे बसंत की ही सदा तो बहार थे।
किरण सिंह से शिक्षित समझदार सरपंच हमने देखे,
गोपीराम जैसे धनीमानी जो जाट-जमींदार थे।

बदन सिंह चौहान

रामचंद और तुहिया जैसे हरिजनों के नेता भी देखे,
अपने समय के घूरे और झाड़ू भी तो लम्बरदार थे।
श्री उमेदसिंह जैसे वीर सैनिक त्यागी-तपस्वी देखे यहां,
खचेड़ू (कनकट) देखो कितने बाँकें वे तो घुड़सवार थे।

(5)

गोवर्धन नाई भी तो नामी और ग्रामी था देखो,
लीलू जैसे धोबी अपनी कौम के वो सरदार थे।
लिखी हुकमसिंह और पाला, दादा पहलाद जैसे सेहा देखे,
हरफनमौला और बातूनी वे सारे ही तो फनकार थे।
फूलवती फूल जैसी सुन्दर छैल-छबीली नारी जो थी,
नाचने-गाने में पछाड़े जिसने सभी तो हर बार थे।
दादी चंदरी सी सहनशील, नारी हमने देखी नहीं,
तन की काली, मन की उजली रामकली के उच्च विचार थे।

(6)

दादा लक्खी जैसे कुशल दर्जी हमने देखे,
जो रखते गाँव भर के सभी समाचार थे।
स्वामी भगत से समाजी भी तो हमने देखे,
कितने शुद्ध उनके वैदिक वे विचार थे।
दादा बस्तीराम और भगवाना पंडित हमने सुने थे,
किए जिन्होने अल्लीका गाँव मेन अपने प्रचार थे।

(7)

चम्पा देवी गाँव भर की खबर सुध रखती थी तब,
समझो कि पति-पत्नी दोनों ही तो वे बस अखबार थे।
बुद्धो और फर्रो जैसी चटक-चमेली नारी भी देखी हमने,
निताराम और भजन लाल के कितने बांके वे बिजार थे।
भाव सिंह और गुलाव सिंह जैसे छटांक-छैल देखे नहीं,
शोभा से हँसोड़ और कितने लोग भलां यहाँ खुशगवार थे।
शादी और किशन लाल, जग्गू से लम्बे लोग देखे नहीं,
आदमी क्या वे तो समझो जैसा पौधे ज्यौं जवार थे।

(8)

श्रीचंद और रघुवीर जैसे ड्राइवर भी हमने देखे,
दादा हुलसा खोज लगाने में कितने होशियार थे।
धौरिया जैसे दौला-मौला मस्तनाथ हमने देखे नहीं,

जानते नहीं वे कितने उनपै भला खेत और क्यार थे।
होशियार और जवाहर सिंह, फूफा भजन से भी देखे,
बोलने में मिश्री घोलते बेशक से वे रिश्तेदार थे।
फूफा कैलाश और दादा तुला राम से पड़ौसी देखो,
कटुवचन बोलने में दोनों ही तो वे इकसार थे।

(9)

दादा बूचा जैसे मुठमर्द मानस भी हमने देखे,
नंग या मलंग कहीं वे आदमी तो दमदार थे।
खाने में गिर्राज छैला शराफत में ठाकुरलाल देखो,
बिरखू और कारे जीमन भी उसी गिनती में शुमार थे।
चंद्रो और केला जैसी भग्गो नार हमने देखी नहीं,
दादी मल्ली ने बसाए देखो कितने अपने परिवार थे।
दुल्ली और भुल्ली की सी घोड़ी-ऊंटनी भी देखी नहीं,
पाला रतनलाल, देवीराम, घसीटा भी तो देखो कैसे यार थे।

(10)

प्यारे लाल पंडित जैसा मिठभासी हमने देखा नहीं,
कर्मकांडी पंडित भी थे बेशक पेशे से दुकानदार थे।
चिरंजी-सा सहनशील खाती हमने देखा नहीं,
हैंडल और बिजन कर देते काम से भी इंकार थे।
लीलू जैसा मेहतर-सा महान पंच हमने देखा;,
मिट्ठल और परसादी दोनों चौकस चौकीदार थे।
चिरंजी की-सी मीठी आवाज हमने सूनी नहीं,
गाँव भर के रात में वही तो पहले पहरेदार थे।

(11)

बुधराम जैसे दबंग और मेहनती मास्टर हमने देखे,
सेवा और समर्पण के स्वरुप वही तो साकार थे।
समरथसिंह जैसे सहनशील और गंभीर टीचर हमने देखे,
प्रार्थना में प्रवचन देते वे ही यहां तो हर बार थे।
ख्याली, लख्मी,बुधराम और नवलसिंह से हॉकी के खिलाड़ी देखे,
हाली-पाली और पढ़ैलाओं के खेल आपस में कितने दमदार थे।
रामचंद चौहान कवि रसिया के रसिक जन है देखो अभी,
कविता में बहाते जो सिंगार की ही बस रसदार थे।

(12)

तोता और बिजन की -सी सुन्दर जोड़ी भी बिछड़ती देखी,
किशन और मोतीराम मेंबर भी अगुआ ही अपार थे।

बदन सिंह चौहान

पहला राधे के यहां ट्यूवेल देखा चंदी-का-सा ट्रेक्टर था;
दादा पृथी की हवेली देखी और चंदनसिंह के से घरद्वार थे।
सम्वत पंद्रह की-सी आग और बाढ़ भी हमने देखी,
तबसे ही लगे यहां गुड़ और चने के जो अम्बार थे।
गारेका - कीचका फिर रहा था कहाँ देखो यहां,
मकानात उसी दौरान याँपै बने जो बेसुमार थे।

(13)

पिचासी- सत्तासी के अकाल हमारे पुरखों ने देखे,
कैसे-कैसे वक्त काटे दिन वे भी तो बड़े यादगार थे।
जयनारायण बोहरा देखो क़ानून का ही कीट था वो,
दादा पतराम सेना में पहले नायक हवलदार थे।
चेतराम सूबेदार कवि और सैनिक भी थे बांके यहां,
झम्मन पहलवान देखो स्वभाव से कितने खुशगवार थे।
मोतीराम से प्रबंधक और जुगाड़ू लोग देखो यहां,
गाँव में डेरी ला कर किए कितने बड़े उपकार थे।

(14)

रामचंदी जैसे सुघर हाली भी तो हमने देखे,
दादा सीताराम तुकबंदी में कितने नामदार थे।
मनोहरी जैसा कुशल कारीगर हमने देखा नहीं,
बेशक उसको लाए हम पलवल से उधार थे।
भोज और जयसुख जैसे कमेरे साझी हमने देखे,
दुल्ली और गुरगल भी ऐसे ही बेशक वे बल्हार थे।
प्रभु और गंगालाल जैसे सुघड़ राजमिस्त्री हमने देखे,
रामस्वरूप और कंगाल भी तो पक्के ठेकेदार थे।

(15)

गिर्राजसिंह की सी उन्नत खेती कहीं हमने देखी नहीं,
महाशय फ़तेह सिंह खाट बुनाई के कुशल कलाकार थे।
दादा लक्खी जैसे कुशल दर्जी भी हमने पहले देखे,
रखते गाँव भर के भी तो वे ही सारे समाचार थे।
श्यामी भगत जैसे समाजी भी हमने यहां पै देखे,
कितने शुद्ध उनके वैदिक वे उच्च तो विचार थे।
लालाराम जैसा साफ़ दिल हमने देखा नहीं,
नानक जैसे बैठकबाज आदमी भी तो दिलदार थे।

(16)

दादा मोहर्रम जैसा भावुक भोला देखने को मिला नहीं,

बदन सिंह चौहान

बातूनी अफलातून बेशक वे करते सभी से प्यार थे।
बाबा राम टहल जैसा त्यागी और सेवक साधू नहीं,
महाराज सुरेश-सा महंत नहीं, बेशक बातूनी लबार थे।
दादा थान सिंह जैसा मेहनती किसान सीधा साधा कहाँ,
रतिराम मास्टर जैसे भला किसके साधारण विचार थे।
लालचंद और शिबना से सजीले जवान हमने देखे नहीं,
मास्टर हुकुमलाल तो सरलता के साक्षात अवतार थे।

(17)

दादा भूक्कल और कुंदी जैसा बड़ा कुटुम्ब-कबीला नहीं,
दादा सरूप के से भला कितने ऐसे सांझे परिवार थे।
गंगली के क्रोध में थे तो पहलाद सा पंगेबाज कहाँ,
जीती जैसे बोलो तो गाँव में कितने बड़े विस्वेदार थे।
चन्द्रकला और कैलासी जैसी भुआ हमने देखी नहीं,
औरतों में सरबत और रामप्यारी की अपने लहकार थे।
बिजन की माँ जैसी कमेरी नार हमने देखी नहीं,
दादा दुल्ली भी तो वैसे ही कमेरे भरतार थे।

(18)

भुआ धौरा जैसी सेवा भावी नार देखो,
शिब्बन पहलवान जिसकी सेवा के हकदार थे।
शिवकौर भुआ ने घर बसाया गिर्राज का,देखो यहाँ,
दोनों के ही त्याग देखो कितने वजनदार थे।
भीमसिंह और चरणसिंह जैसे भाई हमने देखे नहीं,
बदन महेंद्र अमरसिंह लाला चुनमुन भी सहकार थे।
भाईयों में ऐसा प्यार-प्रीत हमने हमने देखा नहीं,
बहन शकुंतला-सुमन-सुनीता को पढ़ाने में आगासार थे।

(19)

ग्यासो-सी बड़बोली औरत हमने कहीं देखी नहीं,
मज़ाकों में कहाँ भला सुंदरियों के परावार थे।
उदय चंद नाई जैसे समझदार लोग हमने देखे,
आपको पता नहीं वे तो बहुत अच्छे कथाकार थे।
भूल चूक माफ़ करना हमारी आप सभी सज्जनो,
साहित्यकार थे बस धर्म चंद नहीं कोई कोशकार थे।
दादा लाले और बाले की सी बिकट बली जोदी हमने सुनी नहीं,
लाठी से ही जो करते सिंह और भैंसे का शिकार थे।

बदन सिंह चौहान

(20)

किशन सिंह और भाव सिंह से ग्वाले हमने देखे नहीं,
नत्थी मास्टर और चतरसिंह देखो कितने पक्के यार थे।
कच्छारिया जैसे मेहनती और कमेरे किसान कहाँ,
मूसाके जैसे कहीं हमने कब देखे लोग होशयार थे।
पिछली पीढियों ने फिर भी बहुत कुछ किया था यां,
नई पीढी के लिए बने देखो वही तो हरकार थे।
साहित्य में भी किसने जगह अपनी बनाई देखो तो,
कहना मत गँवार उनको कवि वे धर्मचंद जी अलंकार थे

॥ इतिश्री ॥

बुरा ना मानो होली है

(1)

मेरी परदादी परमाली, वो तो कभी नहीं थी खाली;
रक्खी घर भर में हरियाली, भरे रहे भण्डार थे।
देसी घी के भरे भराए, पुए अठगाँव ने खाये;
कारज ऐसे और कहीं ना पाए, मालपूए कितने रसदार थे।
देखो दादी वो भगवानी, उसकी मिश्री जैसी मीठी वाणी;
करती थी सबकी अगवानी, दादा उतने ही तो करार थे।
देखो दादा हिरदे छैला, मिली उन्हें अंगूरी लैला;
बेसक हाथ पड़ा न थैला, लेकिन प्रेमी वे दिलदार थे।

(2)

देखो अमीलाल जी पंडा, हाथों में रखते थे डंडा;
वैसे क्रोधी भी परचन्डा, बातुनी बड़े लबार थे।
देखो तो वो ज्ञासों ताई; नेता थी, बनी जो बनाई;
उसको औरत कौन कब भाई, दिए उल्हानों के ही उपहार थे।
ऐसी पति-पत्नी की जोड़ी, जैसे लात मारनी घोड़ी;
जुए में जुती नहीं निगोड़ी, बेसक नामी उसके भरतार थे।
उधर देखो चम्पा रानी, वो भी कैसी नार सियानी;
पिया था सात घाट का पानी, ज्ञात सभी तो समाचार थे।

(3)

देखो वो लिक्खी दादा, वे बात बनाते थे सबसे ज्यादा;
पूरा किया न कभी तगादा, वैसे चलते-फिरते अखबार थे।
मेरे ताऊ श्यामलाल, मानो थे वे सेठ किरोड़ी लाल;

बदन सिंह चौहान

कभी खर्च किया ना धनमाल, वैसे लगे हुए अंबार थे।
दादा कन्हैया थे बातून, घर में भले नहीं था चून;
समझे थे अपने को अफलाथून, पाले फिर भी तो परिवार थे।
सगी बहने लोहारी और रूमाली, उनमें रही ना बोली चाली।
फिर भी घर कभी रहा ना खाली, कलह भी सिद्ध हुए फलदार थे।

(4)

देखो खिच्चू और रघबीरों, उनमें प्यार-प्रीत था जीरो;
फिर भी बने रहे वे हीरो, कितने देखो तो इज्जतदार थे।
वे मोहर्रम बमभोला; बातों के गरकाते गोला;
खर्चा किया एक नहीं तोला, जबकि बेटा पाँच और चार थे।
देखो चन्दी के धमधल्ला, उनकी नारों का था हल्ला;
फिर भी खाली रह गया पल्ला, बालक सारे ही गैर जिम्मेदार थे।
खर्चे में मोटा मामचंद, तो कविताई में श्री राम चन्द;
और चौक के हरचंद, सभी देखो तो दिलदार थे।

(5)

बुद्धि जैसा वक्ता, जो सच कहे बिना नहीं रुकता।
राम सिंह-सा नहीं चकत्ता, भला ऐसे कितने नर-नार थे।
हप्पू धर्मबीर-सा लंबा, जैसे हो बिजली का खंबा;
लोग करते सभी अचम्बा, बढ़े ऐसे जैसे कि खरपतवार थे।
देखो तो वो वामन विलंदा, और पहलाद जैसा बंदा;
जो हुआ नहीं कभी मंदा, जानते जो मर और मार थे।
क्रोधी अंतराम बाप और बेटा, जिनने सबको यहाँ लपेटा;
खाए सरकार दरवार में चपेटा, बर्बाद हुए भले ही घरबार थे।

(6)

रामजीलाल वे ठंडी, देखने में लगते भले शिखंडी;
बातों में गाड़ते थे झंडी, इतिहास के वे जानकार थे।
सूखा जैसे सूखा पंच, और घमंडी जैसा मंच;
जमा सकते नहीं कभी रंच, यहाँ देखो तो वे हर बार थे।
वो बैंगनिया जैसा भजनी, बेसक नाक भले ही वजनी;
वो भगा कर लाया सजनी, ऐसे ही तो बसे घरबार थे।
पशु सेवी लेखा लाल, चपरासी थे श्री बृजलाल;
बेसक बने रहे बदहाल, सेवा करते रहे लगातार थे।

(7)

मोटी बामनी वो बिमला, जैसे साक्षात हो जो कमला;
फैला भौंडसी तक अमला, धन-माया के-ना पार थे।

बदन सिंह चौहान

देखो दादी तो वो चलती, जो थी कभी नहीं मचलती;
मान लेती अपनी गलती, लोग सज्जनता के आगार थे।
वे हुकमलाल भेंगा, बोलते थे ऐसे जैसे पेंगा;
आदमी वे थे मस्त-मौला, मानो वे गुलशन में बहार थे।
देखो तो साध बाबा, दयाली हुकमलाल थे बस खावा;
गिरधर का सरपंची पै पक्का दावा, लड़ते थ वे तो जो हरबार थे।

(8)

ये तीन तिघरिया तेली, घँसी से थी मेला मेली;
श्यामलाल नत्थी ने बाजी खेली, आपस में कितने व्यौहार थे।
राधे सोहनलाल की जोड़ी, और देखो भूपलाल की घोड़ी;
खचेरा और बलबीर तो बेचारे, कंपन बाय से लाचार थे।
देखो वो नत्थी का लूला, जिसने देखा चाखी-चूल्हा;
वो तो ठाठ बाट सब भूला, खेरा देवत क्या बेकार थे।
पलटू और उमेद, हमको लिखते होता खेद;
दोनों चले गए नापेड़, ये जैसे कुदरत के कारोबार थे।

(9)

दादा उदली और फतेली, उनमें थी आपस में मेला-मेली;
पालते थे पूरन-चेला चेली, वैसे भी वे रंग सियार थे।
बन कर सारे हमजोली, फागन में मिल कर खेलें होली;
जिंदगी सभी ने अपनी अपनी ढोली, बन गए वही अब यादगार थे।
देखो तो वो प्रेम पंडित, जो नेह से रहे सदा ही खंडित;
करते हैं वे सबको दंडित, प्यारे उन्हें कागज के ही कलदार थे।
देखो तो भगत वे बैरागी दयाली, कविता करते थे खाम ख़याली;
सती प्रथा के थे रखवाली, बहाते भक्ति की रसधार थे।

(10)

वो जो शोभा की घरवाली, सबसे ठाड़ी लंबी काली;
फिर भी नार रही मतवाली, मर्द कहाँ उसके इकसार थे।
देखो तो वो गोपी सेठ, जिसका बढा हुआ था पेट;
होने दिया न मटियामेट, मेहनती वे साहूकार थे।
देखो जो थे सोहनलाल, ढोलक पर देते थे लय-ताल;
फिर भी बने रहे कंगाल, अंत में बने दुकानदार थे।
सरपंच जो थे श्री राधेलाल, बुद्धि का था सदा अकाल;
सहायक थे श्री सोहनलाल, बने तभी तो वे सरदार थे।

बदन सिंह चौहान

(11)

देखो तो वे डल्लन सेठ, जिनका ढाई मन का पेट;
किया गुस्से को मटिया मेट, पेड़ झुके वही जो फलदार थे।
देखो तो वे काने कव्वा, खाने मे थे पूरे हव्वा;
बनके रहे सदा ही नऊया, कहलाते फिर भी साहूकार थे।
दादा थे रामचंद तिघरिया, गाने गाते थे वे तो बढ़िया;
गाते चन्दनसिंह के रसिया, अनपढ़ भी वे कलाकार थे।
गिरधर थे रास रचैईया, चौपइयों के गहरे रसिया;
सबके बनते थे पहिया, बहाते गाने में वे तो रस धार थे।

(12)

देखो दादा सीताराम, करते सबसे दुआ-सलाम;
रखते अपने काम से काम, फिर भी तुक-तानदार थे।
दादा सरुपा हमने देखे, कर सके नहीं अनदेखे;
जिनके व्यंग-बाण थे तीखे, शब्द उनके धारदार थे।
बाते करते थे त्रिछोल, वैसे वाणी बड़ी अमोल;
फिर भी हुई न उनकी तोल, अच्छे वो हास्यकार थे।
देखो तो वो सरूपा टावर, ज्यों चवन प्रास हो डाबर;
चौपईयों के नटनागर, गवैया वे तो दमदार थे।

(13)

करते लोहे-सोने की तुलना, फिर अर्थ उन्हीं के खुलना;
दोनों का मिलना-जुलना, महत्व के वे हक्कदार थे।
देखो हरजीमन नाई, नहीं प्रीत किसी से भाई;
ना समझ कभी फिर आई, अपने मन में तीसमार थे।
वे लंबदार जो घूरे, थे गुड की डली ही पूरे;
बिन काम के रहे अधूरे, पाँव से भी तो चक्रदार थे।
वो देखो लीलू भंगी, जो बात बनाता जंगी;
पर रही पीठ फिर नंगी, रंग से भी तो कोलतार थे।

(14)

वे मिट्टल भंगी बहरे, जिसके बोल बड़े थे गहरे;
देते थे रात में पहरे, चपरासी भी तो ऐहलकार थे।
देखो तो चंदरी का ज़ीमन, उखड़ी रही बानियान की सीमन;
फिर भी जबर्दस्त था नीमन, उसके काफी बड़े कबार थे।
उसको गाना भी तो आता, रघुबीर के गीत रहा सुनाता;
हमको तो वो बड़ा ही भाता, दूर उसके खे-क्यार थे।
देखो तो कछारिया गाजे;, जिसके पूत पाँच छः साजे;

बदन सिंह चौहान

वे तो बिना स्वरों के बाजे, वैसे वे बड़े कुटुम्बदार थे।

(15)

देखो तो बदले का चंदी, उसकी अकल बड़ी थी मंदी;
हरदम बात बोलना गंदी, दादा फिर भी तो समझदार थे।
देखो तो मास्टर वो नंदलाल, उसके भरा रहा धन-माल;
करते औरों को कंगाल, ब्याज-बटोरु साहूकार थे।
देखो तो वो ग्यासी-चंदा, गले में पड़ा कर्ज का फंदा;
फिर भी सेवा भावी बंदा, चंदा तो वैसे भी लंबरदार थे।
देखो शिवचरण और वे मंगल, भाया था खेतों का जंगल;
बनके धनी किया ना दंगल, मानस वे कामदार थे।

(16)

भगत जी देखो लाला राम, आए सदां सभी के काम;
फिर भी बचा नहीं छदाम, दबे बिचारे कर्जदार थे।
देखो चाचा नानकराम, जिनने किया नहीं कभी काम;
मालिक था बस उनका राम, वैसे वे यारों के यार थे।
देखे थे सरूप के हेत लाल, मन के ना थे वे कंगाल;
स्वभाव में लगते, जैसे बाल, बड़े ही हास्यकार थे।
देखो राम प्रसाद वो खड्डा, खुला रहा शराब का अड्डा;
वो तो बिना अकल का पड्डा, लंबे ज्यों देवदार थे।

(17)

ग्वार खावा गंगा राम, सबसे करता रहा सलाम;
नहीं था लड़ने का कुछ काम, आदमी वे कामदार थे।
देखो वो दादा खिल्ला, ऐसे ही तो ताऊ पिल्ला;
जिनका रहा गाँव में गिल्ला, आदमी तो वो मजेदार थे।
धरम-करन वे लीतर-छीतर के, वे तो गहरे थे बहुत भीतर के;
करते रहे शिकार तीतर के, नहीं वे कामदार थे।
अमीलाल समाजी पूरे, हमने नहीं कमाते घूरे;
वैसे रहे गर्व में चूरे, आदमी फिर भी नामदार थे।

(18)

दादा रघुबीर सा देखो पंच, जिसने लूटे थे सब मंच;
फिर भी झुके नहीं थे रंच, आदमी वे वजन दार थे।
अतरी सा लंबरदार; समझो था वो तो अखवार;
तो वैसे भी थे होश्यार, भले ही वो बीमार थे।
देखो वो कछारिया भुल्ली, और तिघरिया दुल्ली;

रिसती रही रुपये की तुल्ली, आदमी वैसे मालदार थे।
देखो वो चौक के दाता राम, आये सदा सभी के काम;
हुए कभी नहीं नाकाम, कुओं के वे खोजदार थे।

(19)

हेती और तोती पै थी बहली, रथ की जोड़ी भी तो थी पहली,
फिर झूल रही थी मैली, मिले ना उन्हे जमादार थे।
घँसी के सोनी और दीपचन्द, रथ में लगे रहे पैबंद;
तिघरिया भर्ता भी थे मतिमंद, तीन ही तो उनके परिवार थे।
हल्ली और गिर्राज, इनपै हुआ रेज़ का नाज,
छाजा दादा रूरा का साज, राम सिंह भी रसदार थे।
कुंआ अठहलाया और भरना, लगा रहा कछवारे पै धरना;
मीठे बंवारे की ली सरना, वक्त कटे तब मजेदार थे।

(20)

पार वाले के देखो पीर, वहीं लगी रही थी भीर;
समली के का पानी था गंभीर, रहट वे मालादार थे।
देखो सारी माता का खेरा, बनिया वारी का था फेरा;
जंगल मूराके का हेरा, बेशक खेत वे भूडदार थे।
पोखर नई खौटा की न्यारी, कितनी दिखती थी वे प्यारी;
फूली पशुओं की फुलवारी, घाट भी तो मजेदार थे।

(21)

क्वेलकी की पोखर का पानी, मानो खीर किसी ने छानी।
बाबा मनसा की थी राजधानी, सन्यासी वे तो तपधार थे।
मीठे की कुईया न्यारी, पानी स्वाद था कितना भारी।
अब तो अटी दीवालेवारी, कौन भला जिम्मेदार थे।
फूलडोल का था जो मेला, लगाता नहीं एक भी ढेला;
यह गंदा खेल है किसने खेला, बाबा बड़े बिस्वेदार थे।
तीज का देखो तो वो दंगल, युवा जहां मनाते दंगल,
अब यह गाँव बना क्यों जंगल, मेले कितने मजेदार थे।

(22)

अब है गाँव नशे ने मारा, जंग का फिर बजता है नक्कारा;
कहाँ गाँव बस्ती की एकता का जैकारा, क आहान जब कि दमदार थे।
बंदर के हाथ में है बंदूक, आगे मत करना तुम चूक;
कहते धर्मचंद दो टूक, आपके वे खाकसार थे।
बड़ा हार गंधेली वाला, जबसे आया गंदा नाला;
पड गया पानी पीने का लाला, फिर भी सींचे खेत-क्यार थे।

घुरौंद का देखो तो व जंगल, मूराके में होता था मंगल;
ईख-वनों का लगता था दंगल, खेत वे जानदार थे।

(23)

धर्मशाला वो राधे वाली, निताराम की देख भी निराली;
कुईया देखो तो बोहरे वाली, लोग वे दया-नतदार थे।
तालाब वो धतीर वाला, महेश्वरी बोहरा था रखवाला;
बसता था वां मतवाला, प्यारे भरभूजा जानदार थे।
मर्दान पहलवान वो मुल्ला, और देखो लाला वे भुल्ला;
सूना पड़ा आज वो ठुल्ला, आदमी वे मालदार थे।
बुद्धी और प्यारे लाल, हुए थे बाढ़ से वे बेहाल;
हुए खेड़े वाले मालामाल, आदमी वो मालदार थे।

(24)

धुर बांध कुए में कूदे, बेसक गिरे ऊपर रेत के तूदे;
बाल्टी ढूंढने में कहाँ चूके, कितने भला वे जानदार थे।
भरते धर्मचंद यह हूक, करना माफ भूल और चूक;
गुस्से को तुम देना थूक, समझना होली के ही त्योहार थे ।
भावसिंह और किशनसिंह से ग्वाले, देखो तो कितने मतवाले;
वे थे पशुधन के रखवाले, फिर भी वृक्ष कहाँ फलदार थे।
चौक के देखो ताऊ अतरी, सराफ़त की तनी रही थी छतरी,
और कछारिया देखो अतरी, आदमी वे चकदार थे।

प्रोफेसर डॉक्टर राजपाल सिंह
गाँव: भेंड़ी , बरवाला (हिसार) हरियाणा

शिष्ट साहित्य में अल्लीका गाँव का वर्णन

साहित्य सदैव अपनी बातें संकेतों या फिर अलंकारों में कहता है। गाँव के सिद्ध श्रेष्ठ साहित्यकार एवं कवि तथा रचनाकार डॉक्टर धर्मचंद विद्यालंकार ने जहां पर लगभग पाँच सौ कहानिया लिखी हैं और उनके अब तक लगभग पंद्रह कहानी संग्रह भी प्रकाशित हो चुके हैं , जैसे कि चौबीसी का चबूतरा और पगड़ी संभाल जट्टा तथा हाशिये की जिंदगी, जैसी कहानीयों की पुस्तकों में उन्होने कई कहानियाँ अपने गाँव के ही कथानकों पर लिखी हैं। जैसे कि 'बाजी की शर्त' कहानी बोहरी और पंडित बुधराम की आर्थिक प्रतिस्पर्धा की कहानी हैं। जिसमे बोहरे जी कर्जा एक्ट के कारण उतने धनी साहूकार नहीं रह गए थे। दादा पतराम का घर से निष्कासन भी इसी कहानी में वर्णित है।

इसी प्रकार से 'बही की सही' भी डॉक्टर विद्यालंकार की साहूकारी के शोषण पर आधारित है। जिसमें गाँव के बोहरे बीरबल सरी पृथ्वी सिंह जेलदार के नाम पर उनके पुत्र स्वरूप सिंह की शादी के अवसर पर कुछ रकम अपनी बही में उधार लिखवा देते हैं। अपने मुनीम नानगा से वे ऐसा काम असत्य रूप से ही कराते हैं। दस – बारह वर्षों के

पश्चात श्री पृथ्वी सिंह जेलदार के निधन के पश्चात वे चौधरी स्वरूप सिंह लंबरदार को अपनी कचहरी में बुलवा कर मुनीम से बही दिखवाते हैं। उसमे उनके पिताजी के नाम से जब उधार लिखी होती है और ब्याज दर ब्याज – सूद वह रकम कई हजार बन जाती है। जब चौधरी स्वरूप सिंह उसको देने से इंकार कर देते हैं तो बोहरे जी ने उन पर दावा दायर कर दिया था। अत: वे वसूली न होने पर उनकी हवेली में सूअर घुमवा देते हैं। जब चालीस के दशक में सयुक्त पंजाब में चौधरी छोटूराम ने कर्जा एक्ट पास कराया था, तभी वह कर्ज उनके सिर से उतार सका था। अत: वह कहानी केवल अकेले अल्लीका गांव भर की ही कहानी नहीं रह जाती बल्कि उस समय के पूरे ही गाँव-देहात की कहानी बन जाती है।

इसी प्रकार 'अयोध्या कांड' की कहानी भी अल्लीका गाँव के ही एक बंगले को ले कर है। जिसमे काफी दिनों से गाँव के बड़े मोहल्ले वालों (दानीका मोहल्ला) का कब्जा चला आ रहा था। लेकिन जब वे उसे पक्का बनाने लगे तो गाँव के ब्राह्मणों ने उस पर अपना दावा ठोक दिया था। जब बड़े मोहल्ले वालों ने उसकी अपनी पुस्तेनी जायदाद बताया तो ब्राह्मणों ने चौक मोहल्ले के दान दाताओं से अपने पक्ष में गाँव के मंदिर में गवाही दिलवाई थी। अतएव बंगले की जमीन बड़े मोहल्ले के चौधरियों को आखिरकार छौड़ देनी पड़ी थी। यही 'अयोध्या कांड' कहानी का कथासार हैं।

इसी प्रकार से डॉक्टर धर्मचंद विद्यालंकार ने 'गंगास्नान' नाम से भी एक कहानी अपने हे गाँव के कथानक को ले कर रची है। जिसमें एक कोली परिवार की बहू विधवा है लेकिन उसका देवर तक उससे विवाह करने को तैयार नाही था। वह बेचारी अलग रह कर घास-फूस लाकर या दुकान चला कर अपना और अपने अकेले पुत्र का पेट पालती थी। दुकान का सामान लेने के लिए वह प्रतिदिन गाँव से पलवल नगर में मंडी के लिए पाँव- पयादे या इक्के-तांगों से ही जाया करती थी। तभी एक सीमांत जाट किसान का लड़का उसी मार्ग पर अपनी टैक्सी से नीति प्रति आया करता था। ऐसी स्थिति में उन दोनों में प्रेमपूर्ण वार्तालाप भी होता था तो सरला या सत्तों चमारी भी अपना दुख- दर्द उसके साथ बांटने लगी थी। जब वह यह बताती है की उसका देवर तक नया विवाह रचाने के फिराक में है, बजाय इसको अपनाने के, तो वह किसान पुत्र उसको उस दड़वे मे से बाहर निकालकर अपनी जाट जाति रूपी गंगा में स्नान करने का उन्मुक्त आह्वान करता है। जिसे वह भी सहर्ष स्वीकार कर लेती है। लेकिन गाँव में जातीय बंधनों की जकड़न को देखकर वो दोनों गंगा स्नान के बहाने कहीं बहार जाकर अपना घर बसा लेते हैं। इन कहानियों की घटनाएँ लगभग सत्या पर आधारित हैं। केवल नाम अवश्य ही कथाकार ने बादल दिए हैं। इसी प्रकार से अल्लीका गाँव भी डॉक्टर विद्यालंकार की लेखनी से साहित्य में प्रीतिबिंबित हो कर अमर हो गए हैं।

.....xx.....

सुखदेव आर्य
आर्य समाज अल्लिका
मोबाइल नंबर 9671125661

19 मई, 2020 अल्लीका

मनुर्भवः ओम।
हमारे लिए वेदों में आदेश है कि मनुर्भवः - मनुष्य बन।

परमपिता परमात्मा ने अपने बच्चों को केवल एक शिक्षा प्रदान की है - मनुष्य बन। वह नहीं चाहता कि वह किसी मत मतान्तरों में फसे। वह चाहता है कि उसकी संतान मनुष्य बने।

अब प्रश्न उठाता है कि मनुष्य कौन है। इसका उत्तर है कि जिसमें मनुष्यता या मानवता पाई जाए वह मनुष्य है। मनुष्यता मानव का धर्म है। संस्कृत में बच्चों को संतान कहा जाता है क्योंकि उससे यह आशा रखी जाती है कि वे अपने अच्छे चरित्र, आचरण और व्यवहार से अपने माता-पिता एवं अपने परिवार का नाम और यश फैलाए।

जो व्यक्ति अपने आप को भगवान का भक्त कहता है उसे अपने व्यवहार में बहुत अधिक सावधान रहना चाहिए, क्योंकि दूसरे लोग उसका बहुत ध्यान से निरीक्षण करते हैं। एक बुद्धिमान बालक कभी भी अपने माता-पिता या परिवार को कभी बदनाम नहीं कराएगा। वह अच्छी तरह अनुशासित और अपने माता-पिता की आज्ञा का पालन करने वाला होता है, इस प्रकार का व्यक्ति मनुष्य कहलाता है।

मानवता क्या है - जो निस्वार्थ दूसरों के लिए प्यार, आदर, उदारता, दयालुता, सहानुभूति, मधुरता और विनम्रता। दूसरों के लिए सुख त्याग की इच्छा रखते हैं बल्कि बदले में कोई आशा रखे बिना सहायता करते हैं। यह सब सद्भावनापूर्ण आदतें मिलकर मानवता का निर्माण करती हैं। और यह ही धर्म कहलाता है। कुछ मानव प्राणी जो ईश्वर की संताने है वे अनेक प्रकार से प्रलोभन के माध्यम से दूसरों का धर्म परिवर्तन करके मनुष्यों के स्थान पर भारी संख्या में वृद्धि करने की कभी नहीं सोचते, क्योंकि प्रलोभन व्यक्ति को अमानव बना देता है। भगवान श्री कृष्ण भगवत गीता में कहते हैं कि जो मनुष्य कभी किसी को दुख नहीं देता और ना ही दूसरों के द्वारा दुखी होता है उसे हमेशा ईश्वर का प्यार प्राप्त होता है।

जो आत्मा को यह शरीर मिलता है तो यह उसकी पूरी जिम्मेदारी हो जाती है कि इस मूल्यवान शरीर को कभी भी छिन्न ना दें। यह मनुष्य शरीर ही एक ऐसा स्थान है जिसमें इस जीव को अच्छे कार्य करने और ईश्वर की ओर ले जाने का मार्ग पर बढ़ने का अवसर प्राप्त होता है। सभी तरह के अच्छे काम करके एक के बाद एक हर मानव जन्म में सफलता प्राप्त करता जाता है। अगर किसी कारण से यह एक बार भी इस मनुष्य शरीर को खो देता है तो उसे दोबारा से इस शरीर का मिलना मुश्किल हो जाता है। इसलिए सावधान रहो तुम्हें कभी भी यह मनुष्य शरीर को खोना नहीं है। शुभ कर्मों से मनुष्य योग्यता प्राप्त करता है। दूसरी बात यह है कि हमारे पूर्वजों के ज्ञान और कर्मों से बनाए गए रास्ते बहुत ही अच्छे हैं, उन पर चलकर उन्हें सुरक्षित रखना चाहिए और अपने बच्चों को भी उन रास्तों पर चलने का मार्ग दर्शन करना चाहिए तो तीसरी बात यह है कि केवल वही काम करने चाहिए जिनसे यश व कीर्ति प्राप्त हो। अंत में ईश्वर कहते हैं कि एक बार अच्छे बताए गए रास्ते पर चलने मैं सफल हुए और अच्छे मनुष्य बने तो तुम्हारी संतानें भी तुम्हारे मार्गों का अनुशरण करेगी और तुम्हारी अपेक्षा अधिक सफल होगी। और अच्छे परिवार को प्राप्त करने का यही एकमात्र रास्ता है।

यह ऋषि स्वामी दयानंद ने आर्य समाज के 10 नियमों में आठवां नियम बताता है कि अविद्या का नाश व विद्या की वृद्धि करनी चाहिए। अविद्या अर्थात अज्ञानता को दूर कर ज्ञान की प्राप्ति कर मनुष्य बनने का यही एकमात्र साधन है।

धन्यवाद। सुखदेव आर्य

…..xx…….

लाल चन्द कुंडु मोबाइल नंबर: 8557057170
591, सैक्टर – 12, पंचकुला – हरियाणा

पिन – 134112

जीवन को सफल उन्नत कैसे बनायें ?

सर्व प्रथम हमें यह जानना अति आवश्यक है कि हमें यह मानव शरीर कैसे मिला । ईश्वर जीवों के पूर्व जन्मों के कर्मो के अनुसार जन्म गरीब अमीर के धर में देता है । परमात्मा ने हमें इतना सुन्दर शरीर दिया है सोचने विचारने को अति उत्तम बुध्दि दी है । ईश्वर ने प्रक्रति में जीवन यापन के लिये सभी पदार्थ दान में दे रखे हैं । किसीसे किसी पदार्थ का कोई दाम वसूल नही करता । यह ईश्वर की क्या कम दया है? काम करने की सामर्थ्य दी है । यह हमारे पर निर्भर करता है कि हम उसका प्रयोग कैसे करते हैं ?

ईश्वर को जानें ।

सबसे बडी हमारी भूल यह है कि हम ईश्वर के सत्य स्वरुप गुण कर्म स्वभाव को ही नहीं जानते और ईश्वर के स्थान पर काल्पनिक प्रतिमाओं को परमात्मा मान कर उनकी पूजा अर्चना करते रहते हैं। मूतियां जड हैं परमात्मा चेतन सत्ता है । वह सबके शरीर में ही बैठा सब कुछ देख रहा है । सारे संसार को उसी ने उत्पन्न किया है सबका पालन पोशन के लिये अन्न जल वायु पेड पौधे औषिधियां दूध देने वाले पशु पक्षी परमात्मा ने ही उत्तपन्न किये है। अन्य किसी में यह सामर्थ्य है ही नहीं । ईश्वर के तुल्य न कोई था न है न कभी कोई होगा। ईश्वर एक है अनेक नहीं ; ईश्वर का कोई अवतार नहीं होता।

ईश्वर कैसा है ?

सर्वशक्तिमान सर्वज्ञ निराकार अजन्मा न्यायकारी अन्नत सामर्थ्यवान सारे ब्रहमाण्ड का संचालन कर्ता व स्वामी सबका रखवाला है । परमात्मा का कोई पीर पैगम्बर फिरस्ता या अवतारी नही है । परमात्मा अपने सारे काम अपनी अन्नत सामर्थ्य से बिना किसी की सहायता के स्वम करता है । वह अपने कामों में किसी की सहायता नहीं लेता । ईश्वर के समान कोई नहीं हो सकता ।

क्या परमात्मा पाप क्षमा करता है ?

परमात्मा कभी भी किसी के पाप क्षमा नहीं करता है यदि परमात्मा पाप क्षमा करने लग जाये तो परमात्मा न्यायकारी नहीं रहेगा । यदि परमात्मा पाप क्षमा करने लग जाय तो सब पापी हो जायेगें । कहते हैं कि गंगा में स्नान करने से पाप धुल जाते हैं यदि गंगा में स्नान करने से पाप धुल जाते तो गंगा किनारे रहने वाले तो रोज गंगा में स्नान करते हैं उनको तो कोई पाप नहीं लगना चाहिये । सच बात तो यह है कि परमात्मा सबको उसके पाप पुण्य का बराबर फल देता है न कम न ज्यादा । जो पाप क्षमा करने कि बात कहता है वह पाखण्डी है।

क्या तीर्थों की यात्रा करने से मन्नत मांगने से इच्छा पूर्ति हो जाती है ?

यह भ्रम है. यदि तीर्थों की या़त्रा करने से मन्नत मांगने से इच्छा पूर्ति हो जाती तो संसार में कोई कोढी गरीब अपहाइज बिना संतान के कोई नहीं होता । किसी की इच्छा मरने की नहीं हाती और न कोई तीर्थ या़त्री मरने के लिये तीर्थों की या़त्रा करने जाता है । हजारों की मौत हुई हैं । ईश्वर केवल कर्म का फल देता है बिना कर्म के कोई फल नहीं मिलता । गुड गुड कहने से मुंह मीठा नहीं होता गुड खाने से ही मुंह मीठा होता है।

पीपल की पूजा व धागा बांधने से इच्छा पूर्ति होती है ?

पीपल की लकडी हवन के लिये उत्तम है कयोंकि पीपल की लकडी से धुंआ नहीं होता इसके अतिरिक्त किसी को पीपल कुछ भी नहीं दे सकता । अ़ज्ञानी लोग पाखण्डियो के चुंगल में फस जाते हैं .

जब परमात्मा किसी के पाप क्षमा नहीं करता तो उसकी पूजा क्यों करें ?

परमात्मा की कोई पूजा करे या न करे इससे परमात्मा को कोई फर्क नहीं पडता । ऐसे भी लोग हैं जो परमात्मा को मानते ही नहीं । क्या परमात्मा उनको जीने का अधिकार नहीं देता ? सब जीते हैं परन्तु जो सुख परमात्मा की स्तुति प्रार्थना उपासना से मिलता है उससे वह वंचित रह जाते हैं ।

फिर परमात्मा की स्तुति प्रार्थना उपासना से क्या फल मिलता है

- स्तुति से . ईश्वर में प्रीती उसके गुण कर्म स्वभाव से अपने गुण कर्त स्वभाव का सुधरना
- प्रार्थना से . निरभिमानता उत्साह और ईश्वर के सहाय का मिलना।
- उपासना से . परमात्मा से मेल और उसके सहाय का मिलना । ईश्वर के उपासक में इतना आत्म बल आ जाता है कि वह बडी से बडी आपत्ति में भी धबराता नहीं। उपासक की आत्मा में पहाड जैसा बल आ जाता है यह सब ईश्वर की ओर से होता है।

क्या छुप कर पाप करने वाला बच जाता है ?

ईश्वर सब कुछ देख रहा है उससे कुछ भी नहीं छुपा है। जिसने पाप पुण्य का फल देना है उसने तो सब कुछ देख लिया कोई देखे या न देखे इससे क्या फर्क पडता है । पाप करने वाले को ईश्वर पाप करने का विचार मन में लाते ही उसकी आत्मा में कम्पन चहेरे का रंग फीका पडना यह सब ईश्वर की ओर से होता है परन्तु मनुष्य काम क्रोध लोभ के वशीभूत होकर पाप कर्म को कर बैठता है ।

वेदों में कही भी मूर्ति पूजा का विधान नहीं है मूर्ति जड है जड की पूजा से बुद्धि भी जड हो जाती है। मूर्ति न खती है न पीती है न अपनी रक्षा कर सकती है चोर चुरा ले जाते हैं फिर उससे रक्षा करने की प्रार्थना करना व्यर्थ ही है।

ईश्वर का उपदेश –

हे मनुष्य लोगो तुम सदा सत्य व्यवहार करें और जितनी सामर्थ्य तुम्हें मैंने दी है प्रथम उसका प्रयोग करो उसके उपरान्त मेरी सहायता की प्रार्थना करो । ईश्वर उसकी सहायता करता है जो अपनी सहायता स्वम करता है .

भाग्य क्या है ?

जो कर्म हम करते हैं वही हमारा भाग्य है क्योंकि ईश्वर केवल हमारे कर्मो का ही फल देता है बिना कर्म किये ईश्वर किसी को कुछ भी नही देता यह कटू सत्य है । इसलिये पुण्य कर्म करें क्योंकि पुण्य कर्म का फल सुख मिलता है इौर पाप कर्म का फल दु ख मिलता है । ईश्वर का यही न्याय है । सूख पाना है तो परिश्रम से धन कमाये और पुषार्थ करें ।

धर्म क्या है ?

सत्य ही धर्म है असत्य किसी का धर्म नहीं हो सकता । सनातन धर्म सिक्ख धर्म जैन धर्म आदि धर्म नहीं पंथ समुदाय हैं । सबका एक वैदिक धर्म है जो वेद प्रतिपादित है । वेद ईश्वरकूत हैं मानवकूत नहीं ।

जैसा व्यवहार आप अपने साथ चाहते हैं वैसा ही दूसरों के साथ भी करें ।

नरेंद्र कुंडू पुत्र श्री अतर सिंह - मोबाइल नंबर: 9050079394
पौत्र स्वर्गीय श्री शिवलाल महाशय जी
गांव - रजोलका

मार्मिक - समाज एवं संस्कृति का बदलता स्वरूप

'मेरा गांव अल्लीका- एक परिचय' मात्र एक पुस्तक नहीं है, यह एक आईना है , आज की युवा पीढ़ी व आने वाली पीढियों के लिये मैं शुक्रगुजार हूं। बदन सिंह चौहान जी का जो कि इस पुस्तक के लेखक हैं कि उन्होंने मेरे पूर्वजों का इतिहास व उनकी कुछ प्रसिध्द कविताएं बहुत ही सुंदरता से इस पुस्तक के माध्यम से आप सभी पाठकों तक पहुंचाई और साथ-साथ मुझे भी लिखने का मौका दिया, जिसके लिये मैं व मेरा पूरा दादा शिवलाल का परिवार इनका तह दिल से धन्यवाद करता है।

'मेरा गांव अल्लीका' पुस्तक के माध्यम से लेखक ने गांव के इतिहास, पृष्ठ-भूमि, पुरानी संस्क्रति, सभी पांचों गांवो की उत्पत्ति व सामाजिक और आर्थिक दशा की जानकारी एकत्र करके उन पर प्रकाश डाला है और साथ-साथ सभी गांवों से जुड़ी कुछ अन्य जानकारियां भी पुस्तक में लिखी है।

'मार्मिक- समाज एवं संस्कृति का बदलता स्वरूप' हमारे गांव और समाज से जुड़ा एक लेख और विचार है। कुछ टूटे हुए शब्दों को जोड़ने की कोशिश है जो कि आपको मूल रूप से समय से भी तेज हो रहे हमारे समाज में बदलाव और खोई हुई संस्कृति से अवगत कराता है। गाँव के मायने बदल गए, गाँव अब गाँव नही रहे, स्थितियां बदल गई, गाँव खाली हो गए, गांव के लोग बडे शहरों में जाकर बस गए हैं। नौजवानों की पहली जैसी टीम तो खो सी गई है। गाँव में पहले जैसे वीर युवाओं के दर्शन दुर्लभ है। आंखों ने जो गाँव देखा था अब वैसे गाँवों का मिलना कठिन

बदन सिंह चौहान

सा हो गया। अभी गाँव तो हैं पर आत्मा को लोगों ने मार दिया। शहरों की चकाचौंध की चपेट में गाँव आ गए। लोगों की मन में यह बात आने लगी कि वे दोयम दर्जे के नागरिक है। समाज में उनका स्थान शहरियों जैसा नही है। शहर यानि उन्नत और प्रगतिशील लोग-गाँव यानि गंवार लोग।

आज के पारिवारिक संरचना को देखकर काफी तकलीफ होती है कि परिवार के सदस्यों में एक दूसरे के बीच पहले जैसा अपनत्व तथा संस्कार अब नहीं है यहां तक की उनका माता -पिता के प्रति भी पहले जैसा अपनापन कहें या व्यवहार वो भी नहीं रहा इसमें काफी बदलाव आया है। कारण जो भी हो लेकिन इसमें गिरावट आई है। ये आधुनिकरण तथा संयुक्त परिवार के विघटन और न्यूक्लीयर परिवार के स्वरुप के कारण है। बच्चे अब घर से बाहर रहकर. शिक्षा ले रहें हैं जिससे परिवार से दूर होते जा रहे हैं तथा परिवार के बीच जो पहले रहते थे उससे उनका पारिवारिक संबंध कायम रहता था तथा अपने माता -पिता के अतिरिक्त परिवार के अन्य सदस्यों के साथ उनका संबंध बना रहता है जो अब नहीं है। अब तो और सदस्यों की बात छोड़े यहां तक की अपनो से भी दूर होते जा रहें है।

प्रायः ये सुनने में आता है कि लड़के अब वो आदर -सम्मान नहीं देते हैं जैसा कि पहले था। ये सही बात है लेकिन जरा सोचिए पांच साल की उम्र से वह घर से बाहर रहकर पढ़ता है, साल में दो तीन बार घर आता है वैसी हालात में ऐसा होना लाजिमी है। फिर भी मैं यह कहूंगा कि इसमें माता -पिता का भी दोष है।

पहले भारतीय संस्कृति में पैर छू कर प्रणाम किया जाता था, बाद में घुटनों तक झुककर और अब तो नमस्ते पर आ गया है। आज कल के युवा पीढ़ी हाय हलो करना ज्यादा पंसद करते है। अगर कोई इसपर नोटिस ले रहा है तो उसे लोग कहतें हैं कि ये पुराने ख्यालात के है। संस्कृति से दूर हटकर हम अपने संस्कार को खोते जा रहें है।

पहले बुजुर्गों के पास बैठकर उनसे अनुभव लिया जाता था। आज इसके विपरीत दूर रहना लोग चाहते हैं। इनकी बात उन्हें जरा भी पसंद नहीं पड़ती, घर के युवा सदस्य अपने अपने बड़ी स्क्रीन वाले मोबाइल में सोशल मीडिया या फिर साफ शब्दों में कहें तो अपने आप को मोबाइल से बांधे हुए हैं जिससे आजकल के बुजुर्ग परिवार से अलग-थलग पड़ते जा रहें है। अफसोस ! जिसके बदौलत संसार में लोग पहला कदम चलते है उसको ही कहा जाता है कि इनको जमाने के साथ चलना नहीं आता। थोड़े समय के लिए भी अगर उनके बातों का कदर किया जाता तो उनके मन को कितनी तसल्ली मिलती पर मानना तो दूर उसे सुनना भी नहीं चाहते। उन्हें ये समझदारी नहीं कि विश्वविद्यालयों में प्रध्यापक अपने लेक्चर में पढ़ाई के साथ -साथ अपना अनुभव भी शेयर करते हैं और उनकी बातों को ये ध्यान से सुनते हैं पर घर में ऐसा नहीं करते। Practical एक अनुभव हीं है इसे व्यवहार में लाकर सिखलाया जाता है।

बचपन में माँ बाप सिखाया करते थे, जरूरत पड़े तो डाँट – डपटकर या फिर पीट – पीट कर, कि कोई तुमको अपशब्द कहे, गाली दे या मारे – पीटे तो तुम उस पर, न तो मुँह चलाओगे, न ही हाथ उठाओगे. बस तुम चुपचाप घर आकर हमें बताओ या फिर उनके घर जाकर बड़ों को बताओ. बाकी जो करना है बड़े आपस में समझ लेंगे – समझा लेंगे, और ऐसा संभव भी था , जब भी कभी बच्चों के बीच ऐसा माहौल होता था तो घर के बड़े ही इसका फैसला करके अपने आपसी भाईचारे को कायम रखते थे। हमने अपनी आंखों से देखा था जब कभी कोई घर पर शिकायत लेकर आता था तो घर के बड़े यही कहते थे कि हमारा बच्चा अगर कहीं भी आपको गलत काम करता या लड़ाई झगड़े में दिखे तो पहले आप उसको मारना फिर हमारे पास आना, कभी भी हम आपसे शिकायत नहीं करेंगे, और बच्चों से माफी भी मंगवाते थे। आज माहौल बदल गया है. समाज में जीने के तरीके बदल गए है। अब सिखाया जाता है कि मार खाकर रोते – धोते घर न आया करो। जो करना है कर लो। पीट कर आओ – पिट कर मत आओ। बड़ों को बताकर तो बाद में जो होना है वह है – कि आओ हाथ मिलाओ, बेटा ऐसा नहीं करते, मार पीट अच्छी बात

बदन सिंह चौहान

नहीं है. मिल जुल कर रहो खेलो मजे करो ठीक…मार पीट लड़ना झगड़ना अच्छी बात नहीं है। जो मार खा कर आया था, उसके मन में भड़ास तो रह ही गई ।वह इंतजार करेगा अगले मौके का और यदि कोई घर शिकायत लेकर आता है तो घर के बड़े भी अपने बच्चों की लड़ाई का हिस्सा बन जाते हैं जो लड़ाई दो बच्चों के बीच थी देखते ही देखते वही लड़ाई दो परिवारों और दो कुनबा के बीच मे शुरू हो जाती है। लेकिन क्या यह सही है ? हम अपने बच्चों को क्या ठीक सबक दे रहे हैं ? इसका सही जवाब शायद यही है कि इस बदले हुए समाज में इससे बेहतर रास्ता कोई नहीं है, अब समाज में होड़ सी लगी है, हर कोई दहला ही रहना चाहता है, नहला नहीं। समाज में अब पैसा – ताकत ही सर्वोपरि है। नियम, संस्कार धर्म, जिम्मेदारियाँ सब पीछे रह गई है। यह भावना धीरे-धीरे गाँव -गाँव में फैलने सी लगी। पिछले एक दशक में शहरों ने भी गाँवों पर अतिक्रमण करना शुरू कर दिया। गाँवों को शहर बनाने का चलन कुछ शहरियों ने शुरू कर दिया जो गांव की संस्कृति पर घातक बीमारी की तरह गाँवों से चिपकता गया। गाँव अपनी मूल प्रकृति से हटता चला गया। गाँव की मूल प्रकृति थी "पंच परमेश्वर की आत्मा जो गाँवों में बसा करती थी। धीरे-धीरे वह भावना लुप्त होती चली गयी। गाँव संस्कृति थी। "गाँव एक जीवन दर्शन हुआ करता था।

पनघट पर महिलाएं। "गाँव खेत-खलिहानों से बैल, गाय, भैंस तक ही सीमित नहीं था। गाँव के पोखर हों या फिर गाँव के कुंए, वे पनघट तक आती महिलाओं के झुंड, उनकी पायलों की संगीतमयी लयबद्ध चालें कानों में मधुर संगीत का काम किया करती थी। बैलों के गले में बंधी घंटियां अब सुनने को नहीं मिलती है। सींग टकराते कटरा - बछड़ों को अब खेलते नही देखा जा सकता। जब हम छोटे थे तो पोखर में एक घाट पर पशु व ग्रामीण सब एक ही साथ स्नान करते थे, घाट के किनारे पेड़ों से कूद कूद कर बच्चे पोखर में डुबकी लगाया करते थे, बच्चों का झुंड पोखर में "लाल बहु किसकी " खेल खेलते थे। घाट के बाहर बच्चे गरम रेत में लेटकर फिर पोखर के ठंडे पानी में डुबकी लगाया करते थे लेकिन परिवार वालों को कोई आपत्ति नहीं होती थी क्योंकि उस समय समाज में बुराइयां नहीं थी, पशुओं का स्नान और एक घाट पर ग्रामीणों द्वारा किये जाने वाले स्नान का दृश्य अब कहां देखने को मिलेगा।

सुबह-सुबह सीताराम-सीताराम सुबह-सुबह 'सीताराम-सीताराम, "राधे-राधे जैसी बोली सुनने को कहां मिलेगी। ये बोलियां गाँव की आवाज हुआ करती थी। घर के वृद्ध जिन्हे अरुणोदय के बाद चाय पानी पीने की इच्छा होती थी तो वे सिर्फ भगवान का नाम ले लेते थे। उनके हुक्का ताजी करना बच्चों की जिम्मेदारी रहती थी, घर की महिलाऐं स्वत: यह बात समझ जाती थीं कि "ससुर को चाय चाहिए। बुजुर्ग घर में घड़ी के अलार्म की तरह प्रयोग में लाये जाते थे। उनके जोर से मठारने से ही उनकी भाषा समझ ली जाती थी। बुजुर्गों से अनेक बाते सीखनें को मिलती थी। कौन बुजुर्गों की सेवा अच्छे से करता है यह विषय गाँवों में चर्चा बन जाया करती थी। घर के बुजुर्ग बच्चों को अपने जीवन संघर्ष के पुराने किस्से व कहानियां सुनाया करते थे।

गांव में गोधूली बेला प्रात: कालीन बेला में घर के सामने अलाव लोगों के एकत्रीकरण का सहज ही कारण हुआ करता था। डूंगर के मोटे लक्कड़ व उपलों का अलाव, जिसके आसपास लोग बिना कुर्सी व मूंढा के घंटो उकड़ू बैठ कर सिकते थे व हुक्का पीते थे, उनके घुटने ताउम्र तक जवान रहते थे , लेकिन आज का युवा बिना कुर्सी के बैठने में शर्म महसूस करता है , या फिर वो उकड़ू बैठ ही नहीं पाता। और पहले लोग खाना भी उकडू बैठ कर खाया करते थे। अलाव के पास से उठने का मन नहीं करता था, किसी को कोई निमंत्रण नहीं, पर अलाव रात को लगे या प्रात: ठंड के महीने में ग्रामीणों का आना सुनिश्चित ही था। उस दौरान ग्राम पंचायत में घटित होने वाली छोटी-बड़ी घटनाऐं भी चर्चा का विषय हुआ करती थी। बिना किसी रेडियो और दूरदर्शन के गाँव-गाँव की खबरों की जानकारी स्वत: मिल जाया करती थी। गाँवों में सूर्योदय पूर्व चरवाहों द्वारा जानवरों को चराने ले जाना फिर शाम को गोधूली बेला में उन्हे लौटाकर उनके खूंटे तक पहुंचाने का काम भी महत्वपूर्ण हुआ करता था। बैल जो कि घर की शान हुआ करते थे

उनकी कद्र भी आधुनिकता ने खत्म कर दी है। घर से निकले और पनघट से आती सिर पर घड़ा लिए महिलाओं को या नेवले को एक दूसरे सिरे पर भागते हुए देखना शुभ माना जाता था। लोहार, कुम्हार, सुनारा के मोहल्लों की चमक देखते ही बनती थी। एक नाई का परिवार ही पूरे गाँव को बांधकर रखता था। हर शुभकार्य का साक्षी गाँव का नाई हुआ करता था। लेकिन आज नाई के शगुन को भी बोझ समझा जाता है , वही नाई जो पहले खुद रिश्ते तय कर दिया करता था, उसकी भी पूछ अब नहीं रही।

काका-काकी, ताऊ-ताई गाँव के काका-काकी, ताई-ताऊ, चाचा-चाची, सभी एक ही आंगन में रहते थे, एक जगह बड़े-बड़े बर्तनों में एक साथ सभी का भोजन बनता था। एक हवेली में ही तीस चालीस लोगों का परिवार रहता था। अपने-अपने नियत समय पर आकर घर में लोग भोजन पा लेते थे। घर के सभी आदमी घर पर सिर्फ भोजन करने ही आते थे बाकी समय वो बैठक में ही रहते थे, एक साथ 10- 15 मौचे नौहरे (बैठक) में बिछते थे, घर पर खाट रहा करती थी व बैठक या नौहरे में मौचे ही रहते थे। गाँव में ही, उपनयन संस्कार, विवाह का आयोजन निजी होते हुए भी पूरा समाज खड़ा हो जाता था। बारात की अगवानी गाँव किया करता था। बारात विदाई के समय मिल्ली हुआ करती थी तो बड़े से लेकर छोटे तक एक एक करके सभी बाराती वधु पक्ष की तरफ से खड़े उसके भाई या चाचा मामा से गले मिल कर विदाई लिया करते थे। परंतु आज सब कुछ इसके विपरीत है क्योंकि बारात में कुछ युवा तो नशे की हालत में होते हैं या कुछ बाराती खाना खाकर ही वापस आ जाते हैं तो मिल्ली की भेंट को बारातियों की संख्यानुसार ले लिया जाता है और बेटी की विदाई भी करते समय गाँव की बेटियां और महिलाएं अपना कर्तव्य निर्वाह करती थीं। हर घर से एक घूंट पानी तो उस बिटिया को चुप कराते समय सभी पिलाते थे। गाँव से बेटी एक के घर से जाती थी, पर रोता समूचा गाँव था। यह परंपरा थी जो अक्सर गाँव में देखने को मिलती थी।

चौपाल में चर्चागाँव चौपालों पर पूरे घर की चर्चा होती थी। चौपाल पर गाँव का वह उम्रदराज जो सबसे बड़ी उम्र के होते थे, वे बैठा करते थे। गाँव घर की खबरें स्वत: वहां आ जाया करती थी। चौपाल की अपनी हैसियत हुआ करती थी। चौपाल पर जो बातें पहुंचती उन पर उस चौपाल पर गहन चर्चा भी होती थी। आखिर में यदि कोई अंतिम वाक्य होता था, तो वह उस बुजुर्ग का जो उस चौपाल की शोभा हुआ करते थे। चौपाल पर जो अंतिम वाक्य होता था, उसे बदलने की हिम्मत सामान्य लोगों में नहीं होती थी। अब ना तो वो पंच रहे न ही वो ग्रामीण जो पंचो की बात को सिर माथे पर रखे। चौपाल जिसको लोग प्रणाम करते थे, उसकी साफ सफाई भी पूर्ण रूप से नहीं हो पाती है। चौपालों पर अखबारों में आयी खबरों के साथ-साथ, आस-पास की राजनीति की भी चर्चाएं हुआ करती थी। चौपाल पर कभी-कभी चुने हुए प्रतिनिधि भी आते थे जो कि आज के जमाने में सिर्फ वोट मांगने आते हैं उन्हे पंचायत की व्यथा-कथा से अवगत कराया जाता था। चौपाल पर ही सरपंच चुन लिया करते थे, गांव में मतदान नहीं होता था, लेकिन आज के समय में सिर्फ मतदान होते हैं, ग्रामीणों के मत देने से पहले मतदान केंद्र के बाहर भारी मात्रा में हथियार, लाठियां व डंडे की गाड़ी पहुंच जाती है, चौपाल को लोग गाँव का पार्लियामेंट कहते थे। गाँव या पंचायत में कभी पुलिस नहीं आती थी। गंभीर से गंभीर मसलों पर चर्चा के बाद रास्ता स्वयं निकल आता था। गाँव में पुलिस का आना पंच-परमेश्वर रूपी पंचायत और गाँव के चौपाल की मर्यादा दांव पर लग गई ऐसा माना जाता था। मुखिया कोई भी हो पर वह भी चौपाल से बाहर नहीं जा सकता था। चौपाल की गरिमा का ख्याल सभी ग्रामवासी रखते थे। चौपाल पर गाँव के हर बात का हिसाब होता था। बात छोटी हो या बड़ी चर्चाओं से ही परिणाम और समाधान निकलता था। आज वो ही चौपाल थाने के बाहर लगे वृक्ष के नीचे होती है। बदलता समाज , विलुप्त संस्क्रति व नशे व बुराइयों में लिप्त ऊर्जाहीन युवा गांव की रीढ़ की हड्डी को कमजोर कर रहा है, हम सभी के लिए यह कर्तव्य की बात है गाँवों को बचाना राष्ट्रीय कर्तव्य सा हो गया है। हम सभी को अपने-अपने स्तर से गाँव की संस्कृति , गरीब

और गाँव के तालाब व चौपालों की मर्यादा बचाने के लिए आवष्यक कदम उठाने पड़ेगें। गांव भारत की रीढ़ की हड्डी है , गांव की एकता व समाज का टूटना देश का टूटना साबित हो सकता है।

मुझे उम्मीद है कि इस पुस्तक के माध्यम से हमारा युवा वर्ग व आने वाला हर वर्ग गांव के पुराने तौर तरीकों व संस्कृति को जीवित रखने में अपना योगदान देगा व साथ ही मैं इस पुस्तक के लेखक श्री बदन सिंह चौहान जी को उनके अमूल्य योगदान के लिये तह दिल से सराहना करता हूं।शुभकामनाएं

नरेंद्र कुंडू पुत्र श्री अतर सिंह
पौत्र स्वर्गीय श्री शिवलाल महाशय जी
गांव - रजोलका

मधु सिंह चौहान मोबाइल नंबर: 9896381398
मुख्य अध्यापिका
राजकीय प्राथमिक विध्यालय अल्लीका
जिला (हरियाणा) पलवल :

भारत में शिक्षा का विकास

महात्मा गांधी के अनुसार, “सच्ची शिक्षा वह है जो बच्चों के आध्यात्मिक, बौद्धिक और शारीरिक पहलुओं को उभारती है और प्रेरित करती है।“

शिक्षा के माध्यम से ही हम अपने सपने पूरे कर सकते हैं। जीवन को नयी दशा और दिशा दे सकते हैं। बिना शिक्षा के हम अपने जीवन को सफल नहीं बना सकते है।

भारत जनसंख्या के दृष्टिकोण से विश्व का दूसरा सबसे बड़ा देश है। वहीं पर शिक्षा के मामले में भी सबसे बड़ी अशिक्षित जनसख्या भी यहीं निवास करती है। स्वाधीनता प्राप्ति के बाद देश ने जहाँ आर्थिक विकास किया वही शिक्षा के मामले में भी बहुत प्रगति की।

पूरे शिक्षा तंत्र को प्राथमिक शिक्षा, माध्यमिक शिक्षा और उच्च माध्यमिक शिक्षा जैसे को तीन भागों में बाँटा गया है। शिक्षा के सभी स्तर अपना एक विशेष महत्व और स्थान रखते हैं। हम सभी अपने बच्चों को सफलता की ओर जाते हुए देखना चाहते हैं, जो केवल अच्छी और उचित शिक्षा के माध्यम से ही संभव है।

जिन गाँवों में एक भी विद्यालय नहीं था और इने-गिने ही शिक्षित व्यक्ति थे, वहाँ पर विद्यालय की स्थापना की गयी और लोगों में शिक्षा के प्रति जागृति आई। लेकिन जितनी तेजी से विकास होना चाहिए था या जितनी गति से साक्षरता दर बढ़नी चाहिए थी, नहीं बड़ी। इसके कई कारण थे। इसमें बेरोजगारी और निर्धनता प्रमुख थी।

किसी भी व्यक्ति की प्रथम पाठशाला उसका परिवार होता है, और मां को पहली गुरु कहा गया है। शिक्षा वो अस्त्र है, जिसकी सहायता से बड़ी से बड़ी कठिनाइयों का सामना कर सकते है। वह शिक्षा ही होती है जिससे हमें

सहीचलता है। इसकी अहमियत का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है गलत का भेद पता-, एक वक़्त की रोटी ना मिले, चलेगा। किंतु शिक्षा जरुर मिलनी चाहिए। शिक्षा पाना प्रत्येक प्राणी का अधिकार है।

जीवन में शिक्षा का बहुत बड़ा महत्व है | आज के युग में सभी अभिभावक अपने बच्चों को पढ़ाना चाहते हैं। यह बहुत जरूरी भी है। संसार के सभी प्रगतिशील देशों में प्रारंभिक शिक्षा अनिवार्य हैं। अतः कहीं 6 वर्ष के पश्चात और कई 7 वर्ष के पश्चात प्रारंभिक विद्यालयों में शिक्षा आरंभ की जाती हैं। जो प्राय 5 वर्षों तक चलती है। इसके बाद बच्चे माध्यमिक शिक्षा में प्रवेश करते हैं। इससे पहले के शिक्षा के स्तर को शिशु शिक्षा कहते हैं। जो घर पर मातापिता- के द्वारा दी जाती है जो बहुत अनिवार्य है। भारत में प्राथमिक शिक्षा 6 से 14 वर्ष के बच्चों को दी जाती है। यह शिक्षा बच्चों को निशुल्क दी जाती हैं। इसे आकर्षक बनाने के लिए विद्यालयों में पोषाहार के नए कार्यक्रमों को अधिक बढ़ावा दिया है। बच्चों को विद्यालयों में तनाव मुक्त वातावरण दिया जाता है। विद्यालय के द्वारा बच्चों का सामाजिक विकास ,मानसिक विकास और शारीरिक विकास किया जाता है। प्राथमिक विद्यालय एक किलोमीटर की परिधि में होना चाहिए। किलोमीटर की परिधि में होना चाहिए 3 के विद्यालय 8 से 6। इन में शौचालय, पेयजल, खेल के मैदान की सुविधा आदि होनी चाहिए। शिक्षा का अधिकार अधिनियम में आया 2009। माध्यमिक शिक्षा आयोग आयोग में आया 1952 सितंबर 23। भारत के संविधान में साल तक की उम्र के सभी बच 14्चों के लिए अनिवार्य और बिना शुल्क की शिक्षा देने की व्यवस्था की गई। इस दिशा में सन वा संविधान संशोधन अधिनियम 86 में 2002 पारित किया गया। इसमें देश के हर बच्चे को शिक्षा प्राप्त करने का मूलभूत अधिकार प्राप्त हो गया। इसमें शिक्षा के प्रति जहां लोगों में नई चेतना जागी। वहीं पर राज्यों को हर बच्चों को शिक्षा देना अनिवार्य हो गया। इस दिशा में केरल तमिलनाडु दिल्ली में काफी प्रगति हुई। सन से राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद 2005 एनसीआरटी में प्राथमिक स्तरकी शिक्षा के लिए अनेक पाठ्यक्रम निर्धारित किए गए हैं। जैसे के पाठ्यक्रमों में 5 से 1 मातृभाषा, अंग्रेजी, अंक गणित,पर्यावरण अध्ययन, कला शिल्प,शारीरिक विकास आदि पाठ्यक्रम लागू किए गए हैं। उच्च स्तर के पाठ्यक्रम 1 से 8 में मातृभाषा, अंग्रेजी, गणित, विज्ञान, सामाजिक अध्ययन जारी शिक्षा कार्यानुभव आदि शामिल किए गए हैं। अनुच्छेद दो बटे ए भाग 3 में राज्य को 6 से 14 वर्ष तक के सभी बच्चों को निशुल्क तथा अनिवार्य शिक्षा उपलब्ध करानी होगी। धारा 29 राज्य द्वारा पोषित या राज्य निधि से सहायता प्राप्त करने वाली किसी शिक्षा संस्था में किसी नागरिक को केवल धर्म, जाती-प्रजाती भाषा इनमें से कोई एक के आधार पर प्रदेश प्रवेश देने से रोका नहीं जाएगा। निशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा सभी को समान प्रदान की जाएगी। धारा राज्य के संविधान में 45 वर्ष के अंतर्गत सभ 10 लागू होने के समय सेी बच्चों के लिए जब तक वे वर्ष के नहीं हो जाते 14तब तक उनके लिए निशुल्क तथा अनिवार्य शिक्षा देने का प्रयास करेगा।

आज के आधुनिक तकनीकी संसार में शिक्षा काफी अहम है। आजकल के समय में शिक्षा के स्तर को बढ़ाने के लिए बहुत तरीके सारे तरीके अपनाये जाते हैं। वर्तमान समय में शिक्षा का पूरा तंत्र अब बदल चुका है। हम अब 12वीं कक्षा के बाद दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम के माध्यम से भी नौकरी के साथ ही पढ़ाई भी कर (डिस्टेंस एजूकेशन) सकते हैं। शिक्षा बहुत महंगी नहीं है, कोई भी कम धन होने के बाद भी अपनी पढ़ाई जारी रख सकता है। दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से हम आसानी से किसी भी बड़े और प्रसिद्ध विश्वविद्यालय में बहुत कम शुल्क में प्रवेश ले सकते हैं। अन्य छोटे संस्थान भी किसी विशेष क्षेत्र में कौशल को बढ़ावा देने के लिए शिक्षा प्रदान कर रहे हैं।

विद्या सर्वश्रेष्ठ धन है

विद्या एक ऐसा धन है जिसे ना तो कोई चुरा सकता है और नाही कोई छीन सकता। किसी भी राष्ट्र अथवा समाज में शिक्षा सामाजिक नियंत्रण, व्यक्तित्व निर्माण तथा सामाजिक व आर्थिक प्रगति का मापदंड होती है। भारत की वर्तमान शिक्षा प्रणाली ब्रिटिश प्रतिरूप पर आधारित है जिसे सन् 1835 ई॰ में लागू किया गया।

जिस तीव्र गति से भारत के सामाजिक, राजनैतिक व आर्थिक परिदृश्य में बदलाव आ रहा है उसे देखते हुए यह आवश्यक है कि हम देश की शिक्षा प्रणाली की पृष्ठभूमि, उद्देश्य, चुनौतियों तथा संकट पर गहन अवलोकन करें।

सन् 1835 ई॰ में जब वर्तमान शिक्षा प्रणाली की नींव रखी गई थी तब लार्ड मैकाले ने स्पष्ट शब्दों में कहा था कि अंग्रेजी शिक्षा का उद्देश्य भारत में प्रशासन के लिए बिचौलियों की भूमिका निभाने तथा सरकारी कार्य के लिए भारत के विशिष्ट लोगों को तैयार करना है। इसके फलस्वरूप एक सदी तक अंग्रेजी शिक्षा के प्रयोग में लाने के बाद भी 1935 ई॰ में भारत की साक्षरता दस प्रतिशत के आँकड़े को भी पार नहीं कर पाई। स्वतंत्रता प्राप्ति के समय भारत की साक्षरता मात्र 13 प्रतिशत ही थी।

लगभग पिछले दो सौ वर्षों की भारतीय शिक्षा प्रणाली आध्यान करने से पता चलता है कि शिक्षा नगर तथा उच्च वर्ग के लोगो के लिए ही केंद्रित थी। इसकी बुराइयों को सर्वप्रथम गाँधी जी ने 1917 ई॰ में गुजरात एजुकेशन सोसायटी के सम्मेलन में उजागर किया था तथा शिक्षा में मातृभाषा के स्थान को और हिंदी के पक्ष को राष्ट्रीय स्तर पर रखा। स्वतंत्रता संग्राम के दिनों में शांति निकेतन, काशी विद्यापीठ आदि विद्यालयों में शिक्षा के इस प्रयोग को प्राथमिकता दी गई।

सन् 1944 ई॰ में देश में शिक्षा कानून पारित किया गया। स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरांत हमारे संविधान निर्माताओं ने राष्ट्र के पुननिर्माण, सामाजिक-आर्थिक विकास आदि क्षेत्रों में शिक्षा के महत्व को स्वीकार किया। इस मत की पुष्टि हमें राधाकृष्ण समिति (1949), कोठारी शिक्षा आयोग (1966) तथा नई शिक्षा नीति (1986) से मिलती है।

प्राचीन काल में शिक्षा को अत्यधिक महत्व दिया गया था। भारत 'विश्वगुरु' कहलाता था। उस युग की यह मान्यता थी कि जिस प्रकार अन्धकार को दूर करने का साधन प्रकाश है, उसी परकार व्यक्ति के अज्ञानता को दूर करने का साधन शिक्षा है। प्राचीन भारत की शिक्षा का प्रारंभिक रूप हम ऋग्वेद में देखते हैं। विद्यालय 'गुरुकुल', 'आचार्यकुल', 'गुरुगृह' इत्यादि नामों से विदित थे। शिक्षक को 'आचार्य' और 'गुरु' कहा जाता था। वेद, शिक्षा, कल्प, व्यकरण, छंद, ज्योतिष और निरुक्त उनके पाठ्य होते थे। पाँच वर्ष के बालक की प्राथमिक शिक्षा आरंभ कर दी जाती थी। भारतीय शिक्षा में आचार्य का स्थान बड़ा ही गौरव का था। उनका बड़ा आदर और सम्मान होता था। आचार्य पारंगत विद्वान्, सदाचारी, क्रियावान्, नि:स्पृह, निरभिमान होते थे और विद्यार्थियों के कल्याण के लिए सदा कटिबद्ध रहते थे। अध्यापक, छात्रों का चरित्रनिर्माण, उनके लिए भोजनवस्त्र का प्रबंध, रुग्ण छात्रों की चिकित्सा, शुश्रूषा करते थे। कुल में सम्मिलित ब्रह्मचारी मात्र को आचार्य अपने परिवार का अंग मानते थे और उनसे वैसा ही व्यवहार रखते थे। आचार्य धर्मबुद्धि से नि:शुल्क शिक्षा देते थे।

विद्यार्थी गुरु का सम्मान और उनकी आज्ञा का पालन करते थे। आचार्य का चरणस्पर्श कर दिनचर्या के लिए प्रात:काल ही प्रस्तुत हो जाते थे। वेदों का अध्ययन का आध्यान कराया जाता था। वेदों ओर वेदांगों के अतिरिक्त साहित्य, दर्शन, ज्योतिष, व्याकरण और चिकित्साशास्त्र इत्यादि विषयों का पढ़ाया जाता था। काशी, तक्षशिला, नालंदा, विक्रमशिला, वलभी, ओदंतपुरी, जगद्दल, नदिया, मिथिला, प्रयाग, अयोध्या आदि शिक्षा के केंद्र थे। दक्षिण भारत के एन्नारियम, सलौत्गि, तिरुमुक्कुदल, मलकपुरम् तिरुवोरियूर में प्रसिद्ध विद्यालय थे। कादिपुर और

सर्वज्ञपुर के अग्रहार विशिष्ट शिक्षाकेंद्र थे। प्राचीन शिक्षा प्राय: वैयक्तिक ही थी। बौद्धों और जैनों की शिक्षापद्धति भी इसी प्रकार की थी।

मध्यकाल

भारत में मुस्लिम राज्य की स्थापना होते ही इस्लामी शिक्षा का प्रसार होने लगा। फारसी जाननेवाले ही सरकारी कार्य के योग्य समझे जाने लगे। हिंदू वर्ग भी अरबी और फारसी पढ़ने लगे। बादशाहों और अन्य शासकों की व्यक्तिगत रुचि के अनुसार इस्लामी आधार पर शिक्षा दी जाने लगी। यहाँ प्रधानता धार्मिक शिक्षा दी जाती थी। साथ साथ इतिहास, साहित्य, व्याकरण, तर्कशास्त्र, गणित, कानून इत्यादि की भी पढ़ाई होती थी। अध्यापन फारसी के माध्यम से होता था। अरबी मुसलमानों के लिए अनिवार्य पाठ्य विषय था। छात्रावास का प्रबंध किसी किसी मदरसे में होता था। दरिद्र विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति मिलती थी। अनाथालयों का संचालन होता था। शिक्षा नि:शुल्क थी। हस्तलिखित पुस्तकें पढ़ी और पढ़ाई जाती थीं।

राजकुमारों के लिए महलों के भीतर शिक्षा का प्रबंध था। राज्यव्यवस्था, सैनिक संगठन, युद्धसंचालन, साहित्य, इतिहास, व्याकरण, कानून आदि पढ़ाए जाते थे। राजकुमारियाँ भी शिक्षा पाती थीं। दिल्ली, आगरा, बीदर, जौनपुर, मालवा मुस्लिम शिक्षा के केंद्र थे। मुसलमान शासकों के संरक्षण के अभाव में भी संस्कृत काव्य, नाटक, व्याकरण, दर्शन ग्रंथों की रचना और उनका पठन पाठन बराबर होता रहा।

आधुनिक काल

भारत में आधुनिक शिक्षा की नींव यूरोपीय ईसाई धर्मप्रचारक तथा व्यापारियों ने डाली। उन्होंने कई विद्यालय स्थापित किए। प्रारंभ में मद्रास ही उनका कार्यक्षेत्र रहा। धीरे धीरे कार्यक्षेत्र का विस्तार बंगाल में भी होने लगा। इन विद्यालयों में ईसाई धर्म की शिक्षा के साथ साथ इतिहास, भूगोल, व्याकरण, गणित, साहित्य आदि विषय भी पढ़ाए जाते थे। 1781 में कलकत्ते में 'कलकत्ता मदरसा' ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा और 1792 में बनारस में 'संस्कृत कालेज' जोनाथन डंकन द्वारा स्थापित किए गए। 1835 में लॉर्ड मेकौले ने अंग्रेजी भाषा को अनिवार्य कर दिया।

अंग्रेजी विद्यालयों में अधिक संख्या में विद्यार्थी प्रविष्ट होने लगे। अंग्रेजी साम्राज्य के विस्तार के साथ साथ अधिक कर्मचारियों की और चिकित्सकों, इंजिनियरों और कानून जाननेवालों की आवश्यकता पड़ने लगी। मेडिकल, इजिनियरिंग और लॉ कालेजों की स्थापना होने लगी। स्त्रियों की दशा सुधारने और उनकी शिक्षा के लिए ज्योतिबा फुले ने 1848 में एक स्कूल खोला। यह इस काम के लिए देश में पहला विद्यालय था। लड़कियों को पढ़ाने के लिए अध्यापिका नहीं मिली तो उन्होंने कुछ दिन स्वयं यह काम करके अपनी पत्नी सावित्री को इस योग्य बना दिया। उच्च वर्ग के लोगों ने आरंभ से ही उनके काम में बाधा डालने की चेष्टा की, किंतु जब फुले आगे बढ़ते ही गए तो उनके पिता पर दबाब डालकर पति-पत्नी को घर से निकालवा दिया। इससे कुछ समय के लिए उनका काम रुका अवश्य, पर शीघ्र ही उन्होंने एक के बाद एक बालिकाओं के तीन स्कूल खोल दिए। स्त्री शिक्षा पर ध्यान दिया जाने लगा।

1853 में शिक्षा की प्रगति की जाँच के लिए एक समिति बनी। 1854 में बुड के शिक्षा संदेश पत्र में समिति के निर्णय कंपनी के पास भेज दिए गए। संस्कृत, अरबी और फारसी का ज्ञान आवश्यक समझा गया। औद्योगिक विद्यालयों और विश्वविद्यालयों की स्थापना का प्रस्ताव रखा गया। प्रातों में शिक्षा विभाग अध्यापक प्रशिक्षण नारी शिक्षा इत्यादि की सिफारिश की गई। 1857 में कलकत्ता, बंबई और मद्रास में विश्वविद्यालय स्थापित हुए। 1870 के दशक में मुम्बई विश्वविद्यालय का फोर्ट कैम्पस की स्थापना की गई।

1882 में सर विलियम विल्सन हंटर की अध्यक्षता में भारतीय शिक्षा आयोग की नियुक्ति हुई। आयोग ने प्राथमिक शिक्षा के लिए उचित सुझाव दिए। सरकारी प्रयत्न को माध्यमिक शिक्षा से हटाकर प्राथमिक शिक्षा के

संगठन में लगाने की सिफारिश की। सरकारी माध्यमिक स्कूल प्रत्येक जिले में एक से अधिक न हो; शिक्षा का माध्यम माध्यमिक स्तर में अंग्रेजी रहे। माध्यमिक स्कूलों के सुधार और व्यावसायिक शिक्षा के प्रसार के लिए आयोग ने सिफारिशें कीं। सहायता अनुदान प्रथा और सरकारी शिक्षा विभागों का सुधार, धार्मिक शिक्षा, स्त्री शिक्षा, मुसलमानों की शिक्षा इत्यादि पर भी आयोग ने प्रकाश डाला।

आयोग की सिफारिशों से भारतीय शिक्षा में उन्नति हुई। विद्यालयों की संख्या बढ़ी। नगरों में नगरपालिका और गाँवों में जिला परिषद् का निर्माण हुआ और शिक्षा आयोग ने प्राथमिक शिक्षा को इनपर छोड़ दिया परंतु इससे विशेष लाभ न हो पाया। प्राथमिक शिक्षा की दशा सुधर न पाई। शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी ही रही। मातृभाषा की उपेक्षा होती गई। शिक्षा संस्थाओं और शिक्षितों की संख्या बढ़ी, परंतु शिक्षा का स्तर गिरता गया। देश की उन्नति चाहने वाले भारतीयों में व्यापक और स्वतंत्र राष्ट्रीय शिक्षा की आवश्यकता का बोध होने लगा। वर्ष 1870 में बाल गंगाधर तिलक और उनके सहयोगियों द्वारा पूना में फर्ग्यूसन कालेज, 1886 में आर्यसमाज द्वारा लाहौर में दयानंद ऐंग्लो वैदिक कालेज और 1898 में काशी में श्रीमती एनी बेसेंट द्वारा सेंट्रल हिंदू कालेज स्थापित किए गए।

1894 में कोल्हापुर रियासत के राजा छत्रपति साहूजी महाराज ने दलित और पिछड़ी जाति के लोगों के लिए विद्यालय खोले और छात्रावास बनवाए। इससे उनमें शिक्षा का प्रचार हुआ और सामाजिक स्थिति बदलने लगी। 1894 से 1922 तक पिछड़ी जातियों समेत समाज के सभी वर्गों के लिए अलग-अलग सरकारी संस्थाएं खोलने की पहल की। 1920 को नासिक में छात्रावास की नींव रखी। 1901 में लार्ड कर्ज़न ने शिमला में एक गुप्त शिक्षा सम्मेलन किया था जिसें 152 प्रस्ताव स्वीकृत हुए थे। इसमें कोई भारतीय नहीं बुलाया गया था और न सम्मेलन के निर्णयों का प्रकाशन ही हुआ। इसको भारतीयों ने अपने विरुद्ध रचा हुआ षड्यंत्र समझा। कर्ज़न को भारतीयों का सहयोग न मिल सका। प्राथमिक शिक्षा की उन्नति के लिए कर्ज़न ने उचित रकम की स्वीकृति दी। शिक्षकों के प्रशिक्षण की व्यवस्था की तथा शिक्षा अनुदान पद्धति और पाठ्यक्रम में सुधार किया। कर्ज़न का मत था कि प्राथमिक शिक्षा मातृभाषा के माध्यम से ही दी जानी चाहिए। माध्यमिक स्कूलों पर सरकारी शिक्षाविभाग और विश्वविद्यालय दोनों का नियंत्रण आवश्यक मान लिया गया। सरकारी स्कूलों की संख्या बढ़ा दी गई। लार्ड कर्जन ने विश्वविद्यालय और उच्च शिक्षा की उन्नति के लिए 1902 में भारतीय विश्वविद्यालय आयोग नियुक्त किया। पाठ्यक्रम, परीक्षा, शिक्षण, कालेजों की शिक्षा, विश्वविद्यालयों का पुनर्गठन इत्यादि विषयों पर विचार करते हुए आयोग ने सुझाव प्रस्तुत किए। इस आयोग में भी कोई भारतीय न था। इसपर भारतीयों में क्षोभ बढ़ा। उन्होंने विरोध किया। 1904 में भारतीय विश्वविद्यालय कानून बना। पुरातत्व विभाग की स्थापना से प्राचीन भारत के इतिहास की सामग्रियों का संरक्षण होने लगा। 1905 के स्वदेशी आंदोलन के समय कलकत्ते में जातीय शिक्षा परिषद् की स्थापना हुई और नैशनल कालेज स्थापित हुआ जिसके प्रथम प्राचार्य अरविंद घोष थे। बंगाल टेकनिकल इन्स्टिट्यूट की स्थापना भी हुई।

1911 में गोपाल कृष्ण गोखले ने प्राथमिक शिक्षा को नि:शुल्क और अनिवार्य करने का प्रयास किया। अंग्रेज़ सरकार और उसके समर्थकों के विरोध के कारण वे सफल न हो सके। 1913 में भारत सरकार ने शिक्षानीति में अनेक परिवर्तनों की कल्पना की। परंतु प्रथम विश्वयुद्ध के कारण कुछ हो न पाया। प्रथम महायुद्ध के समाप्त होने पर कलकत्ता विश्वविद्यालय आयोग नियुक्त हुआ। आयोग ने शिक्षकों का प्रशिक्षण, इंटरमीडिएट कालेजों की स्थापना, हाई स्कूल और इंटरमीडिएट बोर्डों का संगठन, शिक्षा का माध्यम, ढाका में विश्वविद्यालय की स्थापना, कलकत्ते में कालेजों की व्यवस्था, वैतनिक उपकुलपति, परीक्षा, मुस्लिम शिक्षा, स्त्रीशिक्षा, व्यावसायिक और औद्योगिक शिक्षा आदि विषयों

पर सिफारिशें की। बंबई, बंगाल, बिहार, आसाम आदि प्रांतों में प्राथमिक शिक्षा कानून बनाये जाने लगे। माध्यमिक क्षेत्र में भी उन्नति होती गई।

1916 तक भारत में पाँच विश्वविद्यालय थे। अब सात नए विश्वविद्यालय स्थापित किए गए। बनारस हिंदू विश्वविद्यालय तथा मैसूर विश्वविद्यालय 1916 में, पटना विश्वविद्यालय 1917 में, ओसमानिया विश्वविद्यालय 1918 में, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय 1920 में और लखनऊ और ढाका विश्वविद्यालय 1921 में स्थापित हुए। बिहार विद्यापीठ, काशी विद्यापीठ, गौड़ीय सर्वविद्यायतन, तिलक विद्यापीठ, गुजरात विद्यापीठ, जामिया मिल्लिया इस्लामिया आदि राष्ट्रीय संस्थाओं की स्थापना हुई। 1921 से नए शासन सुधार कानून के अनुसार सभी प्रांतों में शिक्षा भारतीय मंत्रियों के अधिकार में आ गई। परंतु सरकारी सहयोग के अभाव के कारण उपयोगी योजनाओं का कार्यान्वित करना संभव न हुआ। प्राय: सभी प्रांतों में प्राथमिक शिक्षा अनिवार्य करने की कोशिश व्यर्थ हुई। माध्यमिक शिक्षा में विस्तार होता गया परंतु उचित संगठन के अभाव से उसकी समस्याएँ हल न हो पाईं। दिल्ली (1922), नागपुर (1923) आगरा (1927), आंध्र (1926) और अन्नामलाई (1926) में विश्वविद्यालय स्थापित हुए। बंबई, पटना, कलकत्ता, पंजाब, मद्रास और इलाहबाद विश्वविद्यालयों का पुनर्गठन हुआ। कालेजों की संख्या में वृद्धि होती गई। व्यावसायिक शिक्षा, स्त्रीशिक्षा, मुसलमानों की शिक्षा, हरिजनों की शिक्षा, तथा अपराधी जातियों की शिक्षा में उन्नति होती गई।

1937 में शिक्षा की एक योजना तैयार की गई जो 1938 में बुनियादी शिक्षा के नाम से प्रसिद्ध हुई। सात से 11 वर्ष के बालक बालिकाओं की शिक्षा अनिवार्य हो। शिक्षा मातृभाषा में हो। हिंदुस्तानी पढ़ाई जाए। चरखा, करघा, कृषि, लकड़ी का काम शिक्षा का केंद्र हो जिसकी बुनियाद पर साहित्य, भूगोल, इतिहास, गणित की पढ़ाई हो। 1945 में इसमें परिवर्तन किए गए और परिवर्तित योजना का नाम रखा गया 'नई तालीम'। इसके चार भाग थे - (1) पूर्व बुनियादी, (2) बुनियादी, (3) उच्च बुनियादी और (4) वयस्क शिक्षा

छह से 14 वर्ष की अवस्था के बालकों तथा बालिकाओं के लिए अनिवार्य शिक्षा हो। जूनियर बेसिक स्कूल, सीनियर बेसिक स्कूल, साहित्यिक हाई स्कूल ओर व्यावसायिक हाई स्कूल की पढ़ाई 11 वर्ष की अवस्था से 17 वर्ष की अवस्था तक हो। इसके बाद विश्वविद्यालय में प्रवेश हो। डिग्री पाठ्यक्रम तीन वर्ष का हो। इंटरमीडिएट कक्षा समाप्त कर दी जाए। पाँच से कम अवस्थावालों के लिए नर्सरी स्कूल हो। माध्यम मातृभाषा हो।

भारत के लिये अंग्रेजों की शिक्षा नीति

ब्रिटिश काल में शिक्षा में मिशनरियों का प्रवेश हुआ, इस काल में महत्वपूर्ण शिक्षा दस्तावेज में मैकाले का घोषणा पत्र 1835, वुड का घोषणा पत्र 1854, हण्टर आयोग 1882 सम्मिलित हैं। इस काल में शिक्षा का उद्देश्य अंग्रेजों के राज्य के शासन सम्बन्धी हितों को ध्यान में रखकर बनाया गया था।

प्राय: लोग इसे मैकाले की शिक्षा प्रणाली के नाम से पुकारते हैं। लार्ड मैकाले ब्रिटिश पार्लियामेन्ट के ऊपरी सदन (हाउस ऑफ लार्ड्स) का सदस्य था। 1857 की क्रान्ति के बाद जब 1860 में भारत के शासन को ईस्ट इण्डिया कम्पनी से छीनकर रानी विक्टोरिया के अधीन किया गया तब मैकाले को भारत में अंग्रेजों के शासन को मजबूत बनाने के लिये आवश्यक नीतियां सुझाने का महत्वपूर्ण कार्य सौंपा गया था। उसने सारे देश का भ्रमण किया। उसे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि यहां झाड़ू देने वाला, चमड़ा उतारने वाला, करघा चलाने वाला, कृषक, व्यापारी (वैश्य), मंत्र पढ़ने वाला आदि सभी वर्ण के लोग अपने-अपने कर्म को बड़ी श्रद्धा से हंसते-गाते कर रहे थे। सारा समाज संबंधों की डोर से बंधा हुआ था। शूद्र भी समाज में किसी का भाई, चाचा या दादा था तथा ब्राहमण भी ऐसे ही रिश्तों से बंधा था। बेटी गांव की हुआ करती थी तथा दामाद, मामा आदि रिश्ते गांव के हुआ करते थे। इस प्रकार भारतीय समाज

भिन्नता के बीच भी एकता के सूत्र में बंधा हुआ था। इस समय धार्मिक सम्प्रदायों के बीच भी सौहार्दपूर्ण संबंध था। यह एक ऐतिहासिक तथ्य है कि 1857 की क्रान्ति में हिन्दू-मुसलमान दोनों ने मिलकर अंग्रेजों का विरोध किया था। मैकाले को लगा कि जब तक हिन्दू-मुसलमानों के बीच वैमनस्यता नहीं होगी तथा वर्ण व्यवस्था के अन्तर्गत संचालित समाज की एकता नहीं टूटेगी तब तक भारत पर अंग्रेजों का शासन मजबूत नहीं होगा।

भारतीय समाज की एकता को नष्ट करने तथा वर्णाश्रित कर्म के प्रति घृणा उत्पन्न करने के लिए मैकाले ने वर्तमान शिक्षा प्रणाली को बनाया। अंग्रेजों की इस शिक्षा नीति का लक्ष्य था - संस्कृत, फारसी तथा लोक भाषाओं के वर्चस्व को तोड़कर अंग्रेजी का वर्चस्व कायम करना। साथ ही सरकार चलाने के लिए देशी अंग्रेजों को तैयार करना। इस प्रणाली के जरिए वंशानुगत कर्म के प्रति घृणा पैदा करने और परस्पर विद्वेष फैलाने की भी कोशिश की गई थी। इसके अलावा पश्चिमी सभ्यता एवं जीवन पद्धति के प्रति आकर्षण पैदा करना भी मैकाले का लक्ष्य था। इन लक्ष्यों को प्राप्त करने में ईसाई मिशनरियों ने भी महत्तवपूर्ण भूमिका निभाई। ईसाई मिशनरियों ने ही सर्वप्रथम मैकाले की शिक्षा-नीति को लागू किया।

मार्च 1890 में गोपाल कृष्ण गोखले द्वारा पहली बार अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा सम्बन्धी प्रस्ताव किया गया था। हर्टांग समिति 1929 ने प्राथमिक विद्यालयों की संख्यात्मक वृद्धि पर बल न देकर गुणात्मक उन्नति पर जोर दिया था। गाँधी जी द्वारा प्रतिपादित बुनियादी शिक्षा का महत्वपूर्ण लक्ष्य, शिल्प आधारित शिक्षा द्वारा बालक का सर्वांगीण विकास कर उसे आत्मनिर्भर आदर्श नागरिक बनाना था। मैकाले ने सुझाव दिया कि अंग्रेजी सीखने से ही विकाैस संभव है

स्वतंत्रता के बाद

आजादी के बाद **राधाकृष्ण आयोग** (1948-49), **माध्यमिक शिक्षा आयोग** (मुदालियर आयोग) 1953, **विश्वविद्यालय अनुदान आयोग** (1953), **कोठारी शिक्षा आयोग** (1964), **राष्ट्रीय शिक्षा नीति** (1968) एवं **नवीन शिक्षा नीति** (1986) आदि के द्वारा शिक्षा क्षेत्र में सुधार किए गए।

1948-49 में विश्वविद्यालयों के सुधार के लिए भारतीय विश्वविद्यालय आयोग की नियुक्ति हुई। आयोग की सिफारिशों को बड़ी तत्परता के साथ कार्यान्वित किया गया। उच्च शिक्षा में पर्याप्त सफलता प्राप्त हुई। पंजाब, गौहाटी, पूना, रुड़की, कश्मीर, बड़ौदा, कर्णाटक, गुजरात, महिला विश्वविद्यालय, विश्वभारती, बिहार, श्रीवेकंटेश्वर, यादवपुर, वल्लभभाई, कुरुक्षेत्र, गोरखपुर, विक्रम, संस्कृत वि.वि. आदि अनेक नए विश्वविद्यालयों की स्थापना हुई। स्वतंत्रताप्राप्ति के पश्चात् शिक्षा में प्रगति होने लगी। विश्वभारती, गुरुकुल, अरविंद आश्रम, जामिया मिल्लिया इसलामिया, विद्याभवन, महिला विश्वक्षेत्र में प्रशंसनीय वनस्थली विद्यापीठ आधुनिक भारतीय शिक्षा के विद्यालय और प्रयोग हैं।

1952-53 में माध्यमिक शिक्षा आयोग ने माध्यमिक शिक्षा की उन्नति के लिए अनेक सुझाव दिए। माध्यमिक शिक्षा के पुनर्गठन से शिक्षा में पर्याप्त सफलता प्राप्त हुई।

भारतीय शिक्षा के इतिहास की प्रमुख घटनाएँ

- **1780** : ईस्ट इण्डिया कम्पनी द्वारा 'कोलकाता मदरसा' स्थापित
- **1791** : ईस्ट इण्डिया कम्पनी द्वारा बनारस में 'संस्कृत कालेज' की स्थापना
- **1813** : एक आज्ञापत्र के द्वारा शिक्षा में धन व्यय करने का निश्चय किया गया।
- **1835** : मैकाले का घोषणापत्र

- **1848** : महात्मा जोतिबा फुले ने अपनी पत्नी सावित्रीबाई फुले को पढ़ाने के बाद 1848 में पुणे में लड़कियों के लिए भारत का पहला प्राथमिक विद्यालय खोला।[2]
- **1854** : वुड का घोषणापत्र
- **1857** : कलकत्ता, बंबई और मद्रास में विश्वविद्यालय स्थापित हुए।
- **1870** : बाल गंगाधर तिलक और उनके सहयोगियों द्वारा पूना में फर्ग्यूसन कालेज की स्थापना।
- **1882** : हण्टर आयोग
- **1886** : आर्यसमाज द्वारा लाहौर में दयानन्द ऐंग्लो वैदिक कालेज की स्थापना।
- **1893** : काशी नागरीप्रचारिणी सभा की स्थापना।
- **1893** : बड़ोदा के महाराज सयाजी राव गायकवाड़ ने पहली बार राज्य को अनिवार्य शिक्षा से परिचित कराया।
- **1894-1922** : छत्रपति साहू जी महाराज द्वारा वंचितों और गरीब बच्चों के लिए स्कूलों व छात्रावासों की स्थापना की तथा उच्च शिक्षा के लिए उन्हें आर्थिक सहायता उपलब्ध कराई।
- **1898** : काशी में श्रीमती एनी बेसेंट द्वारा 'सेंट्रल हिंदू कालेज' स्थापित।
- **1901** : लार्ड कर्ज़न ने शिमला में एक गुप्त शिक्षा सम्मेलन किया जिसमें 152 प्रस्ताव स्वीकृत हुए
- **1902** : भारतीय विश्वविद्यालय आयोग की नियुक्ति (लॉर्ड कर्जन द्वारा)
  स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा हरिद्वार के पास कांगड़ी में गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की स्थापना
- **1904** : भारतीय विश्वविद्यालय कानून बना ।
- **1905** : स्वदेशी आंदोलन के समय कलकत्ते में जातीय शिक्षा परिषद की स्थापना हुई और नैशनल कालेज स्थापित हुआ जिसके प्रथम प्राचार्य अरविंद घोष थे । बंगाल टेकनिकल इन्स्टिट्यूट की स्थापना भी हुई।
- **1906** : बड़ोदा के महाराज सयाजी राव गायकवाड़ भारत के प्रथम शासक थे जिन्होने 1906 में अपने राज्य में निःशुल्क और अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा आरम्भ की।[3]
- **1911** : गोपाल कृष्ण गोखले ने प्राथमिक शिक्षा को निःशुल्क और अनिवार्य करने का प्रयास किया।
- **1916** : मदन मोहन मालवीय द्वारा काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना
- **1937-38** : गांधीवादी विचारों पर आधारित बुनियादी शिक्षा योजना लागू।
- **1945** : सार्जेण्ट योजना लागू।
- **1948-49** : विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग का गठन
- **1951** : खड़गपुर में प्रथम आईआईटी की स्थापना
- **1952-53** : माध्यमिक शिक्षा आयोग का गठन
- **1956** : विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की स्थापना
- **1958** : दूसरा भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान मुम्बई में स्थापित
- **1959** : कानपुर एवं चेन्नई में क्रमशः:: तीसरा एवं चौथा आईआईटी स्थापित ।
- **1961** : एनसीईआरटी की स्थापना,

प्रथम दो भारतीय प्रबन्धन संस्थान अहमदाबाद एवं कोलकाता में।

- **1963** : पाँचवां आईआईटी दिल्ली में स्थापित किया गया।

  तीसरा I.I.M. बंगलौर में स्थापित।

  - **1964-66** : कोठारी शिक्षा आयोग की स्थापना, रिपोर्ट प्रस्तुत की।
    - **1968** : कोठारी शिक्षा आयोग की सिफारिशों के अनुसरण में

  प्रथम राष्ट्रीय शिक्षा नीति अपनाई गई।

    - **1975** : छह वर्ष तक के बच्चों के उचित विकास के लिए

  समेकित बाल विकास सेवा योजना प्रारम्भ।

  - 1976 **: शिक्षा को 'राज्य' विषय से "समवर्ती" विषय में परिवर्तन करने हेतु संविधान संशोधन।**
  - **1984** : लखनऊ में चौथा IIM स्थापित।
  - **1985** : संसद के अधिनियम द्वारा इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की स्थापना।
  - **1986** : नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति को अपनाया |
  - **1987-88** : संसद के अधिनियम द्वारा सांविधिक निकाय के रूप में अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद (AICTE) स्थापित।

    राष्ट्रीय साक्षरता मिशन प्रारम्भ।

  - **1992** : आचार्य राममूर्ति समिति द्वारा समीक्षा के आधार पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 1986 में संशोधन
  - **1993** : संसद के अधिनियम द्वारा सांविधिक निकाय के रूप में राष्ट्रीय शिक्षक शिक्षा परिषद स्थापित।
  - **1994** : उच्चतर शिक्षा की संस्थाओं का मूल्यांकन एवं प्रत्यायन करने के लिए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद की स्थापना। (बंगलौर में मुख्यालय)

    गुवाहाटी में छठे IIT की स्थापना।

    - **1995** : प्राथमिक स्कूलों में केन्द्रीय सहायता प्राप्त मध्याह्न भोजन योजना आरम्भ की गई।
    - **1996** : पाँचवाँ IIM कोझीकोड में स्थापित
    - **1998** : छठा IIM इंदौर में स्थापित

- **2001** : जनगणना में साक्षरता दर 65.4 % (समग्र), 53.7 % (महिला)

  देश में गुणवत्तापरक प्रारंभिक शिक्षा के सर्वसुलभीकरण हेतु सर्व शिक्षा अभियान प्रारंभ।

  रूड़की विश्वविद्यालय सातवें IIT में परिवर्तित।

- **2002** : मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा को मौलिक अधिकार बनाने के लिए संविधान संशोधन।

- **2003** : 17 क्षेत्रीय इंजीनियरिंग कालेज, राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थानों में परिवर्तित।
- **2004** : शिक्षा को समर्पित उपग्रह "एडूसैट" (EduSat) छोड़ा गया।
- **2005** : संसद अधिनियम द्वारा राष्ट्रीय अल्पसंख्यक शैक्षणिक संस्था आयोग गठित। एनसीईआरटी द्वारा तैयार राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 स्वीकृत।
- **2006** : कोलकाता और पुणे में दो भारतीय विज्ञान शिक्षा और अनुसंधान संस्थान स्थापित।
- **2007** : सातवां IIM शिलांग में स्थापित किया गया। मोहाली में एक भारतीय विज्ञान शिक्षा और अनुसंधान संस्थान स्थापित किया गया। राष्ट्रीय संस्कृत परिषद गठित।

केन्द्रीय शैक्षिक संस्था (प्रवेश में आरक्षण) अधिनियम अधिसूचीत।

- **2009** : भारतीय संसद द्वारा निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम (RTE) पारित।
- **20 मार्च 2018** : 62 विश्वविद्यालयों और 8 महाविद्यालयों (जिनमें जेएनयू, बीएचयू और एचसीयू सहित पाँच केन्द्रीय विश्वविद्यालय शामिल हैं) को स्वायत्तता देने की घोषणा [4]

हमने देखा है कि किस प्रकार शिक्षा का विकास हुआ है। प्राचीन काल की गुरुकुल की प्रणाली से ले कर, मध्यकाल मे और विकास हुआ जिसमे शासकों ने अपने अनुरूप शिक्षा क्षेत्र में परिवर्तन किए और अंग्रेजी शासन के समय अंग्रेजी शिक्षा प्रणाली लागू की। समय की मांग ने इस क्षेत्र में निरंतर विकास होता गया। हर्ष का विषय है कि जहां स्वतन्त्रता के बाद भारत में 13 % शिक्षित थे और आज 74 % जनसंख्या शिक्षित हैं।

शिक्षा बहुत ही आवश्यक है।

कुलदीप सिंह चौहान - (8826982525) – (लेखक का पुत्र)
IT Profesional

मेरी माँ – मेरा आदर्श

हर व्यक्ति यही सोचता है कि उसकी माँ सबसे अच्छी और सारे ममतामई गुणों से पूर्ण है। मै भी इस सोच से अलग नहीं हूँ। लेकिन मैं एक बात कहना चाहूंगा कि मै ये बात किसी भावुकता की वजह से नहीं सोचता या कहता, मैंने अपनी मम्मी के करीब रहकर उनको देखा है, महसूस किया है और जाना है। मैं उन व्यक्तियों में से हूँ जिनको यह नहीं पता होता है कि उनके जीवन का आदर्श कौन है। अर्थात कौन है उनका नायक जिसको देखकर वो प्रसन्न होते है, कुछ सीखते है और उनके जैसा बनना चाहते है। बचपन में दूसरे बच्चों की तरह मैं भी सिनेमा देखकर, अभिनेताओं को ही अपना हीरो मानता था, वो भी हर फिल्म के साथ बदल जाते थे। फिर थोड़ा हनुमान जी की बॉडी और ताकत को देखा तो उनसे प्रभावित हो गया और उस चक्कर में हनुमान चालीसा भी याद हो गई। लेकिन हनुमान जी वाले

काम तो में कर नहीं सकता था, वो तो श्री राम के अनन्य भक्त है। और वो हम जैसे सामन्य व्यक्ति भी नहीं है। उनका उनुकरण मैं नहीं कर सकता था। इसलिए अभी भी ढूंढ़ता था कि सही मैं मेरा आदर्श कोन है ? जब हमारा घर बना गांव में, सन 2001 में, पापा उस समय भोपाल में कार्यरत थे और मैं गुडगाँव अपनी बड़ी बेटी - अन्वी और पत्नी-रूचि के साथ, चेन्नई से शिफ्ट हो चूका था। मम्मी अन्वी को अपने साथ गांव ले आई थीं। मैं और रूचि बीच बीच में गांव जाकर मिल कर आते थे।

गांव जाकर में देखता था कि मम्मी अकेली ही घर बनवा रही थी। 4-5 मजदूर थे, उनसे काम लेना मजदूरों से काम लेना कोई आसान कार्य नहीं है यहाँ - मैंने अब जाना था)। पलवल जाकर सामान आर्डर करना जैसे, ईंट, सीमेंट, क्रेशर, गार्टर (लोहे के बड़े बड़े एंगल जिन पर घर की छत टिकी हुई होती है) और ऑटोरिक्शा में लाना। मजदूरों का हिसाब करना, मटेरियल वाले जो अलग अलग स्थानों पर थे, उनका हिसाब रखना, टाइम पर पेमेंट करना। कई बार तो मजदूर एन मौके पर बोल देते थे कि हमें यह सामान चहिए तो फिर उसी समय मजदूरों को अलग काम देकर, पलवल जा कर सामान खरीद कर लाना। और ऊपर से गाँव के कुछ लोगों और रिश्तेदारों का काम में रूकावट और मानसिक अड़चने डालने का पूरा योगदान था। इससे भी जूझना। लेकिन मम्मी ने इन सबसे अच्छी तरह निबते हुए गाँव का घर बना दिया।

मैंने उनको बचपन से घर का मैनजेमेंट करते तो देखा है वो हमेशा। घर को सही तरह से चलाने में सफल रही है और आज भी सफलता पूर्वक चला रही है। पापा का योगदान 95 प्रतिशत घर के लिए पैसा कमाना रहा है, पैसा खर्च कैसे होगा ये मम्मी ने मैनेज किया। पापा एक सरकारी अफ़सर रहे। सरकारी अफ़सर की सैलरी आज के जैसे बहुत बड़ी नहीं होती थी और पापा बहुत ही ईमानदार है बचपन से और भावुक भी। तो ईमादारी की वजह से सीमित पैसा था और भावुकता की वजह से हम तीनो भाई बहनो के अलावा परिवार के और भी सदस्यों की मौजूदगी हमारे यहाँ बनी रहती थी (उनको पढ़ाने, करियर बनाने, इत्यादि इत्यादि)। तो मम्मी उस सीमित वेतन में हम सभी को मैनेज करती थी। पापा के बसकी बात नहीं थी ये। क्योकि वो धैर्य जल्दी खो देते है। इस वजह से गुस्सा उनको अधिक बार आता है, हालाकि गुस्सा चला भी जल्दी जाता है पर आता तो हैं।

मुर्खतावस मैंने मम्मी के इस प्रकार कुशलता पूर्वक घर को संभालने को कभी अधिक महत्व नहीं दिया था। इतना ही नहीं पापा गुस्से वाले रहे है, उनके साथ डील करना इतना आसान नहीं है, उनको भी मम्मी ने बहुत धैर्य पूर्वक संभाला है। पापा अपनी नौकरी पूरी एकाग्रता से इसलिए कर पाए क्योकि घर की सारी चिंता और ख्याल मम्मी ने अपने सिर पर लिया हुआ था और पूरी कुशलता से वो आज तक उसको पूरा कर रही है। पापा का योगदान मम्मी को निडर और सशक्त बनाने का रहा है। मेरी मम्मी 8 वी क्लास तक पढ़ी है (उस समय की पहली बहुओं मे से एक थी जो पढ़ी-लिखी थी, उसके साथ स्यामन 'मेरे बड़ी मम्मी' 10वीं पास थी) और जब पापा हम सभी को 78 में गांव से बाहर ले आये थे (उस समय हरिद्वार गए थे हम सभी) तो मम्मी बताती है कि पापा ने पैसा दिया मम्मी के हाथ में और

बोले कि "आज से सारे काम तुम्हे खुद ही करने होंगे - अकेले आना जाना होगा, बच्चो की पढाई, स्कूल, घर, बैंक के काम, बिल भरना सब तुमको ही करना होगा, गलती हो तो मुझसे पुछ सकती हो, लेकिन करना तुमको ही होगा।

तो जब मैंने अपनी मम्मी को घर बनाते हुए देखा, जिस तरह से वो इस कार्य का नेतृत्व कर रही थी, ये देखा तो मेरीआँखों में ख़ुशी के आंसू आ गए। क्योकि मैं जिस हीरो को ढूंढ रहा था बचपन से, जिसको मैंने अपनी विवेकहीनता और मूर्खता की वजह से नहीं पहचाना था, वो हीरो तो मेरे घर में ही मौज़ूद था। मेरी खुद की जननी , मेरी प्यारी माँ।

मम्मी एक कर्मठ महिला रही है। अपने पिता के साथ 6 -7 साल की रही होगी, तभी अलग (न्यारा) कर दिया गया था। वो तभी से घर के और बहार के काम संभाल रही है। उन्होंने बचपन में ही इतने कष्ट देखे है जिनसे उनका धैर्य मजबूत हुआ। उनकी माँ, जब मेरी मम्मी छोटी थी, तब ही चल बसी थी। फिर कई बहन भाई भी चल बसे। बचपन में और किस उम्र में मेरी मम्मी ने अपनों को खोया – यह दुख आज तक मम्मी को सताता रहता है।

एक बार मैं गाव गया था, मम्मी से मिलने, एक लकड़ी का तखत बनवाया था, उसको खाती के पास से घर लाना था, मेने कहा कि "मम्मी मैं और तुम इसको उठा लेते है, बहुत भारी है"। मम्मी ने कहा "अरे छोड, तू कहा उठाएगा, इतना दूर दोनों नहीं ले जा पाएंगे", मम्मी ने उसको अपने सर पर ही उठा लिया। मैंने कई बार मना किया पर वो अकेले ही ले आयी उसे घर तक। ये 6-7 साल पहले की ही बात है। उम्र 64 के आस पास रही होगी। और गाँव का रास्ता भी चढ़ाई वाला है। मुझे दुःख हुआ कि मेरी बेवकूफी की वजह से मम्मी उस भारी तखत को ले आयी। मै भी ला सकता था।

इस लेख को लिखते समय मेरी मम्मी की उम्र करीब 70 वर्ष है। आज भी वो उतनी ही शिद्दत और पुरे समर्पण के साथ घर का कार्य करती है। वो दिल की बहुत ही कोमल और सरल है। इस बात को यह बात पुख्ता करती है की अद्यात्म (sprituality) उनको बड़ी आसानी से समझ आ गयी। एक सरल स्वभाव का व्यक्ति ही अध्यात्म को समझ सकता है। नहीं तो लोग यही नहीं समझ पाते कि वह शरीर नहीं अपितु एक आत्मा है। सिर्फ बोलते है, लेकिन इस बात पर लोगो को अधिक भरोसा नहीं। लोगों को यह भरोसा नहीं कि पुनर्जन्म होता है, भगवान् होते है, उनका स्वरुप होता है। इन बातो को, खुद को समझदार कहने वाले लोग, अंधविश्वास कहते है। कारण यही है कि वो सरल स्वभाव के नहीं है। वो यही समझते है कि हर वस्तु उनके भोग के लिए बनी है। ख़ैर, आधात्म इस पुस्तक का विषय नहीं है, इसलिए अधिक नहीं लिखूंगा।

लेकिन सच यही है कि एक निर्मल ह्रदय वाला, स्वच्छ और सरल व्यक्ति ही भगवान् को समझ सकता है। एक चालक, स्वार्थी और दुष्ट व्यत्कि तो दूसरे व्यक्ति को नहीं समझ सकता, आत्मा और भगवान की तो बात छोड़ ही दें।

मम्मी की वजह से हम सभी साथ साथ है। और उनके संस्कारो की वजह से ही हम, बुरे लोग और बुरी आदतों से दूर है। एक बार बचपन में, जब मै पांचवी कक्षा में पड़ता था, मध्य प्रदेश - पिपरिया में (ये 1990 की बात है) , तब कुछ दोस्तों के साथ उनके बहकावे में आकर, स्कूल बंक (भागने) का प्लान बनाया था। ताकि अनहोनी (एक पिकनिक स्पॉट है, पिपरिया से 20 -25 km दूर, जहाँ ठन्डे और गर्म पानी का स्रोत्र भी है) जा सके। हम बच्चों ने, हममें से ही एक बच्चे की बैग की दुकान पर अपना-अपना बैग रखा और साईकिल किराये से लेकर चल पड़े अनहोनी। रास्ते 3 लड़के मिले हमें जो की उम्र में हमसे बड़े थे। उन्होंने हमें पकड़ लिया। उनके हाथो में बहुत सारा डामर (तारकोल) था, जो कि वो हमारे ऊपर और किराये की साईकिल पर लगाना चाह रहे थे। हम छोटे छोटे 7-8 बच्चे किसी तरह से उनसे दूर घर की तरफ वापस भागे। वहीं दूसरी ओर, पापा और मम्मी तक अब खबर पहुंच चुकी

थी कि मैं दुसरे बच्चो के साथ स्कूल से गायब हूँ। इस तरह पापा मम्मी को ले कर (उस समय सरकारी होटल में पापा पदस्थ थे) और उसके कर्मचारी मेरी खोज में लगे गए थे। एक कर्मचारी (जिसका नाम सुरेश था) उसने तो मेरे टीचर को धमकी दे डाली (कुल मिला स्थिति और ख़राब कर दी)। अब जब हम बच्चे उस दूकान पर पहुंचे जहाँ हमने अपने बैग रखे थे, तो वहाँ से मालूम हुआ कि पापा और मम्मी मेरी खोज में पूरे स्टाफ के साथ कूच कर चुके है। यह जान कर मेरे तो डर के मारे वही हाथ-पैर फूल गये। जिस दिशा में पापा और मम्मी गए है बताया था, उसी दिशा में मैं चल पड़ा। थोड़ी दूर चलने पर पापा-मम्मी स्कूटर पर दिखाई दिए। उनको देख कर में समझ गया था कि आज मेरा बहुत बुरा समय आ गया है और बचने की कोई उम्मीद नहीं है। मेरे दोनों गालो पर मम्मी ने गुस्से में एक साथ थप्पड़ मारे। और स्कूटर के बीच में बैठा कर घर ले आये। क़िस्सा अभी थमा नहीं था, भगवान भी मम्मी के साथ ही था और बेशर्म की लकड़ी (एक प्रकार की खरपतवार होती है - जो बहुत लचीली और मजबूत होती है), वहीं नीचे ही मिल गयी (हम लोग मकान के ऊपर वाले में हिस्से में रहते थे)। नीचे ही मम्मी ने मेरी उस लकड़ी से सुताई शुरू कर दी, बोलती जा रही थी - "और जायेगा अनहोनी ? " " सुबह से हम मरे जा रहे है ", इस बीच पापा ने मुझ से कुछ नहीं कहा, बस उस बैग वाली दुकान में एक जोर दार गरमा गरम झापड़ जड़ दिया था। फिर मम्मी ने कहा कि "इसको यहाँ रखने जरुरत नहीं है, गांव भेजो इसको, भैंस चरौयगा ये"। पापा ने भी कहा "हाँ मैं भेजता हूँ इसको"। आज पास के लोग ये सब देख रहे थे और जब में लकड़ी से पिट रहा था, तो मम्मी को मन भी रो रहा था। पर मैं लकड़ी के टूटने तक पिटता रहा था और मम्मी भी रोती हुई मुझे पीट रही थी। मार से ज्यादा डर मुझे गांव जाकर भैंस चराने में लगा रहा था। खेर मैं ऊपर आया और किसी तरह शांत हो सो गया।

मम्मी की मार का यह असर हुआ की जीवन में कभी भी बड़े होने के बाद भी, मै और आज तक सिर्फ घर से स्कूल / कॉलेज / ऑफिस और वापिस घर ही जाता हूँ। मार्किट का कोई काम हो तो सिर्फ वही काम करके तुरंत घर वापस आ जाता हूँ। जब में ऑफिस के काम से फ़िनलैंड गया था, तो वहां पर मुझे देखने वाला भी नहीं था, फिर होटल से ऑफिस और ऑफिस से होटल ही जाता था। कुछ जगह देखने के लिए गया। लेकिन मम्मी की उस मार से स्वभाव में इतना अच्छा परवर्तन आया कि समय ख़राब करने वाली जगह कभी नहीं गया। गया तो बताकर गया। तो इस पुरे किस्से को बताने की पीछे यही वजह है मम्मी को सही मायने में पता था की घर और जीवन दोनों कैसे सवारने है।

कॉलेज तक मेरी मम्मी, एडमिशन करने गयी। मैं उनसे पूछता था कि वो सिर्फ आठवीं तक पढ़ी है फिर भी वो इतने अच्छे से, इतने लोगो के सामने इतने आत्मविश्वाश के साथ कैसे बोल लेती है ! तो वो यही कहती थी कि बार बार ये सब किया है और मैं नहीं करुँगी तो और कोई हैं भी नहीं करने के लिए ! पापा तो व्यस्त रहते है और दूर भी।

लॉकडाउन की वजह से मुझे 24 मई से लेकर 13 जून तक अपनी दोनों बेटियों के साथ, मम्मी के साथ रहने का मौका मिल। ये दिन मेरे ही नहीं, मेरी बेटियों के भी खूबसूरत दिनों में से है। मुझे अपनी मम्मी पर गर्व है। उनकी हर बात पर गर्व है। मैं बहुत भाग्यशाली हूँ ऐसी माँ को पाकर। जिसने हर समय परिवार की सेवा में लगा दिया, उसको सवारने में लगा दिया, बिना किसी से अपेक्षा कि वापस में उनको कुछ चाहिए।

कलयुग में ऐसी माँ का प्राप्त होना सौभाग्य का होना ही है। ऐसी माँ भी है जो बच्चो को गर्भ में मार डालती है। स्वार्थी होती है। परिवार को ख़त्म कर देती है। मेरी मम्मी ने हमको जोड़ कर रखा है। वो सही मायनो मे एक योगी है। क्योकि योग का अर्थ ही जोड़ना होता है।

इसलिए मेरी मम्मी ही मेरी सच्ची हीरो है। ऐसी देवी तुल्य माँ को मेरा कोटि कोटि प्रणाम।

Aman Singh Chauhan **Mobile No: 9896063993**
Student – B.Tech . IIIrd Semester
Manav Rachna Niviversity Faridabad

21st –Technological Century

There are always such types of questions about the decades, centuries, and a particular period, that by which they would add its name in history. As an Indian filled with patriotic sentiment, I agree with the statement "**21st century going to be Indian century**". And it should be our number one priority to make our country self-dependent, for that we all are also working. Similar to the 20th century which often called American Century, being native Indian it should be our target to mark this by our name.

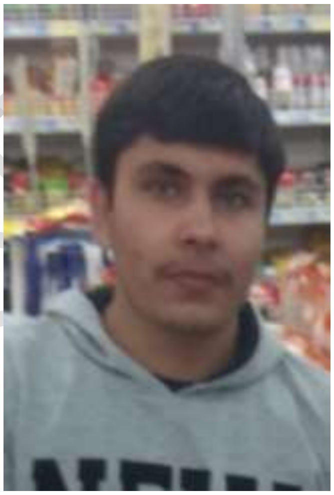

But after seeing globally and have a look at statistical data, there would be no denying from anyone in accepting the fact that how technology has spread its root in every field. Technology is not something only related to computers, phones and any other electronic equipment which we are seeing in our latest generation, but in reality, it is more than that. In simple word we can say that technology is something changing our today's lifestyle, way of working and handling the day to day problems with the latest scientific studies and the vision provides by intelligent minds. There should be no issue in adapting techniques developed by others because it is the demand of the present time that we have to work with the latest equipment and have to take help from others also to grow ourselves. **"From phones to cars to medicine, technology touches every part of our lives. If you can create technology, you can change the world"** quoted Susan Wojcicki (the CEO of YouTube since February 2014). It is also true because when we look around whether it is the industrial sector in which factories earlier having the machines releasing pollutants in high amounts, now it has reduced. But in technology also the IT sector has grown up very fast.

In India with the arrival of JIO, people started connecting themselves with it and this was the period of the digital revolution in India. Till now India is the 2nd largest internet consumer country in the world with 560 million active internet users after China which holds about 854 million users. From the start itself, JIO stared attracting people with its free service for all users. It saved a lot of money and gave satisfaction to the users. It also controlled the price of all the telecom companies' plans and changed everything. And we can

see the clear difference after this digital revolution that today anyone can have daily 2gb of data @599 for 84 days for which he/she had to spend 198 in which he/she get 2gb of data for 28 days. The Digital revolution has changed the mindset of people that everyone is connecting himself/herself to digital. They are making their digital identity and giving time to it more than ever before. Now the Government is also believing in digital to control frauds, corruption and other things. People also show very good interest in accepting payment in digital mode. In the period of lockdown also are able to communicate with people is because of the internet. Students are able to attend the class from home is possible because of the internet. Now people consume a lot of data daily and studies say that we Indians consume average 11gb data per month and we are at the top in that list. Every minute about 500 hours of fresh content is released on youtube and in a day it goes to 700,000 hours which about 82.1 years (data released by youtube).

Due to a large amount of data are a lot of problems in managing it. But someone well said that where there is a problem there is always an opportunity to do something new and to manage this huge data studies like Data Science has become popular now. Many new minds are also seeing their future in this. Many technologies like Data Science, Machine Learning and Artificial Intelligence have become popular now in this technical world. In the latest trend the favourite field in which most of the students in school and college is Artificial Intelligence. In Artificial Intelligence, the machine learns by its experience and response intelligently like humans. Tesla Autopilot is a car that is based on Artificial Intelligence only which does not require any driver in the car to operate and this the best example of success in this field. Now the technology is growing very fast and with this speed, it would be different in the future and would gain more achievements. And we hope for the best.

बदन सिंह चौहान

Anvi Singh Chauhan – A student
Vii-D Roll Number - 6
Delhi Public School, Gurgaon
Haryana (122001)

3H, 903, Aster Court, Orris,
Sector 85, Gurugram Haryana

SCHOOL LIFE

All of us have some time gone to school .School life is an adventure that all of us has ever been to, there are friends, teachers and some of our enemies that complete our school family. In school there are different types of people like some are so intelligent and some are so boring that after seeing their face we feel sleepy. But there is always a person that irritates you and makes you furious. There are always three types of teachers like the first one is who is very sweet and always makes you feel happy, second one is the strict one who's face is like an angry pine apple, the third one is the boring one which feels you make sleepy as one of our teacher's in my school is very boring that I even slept on her class. But teachers are very special in our life, they give us knowledge, confidence to speak in public etc. During school we make friend that that are there throughout our lives but there are always some friends that we need only in need but some are that we need in time but are also good and might come in our "GOOD FRIENDS LIST". In teenage when the children sometimes get distracted from studies they do work that make them feel contended and some are those who are always in to the libraries and reading, deeply into the world of books in their imagination.

School life makes our childhood memorable, we collect so many memories in School and most of our parents' childhood memories are directly or in directly connected to school. Our parents always remember the school life and feel to go back in their childhood and live the life again with so many friends and teachers, recalling the emotional, funny and even some inappropriate works like leaking papers and having food during the classes.

There Are two types of school that we are familiar with they are the Government schools and the Private schools. But school life can be experienced in any type of school. Some people are so poor that they could not afford schools so the Government has helped those communities to let their children gain knowledge. But private schools have also taken an initiative toward education for poor children, some schools have setup workshop for the poor children and some have setup after school classes such as the SHIKSHA KENDRA that take steps to help the Government in the education. In the school in which I study has setup SHIKSHA KENDRA, I really feel very proud of my school when I see children studding and having the same respect, opportunity to do something good So that the nation, the world would be proud of them, in short to make them an independent person.

DISCIPLINE

(A branch of knowledge, typically one studied in higher education)

Discipline is very important in our life. Discipline does not mean that we should we be quite but it means that to be obedient towards everyone, well behaved and kind. Discipline can't be inserted into our lives but we should practice it I our day to day time period, so that we are in a practice of living in a discipline environment. It helps us in time management, reaching our goals and getting better grades in school. It helps one to avoid from getting into some trouble and it is very important one to make up a reputation in one's eye. We should practice discipline in our lives because as we said that we could manage our time as we won't be late for any important discussion etc. Discipline helps in reaching our goals, and also helps us in being a good person from inside our heart but not from physical (outside).It helps us in getting good grades in school as we would have enough time for studies and enough time for playing and other activities that keeps us relaxed .The Discipline that needs to be followed in school is to complete our work on time and follow the rules of our school and we should never do such work that would take us into some trouble , and at our home we should never argue with our parents and family members. If we argue or do such inappropriate work we are not following the way of discipline but of minor faults.

Discipline means decency…
Discipline means purity…
Discipline means regulation…

We should follow these principle in our lives to be contended and satisfied with everything we do.

The most important thing we should practice self-discipline. We can practice discipline in everything we do like

➢ In our eating habits
➢ While studding
➢ While working in our offices like in armed forces discipline is a must
➢ We should go to bed early and rise up early to be successful
➢ Discipline in student life is a must because if we practice it daily we would not have any problem in our adolescent
➢ Punctuality is a sign of Discipline.
➢ Discipline helps in improving our habits and building up our character.

Thank You,

Anvi Singh Chauhan
Thursday, May 28, 2020

-

परिशिस्ट -

ये चक्कियाँ हमारे घर की चक्कियाँ हैं – जो घर की महिलाएं आटा पीसा करती थीं

-

मेरे चाचा अमीलाल महाशय जी और मेरे पिता जी शिब्बन पहलवान

मास्टर भीम सिंह - मेरे सबसे बड़े भाई

बदन

मुख्य व्यक्तियों के फोटो

मेरे पिता जी शिब्बन, भगत सिंह और अमीलाल

शिब्बन, देव रतन और अमीलाल

सोहन लाल पुत्र बिहारी

अखै पटवारी

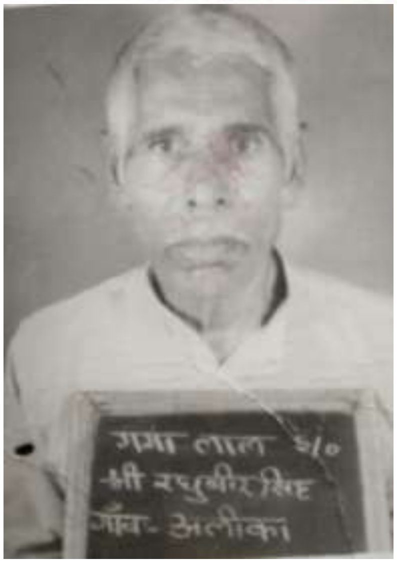

घमंडी - प्रसिद्ध गायक

राधे - पुत्र जहारिया

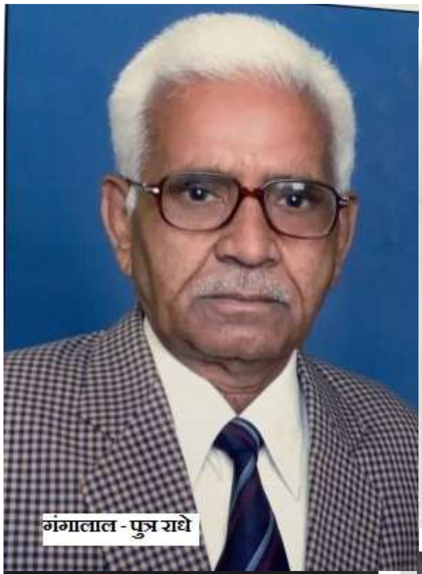
गंगालाल - पुत्र राधे

अमर सिंह - गाँव का पहला वकील

भूपलाल - पुत्र दौलती

जगबीर - पुत्र भूपलाल

शेर सिंह -पत्र मूसे

चन्दन सिंह - मुकदम

चन्दन सिंह की धर्म पत्नी

किरण सरपंच -
(पुत्र चन्दन सिंह)

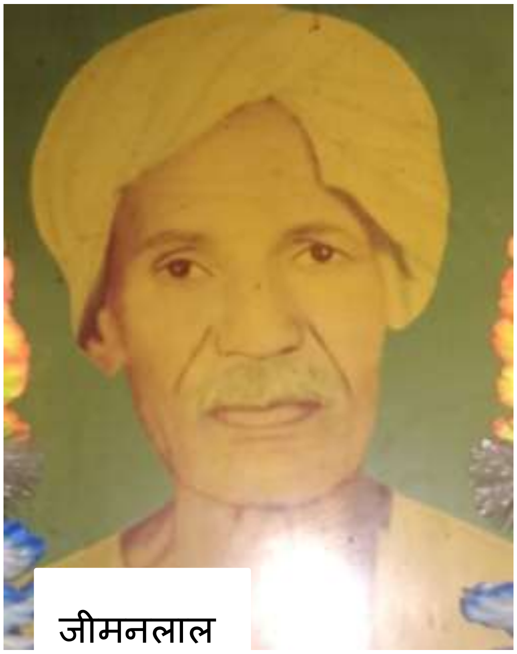

जीमनलाल

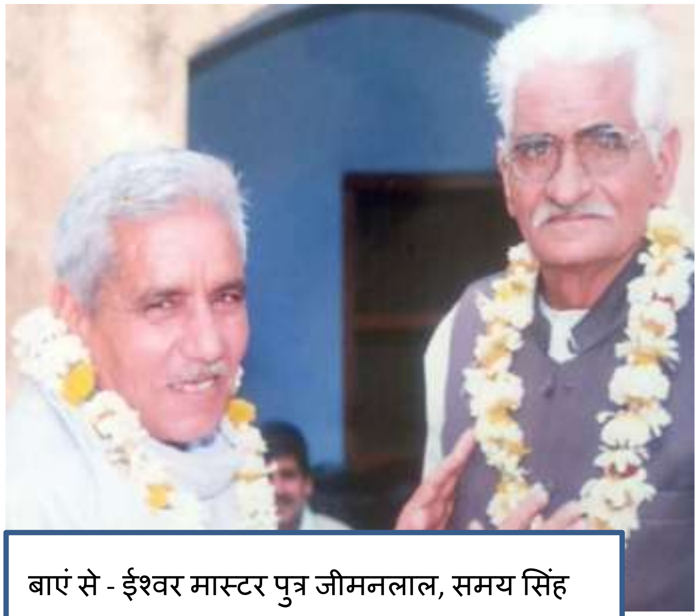

बाएं से - ईश्वर मास्टर पुत्र जीमनलाल, समय सिंह

तोता - दानी का

गिर्राज - पुत्र दीपचन्द

राज पाल- आर्य समाजी-पत्र अमीलाल

कुंदी - मूसाका

बलबीर मास्टर

भूक्कल - मूसाका

राम प्रसाद - चौक

धन सिंह

सुख देव महाशय जी

दीपक उर्फ़ कल्लू - राज मिस्त्री

हंसराज - पुत्र भगतसिंह - पुत्र
राम सिंह - पुत्र सरूप

तारा मास्टर

राज वीर - ब्लॉक पंचायत समिति मेम्बर

ओम प्रकाश शास्त्री व उनकी धर्म पत्नी विमला
13/06/2012

पंडित अमीलाल

पंडित अमीलाल की धर्म पत्नी

ग्यासी ठोंड़ा

झम्मन पहलवान
CHODHRI JHAMAN PHALWAN

जोगेन्द्र - वकील

अजय वकील

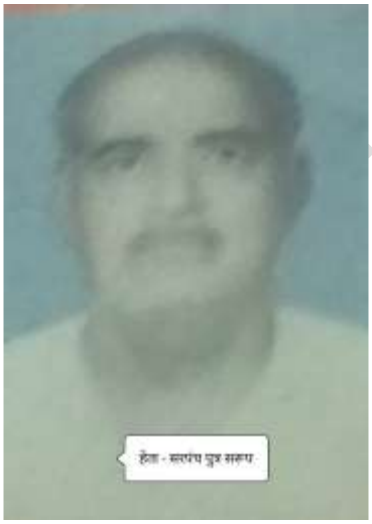
हेता - सरपंच पुत्र सरूप

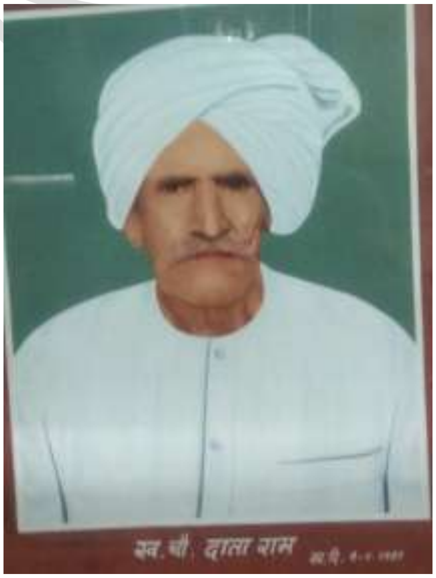
स्व. चौ. दाता राम

राम रत्न मलिक- वकील

गाँव के स्कूलों के चित्र

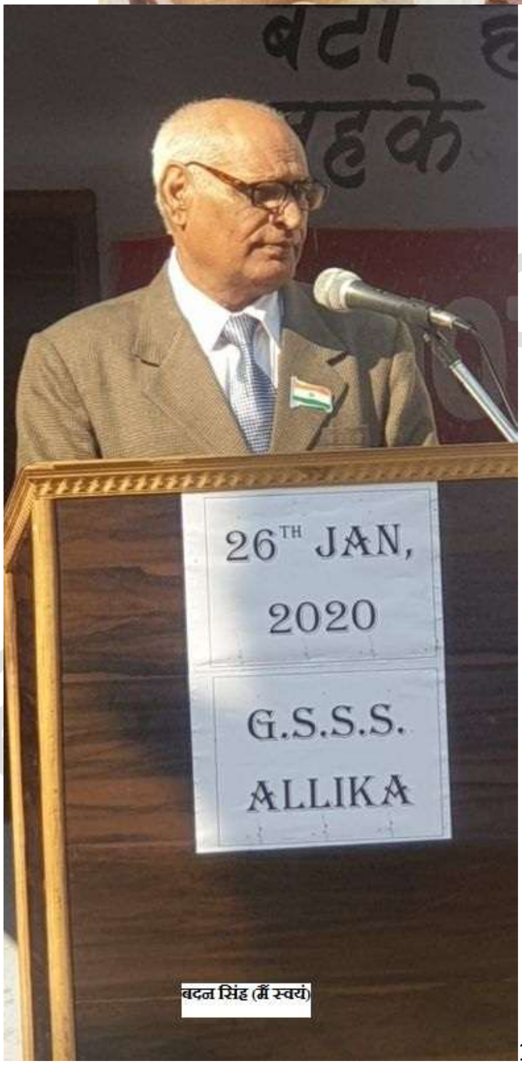

1

सरकारी दोनों स्कूल के (हायर सेकेंडरी और प्राइमरी) के अध्यापक वर्ग

सरकारी प्राइमरी स्कूल अल्लिका - अध्यापक बाएं से - सुनील सिंह, मधु चौहान (मेरी पुत्री) मुख्याध्यापिका व सुनैना और पीछे चौकीदार हरदेव सिंह

मधु चौहान - मुख्य अध्यापिका - प्राथमिक विद्यालय अल्लीका

सएमसी की मीटिंग - प्राइमरी स्कूल आललीका

पुराने सरकारी स्कूल के खंडहर

पुराने सरकारी स्कूल के खंडहर

A function in Government Higher Secondary School Allika

गाँव के अस्पताल

Visit of Deputy Commissioner in Allika Hospital

Visit of Deputy Commissioner in Allika Hospital

Visit of Deputy Commissioner in Allika Hospital

Hospital staff with District Medical Officer

Visit of Chief Medical Officer Palwal in Allika Hospital

पशु अस्पताल

गाँव में दंगल

Photos of Dangal at Teej Festival.

गाँव की पोखर और मुख्य मंदिर

Photos of Village temple

पोखर - दिवाले वाली (मंदिर के पास)

पोखर खौटा

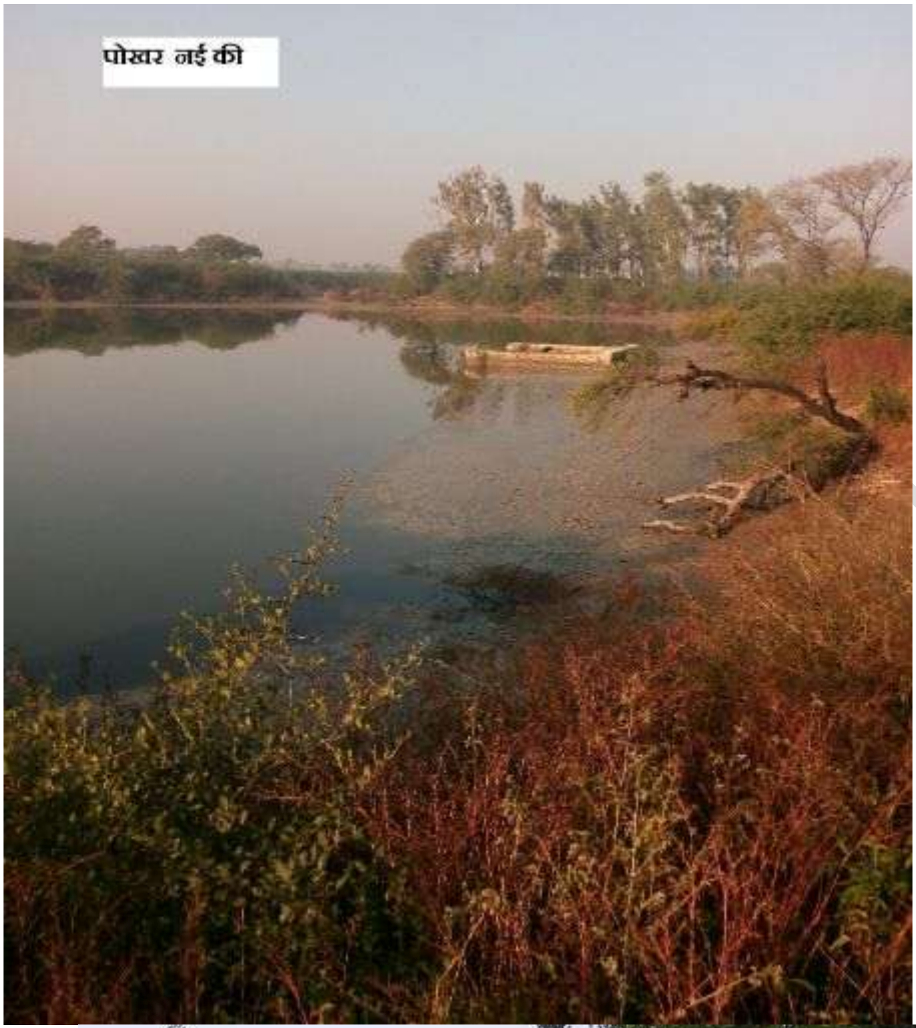
पोखर नई की

बनिया की पोखर (घुघेरा के रस्ते में)
2020-5-29 06:46

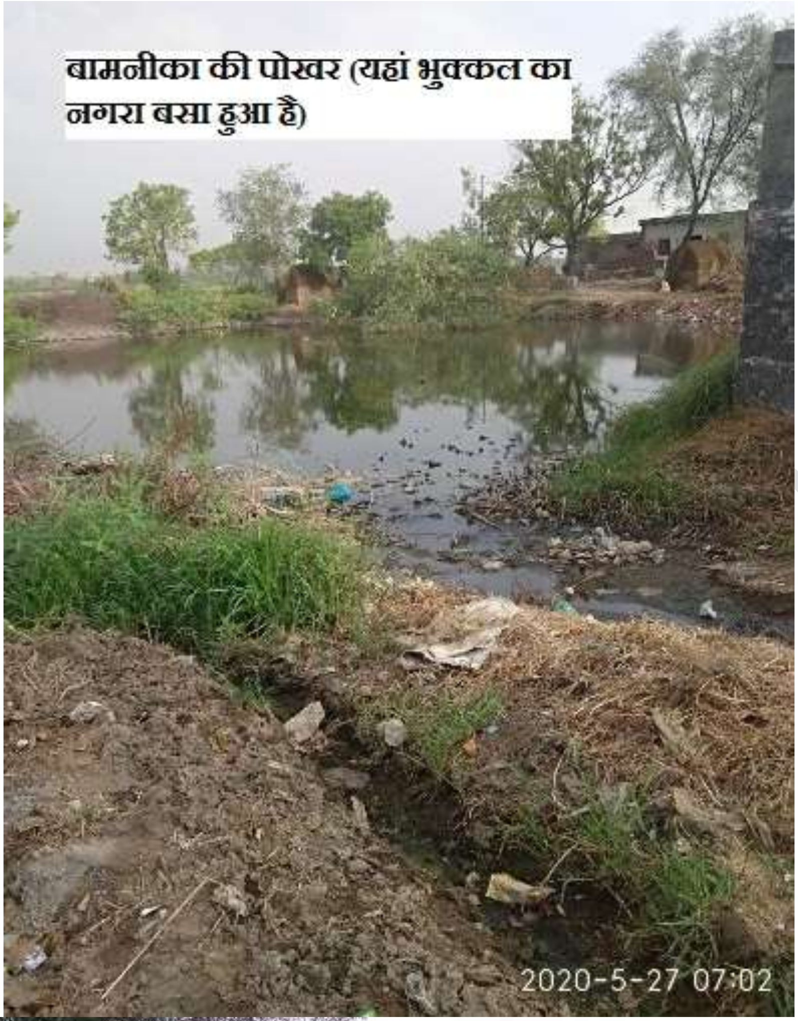
बामनीका की पोखर (यहां भुक्कल का
नगरा बसा हुआ है)
2020-5-27 07:02

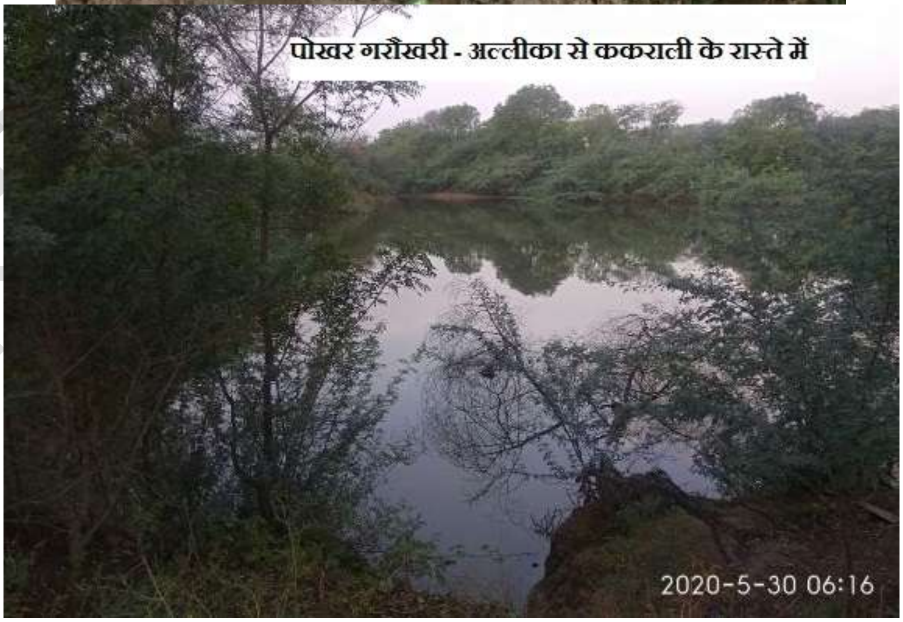
पोखर गरौखरी - अल्लीका से ककराली के रास्ते में
2020-5-30 06:16

पोखर - क्वेलकी
2020-5-16 06:09

पोखर - सरी की

गाँव की चौपाल - आज की स्थिति में

चौपाल कछारिया (मई 2020 में)

चौपाल चौक मोहल्ला की

चौपाल भण्डिया पुरानी (मई 2020 में)

चौपाल (धौरिया) भण्डिया 2011 में नई बनाई (मई 2020 में)

चौपाल दानीका (मई 2020 में)

चौपाल मूसाका (मई 2020 में)

साधमोहल्ले की चौपाल मई 2020 में)

बलहार जाती की चौपाल मई 2020 में)

गाँव के देवी देवताएँ

खेरा देवत - गाँव खेरे के देवता
2020 5 2 08:20

भूमिया देव - अल्लीका

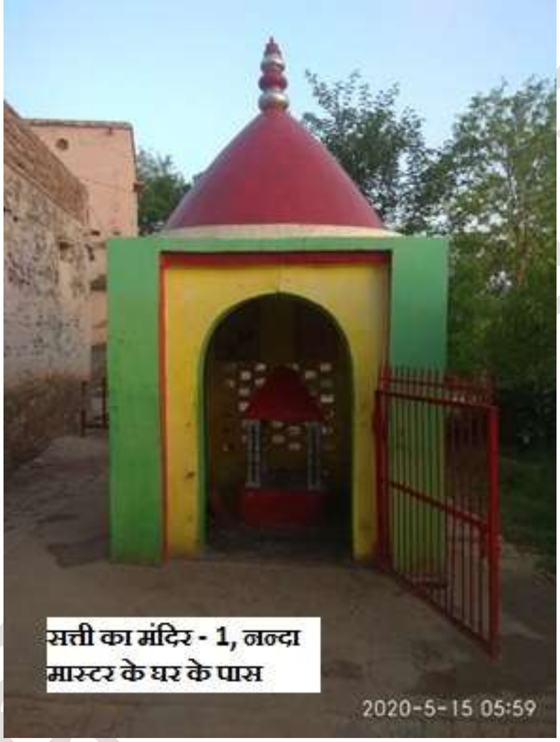
सत्ती का मंदिर - 1, नन्दा मास्टर के घर के पास
2020-5-15 05:59

सत्ती मंदिर - 2, नाले के पास, चंदी मुकदम के मकान के पास
2020-5-15 06:06

कुछ पुराने घरों के दरवाजे

गिरधर का घर मई 2020 में)

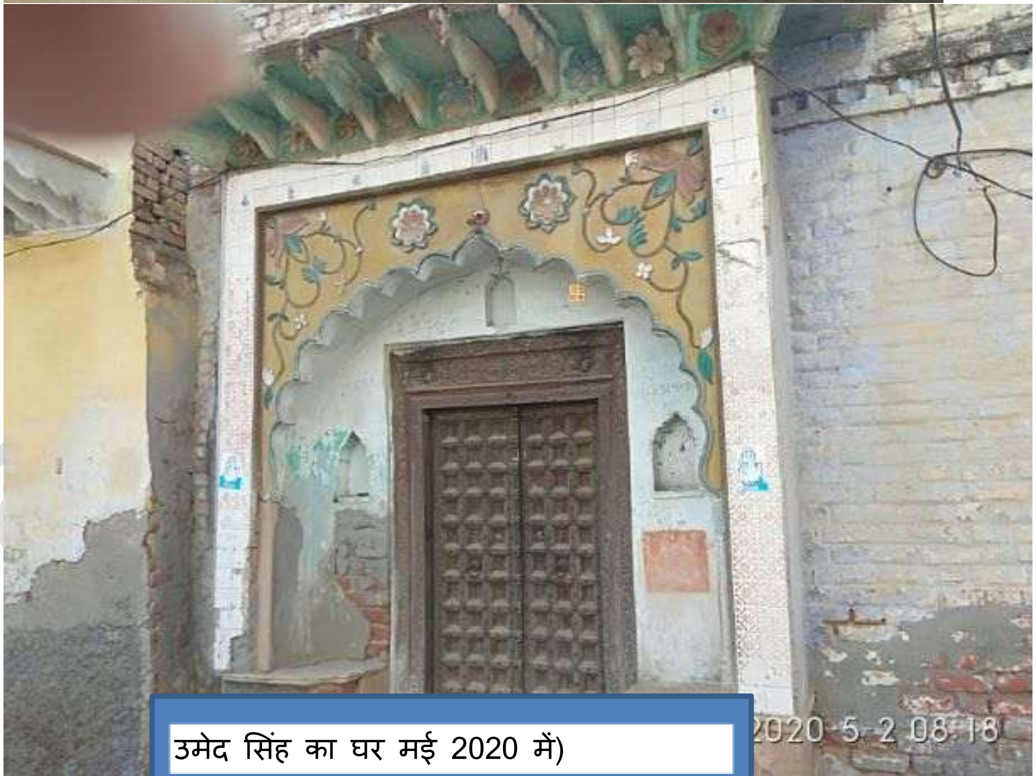

उमेद सिंह का घर मई 2020 में)

धन सिंह का घर मई 2020 में)
2020-5-2 08:19

चंदन सिंह की हवेली

चंदन सिंह की हवेली

जीमन लाल की हवेली

जीमन लाल की हवेली - दानी का
2020-6-8 08:55

तोता की हवेली
2020-6-8 08:50

मोती की हवेली

गाँव के कुछ पुराने भवनों के खँडहर

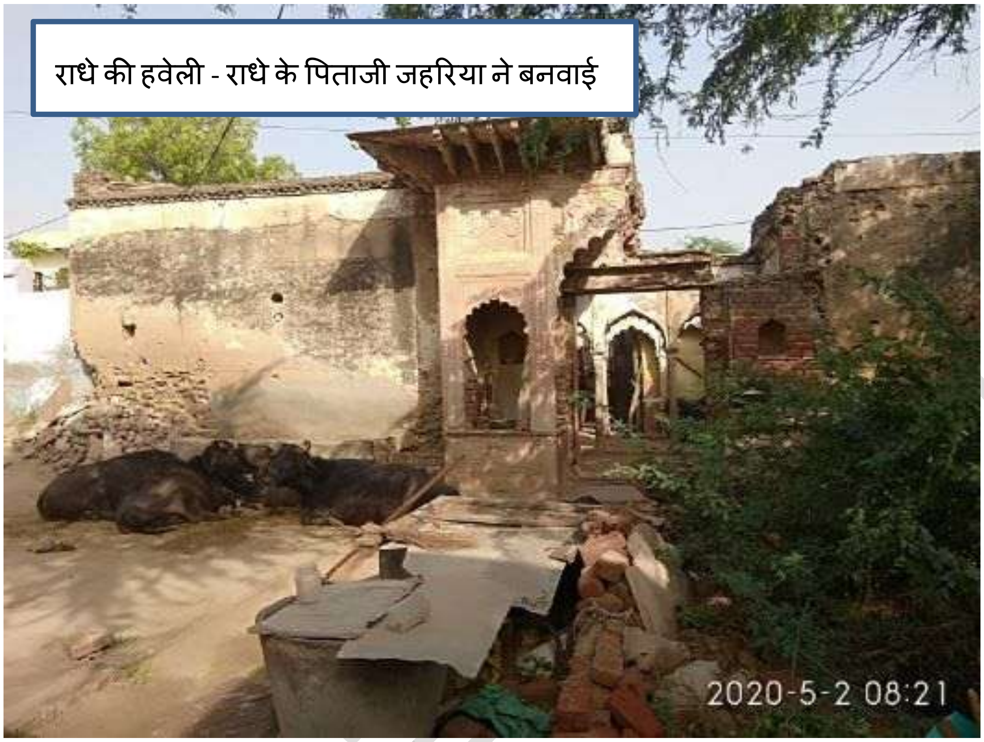

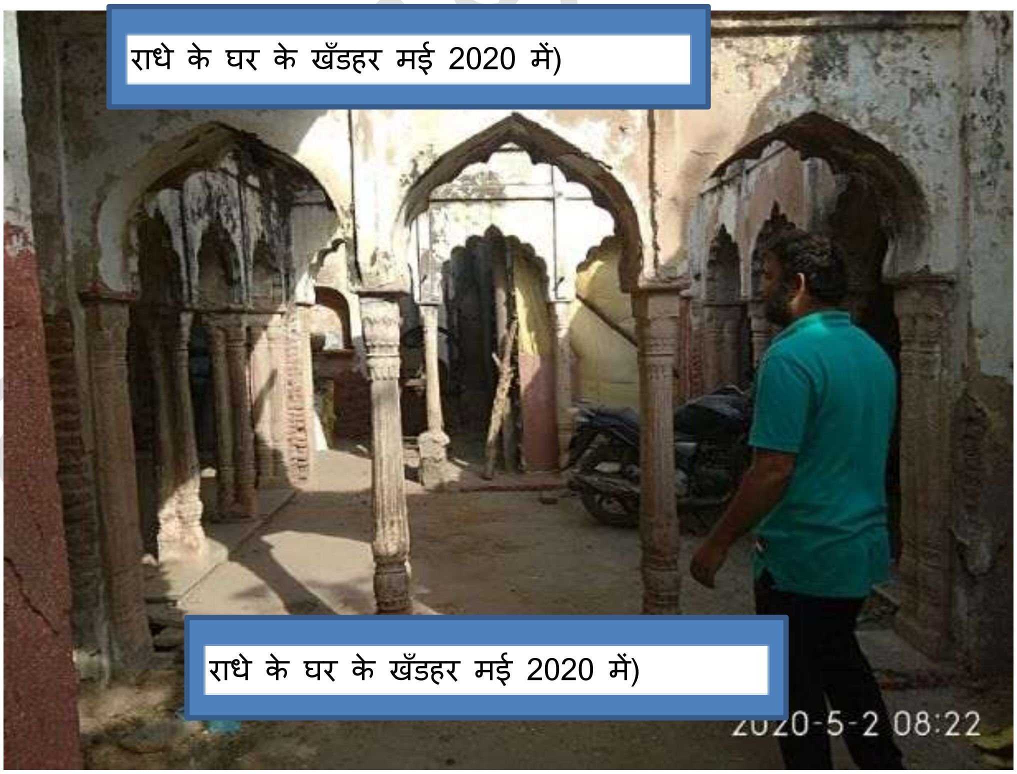

शालिग राम माहेश्वरी - गॉव और आस पास के इलाके के साहू कार (महाजन)
शालिग राम - का पुत्र राधे श्याम - का पुत्र ओम प्रकाश
फोटो - बाएं शालिग राम,
नीचे बाएं राधे श्याम, नीचे दाएं राधे श्याम की पत्नी

शालिग राम माहेश्वरी - गॉव और आस पास के इलाके के साहू कार (महाजन)
शालिग राम - का पुत्र राधे श्याम - का पुत्र ओम प्रकाश
फोटो - बाएं शालिग राम, दाएं ओम प्रकाश - राधे श्याम का पुत्र
नीचे बाएं राधे श्याम, नीचे दाएं राधे श्याम की पत्नी

शालिग राम माहेश्वरी - महाजन की हवेली के खंडहर

शालिग राम माहेश्वरी - महाजन की हवेली के खंडहर

शालिग राम माहेश्वरी - महाजन की हवेली के खंडहर

शालिग राम माहेश्वरी - महाजन की हवेली के खंडहर

शालिग राम माहेश्वरी - महाजन की हवेली के खंडहर

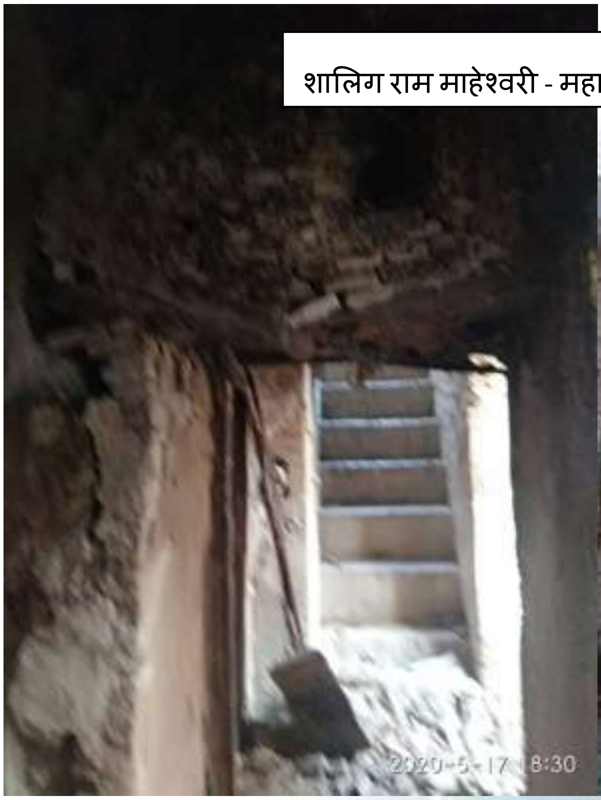

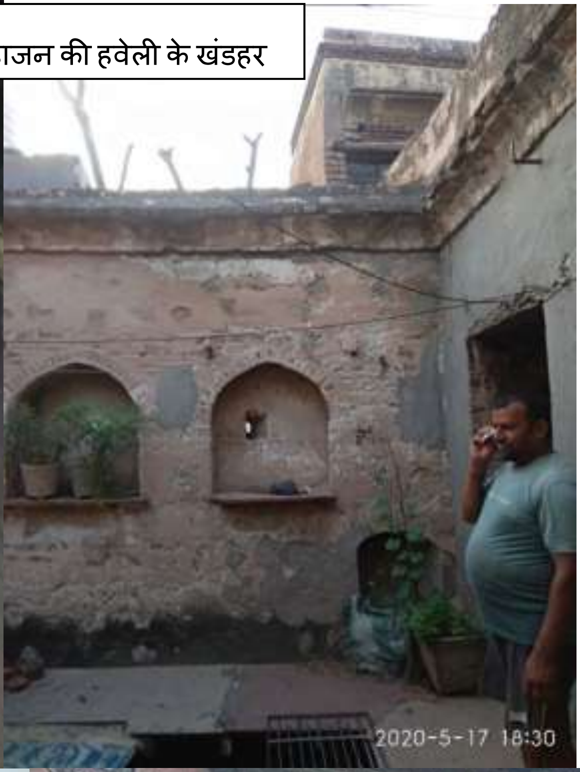

शालिग राम माहेश्वरी - महाजन की हवेली के खंडहर

शालिग राम माहेश्वरी - महाजन की हवेली के खंडहर

शालिग राम माहेश्वरी - महाजन की हवेली के खंडहर

बोहरे - जय नारायण और कन्हैया की हवेली (ये पालीवाल हैं)

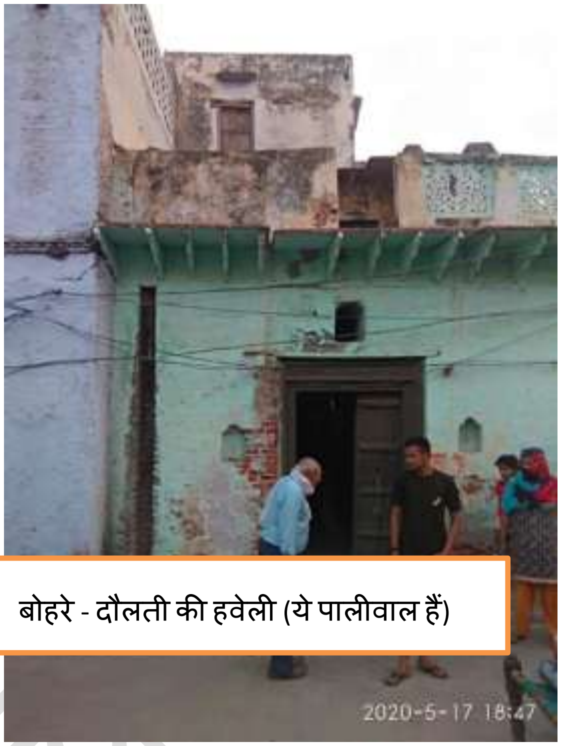

बोहरे - दौलती की हवेली (ये पालीवाल हैं)

दौलती बौहरे के घर के खँर

गाँव की भूमि का कुछ पुराना रिकॉर्ड - जिसको पढ़ना कठिन हो रहा है

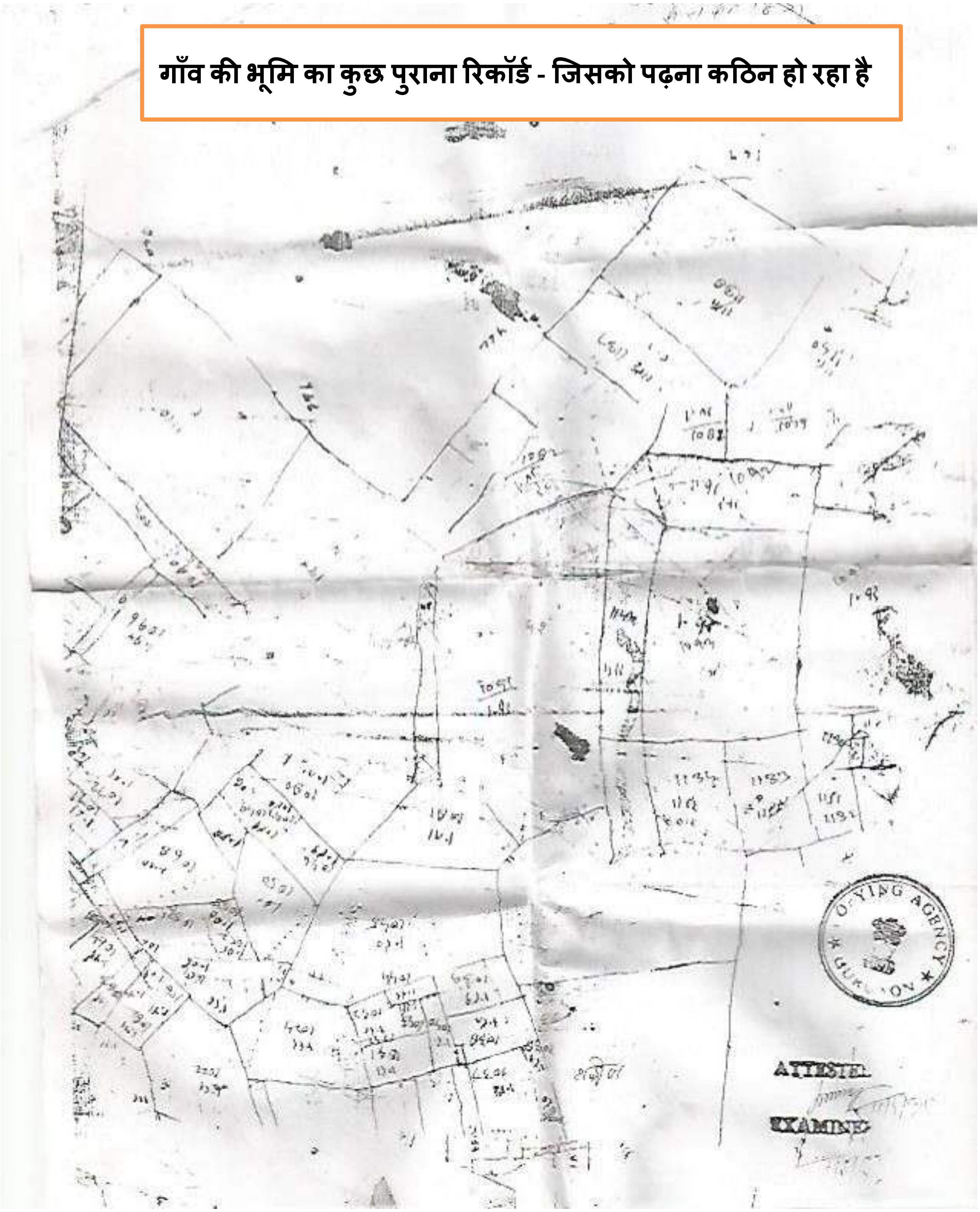

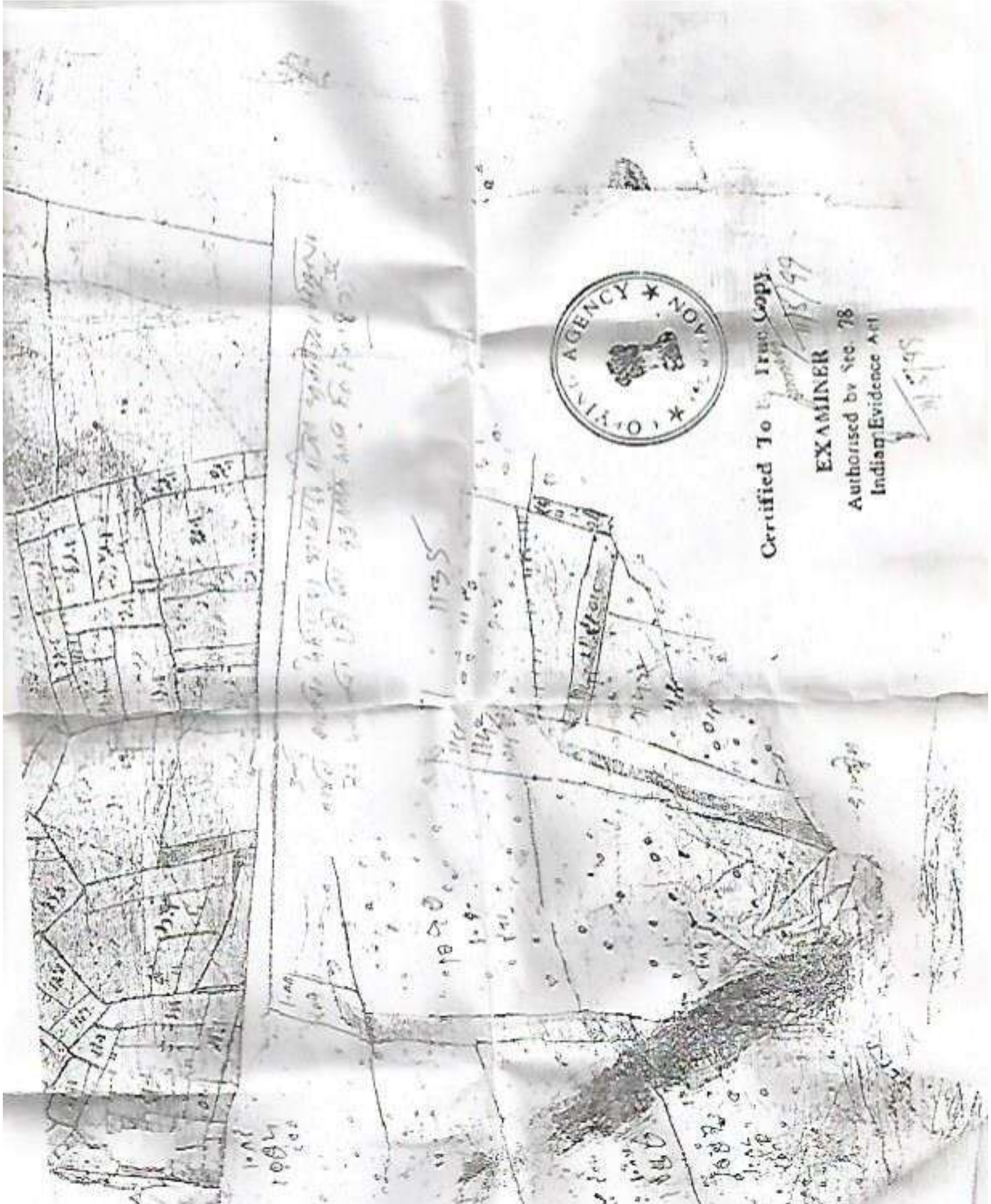
AGENCY
EXAMINER
Authorised by Sec. 78
Indian Evidence Act

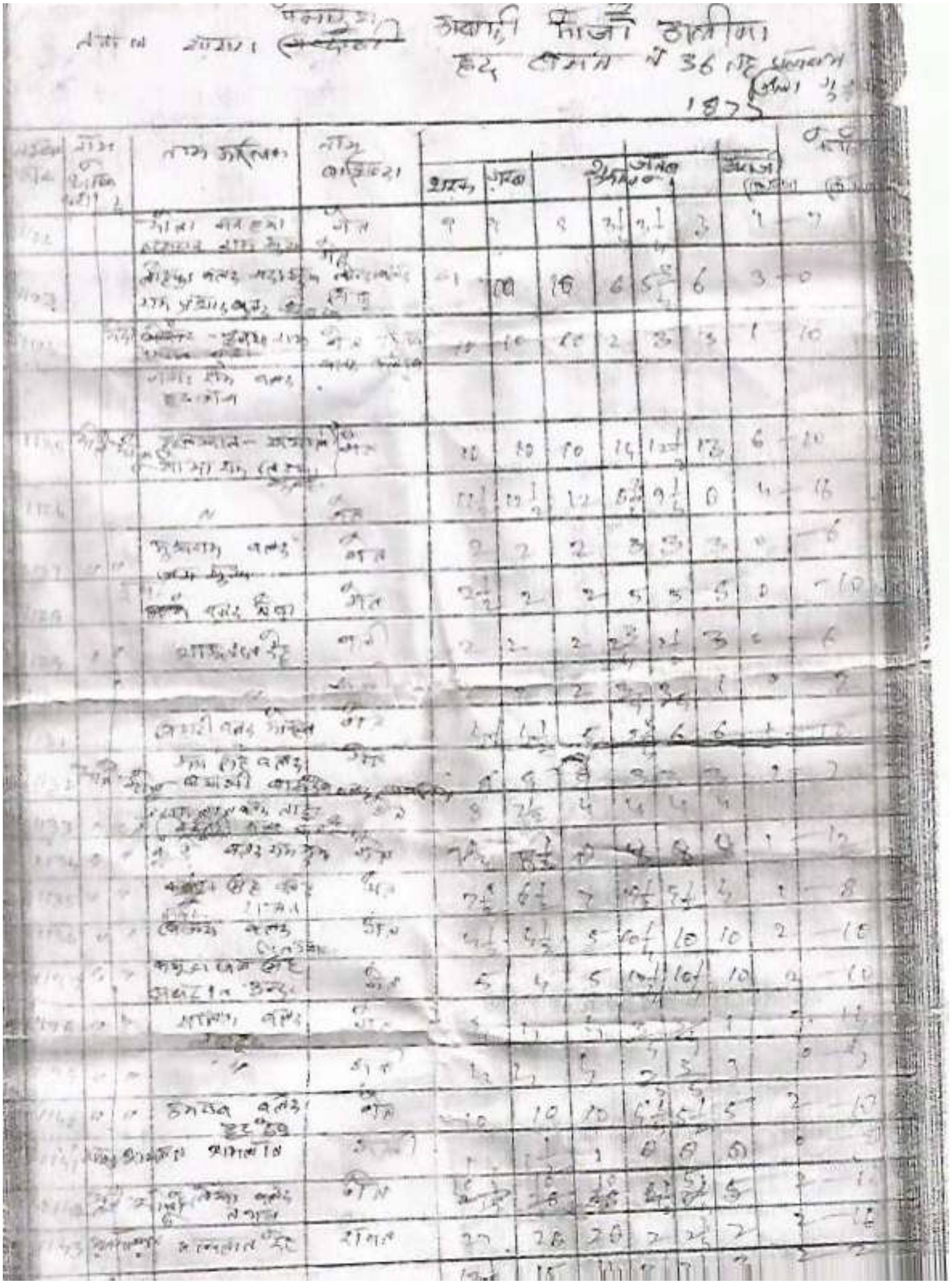

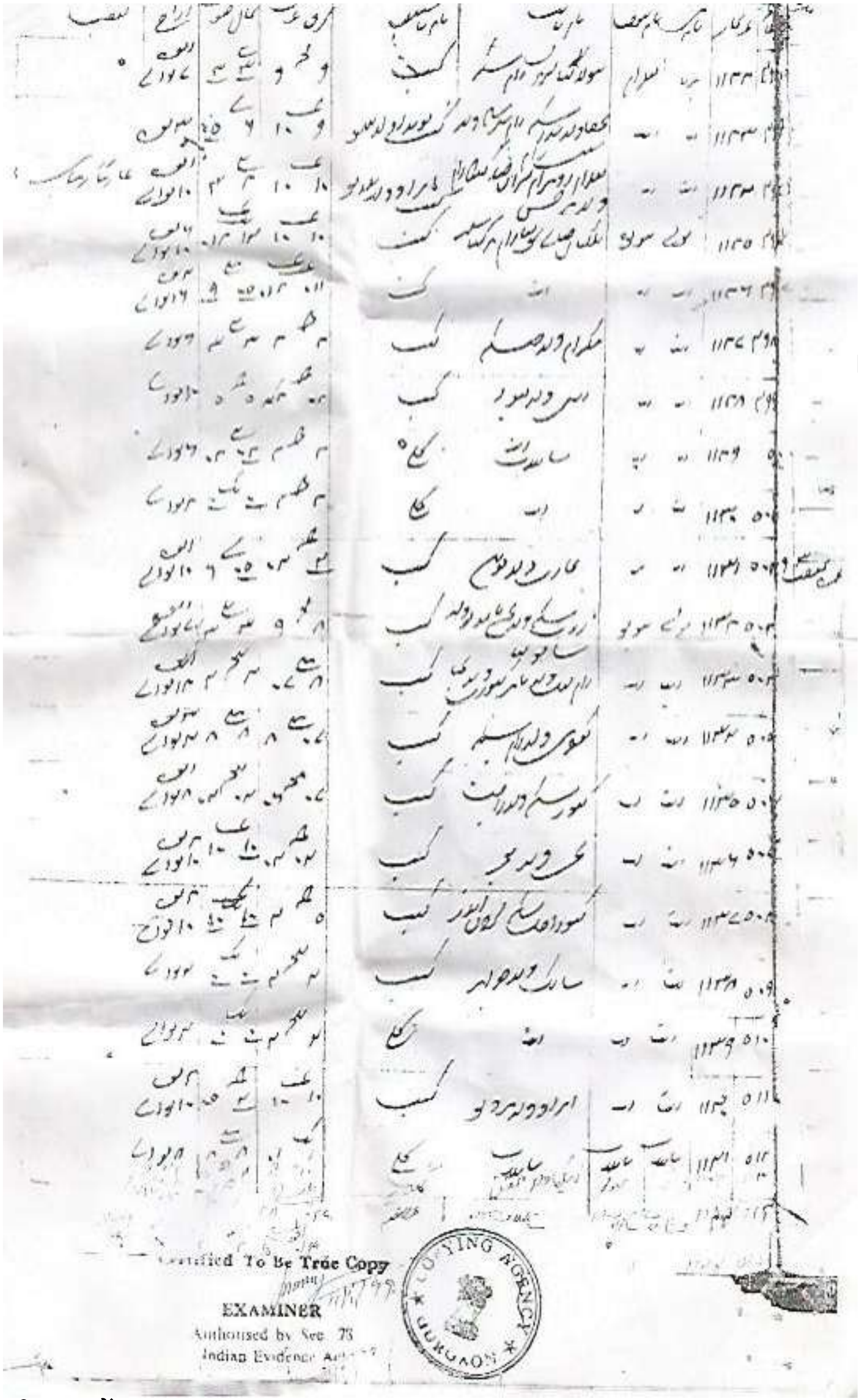
Certified To Be True Copy
EXAMINER
Authorised by Sec 75
Indian Evidence Act
COPYING AGENCY
GURGAON

हरियाणा में

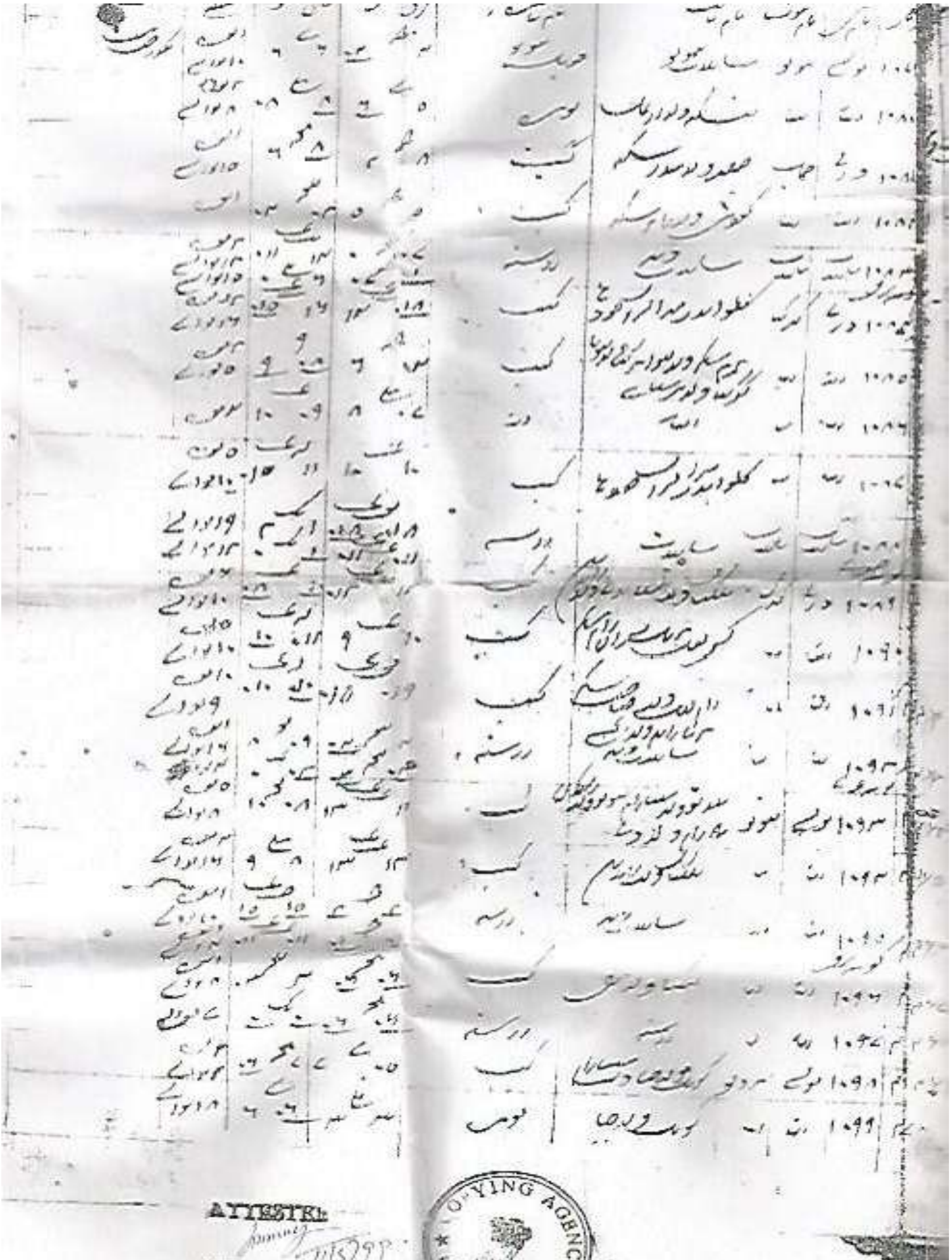

जाटों में कुंडू गोत्र के गाँव

जाटों में कुंडू गोत्र के गाँव हरियाणा, उत्तर प्रदेश और राजस्थान में पाये जाते हैं

कुंडुओं के गाँव

जिला रोहतक में:- 10गाँव है।

1 टिटोली
2 सुंदरपुर
3 आनंदपुर भाली
4 बहू अकबरपुर (बड़ी बहू)
5 गद्दी खेड़ा
6 नया गाँव
7 गिरावाड
8 गडौठी
9 बड़ा भैंण
10 रोहतक शहर (तीन जगह पर निवास) – मंगोलयन ठोले से शोरा कोठी

कैथल जिले में :- 9 गाँव

1 देवी गढ़ – 10 घर
2 कैलरम – 85%
3 रेहेड़ा – 40%
4 तितरम – 80%
5 किठाना – 5 घर
10
6 गिलाना – 50 घर
7 लुदाना – 5 घर
8 झकौली 20 घर
9 बालू - 20 घर

पानीपत जिले में – 3 गाँव

1. शाह पुर
2. काथ
3. बीजावा

सोनीपत जिले मेन – 5 गाँव

1. बुताना
2. ढुराना
3. कथुरा
4. बड़ौता
5. गोहाना

जींद जिले में – 14 गाँव

1. कालवा कुंडु
2. भूराण (कालिया कुंडु)
3. पीलू खेड़ा
4. खरक गागर
5. होशियारपुर
6. कलावती
7. ढाकल
8. अहीरका
9. दरियावाला
10. ढान्डा खेड़ी
11. माली
12. सुंदर पुर
13. उचाना
14. बराड़ खेड़ा

हिसार जिले में – 6 गाँव

बदन सिंह चौहान

1. फरीद पुर
2. कंडूल
3. किनाला
4. खैरी
5. पाबड़ा
6. मिर्जपुर

झज्जर जिले में – 3 गाँव

1. चांदपुर
2. सुरेहली
3. छारा

सिरसा जिले में – 2 गाँव

1. ओढा
2. लहराणा

करनाल जिले में – 1 गाँव

1. भुसली

पलवल जिले में – 5 गाँव

1. अल्लीका
2. कैराका
3. राजौलका
4. यादुपुर
5. ककराली

भिवानी जिले में – 3 गाँव

1. शीशवाल
2. बेरला
3. आर्य नगर

कैथल जिले में – 9 गाँव

1. देवीगढ़
2. कैलरम
3. रोहेड़ा
4. तितरम
5. किठाना
6. सौगरी गिलाना
7. लूदाना
8. झकौली
9. बालू

गुडगाँव जिले में – 4 गाँव

1. किरा नूह तहसील
2. शीशमाट जात की
3. नया गाँव
4. रणसीका

रेवाड़ी लिजे में – 3 गाँव

1. राम सिंह पूरा (नांगलिया)
2. बालावास
3. नया गाँव

दिल्ली में – 2 गाँव

1. अकबरपुर मजरा (पल्ला मजरा)
2. कुलकपुर

बदन सिंह चौहान

राजस्थान में कुंडु गाँव -7 गाँव

1. चिड़वा – अलवर जिला
2. नांगल उदिया - अलवर
3. शहजाद पुर – अलवर
4. बघाना – अलवर
5. मालियर जाट – अलवर
6. पतलिया – अलवर
7. जाटना - अलवर
8. जाटन

उत्तर प्रदेश में –

1. करसन सिकंदरा बाद
2. भागती – सिकंदरा बाद
3. सिलमौटी – सिकंदरबाद
4. धर्म नगर– सिकंदराबाद
5. भटौना - मेरठ
6. रतौला – मेरठ
7. टिटौली – शामली – 5 घर
8. भरसी शामली – 100 घर
9. भमीसा – शामली – 10 घर
10. गढ़ी पुख्ता - शामली – 10 घर

..xx..

पहले संस्करण लोगों की टिप्पणियां

Laxman Burdak - (He is a retired Indian Forest Service and served in Madhya Pradesh. He is from Churu District(Rajasthan) Jaat community.)

Thanks I have downloaded to my computer.

चौहान साहब बहुत अच्छा लिखा है। यह फ़ॉन्ट मैं कॉपी नहीं कर पा रहा हूँ, इसलिये एक एक लाईन पढ़कर इंटरनेट के फॉन्ट में कन्वर्ट करनी पड़ेगी और सार रूप मे जाटलैंड पर जोड़ूंगा। आपकी जीवनी एक अंग्रेजी में भेजदो तो एक पेज अलग से बना दूंगा।

……xx…….

Bir Pal – Teacher – He is from my village

"बहुत ही अच्छे ढंग से आपने किताब को ड्राफ्ट किया है देखने में भी बहुत सुंदर लग रही है, तथ्यों से भरपूर है, वर्तमान पीढ़ी और भविष्य की पीढ़ी के लिए यह किताब बहुत उपयोगी सिद्ध होने जा रही है।

जो इस पुस्तक को पढेगा व देखेगा उसकी तबीयत खुश हो जाएगी।"

………xx………..

By Sukhbir Singh Tewatia (Block Education Officer – Palwal - Haryana Government)

"very nice we should remember our old cultural and fact passed in our and parents past life passed life of our parents was very trouble we should not forget pass in the past sir there were very sweet relation in our family / villagers /rishtedari etc so I proud of such person those not forget their culture as like you, so again"

…….xx…….

बदन सिंह चौहान

Appreciated by –

Dr. Kuldeed Singh Chhikara (Head of the Distance Education Mahrishi Dayanand University Rohtak,

Dr. Ashish Dahiya (Head of the Institute of Hotel and Catering Management Maharishi Dayanand University Rohtak), -

"Superb आप कमाल हैं, लिखते बेमिसाल हैं।

……xx…….

Mam Chand Mehra (Retired Additional Distrct Judge – he is from my village)

Devi Singh (retired Bank Branch Manager) from my village

…….xx……

Dr. Dev Ratan Chauhan (Retired Agriculture scientist from Haryana Government)

"Great great great. No body could have done this great work except u. I have no words to say. Only I can say Kamal kiya hai. Very informative document for my village peoples."

Dr. Mahipal Arya

"[11:10 AM, 4/16/2020] Mahipal Arya Writer: अति उत्तम रचना है। यह पुस्तक चिंतनशील जीवनशैली व वैचारिकता को दर्शाती है। आपने जिन प्रामाणिक ऐतिहासिक तथ्यों को उद्घाटित किया है वे वास्तव में अद्भुत हैं। यह इतिहास अल्लीका वासियों के लिए तथा कुण्डू गोत्रिय जनों के लिए अनूठा दस्तावेज है।

महीपाल आर्य पुनिया इतिहासकार 9416177041

[11:15 AM, 4/16/2020] Mahipal Arya Writer: मैंने इसे आद्यन्त पढ़ा है।"

. S. Chahal (Retired Executive Director – Madhya Pradesh Tourism Development Corporation)

"Wow! Brilliant effort, Badan! You are really spending your time productively. My compliments"

Dr. Pupendra Pratap Singh (Retired Executive Director Madhya Pradesh Tourism Development Corporation)

"साधुवाद ,बहुत सुन्दर कार्य आपने किया है, आप पर प्रभु की अनुकंपा अपार है है, पुनः आपको किए गए कार्य के लिए साधुवाद"

……..xx……..

Vijay Kumar Sharma (Retired Deputy General Manager Madhya Pradesh Tourism Development Corporation)

"Congratulations for writing your first Book "My Village Allika ". Complete details of your Village and the facilities of Village. Some of the

incidents of your Uncle and visit of Deputy Commissioner visit. And dear EKTA Story.Very Good efforts done by you.Keep it up.”

……..xx…….

On list of Gotra – G. S. Chahal –(Executive Director (Retired) – Madhya Pradesh Tourism) – says:-

Wow! Brilliant effort, Badan! You are really spending your time productively. My compliments

Such a huge list! You are compiling records like the British officers did during their tenure in India!

…..xx……

मनीराम खरबास सहायक सचिव रिटायर्ड हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड

मेरे गांव की एक सत्य कथा- संस्मरण

मैं, मनीराम खरबास सहायक सचिव रिटायर्ड हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड, वृद्धावस्था में अपने लेखन के शौक को पूरा करने के सफर पर था। एक जानकारी प्राप्त हुई कि मेरी ही दिशाएं लिए श्रीमान बदन सिंह चौहान का जीवन भी इस प्रकार के सफर को ही आगे बढ़ा रहा है। तो लगा कि हम हमसफर हो गये। आज कल के उन्नत तकनीक के संचार माध्यम ने तुरंत ही मिलन भी करा दिया। जानकर मुझे बड़ी खुशी हुई कि अपनी सरकारी सेवाओं के लंबे सफर के उपरांत उन्होंने अनेक अनेक शहरों में निवास किए व विभिन्न राज्यों में सेवाएं देकर जीवन के विरल अनुभव पाए तथा आखिर गुड़गांव में पहुंच बना स्थाई निवास का विचार बनाया। लेकिन जन्मधानी के प्रति श्रद्धा रखने वाले लोगों को आखिर यह कहां गवारा रहता वही हुआ उन्होंने आखिर अपने गांव अल्लीका को आशियाना बनाना चुना तथा इससे भी आगे बढ़कर और काम भी करना शुरू कर दिया जो कि अपने मातृभूमि अपने गांव के इतिहास लेखन से संबंधित है ऐसा होना ही चाहिए था। आखिर कोई तो यह काम करे ही।

मेरे अपने गांव के सफरनामा लेखन का एक शुरुआती लेख आज मैंने श्री चौहान से साझा किया तो उन्हें यह भा गया। वास्तव में यह एक मेरे गांव के मेरे जीवन की एक सत्य कथा है जोकि बेहिसाब होसलों भरी जिंदगी की उठापटक से गुजरी हुई कहानी है। श्री चौहान के निवेदन पर उनके लेखन का अंग बनाने के लिए मेरे संस्मरण के रूप में मैं यह उनको उपलब्ध करा रहा हूं जो समाज में किसी कि टूटती जुड़ती जीवन रेखा के लिए नजीर बनकर ज़िन्दगी को शाध लेने में शायद काम आ जाए।

पिलानी क्षेत्र के मरुस्थली इलाके में बसे मेरी जन्मभूमि गांव ढाणी मौजी राजस्थान आज भी अपनी पहचान को ढूढ रहा है, लेकिन वास्तव में मेरी पहचान तो यही है और रहेगी भी।

…….xx……

Dear Badan Singhji,

बदन सिंह चौहान

I finally finished reading your literary work "Allika". My heartiest congratulations for an excellent work done, tracing not only your "Kul" and "Gotra" but also the entire history of the village. Good to know that there is an author amongst us- ex MPTians. A great achievement and a remarkable first person account. I read through all of 294 pages. Very impressive and interesting reading indeed. I particularly liked the chapter on "Gaon ki sanskriti" and the way you have described the "paridhan" of village womenfolk. I am familiar with the works of Shri Dharm Chandra Vidyalankar. A great author and an intellectual. My renewed congratulations. I hope we will have more such gems from you in the future.

Dr. Harsh Verma, Director in Word Tourism, Madrid (Spain)

...xx...

कर्नल रवि किशोर चौहान,
कमानाधिकारी
मोबा. नं.- 8527347222

251 पारवहन शिविर
पिन 919251
मार्फ़त 99 सेना डाक घर

147/ ए/ टी सी 5 मई 2020

श्री बदन सिंह चौहान
ग्राम - अल्लीका
जिला - पलवल
राज्य -हरियाणा

पुस्तक "मेरा गाँव अल्लिका" के लिए शुभकामनाए

1. दिनांक 16 मार्च, 2020 को मैंने अपने व्हाट्सएप्प पर देखा कि एक पुस्तक की पीडीऍफ़ फाइल आई है जो हमारे परिवार कुनबे के सदस्य श्री बदन सिंह चौहान द्वारा भेजी गई है। मुझे तब बहुत ही प्रसन्नता का आभास हुआ जब यह देखा कि यह पुस्तक का नाम "मेरा गाँव अल्लिका" है। मेरा गाँव है यह, मेरा जन्म हुआ है यहाँ, मेरे पूर्वजों का गाँव है - अल्लिका गाँव। और उस पर कोई पुस्तक लिखे, मेरी ख़ुशी का ठिकाना नहीं रहा। मैंने बिना समय व्यर्थ किए इस पुस्तक को पढ़ना प्रारम्भ कर दिया। आज से पहले गाँव के बारे में कुछ किसी ने लिखा नहीं है। यह पुस्तक आज की पीढ़ी के द्वारा तो पढ़ी ही जाएगी, अपितु आने वाली पीढ़ी के लिए तो बहुत लाभकारी सिद्ध हो सकती है।
2. इस पुस्तक में गाँव की बसावट के बारे में जो बताया गया है बहुत ही सुन्दर ढंग से प्रस्तुत किया गया है। हमारा यह अल्लिका गाँव कब बसा यहां पर पूरा विवरण देने का प्रयास किया गया है। गाँव के भाट द्वारा

पढ़ी गई वंशावली के आधार पर लेखक ने बहुत ही सुन्दर ढंग से उसको प्रस्तुत किया है। अपने बुजुर्गो के बारे में, कौन कौन थे और कहाँ से आए, यह जान कर मेरे मन को एक अद्भुत प्रसन्नता की अनुभूति हुई। यह एक दुर्लभ जानकारी है और पहली बार लेखक के द्वारा उपलब्ध करा कर बहुत ही सराहनीय कार्य किया है।

3. हमारे बुजुर्ग, मेरे परिवार कुटुंब के प्रमुख चौधरी रघुबीर सिंह के बारे पढ़ा और उनका फोटो देख कर बहुत अच्छा लगा। वह इस इलाके के बृजभाषा के लोक कवि थे और इलाके के जाने माने पंच थे। चौधरी चन्दन सिंह की कुछ कविताओं की झाला देखने को मिली।

4. जमीन से जुड़े राजस्व सम्बन्धी जो दिन प्रति दिन काम आने वाले नाम हैं, यहां दिए गए हैं, इनको समझने के लिए पटवारी के पास जाना पड़ता है, इस पुस्तक में दिए गए हैं, जैसे गैर मुरजुआ, चाही, नहरी, इंतकाल, आबादी देह आदि ये नाम फ़ारसी भाषा के हैं। लोगों को यहां से जानकारी मिल सकती है।

5. जाटों के गोत्रों की एक सम्पूर्ण सूची दी गई गई, यह एक अच्छी जानकारी है और हम जाटों के लिए काम आने वाली है।

6. सरकारी स्कूलों की गतिविधियों और सरकारी अस्पताल के बारे में जानकार अच्छा लगा। पुराने स्कूल के खँडहर देख कर वेदना हुई और पक्ति याद आई कि खँडहर बता रहे हैं कि 'ईमारत कभी बुलंद थी'। इस पुराने भवन के बारे में सरकार के द्वारा ध्यान नहीं देना कोई अच्छी बात नहीं है।

7. आगे चल कर लेखक इतिहास की ओर ले गए है। महारानी किशोरी 18 वीं शताब्दी में हुए जाट रियासत भरतपुर के महाराजा सूरज मल की महारानी थी, वह होडल की रहने वाली थी। आज उसके महलों के और कचहरी भवनों के खँडहर देख उस समय का वैभव का अनुमान लगाया जा सकता है।

8. लेखक ने अपने पुराने अनुभव दिए हैं। गाँव की संस्कृति व रीती रिवाज के बारे में बताया है। वर्ष 1958 में गाँव में जब एक बहुत बड़ी बाढ़ आई , उसके बारे में पढ़ कर हृदय को बहुत पीड़ा हुई कि सारा गाँव डूब गया था और सारे गाँव वाले गाँव छोड़ कर चले गए थे। अपने परिवार को ले कर और अपने मवेशियों - गाजय, बैल, भैंस - सभी को अपने अपने रिश्तेदारों के यहां चले गए थे। कैसा होगा वह समय और कैसा बीता होगा वह समय, यह मैं सोचता ही रहा। बहुत ही पुरानी घटना का विवरण दिया है लेखक ने। इस पुस्तक को जो भी पढ़ेगा लाभ ही होगा।

9. एक बहुत बड़ी आवश्यकता की पूर्ति की गई है। मैं सौहार्द लेखक श्री बदन सिंह जी को इस अमूल्ल्य योगदान के लिए कोटि कोटि सराहना करता हूँ और धन्यवाद सहित कामना करता हूँ कि इसी प्रकार आगे भी विषय पर कार्य करते रहें। सेवा निवृति के पश्चात् आप अपने जीवन का समय का सदुपयोग कर रहें हैं।

शुभकामनायों सहित सादर।

हस्ताक्षरित
(रवि किशोर चौहान)
कमानाधिकारी
251 पारवहन शिविर